Commander Karan Saxena- The desi super seluth. The patriotic super spy

hindustantimes

★★★★★

कमांडर करण सक्सेना

अमित खान

मेरे हाथ मेरे हथियार

वह जानलेवा जंग – जो कमांडर करण सक्सेना और दुनिया के बेहद खतरनाक 12 योद्धाओं के बीच बर्मा के खौफनाक जंगलों में लड़ी गयी।

Commander Karan Saxena- The desi super seluth. The patriotic super spy

hindustantimes

कमांडर करण सक्सेना

अमित खान

मेरे हाथ मेरे हथियार

वह जानलेवा जंग – जो कमांडर करण सक्सेना और दुनिया के बेहद खतरनाक 12 योद्धाओं के बीच बर्मा के खौफनाक जंगलों में लड़ी गयी।

अमित खान

“करण राईट डिसीज़न लेने में बिलीव नहीं करता। वह पहले डिसीज़न लेता है, फिर उसे राईट करता है । यही करण की सबसे बड़ी खासियत है । करण फाउंडर है, फॉलोवर नहीं।” -गंगाधर महंत, रॉ चीफ

वह दुनिया के बेहद खतरनाक **12** योद्धा थे , जो बर्मा के खौफनाक जंगल में एक ख़ास षड्यंत्र के तहत जमा हुए थे ।
आखिर क्या उद्देश्य था उनका ?
क्यों जमा हुए थे वह ?

मेरे हाथ मेरे हथियार

"हम इस समय बयालीस डिग्री पर बर्मा के खौफनाक जंगलों की तरफ उड़ान भर रहे हैं चीफ !"

"गुड ! तुम बिल्कुल सही दिशा में आगे बढ़ रहे हो करण !" गंगाधर महन्त गरमजोशी के साथ बोले- "पांच मिनट बाद तुमने उत्तर पश्चिमी दिशा में ही पैंतालीस डिग्री पर आगे बढ़ना है।"

"ओके !"

"याद रहे, यह तुम्हारी जिंदगी का सबसे खतरनाक मिशन है करण ! इस मिशन में तुम्हारी जिंदगी दांव पर लगी है।"

"मैं जानता हूँ चीफ।" कमाण्डर कमाण्डर करण सक्सेना कॉकपिट में पायलेट के बराबर वाली सीट पर ही बैठा था।"

"वह बारह योद्धा है।" गंगाधर महन्त पुनः बोले- "बारह बहुत खतरनाक योद्धा-जिनसे तुम्हारी मुठभेड़ होनी है और जो बर्मा के खौफनाक जंगल में मौजूद हैं।"

एअर इण्डिया का वह थ्री सीटर विमान बादलों को चीरता हुआ तूफानी स्पीड से उड़ा जा रहा था।

"यूं तो उन सभी बारह यौद्धाओं के बारे में तुम्हें बताया जा चुका है करण।" गंगाधर महन्त बोले- "परन्तु फिर भी उन सभी योद्धाओं के बारे में और इस पूरे मिशन के बारे में, मैं तुम्हें छोटी सी जानकारी एक बार फिर दे देना चाहता हूँ ।"

"मैं सुन रहा हूँ चीफ।"

"दरअसल वह सभी बारह योद्धा अलग-अलग युद्ध-कलाओं के महारथी हैं और बहुत खतरनाक हैं। इसके अलावा वो बारह योद्धा दो ग्रुप में बंटे हुए हैं।"

"दो ग्रुप !

"हाँ - पहला सपोर्ट ग्रुप ! दूसरा असॉल्ट ग्रुप।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने दोनों ग्रुपों के नाम अपने दिमाग़ में स्थापित कर लिये।

सपोर्ट ग्रुप !

असाल्ट ग्रुप !

"पहले 'सपोर्ट ग्रुप' में भी छः योद्धा हैं और दूसरे 'असॉल्ट ग्रुप' में भी छः योद्धा ही हैं। सबसे पहले मैं तुम्हें 'सपोर्ट ग्रुप' के छः योद्धाओं के नाम बताता हूँ ।"

फिर गंगाधर महन्त ने 'सपोर्ट ग्रुप' के छः योद्धाओं के नाम कमाण्डर करण सक्सेना को बताये।

मास्टर (हंसिये से क़त्ल करने का शौकीन)

हवाम (पेशेवर हत्यारा)

अबूनिदाल (वह अपनी 'स्नाइपर राइफल' से आदमी की गर्दन के एक ऐसे खास प्वॉइंट पर गोली मारता है कि गर्दन कटकर हवा में उछल जाती है)

माइक (दुर्दांत आतंकवादी)

रोनी (समुद्री लुटेरा)

"इन सबके अलावा योद्धाओं की इस टीम का सबसे आ़खिरी मैम्बर है- जैक क्रेमर !" गंगाधर महन्त बोले।

"जैक क्रेमर !"

"हाँ, जैक क्रेमर ही इन सबका लीडर है। यही सारे फ़साद की जड़ है।"

"यानि जैक क्रेमर ने ही दुनिया के इन खतरनाक योद्धाओं को एक साथ बर्मा के जंगल में जमा किया है ?" कमाण्डर करण सक्सेना चौंका।

"बिल्कुल। जैक क्रेमर ने ही उन सबको जमा किया है। जैक क्रेमर ने ही इस सारे षड्यंत्र की आधारशिला रखी है।"

"ओह !"

"दरअसल जैक क्रेमर एक अमरीकन है और जहर का विशेषज्ञ होने के साथ-साथ बहुत बुद्धिमान भी है। कभी वो अमरीका में नारकाटिक्स किंग हुआ करता था और सिर्फ अपने दिमाग की बदौलत उसने कई करोड़ डॉलर कमाये। फिर जब उस दौलत से भी उसे संतुष्टि न मिली, तो बर्मा के जंगल में आकर उसने खास षड्यंत्र के तहत इन सब योद्धाओं को जमा कर लिया।"

"खास षड्यंत्र क्या था ?"

"वहाँ बर्मा के जंगल में ऊपरी तौर पर दिखावे के लिए तो यह तमाम योद्धा नारकाटिक्स का धंधा करते हैं, लेकिन वास्तव में इनका मकसद एक दिन पूरे बर्मा पर काबिज हो जाना है। दरअसल बर्मा में कीमती धातुओं की बड़ी-बड़ी खदानें हैं और यह सब बारह योद्धा एक दिन उन सब खदानों के मालिक बन जाना चाहते हैं। बर्मा सरकार को भी जैक क्रेमर और उसके साथी योद्धाओं के इन नापाक इरादों की जानकारी है। परन्तु वो उनके खिलाफ़ कुछ नहीं कर पा रही है। उन योद्धाओं ने बर्मा के जंगल में अपने पैर बड़ी मजबूती के साथ जमा लिये हैं और सबसे बड़ी बात ये है कि अमरीकन गवर्नमेंट ने भी इस बारे में हिन्दुस्तान से मदद मांगी थी और इसीलिए अब बर्मा को इन बारह योद्धाओं के ख़ौफ से आजादी दिलाने के लिए तुम्हें भेजा जा रहा है।"

कमाण्डर शांत था।

बिल्कुल शांत !

ट्रांसमीटर पर गंगाधर महन्त की आवाज लगातार सुनाई दे रही थी।

"हमारा यह मिशन जहाँ बेहद खतरनाक है करण, वहीं बेहद सीक्रेट भी है।" गंगाधर महन्त पुनः बड़ी गरमजोशी के साथ बोले- "जिस तरह तुम्हें बर्मा सरकार की मदद के लिए भेजा रहा है, दरअसल यह अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के विरुद्ध है। इससे उस एस्पियानेज कानून का उल्लंघन होता है, जिससे दुनिया के सारे देश बंधे हैं। इसीलिए अगर तुम्हें कुछ हुआ, तो यह बहुत खतरनाक होगा। हम यह भी कबूल नहीं कर सकेंगे कि तुम कमाण्डर करण सक्सेना हो और तुम्हें भारत सरकार ने किसी मुहिम पर बर्मा भेजा था।"

"मैं सारे हालात अच्छी तरह समझ रहा हूँ चीफ ! और कुछ ?"

"नहीं, बाकी मुझे कुछ नहीं कहना। बाकी तो मैं सिर्फ यही कहूँगा कि अपना ख्याल रखना माई ब्वॉय। कभी-कभी सरकार के कहने पर मुझे कुछ ऐसे फैसले भी लेने पड़ते हैं, जो मैं नहीं लेना चाहता।"

कमाण्डर करण सक्सेना को उस क्षण गंगाधर महन्त की आवाज साफ-साफ कंपकंपाती महसूस हुई।

वो रूंधी हुई आवाज़ थी।

वो जानता था, उसके चीफ उससे कितना प्यार करते हैं। अगर सचमुच उनके बस में होता, तो वह उस जानलेवा मिशन पर उसे कभी न भेजते।

जबकि कमाण्डर कमाण्डर उस मिशन पर जाते हुए खुद को रोमांचित अनुभव कर रहा था।

"आप बेफिक्र रहें चीफ।" कमाण्डर करण सक्सेना की आवाज में विश्वास का पुट था- "मुझे कुछ नहीं

होगा। मैं बर्मा के खौफनाक जंगलों में भी जीतकर लौटूंगा। एक बार फिर कमाण्डर करण सक्सेना को कामयाबी हासिल होगी।"

"काश ऐसा ही हो! इस समय तुम्हारा हवाई जहाज किस दिशा में उड़ रहा है?"

"वह उत्तर-पश्चिम में पचास डिग्री अक्षांश पर है।" कमाण्डर नेवीगेटर की सूइयां देखता हुआ बोला- "हम बस बर्मा के घने जंगलों में पहुँचने ही वाले हैं।"

"विश यू ऑल द बैस्ट माई ब्वॉय।"

"थैंक्यू!"

□□□

कहने की आवश्यकता नहीं, कमाण्डर करण सक्सेना को इस बार सीधे मौत के मुंह में धकेला जा रहा था।

कमाण्डर, हर बार मौत के पंजे से पंजा लड़ाना जिसका शौक बन चुका है। रॉ (रिसर्च एंड एनलायसिस विंग) का वह जांबाज जासूस, जिसके नाममात्र से ही आज दुनिया के बड़े-बड़े अपराधी और दुश्मन देश के जासूस थर्रा उठते हैं। छः फुट से भी निकलता हुआ क़द। गोरा-चिट्टा रंग। काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहनने का शौकीन है।

एक कोल्ट रिवॉल्वर वह हमेशा अपने ओवरकोट की जेब में रखता है, जबकि दूसरी कोल्ट रिवॉल्वर अपने काले गोल क्लेंसी हैट की ग्लिप में रखता है। हैट की ग्लिप में मौजूद रिवॉल्वर किसी खतरनाक जगह फंसने पर उसके काफी काम आती है। वह अपने दिमाग की मांस-पेशियों को जरा भी हरकत देता है, तो फौरन हैट की ग्लिप में फंसी रिवॉल्वर निकलकर खुद-ब-खुद उसके हाथ में आ जाती है। गोली चलाने से पूर्व वह रिवॉल्वर के साथ 'जगलरी' भी करता है। रिवॉल्वर उसकी उंगलियों की गिर्द फिरकनी की तरह घूमती है।

"कमाण्डर!" हवाई जहाज का पायलेट बड़ी सहानुभूतिपूर्ण नज़रों से कमाण्डर की तरफ देखता हुआ बोला- "क्या आपको ऐसा नहीं लग रहा कि भारत सरकार ने इस बार एक बहुत गलत कदम उठाया है?"

"क्यों?"

"आखिर आपको जानबूझकर मौत के एक ऐसे अंधे कुएं में धकेला जा रहा है, जहाँ से आपके जीवित वापस लौटने का कोई चांस नहीं है।"

कमाण्डर मुस्कराया।

"मैं मानता हूँ, इस बार मिशन कुछ ज़्यादा खतरनाक है।" कमाण्डर बोला-"परन्तु मैं इतना नाउम्मीद नहीं हूँ, जो अभी से मरने की बात सोचने लगूं।"

"लेकिन वो दुनिया के सबसे ज़्यादा खतरनाक बारह योद्धा हैं कमाण्डर!" पायलेट शुष्क स्वर में बोला।

"वह न सिर्फ खतरनाक बारह योद्धा है बल्कि मैं यह भी जानता हूँ कि वह बर्मा के खौफनाक जंगल में अपनी पूरी फौज के साथ मौजूद हैं।"

"फिर भी आप नाउम्मीद नहीं है।"

"हाँ।"

"जबकि आप वहाँ बिल्कुल अकेले होंगे कमाण्डर!" पायलेट के चेहरे पर हैरानी के भाव पैदा हुए- "आपकी कोई मदद करने वाला भी वहाँ नहीं है। फिर आप इतने खतरनाक योद्धाओं का अकेले मुकाबला कैसे कर पायेंगे?"

"उनका मुकाबला करने के लिए कुछ न कुछ तो मैं ज़रूर करूँगा।" कमाण्डर मुस्कुराया- "हो सकता है, बर्मा के जंगल में घुसते ही वह सब ख़ुद-ब-ख़ुद मेरा शिकार बन जायें।"

"आप शायद मजाक कर रहे हैं कमाण्डर!"

"कभी-कभी मजाक करना भी सेहत के लिए काफी लाभदायक होता है यंगमैन!"

पायलेट के चेहरे पर हैरानी के भाव बढ़ गये।

उसे महसूस हुआ, कमाण्डर करण सक्सेना सचमुच हाड़-मांस का बना इंसान नहीं है।

वह फौलाद था।

फौलाद !

कोई फौलाद ही ऐसे हालात में भी मुस्करा सकता था।

बर्मा की सीमा अब शुरू हो चुकी थी, नीचे दूर-दूर तक फैले वो ख़तरनाक जंगल नजर आ रहे थे, जो अपनी भयानकता के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है।

"आपसे विदाई का समय आ चुका है कमाण्डर !"

"ठीक कह रहे हो तुम।"

कमाण्डर फौरन सब-पायलेट वाली सीट छोड़कर खड़ा हो गया और लगभग दौड़ता हुआ कॉकपिट से बाहर निकला।

उस पूरे थ्री सीटर विमान में उन दोनों के सिवाय कोई न था।

वह विमान सिर्फ कमाण्डर को ही बर्मा के खौफनाक जंगल में छोड़ने के लिए आया था।

वहीं एक हैवरसेक बैग (फौजियों का पीठ पर बांधने वाला पिट्ठू) रखा था।

हैवरसेक बैग- जिसमें कमाण्डर का काफी सारा सामान था।

कमाण्डर ने फौरन उस हैवरसेक बैग को उठाकर अपनी पीठ पर कस लिया तथा फिर पैराशूट को बाँधना शुरू किया।

"कमाण्डर, क्या आप मेरी आवाज सुन रहे हैं ?" तभी विमान के एक लाउडस्पीकर पर पायलेट की आवाज उभरी।

"हाँ , मैं सुन रहा हूँ ।" कमाण्डर ने वहीं दीवार पर लगे एक माइक में कहा।

"क्या आप नीचे कूदने के लिए तैयार हैं ?"

"यस, आई एम रेडी !" कमाण्डर जल्दी-जल्दी पैराशूट को बांधता हुआ बोला।

"मे यू ऑलवेज बी लकी कमाण्डर !"

"थैंक्स !"

उसी क्षण उस थ्री सीटर विमान की स्पीड कम होने लगी।

अब विमान बर्मा के ख़ौफनाक जंगल के चारों तरफ मंडरा रहा था।

तब तक कमाण्डर ने भी पैराशूट अच्छी तरह कसकर बांध लिया।

पैराशूट बांधते ही उसने खिड़की खोल दी। तत्काल हवा का एक तेज झोंका उसके शरीर से आकर टकराया।

हवा बहुत ठण्डी थी।

वह सुइयों की तरह उसके शरीर में चुभी।

"गुड बाय कमाण्डर !" पायलेट की आवाज़ लाउडस्पीकर पर फिर उभरी।

"गुड बॉय।"

कमाण्डर ने उड़ते हुए विमान से नीचे छलांग लगा दी।

□□□

वह किसी भारी-भरकम सामान की तरह बड़ी तेजी के साथ नीचे गिरता चला गया था।

हवा उसे खदेड़े दे रही थी।

तभी पैराशूट खुल गया।

पैराशूट खुलते ही कमाण्डर के शरीर को जोरदार झटका लगा।

अब पैराशूट की बड़ी छतरी ऊपर की तरफ बन गयी और उसका शरीर नीचे लटक गया।

उसके गिरने में अब संतुलन आ गया था।

कमाण्डर करण सक्सेना को एक ही खतरा था, वह किसी पेड़ पर न जा गिरे।

बहरहाल ऐसा कुछ न हुआ।

वह धम्म से जंगल की हल्की दलदली जमीन पर जाकर गिरा और फिर पैराशूट बांधे-बांधे काफी दूर तक दौड़ता चला गया।

वह बिल्कुल सुरक्षित रूप से नीचे उतर आया था।
सिर्फ घुटने में हल्की खरोंचें आयीं।
तब रात में दो बज रहे थे और चारों तरफ घोर अंधकार था।
नीचे उतरते ही उसने सबसे पहले पैराशूट अपने जिस्म से अलग किया। फिर उसके अंदर भरी हवा निकालकर उसका बंडल बनाया और उसके बाद उसमें आग लगा दी।
पैराशूट धूं-धूं करके जल उठा।
पलक झपकते ही वो राख हो चुका था।
"हैलो-हैलो !" दूसरी तरफ से ट्रांसमीटर सैट पर निरंतर गंगाधर महन्त की आवाजें आ रही थीं- "तुम इस वक्त कहाँ हो करण ? क्या तुम सुरक्षित रूप से नीचे उतर चुके हो ?"
सबसे बड़ी बात ये है कि गंगाधर महन्त अब एक ऐसी कोड भाषा में बोल रहे थे, जिसे इस पूरी दुनिया में सिर्फ कमाण्डर करण सक्सेना ही समझ सकता था।
उस मिशन के लिए खासतौर पर वो कोड भाषा ईजाद की गयी थी।
"करण, तुम मेरी आवाज सुन रहे हो या नहीं ?" गंगाधर महन्त की ट्रांसमीटर सैट पर पुनः आवाज गूंजी- "तुम सुरक्षित रूप से नीचे उतर चुके हो या नहीं ?"
"यस चीफ !" कमाण्डर करण सक्सेना ने भी बड़े तत्पर अंदाज में उसी कोड भाषा में जवाब दिया- "मैं बिल्कुल सुरक्षित बर्मा के जंगल में पहुँच चुका हूँ और मैं महसूस करता हूँ कि बहुत जल्द मेरा अब दुश्मन से मुकाबला होगा।"
"ओह !" दूसरी तरफ गहरी खामोशी छा गयी।
"दुश्मन बेहद ताकतवर है चीफ !" कमाण्डर पुनः बोला- "उसके पास ऐसे इलैक्ट्रानिक गैजेट भी हो सकते हैं, जो वह ट्रांसमीटर पर होने वाली हमारी इस बातचीत की फ्रीक्वेंसी को कैच कर लें। इसलिये इस पल के बाद हमारे बीच ट्रांसमीटर पर भी कोई बातचीत नहीं होगी।"
"ओके करण ! लेकिन अगर तुम किसी बड़ी मुश्किल में फंस जाओ, तो मुझे जरूर इन्फार्मेशन देना।"
"जरुर चीफ !"
"गॉड ब्लैस यू माई सन एण्ड गुड नाइट।"
"गुड नाइट !"
सम्बन्ध विच्छेद हो गया।
कमाण्डर ने ट्रांसमीटर का हैडफोन अपने सिर से उतारा और पूरा ट्रांसमीटर सैट अपने ओवरकोट की गुप्त जेब में रख लिया।
उसने सितारों टंके काले आसमान की तरफ देखा।
उस थ्री सीटर विमान का अब वहाँ दूर-दूर तक कहीं कुछ पता नहीं था, जो उसे वहाँ छोड़ गया था।
जंगल में ठण्डी-ठण्डी हवा अभी भी चल रही थी।
दूर कहीं से किसी सियार के रोने की आवाज आ रही थी, जिसने जंगल के उस वातावरण को और भी ज्यादा खौफनाक बना दिया था।
सचमुच बर्मा का वह जंगल बड़ा खतरनाक था। दुनिया के सबसे बड़े 'अनाकोंडा' अजगर अगर वहाँ थे, तो उन बारह योद्धाओं ने अफ्रीका के माम्बा सांप भी वहाँ लाकर छोड़ रखे थे। लाल चींटियों के तो वहाँ झुंड के झुंड थे और अफ्रीकन गुरिल्लों की भी एक बड़ी प्रजाति उस जंगल में मौजूद थी।
कमाण्डर को इस बार काफी तैयारियों के साथ उस मिशन पर भेजा गया था।
उसकी चुस्त पेंट पर दोनों साइडों में स्प्रिंग ब्लेड बंधे थे।
स्प्रिंग ब्लेड खास तरह के चाकू थे, जिन्हें उस मिशन के लिए स्पेशल तौर पर तैयार किया गया था।
उन स्प्रिंग ब्लेड के दोनों तरफ तेजधार थीं। उनका फल कोई नौ इंच लम्बा था और उनकी मूठ के पास स्प्रिंग कुछ इस तरह से सैट की गई थी कि जब उन स्प्रिंग ब्लेडों से किसी पर हमला किया जाता, तो उस परिस्थिति में स्प्रिंग ब्लेडों की वेलोसिटी दोगुनी हो जाती और वह दुश्मन के छक्के छुटा डालते।
इसके अलावा कमाण्डर के हैवरसेक बैंग में भी काफी सारा सामान था।
जैसे दो कम्बल !
पानी की कैन !

काफी सारी खाद्य सामग्री !
फर्स्ट-एड-बॉक्स !
हैंडग्रेनेड बम !
प्वाइंट अड़तीस कैलीबर की रिवॉल्वर में चलाने के लिए गोलियों के कई पैकिट।
कुल मिलाकर कमाण्डर करण सक्सेना के पास इतना साज-सामान था, जो वह कई दिन उस खतरनाक जंगल में गुजार सके।

□□□
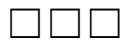
उधर !
भारत में समुद्रतट के किनारे बसा शहर मुम्बई !
और मुम्बई में भी एक कई मंजिला ऊंचा रॉ का वह विशालतम हैडक्वार्टर, जहाँ इस समय अफरा-तफरी जैसा माहौल था।
आधी रात के समय भी पूरे हैडक्वार्टर की लाइटें जली हुई थीं।
वह फिल्म-रूम था। जहाँ इस समय गंगाधर महन्त और काफी सारे रॉ एजेंट बैठे हुए थे। सामने पैंतीस मिलीमीटर की स्क्रीन जगमगा रही थी। इस वक्त फिल्म रूम में जितने भी व्यक्ति मौजूद थे, सबकी आँखें आश्चर्य और दहशत की वजह से फटी हुई थीं। उस वक्त स्क्रीन पर एअर इण्डिया का वो थ्री सीटर विमान मंडराता हुआ नजर आ रहा था। जो कमाण्डर को छोड़ने बर्मा के जंगल में गया था।
तभी उस विमान का दरवाजा खुलता हुआ सभी ने देखा और फिर दरवाजे पर पैराशूट बांधे कमाण्डर करण सक्सेना नजर आया।
कमाण्डर की पीठ पर हैवरसेक बैग बंधा था।
चेहरे पर दृढ़ता के भाव !
क्या मजाल जो वह जरा भी डरा हुआ हो।
फिर उन सबके देखते-देखते उसने उड़ते हुए हवाई जहाज में से नीचे जंगल में छलांग लगा दी।
उसके बाद वो नजरों के सामने से ओंझल होता चला गया।
"हैलो-हैलो !" गंगाधर महन्त अब ट्रांसमीटर सैट पर जोर-जोर से चिल्लाने लगे- "तुम इस वक्त कहाँ हो करण ? क्या तुम सुरक्षित रूप से नीचे उतर चुके हो ?"
शीघ्र ही उन्हें कमाण्डर की आवाज ट्रांसमीटर पर सुनाई दी।
उनके बीच बातें हुई।
और फिर कमाण्डर ने यह कहकर वो बातचीत खत्म कर दी कि अब उस पूरे मिशन के दौरान उनके बीच कोई वार्तालाप नहीं होगा।
"हे भगवान, कितना जांबाज है यह लड़का !" गंगाधर महन्त आश्चर्यमिश्रित स्वर में बोले- "अब सारे विश्व से इसका सम्पर्क कट चुका है। अब कोई इसकी मदद नहीं कर सकता। अब बर्मा के खौफनाक जंगलों में यह बिल्कुल अकेला है।"
"लेकिन कमाण्डर ने यह क्यों कहा है।" तभी रचना मुखर्जी नाम की एक रॉ एजेंट बोली- "कि वह पूरे मिशन के दौरान आपसे ट्रांसमीटर पर भी बातचीत नहीं करेंगे?"
"क्योंकि कमाण्डर जानता है कि उन बारह योद्धाओं के पास मॉडर्न गैजेट हैं।" गंगाधर महन्त की आवाज भावुक हो उठी- "अगर उनमें से कोई भी योद्धा ट्रांसमीटर पर होने वाली हमारी उन बातचीत को सुन लेगा, तो उसी पल हमारा यह मिशन फेल हो जायेगा। उसी पल उसके ऊपर संकट के बादल मंडराने लगेंगे। इसीलिए उस जांबाज लड़के ने इतनी बड़ी मुश्किल में फंसने के बावजूद भी उस रास्ते को ही बंद कर दिया है, जिससे खतरा पैदा हो।"
"लेकिन कमांडर का यह डिसीज़न गलत भी हो सकता है चीफ !"
"तुम शायद नहीं जानतीं, करण राईट डिसीज़न लेने में बिलीव नहीं करता। वह पहले डिसीज़न लेता है, फिर उसे राईट करता है। यही करण की सबसे बड़ी खासियत है। करण फाउंडर है, फॉलोवर नहीं।"
रचना मुखर्जी की आँखों में आंसू छलछला आये।
जबकि गंगाधर महन्त ने बड़े जोश के साथ खड़े होकर स्क्रीन पर धुंधलाती कमाण्डर की तस्वीर को

जोरदार सैल्यूट मारा था।

"तुम सचमुच महान हो कमाण्डर, सचमुच महान हों। यह गंगाधर महन्त भी तुम्हारी बहादुरी के लिए तुम्हें सैल्यूट करता है।"

और!

भीगती चली गयी थीं गंगाधर महन्त की आँखें।

उस क्षण फिल्म रूम में बैठे तमाम रॉ एजेंटों की आँखें नम थीं।

वह सब उसकी बहादुरी से अभिभूत थे।

"काश!" रचना मुखर्जी ने गहरी सांस छोड़ी- "काश कमाण्डर के साथ मुझे भी इस मिशन पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होता। काश उनके साथ-साथ मैं भी अपनी जिंदगी का यह दांव खेल पाती।"

उसकी आवाज हसरत से भरी थी।

उसे अफसोस था, उसे यह मौका क्यों नहीं मिला।

□□□

बर्मा के खौफनाक जंगल, जहाँ की जमीन या तो बेहद रेतीली हुआ करती है या फिर हलकी दलदली।

इसके अलावा बर्मा के जंगलों की एक विशेषता और है- वहाँ तीन तरह के पेड़ पाये जाते हैं। बेहद ऊंचे, उससे नीचे और नीचे। इसीलिए सूरज की किरणें भी ढंग से जंगल की जमीन तक नहीं पहुँच पाती। वह पेड़ों की शाखों तथा घनी पत्तियों के बीच में ही उलझकर रह जाती हैं। बर्मा के उसी अद्भुत जंगल के बीच में उन बारह खतरनाक योद्धाओं का वो हैडक्वार्टर बना था, जहाँ से वह अपनी ड्रग्स की तथा दूसरी गतिविधियों को संचालित करते थे।

वह काफी विशालकाय हैडक्वार्टर था।

उस हैडक्वार्टर की सबसे बड़ी विशेषता ये थी कि उसकी निर्माण-पद्धति बर्मा के पुराने पेगोडाओं (बौद्ध मंदिरों) की याद ताजा कराती थी।

तभी हैडक्वार्टर में हलचल मची।

तेज हलचल।

"य... यह क्या।" हैडक्वार्टर के रेडियो रूम में बैठा एक गार्ड चौंका-"लगता है, राडार कोई फ्रीक्वेंसी कैच कर रहा है। जरूर जंगल में कहीं कुछ गड़बड़ है।"

गार्ड रेडियो बोर्ड पर झुककर जल्दी-जल्दी कुछ तार इधर से उधर जोड़ने लगा और स्विच दबाने लगा।

"लेकिन कैसी गड़बड़ हो सकती है?" वहीं बैठे दूसरे गार्ड ने सवाल किया।

"मालूम नहीं, कैसी गड़बड़ है। लेकिन कुछ न कुछ गड़बड़ तो जरूर है, ऐसा मालूम होता है- जैसे जंगल में कोई ट्रांसमीटर पर बात कर रहा है।"

"ट्रांसमीटर!"

"हाँ।"

उसी क्षण रेडियो बोर्ड पर कमाण्डर करण सक्सेना और गंगाधर महन्त की आवाजें सुनायी देनी शुरू हो गयीं।

लेकिन वह क्योंकि कोड भाषा में बात कर रहे थे, इसलिए कोई भी बात उनके समझ में नहीं आयी।

"लगता है, किसी सीक्रेट भाषा में कोई संदेश प्रसारित किया जा रहा है।"

"जरूर कोई दुश्मन जंगल में घुस आया है।" दूसरा गार्ड बोला।

"मुझे फौरन जैक क्रेमर साहब को इस बारे में सूचना देनी चाहिये।"

□□□

फ्रीक्वेंसी कैच करते ही रेडियो रूम में भूचाल सा आ गया था।

तेज भूचाल।

गार्ड टेलीफोन की तरफ झपटा और उसने जल्दी-जल्दी कोई नम्बर डायल किया।

"हैलो ! हैलो ! !" वह रिसीवर पर जोर जोर से चिल्लाने लगा।
"यस !" तुरंत दूसरी तरफ से आवाज आयी।
"मैं रेडियो रूम का ऑपरेटर बोल रहा हूँ ।" गार्ड शीघ्रतापूर्वक बोला- "मेरी फौरन जैक क्रेमर साहब से बात कराओ।"
"जैक क्रेमर साहब !"
"हाँ ।"
"तुम शायद पागल हो गये हो।" दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति गुर्राया- "तुम जानते हो, इस वक्त क्या बज रहा है ? रात के दो बज रहे हैं। इस समय जैक क्रेमर साहब गहरी नींद में होंगे।"
"बेवकूफ, मैं भी जानता हूँ कि इस वक्त क्या बजा है।" गार्ड झुंझला उठा- "लेकिन मेरी फौरन जैक क्रेमर साहब से बात कराओ। क्विकली ! लगता है, कोई दुश्मन हमारे इलाके में घुस आया है। अगर तुरंत यह खबर जैक क्रेमर साहब को न दी गयी, तो वह तुम्हें गोली मार देंगे।"
दूसरी तरफ मौजूद व्यक्ति हड़बड़ा उठा।
"जस्ट ए मिनट होल्ड ऑन प्लीज।" वह बोला- "मैं अभी जैक क्रेमर साहब से तुम्हारी बात कराता हूँ ।"
"जल्दी !"
"सिर्फ दो मिनट रूको।"
फिर कुछ देर के लिए टेलीफोन लाइन पर खामोशी छा गयी।
गहरी खामोशी !
उस क्षण रेडियो रूम में मौजूद गार्ड को एक-एक सेकेण्ड गुजारना काफी भारी पड़ रहा था।
थोड़ी देर बाद ही एक उनींदी सी आवाज रिसीवर पर उभरी। वह जैक क्रेमर की आवाज थी। ऐसा लगता था, जैक क्रेमर उस वक्त गहरी नींद सो रहा था, जब उसे जगाया गया था।
"हैलो !"
"सर !" गार्ड तत्परतापूर्वक बोला- "मैं रेडियो रूम का ऑपरेटर बोल रहा हूँ ।"
"क्या आफत आ गयी है, जो इतनी रात को मुझे सोते से जगाया गया है ?"
"आफत ही आ गयी लगती है सर ! मुझे महसूस हो रहा है, हमारा कोई दुश्मन जंगल में घुस आया है ।"
"यह क्या कह रहे हो तुम ?" जैक क्रेमर भी चौंका।
"मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ सर !"
"लेकिन तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ ?"
"मैंने रेडियो रूम में बोर्ड पर अभी-अभी कुछ फ्रीक्वेंसीज कैच की हैं। वह किसी ट्रांसमीटर सैट की फ्रीक्वेंसीज हैं। ऐसा मालूम होता है, हमारे दुश्मन ने जंगल में घुसने के बाद अपने हैडक्वार्टर को कोई संदेश दिया है। संदेश बहुत छोटा था। यह भी इत्तेफाक ही रहा, जो वह संदेश रेडियो बोर्ड पर कैच हो गया।"
"संदेश क्या था ?"
"यह नहीं मालूम हो सका।"
"क्यों ?"
"क्योंकि संदेश किसी गुप्त भाषा में था।"
"ओह !" जैक क्रेमर अब साफ-साफ विचलित नजर आने लगा- "क्या तुमने वो संदेश रिकार्ड किया है ?"
"यस सर !" गार्ड बोला- "मैंने तभी रिकॉर्डिंग वाला स्विच दबा दिया था। मैं समझता हूँ , वो संदेश जरूर रिकार्ड हो गया होगा।"
"ठीक है, तुम वहीं रूको।" जैक क्रेमर बोला- "मैं अभी रेडियो रूम में आता हूँ ।"
"ओके सर।"
गार्ड ने टेलीफोन का रिसीवर रख दिया।
उस बियाबान जंगल में उन बारह योद्धाओं ने सारी सुविधायें जुटा रखी थीं।
अपना टेलीफोन एक्सचेंज था।

अपनी राडार प्रणाली थी।

यहाँ तक कि उन्होंने जंगल में नीचे बड़ी-बड़ी सुरंगे भी खोदी हुई थीं, जो जंगल में इधर-से-उधर आने जाने का गुप्त रास्ता थीं।

□□□
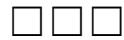
जैक क्रेमर के माथे पर सिलवटें पड़ गयीं।

गहरी सिलवटें !

वो अब साफ-साफ चिन्तित नजर आ रहा था।

नींद उसकी पूरी तरह उड़ चुकी थी।

उस वक्त जैक क्रेमर रेडियो रूम में बैठा था और उस रिकार्ड संदेश को कई मर्तबा सुन चुका था, जो उसके किसी दुश्मन ने जंगल में आने के बाद ट्रांसमीटर पर कहीं भेजा था।

जैक क्रेमर लगभग पचपन-छप्पन साल का बहुत तन्दुरूस्त देहयष्टि वाला अमरीकन था। इस उम्र में भी उसका शरीर गठा हुआ था और उसकी नजर गिद्ध की तरह तेज थी। उसके बाल सन की तरह सफेद थे, जो उसके व्यक्तित्व की ओर भी ज्यादा रौबदार बनाते थे और भी ज्यादा आकर्षक बनाते थे।

"क्या भाषा आपके कुछ समझ में आयी सर ?" गार्ड ने पूछा।

"नहीं, भाषा तो मेरे भी कुछ समझ में नहीं आयी हैं।" जैक क्रेमर बोला- "बस कुछ कोड वर्ड हैं, जिनमें संदेश जंगल से बाहर कहीं भेजा गया है। परन्तु इस संदेश से एक बात कन्फर्म हो चुकी है।"

"क्या ?"

"उस आदमी के इरादे नेक नहीं हैं, जो जंगल में दाखिल हुआ है। अगर उसके इरादे नेक होते, तो वह इस तरह की गुप्त भाषा का प्रयोग हर्गिज नहीं करता।"

"फिर तो हमें फौरन कुछ करना होगा।"

"चिन्ता मत करो।" जैक क्रेमर बोला- "उसके ट्रांसमीटर पर बात करने का ढंग बता रहा है, कि वह जंगल में अकेला है।"

"अकेला।"

"हाँ, अकेला ! और वह क्योंकि अकेला घुसा है, इसलिए वह हम सब बारह योद्धाओं तथा हमारी पूरी फौज का सामना नहीं कर पायेगा। अब इस जंगल में से उसकी सिर्फ लाश ही बाहर निकलनी है।"

"फिर भी हमें दुश्मन को इतना अधिक कमजोर नहीं समझना चाहिये सर !" गार्ड बोला- "जो आदमी अकेले ही जंगल में घुसने की हिम्मत दिखा सकता है, उसमें कुछ न कुछ खूबी तो जरूर होगी।"

"मैं जानता हूँ ।" जैक क्रेमर ने दांत किटकिटाये- "परंतु वह कितना ही हिम्मतवर क्यों न सही, बर्मा के इन खौफनाक जंगलों में घुसकर उसने अपनी मौत को दावत दे डाली है।"

□□□

वह जैक क्रेमर का शयन कक्ष था, जो किसी बड़े हॉल कमरे जैसा था।

जिस पर जैक क्रेमर बैठा था।

नजदीक ही आतिशदान में आग जल रही थीं, जिसकी तमतमाहट जैक क्रेमर के चेहरे पर फैली हुई थी। रात के पौने तीन बजे का समय था। जैक क्रेमर की स्थिति बता रही थी कि वह बेसब्री से किसी का इंतजार कर रहा है।

तभी बाहर गलियारे में कुछ कदमों की आहट उभरी।

कुछ लोग उसी तरफ चले आ रहे थे।

जैक क्रेमर चौंकन्ना हो उठा।

यही वो क्षण था, जब उसके शयन-कक्ष का दरवाजा खुला और दो गार्ड अंदर आ गये।

"क्या सूचना है ?"

"हूपर साहब आ रहे हैं।" उनमें से एक गार्ड बड़े तत्पर भाव से बोला- "वह गहरी नींद में थे, इसीलिए

उन्हें यहाँ आने में थोड़ा वक्त लग गया।"

गार्ड के अभी शब्द भी पूरे नहीं हुए थे कि तभी शयन-कक्ष का दरवाजा पुनः खुला और इस मर्तबा एक बड़े देवकाय डील-डौल वाले आदमी ने अंदर कदम रखा।

वह हूपर था।

पहला योद्धा !

हूपर की उम्र ज्यादा नहीं थी, वह मुश्किल से पैंतीस-छत्तीस साल का नौजवान था। वह भूटानी आदमी था और दुनिया का सबसे ज्यादा खतरनाक चाकूबाज समझा जाता था।

वह काले चमड़े की ड्रेस पहनता था।

हूपर की वह ड्रेस भी खास थी।

दरअसल चमड़े की उस ड्रेस में जगह-जगह इतने चाकू छिपे रहते थे, जिनका कोई अंदाजा भी न लगा सके।

कभी उस देवकाय डील-डौल वाले हूपर ने पूरे भूटान में तहलका मचा दिया था।

वहाँ उसने दर्जनों आदमियों को अपने चाकू से बेध डाला था।

जिनमें कई बड़े-बड़े उद्योगपतियों से लेकर फिल्म स्टार और लेखक तक थे।

यह सारी हत्यायें हूपर ने दौलत के लिए कीं।

उसने हर किसी को चाकू से बेधा।

दर्जनों हत्यायें करने के बाद हूपर का हौसला इतना ज्यादा बढ़ गया कि एक दिन उसने भूटान नरेश के कत्ल की सुपारी भी ले ली।

वही सुपारी लेनी हूपर को महंगी पड़ी।

वह भूटान नरेश को तो अपने धारदार चाकुओं से न बेध सका, अलबत्ता उसके इरादों की भनक भूटान की पुलिस को जरूर लग गयी और बस फौरन पुलिस तथा भूटान का इंटैलीजेंस ब्यूरो डिपार्टमेंट उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गया।

नतीजतन हूपर को वहाँ से भागना पड़ा और आज की तारीख में वह उन खतरनाक बारह यौद्धाओं के ग्रुप का एक मजबूत स्तम्भ बना हुआ था और ड्रग्स का व्यापक स्तर पर कारोबार करने के साथ-साथ पूरे बर्मा देश पर कब्जा करने की गतिविधियों संलिप्त था।

"आओ हूपर !"

हूपर को देखते ही जैक क्रेमर अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

हूपर बिल्कुल किसी मरखने हाथी की तरह चलता हुआ अंदर आया था। वह उस समय भी चमड़े की काली ड्रेस पहने था।

"हैलो सर !"

"हैलो !"

दोनों के हाथ गरमजोशी के साथ मिले।

जैक क्रेमर को तमाम यौद्धा 'सर' कहते थे।

वह उन सबका लीडर भी था और सबसे उम्र में बड़ा भी।

"बैठो हूपर !"

हूपर उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया।

"मैंने तुम्हें एक बेहद खास वजह से यहाँ बुलाया है।" जैक क्रेमर भी वापस अपनी कुर्सी पर बैठता हुआ बोला।

"किस वजह से ?"

"अभी-अभी मुझे सूचना प्राप्त हुई है कि जंगल में हमारा कोई दुश्मन घुस आया है। तुम्हें फौरन हरकत में आना होगा हूपर ! इससे पहले की वह इन जंगलों में हमारे खिलाफ किसी बड़े कारनामे को जन्म दें, तुमने उसे जिन्दा ही गिरफ्तार कर लेना है या फिर उसके जिस्म को अपने धारदार चाकुओं से बेध डालना है।"

"क्या वो अकेला है ?"

"हाँ , मालूम तो ऐसा ही होता है कि वो अकेला ही जंगल में घुसा है। परन्तु फिर भी तुमने अपनी

तरफ से पूरी तैयारी करके जाना हैं, ताकि अगर दुश्मनों की संख्या ज्यादा भी हो, तब भी वह न बच सकें। इस काम के लिये तुम जितने गार्ड ले जाना चाहो, ले जाओ।"

उस खबर को सुनकर हूपर की नींद पूरी तरह उड़ चुकी थी।

"क्या मुझे दिन निकलने का इंतजार नही करना चाहिये ?" हूपर बोला।

"नहीं।" जैक ने तुरन्त सख्ती से उसकी बात काटी- "जब दुश्मन सिर पर आ खड़ा हुआ हो, तब वक्त का इंतजार नहीं किया करते हूपर ! फौरन गार्ड लेकर जंगल में फैल जाओ और जितना जल्द-से-जल्द हो सके, दुश्मन को तलाश करो।"

"दुश्मन का कोई हुलिया, कोई तस्वीर, कोई नाम ?"

"दुश्मन के बारे में कैसी भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। उसकी आवाज सिर्फ रेडियो-बोर्ड पर सुनी गयी है, जब वह किसी को ट्रासमीटर पर कोई संदेश भेज रहा था। संदेश भी गुप्त भाषा में था।"

"यानि दुश्मन बेहद चालाक है।"

"चालाक भी और बहुत बहादुर भी।" जैक क्रमर बोला- "क्योंकि अगर वो बहादुर न होता, तो अकेला ही इतने बड़े मौत के मुंह में न कूद पड़ता।"

"ओके सर ! मैं अभी जंगल में उसके विरूद्ध जाल फैलाता हूँ।"

हूपर तुरन्त कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

□□□

जंगल में जैसे ही सुबह की प्रकाश रश्मियां फैलीं, कमाण्डर करण सक्सेना ने अपनी आखें खोल दीं।

उसने सारी रात एक पथरीली गुफा में गुजारी थी, जिसका दहाना उसने एक काफी बड़े पत्थर से बंद कर लिया था। इस वक्त कमाण्डर के घुटने में काफी तेज दर्द था। पेराशूट से गिरने पर जिसे वो मामूली खरोंच समझ रहा था, वह दरअसल गहरी चोट थी, जो उसके घुटने में लगी थी और जिसका अहसास उसे अब आकर हो रहा था।

कमाण्डर ने गुफा के दहाने पर रखा पत्थर हटाया और वो धीमी चाल से चलता हुआ बाहर निकला।

रोशनी अब चारों तरफ फैली थी। सामने उसे एक नदी नजर आयी, जो उसकी जानकारी के मुताबिक बर्मा की प्रसिद्ध इरावती नदी थी। कमाण्डर करण सक्सेना ने गुफा से बाहर आते ही अपने बायें हाथ को हल्का-सा जर्क दिया।

उसके हाथ में भी थोड़ी दुःखन थी, लेकिन घुटने में दर्द ज्यादा था।

'पहले मुझे अपने घुटने पर कोई दवाई लगानी चाहिये।" कमाण्डर होंठों-ही-होंठों में बुदबुदाया- "परन्तु उससे भी पहले मेरे लिये एक दूसरा काम करना ज्यादा जरूरी है।"

कमाण्डर अब वहीं नदी के किनारे हरी-हरी घास पर ध्यान की मुद्रा में बैठ गया।

पिछले काफी वर्षों से एक बेहद खतरनाक जीवन जीते रहने के कारण और दुश्मनों से चौकस रहने की वजह से कमाण्डर की छठी इन्द्री काफी विकसित हो चुकी थी। वह खतरे को तो मानो मीलों दूर से भांप लेता था।

ध्यान की मुद्रा में बैठते ही कमाण्डर ने अपने नथुने सिकौड़ लिये और वह अपने आसपास के वातावरण में फैली गंध लेने का प्रयास करने लगा।

"ऐसा अहसास हो रहा है।" काफी देर तक गंध लेने के बाद वो पुनः बुदबुदाया- "जैसे यहाँ से कोई तीन सौ मील दूर उत्तर-पश्चिम में साठ डिग्री ऐंगिल पर कुछ लोग हैं, पता नहीं वह दोस्त हैं या दुश्मन ! लेकिन हवा में ऐसी गंध आ रही है, जैसे वह सुबह का नाश्ता बना रहे हों।"

कमाण्डर करण सक्सेना काफी देर तक और इधर-उधर की गंध लेने का प्रयास करता रहा।

फिर उसने अपनी आंखे खोल दीं।

स्नायु तन्त्र भी ढीले छोड़ दिये।

अगर वहा से तीन सौ मीटर दूर उसके दुश्मन मौजूद थे, तो उनसे उसे टक्कर लेनी पड़ेगी।

परन्तु उससे पहले अपने आपको चाक-चौबंद करना भी ज्यादा जरूरी था।

करण सक्सेना ने एक-एक करके अपने कपड़े उतारने शुरू किये, शीघ्र ही वो सिर्फ एक अण्डरवियर में

खड़ा था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने घुटने को देखा, वहाँ काफी सारा खून जमा हुआ था और घुटने को छूते ही दर्द होता था।

"लगता है कि एक-आध इंजेक्शन भी लेना होगा।"

फिर उसने अपने हैवरसेक बैग में से फर्स्ट-एड के सामान की पूरी किट निकाली।

उसके बाद उसने दर्द कम करने के दो इंजेक्शन लिये।

घुटने पर दवाई लगायी, उपर से रूई का फाहा रखा और चौड़ी टेप चिपका ली।

कहने की आवश्यकता नहीं, जिस तरह हर जासूस को मैडिकल की थोड़ी-बहुत ट्रेनिंग हासिल होती है। वैसी ही ट्रेनिंग कमाण्डर करण सक्सेना को भी हासिल थी।

"अब थोड़ी-बहुत देर में घुटने का दर्द कम हो जाना चाहिये।" कमाण्डर ने घुटने पर चिपके टेप को थोड़ा और कसा।

सचमुच वह मिशन कई मायनों में खतरनाक था। जैसे कमाण्डर को इस बार किसी की मदद भी हासिल नहीं थी, जो अक्सर हर मिशन के दौरान उसे हासिल होती है।

इस बार तो वह अकेला था।

तन्हा!

वो भी इतने खौफनाक जंगल में।

कमाण्डर ने भागते हुए नदी में जम्प लगा दी और फिर वह अपने शरीर को अच्छी तरह मल-मलकर नहाता रहा। नदी में जम्प लगाने से पहले कमाण्डर ने एक महत्वपूर्ण कार्य और किया था।

उसने अपने पूरे शरीर पर वीटा एक्स स्प्रेन नाम का एक गुलाबी लोशन लगा लिया था। वह गुलाबी लोशन ऐसा था, जिसे शरीर पर मलने के बाद अगर पानी में विष भी मिला हुआ हो, तो उस विष का भी कैसा कोई असर शरीर पर नहीं पड़ता था।

खूब अच्छी तरह मल-मलकर नहाने के बाद कमाण्डर ने स्वयं को तरो-ताजा अनुभव किया।

तब तक इंजेक्शन का असर भी दिखाई पड़ने लगा था। घुटने में अब काफी कम दर्द था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने सारे कपड़े दोबारा पहने।

फिर रिवाल्वर चैक किये।

स्प्रिंग ब्लेड चैक किये।

हैवरसेक बैग चैक किया।

सारा सामान अपनी जगह दुरूस्त था।

थोड़ी देर बाद ही कमाण्डर पूरी तरह चाक-चौबंद खड़ा था।

"माई ब्वाय।" उसे गंगाधर महन्त के शब्द याद आये, जो मिशन पर रवाना होने से पहले उन्होंने कमाण्डर से कहे थे- "इस मिशन में तुम्हारे मरने के चांस निन्यानवे प्रतिशत हैं और बचने के चांस सिर्फ एक प्रतिशत हैं! यूँ समझो-हिन्दुस्तान के सबसे होनहार सपूत की जिंदगी को हम लोग जानबूझकर दांव पर लगा रहे हैं।"

मिशन पर रवाना होने से पहले माननीय प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति से भी उसकी मुलाकात हुई थी।

वह बहुत भावुक क्षण थे।

जज्बातों से भरे हुए।

देश की उन दोनों सर्वोच्च ताकतों ने कमाण्डर को अपने गले से लगा लिया था।

"कमाण्डर, तुम्हें इस मिशन पर भेजना हमारी मजबूरी है। बहुत जरूरत है।" प्रधानमंत्री महोदय बोले- "सिर्फ बर्मा सरकार के अनुरोध की वजह से ही हम तुम्हारी जिंदगी खतरे में नहीं डाल रहे हैं बल्कि इसमें कहीं-न-कहीं भारत का निजी स्वार्थ भी शामिल है। दरअसल अमरीका जैक क्रैमर के कंधे पर बंदूक रखकर बर्मा में एक बहुत खतरनाक खेल, खेल रहा है। वह उन बाहर यौद्धाओं की मदद से बर्मा पर कब्जा करके वहाँ एशिया में अपना सबसे बड़ा फौजी अड्डा कायम करना चाहता है और बर्मा में अपना फौजी अड्डा कायम करने के बाद उसका अगला निशाना भारत होगा। भारत की आर्थिक और सैन्य व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करना होगा। इसलिए इससे पहले कि अमरीका अपने नापाक इरादों में सफल हो, तुमने बर्मा के जंगलों में जाकर उन सभी बारह योद्धाओं को मार डालना है।"

“कमाण्डर, एक बार फिर तुम्हें एक बहुत भारी जिम्मेदइारी सौंपी जा रही है ।” वह शब्द राष्ट्रपति महोदय ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहे- “यह मिशन इतना ज्यादा खतरनाक हैं कि इसे हम तुम्हारे अलावा किसी दूसरे जासूस को सौंपने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे । तुम इस मिशन में सफल होकर लौटो या फिर असफल होकर लौटो कमाण्डर, लेकिन मैं आज ही तुम्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ‘भारत रत्न’ से विभूषित करता हूँ ।”

गर्व से वह शब्द कहते हुए राष्ट्रपति की आँखों में आंसू छलछला आये थे ।

भारत रत्न !

सचमुच कमाण्डर करण सक्सेना उसी सम्मान के योग्य था ।

वास्तव में ही वो भारत का सबसे बड़ा रत्न था ।

यह बातें ही बता रही थीं कि जिस मिशन पर कमाण्डर को इस बार भेजा गया था, वह कितना डेंजर था ।

कितना जानलेवा था ।

बहरहाल कमाण्डर करण सक्सेना ने इरावती नदी में स्नान करने और पूरी तरह तरोताजा होने के बाद अपने हैवरसेक बैग में से हॉट-पॉट निकाला, जो टिफिन कैरियर की शक्ल में था और फिर उसने उसमें से निकाल-निकालकर जैम और बटर स्लाइस्ड इत्यादि का सेवन किया और फलों का काफी सारा जूस पिया ।

उसके बाद उसने जंगल में आगे का सफर शुरू कर दिया था ।

□□□
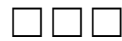
कमाण्डर उसी तरफ बढ़ा, जिधर से उसे थोड़ी देर पहले नाश्ता बनने की गंध मिली थी ।

उसे अब उस तरफ से कुछ और आवाजें भी आ रही थीं ।

जैसे कहीं ढोलक बज रही हो या किसी और चीज पर थाप दी जा रही हो ।

कमाण्डर समझ न सका, क्या चक्कर है । अलबत्ता अब वो बहुत सावधानी के साथ उस दिशा में बढ़ रहा था ।

जब वह आवाज और ज्यादा जोर-जोर से आने लगी, तो कमाण्डर करण सक्सेना नजदीक की झाड़ियों में घुस गया ।

फिर वह झाड़ियों में रेंगते हुए ही आगे बढ़ा ।

इस समय वो सर्प की मानिन्द रेंग रहा था ।

बिल्कुल बेआवाज !

निःशब्द !

कमाण्डर ने काफी आगे जाकर देखा कि वह एक जंगली आदमी था-जो पेड़ों के झुण्ड के नीचे बैठा था और बड़ी तन्मयता से नगाड़े पर थाप दे रहा था ।

वह बर्मी युवक था ।

उसके इतनी जोर-जोर से नगाड़ा बजाने की वजह कमाण्डर करण सक्सेना न समझा ।

सामने ही एक छोटी सी झोपड़ी बनी थी, जो जरूर उसी बर्मी युवक की थी ।

झोंपड़ी के बाहर मिट्टी का चूल्हा बना था ।

वहीं एक पतीली रखी थी ।

चूल्हें में आग अभी भी थी ।

जरूर उसी चूल्हे पर उसने सुबह का नाश्ता तैयार किया था और फिर नगाड़ा बजाने बैठ गया था । कमाण्डर ने इधर-उधर नजर दौड़ाई, तो उसे वहाँ आसपास उस बर्मी युवक के अलावा दूसरा कोई आदमी नजर नहीं आया ।

उसी क्षण झाड़ियों में लेटे कमाण्डर को ऐसी अनुभूति हुई, जैसे कोई बिल्कुल निःशब्द ढंग से उसके पीछे आकर खड़ा हो गया है ।

कमाण्डर झटके से पलटा ।

एकदम !

परंतु वह कुछ न कर सका।

उसने फौरन ही एक बहुत तेज धार वाले भाले को अपनी तरफ तनें पाया। उसके सामने अब एक और बर्मी युवक खड़ा था।

"खबरदार !" कमाण्डर के पलटते ही उस बर्मी युवक ने भाला बिल्कुल उसकी गर्दन पर रख दिया- "खबरदार ! अगर तुमने कोई भी हरकत की, तो अभी तुम्हारी यह गर्दन कटकर अलग जा पड़ेगी।"

उस युवक ने वह शब्द विशुद्ध 'बर्मी भाषा' में कहे थे।

कमाण्डर बर्मी भाषा खूब अच्छी तरह जानता था, इसलिए उस युवक की धमकी को अच्छी तरह समझ गया।

वह लम्बा-तगड़ा था। उसकी कलाई भी काफी चौड़ी थी। कमाण्डर करण सक्सेना भांप गया, अगर वह कोई गलत हरकत करेगा, तो उससे मुकाबला आसान नही होगा।

वैसे भी कमाण्डर उस समय लड़ाई-झगड़े के मूड में नहीं था।

फिलहाल तो वो यही जानना चाहता था कि वह लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं ?

"अपने हाथ ऊपर करो।" वह बर्मी युवक पुनः गुर्राया- "और सीधे खड़े हो जाओ।"

कमाण्डर ने विरोध नहीं किया।

वह अपने दोनों हाथ ऊपर करके झाड़ियों में सीधा खड़ा हो गया।

हैवरसैक बैग अभी भी उसकी पीठ पर था।

दूसरा बर्मी युवक भी अब नगाड़ा बजाना बंद कर चुका था और बेहद आश्चर्यभरी निगाहों से उन्हीं दोनों की तरफ देख रहा था। फिर वह आसन से उठकर उन्हीं दोनों के नजदीक आ गया।

"क्या तुम बर्मी भाषा जानते हो ?" पहले वाला युवक कमाण्डर करण सक्सेना की गर्दन पर भाला ताने-ताने बोला- "अगर जानते हो, तो मुझे बताओ।"

"हाँ , मैं बर्मी भाषा जानता हूँ ।" कमाण्डर ने विशुद्ध बर्मी भाषा में ही जवाब दिया।

उन दोनों युवक की आँखें चमक उठीं।

उन्हें यह देखकर अच्छा लगा कि उनके सामने खड़ा वह अजनबी आदमी उनकी जबान में ही बात कर रहा था।

"तुम कौन हो ?" उस युवक ने पुनः गुर्राकर कहा- "और इतने घने जंगल में क्या कर रहे हो ?"

"मैं भारतीय वायु सेना का सब पायलेट हूँ ।" कमाण्डर ने फौरन ही उपयुक्त जवाब सोच लिया- "ओर कल रात मैं अचानक उड़ते हुए जहाज में से नीचे गिर पड़ा।"

दोनों बर्मी युवक चौंके।

"नीचे गिर पड़े।" इस मर्तबा दूसरे बर्मी युवक ने हैरानीपूर्वक कहा- "परन्तु इस तरह कोई भी उड़ते हुए हवाई जहाज में से नीचे कैसे गिर सकता है ?"

"आप लोगों का कहना बिल्कुल ठीक है। लेकिन कल रात मेरे साथ ऐसा ही एक हादसा पेश आया। दरअसल मैं भारतीय वायु सेना का सब-पायलट हूँ और शौकिया फोटोग्राफर हूँ, मैं कहीं भी कोई मनोरम दृश्य देखता हूँ, तो उस दृश्य को अपने कैमरे में कैद करने की इच्छा संवरित नहीं कर पाता। कल भी ऐसा ही हुआ। कल रात जब हमारा विमान बर्मा के इन घने जंगलों के ऊपर से गुजरा, तो मैं इन खौफनाक जंगलों के दृश्य अपने कैमरे में कैद करने लगा। परन्तु विमान की ग्लास विण्डों के पीछे से फोटोग्राफ खींचने में मुझे ज्यादा आनंद नहीं आ रहा था, इसलिए मैंने एक खतरनाक कदम उठा लिया।"

"कैसा खतरनाक कदम ?"

दोनों बर्मी युवक सस्पैंसफुल मुद्रा में खड़े थे।

"मैंने विमान का दरवाजा खोल लिया और हवा के जोरदार थपेड़े सहता हुआ नीचे झुककर फोटो खींचने लगा। तभी यह घटना घटी। मैं फोटोग्राफ खींचने में इतना मग्न हो गया था कि मुझे पता नहीं चला कि कब मेरा पैर स्लिप हुआ और कब मैं धड़ाम से नीचे गिरा।"

उन दोनों ने स्तब्ध भाव से एक-दूसरे की तरफ देखा।

वह एकाएक उस कहानी पर यकीन नहीं कर पा रहे थे।

"इसमें कितनी बात सच है ?"

"सारी ही बात सच है।" कमाण्डर बोला- "झूठ का मतलब ही नहीं और वैसे भी मैं तुम लोगों से झूठ

क्यों बोलूंगा ?”

“यानि तुमने सिर्फ फोटो खींचने के लिए उड़ते हुए विमान का दरवाजा खोल लिया था।”

“हाँ ।”

दूसरे बर्मी युवक ने पहले वाले साथी की तरफ देखा- “दोस्त, तुम्हें आता है इसकी बात पर यकीन ?”

“मुझे नहीं आता।”

“यकीन न आने की कोई वजह नहीं है।” कमाण्डर करण सक्सेना पुरजोर लहजे में बोला- “मैंने बताया न, मैं एक शौकिया फोटोग्राफर हूँ और ऐसे मनोरम दृश्यों से बेइंतहा प्यार करता हूँ । यह कोई फोटोग्राफर ही बता सकता है कि ऐसे दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करने के लिए कोई शौकिया किस हद तक जा सकता है।”

उन दोनों के चेहरे पर असमंजसपूर्ण भाव छा गये।

जो बर्मी युवक नगाड़े पर थाप दे रहा था, वह अब कमाण्डर करण सक्सेना के शरीर को ऊपर से नीचे तक बड़े गौर से देखने लगा।

“इस तरह क्यों देख रहे हो ?”

“तुम कह रहे थे कि तुम उड़ते हुए विमान में से नीचे गिरे हो ?”

“हाँ ।”

“लेकिन तुम्हारे शरीर पर कोई टूट-फूट नजर नहीं आती। जबकि इतनी ऊंचाई से गिरने के बाद तो तुम्हारे जिस्म की कोई भी हड्डी साबुत नहीं बचनी थी।”

“कम से कम इस मामले में किस्मत ने मेरा बहुत साथ दिया।”

“कैसे ?”

“मैं दरअसल रेतीली जमीन पर आकर गिरा था, इसलिए मेरी तमाम हड्डिया सलामत रहीं। फिर भी घुटने में काफी चोट लगी थी और हाथ में भी कुछ जर्क आ गया था। यह देखो।” कमाण्डर ने अपनी पतलून ऊपर करके घुटने की चोट उन दोनों को दिखाई।

उन दोनों ने फिर एक-दूसरे की तरफ देखा।

□□□

अलबत्ता जिसके हाथ में भाला था, वो अभी भी बहुत चौंकन्ना था और भाले को कमाण्डर की तरफ ही ताने था। उसके खड़े होने का अंदाज ऐसा था कि अगर कमाण्डर जरा भी हरकत दिखाता, तो वो वहीं से भाले को उसके ऊपर खींच मारता।

वह दोनों बहुत खुसर-पुसर वाले अंदाज में बात करने लगे।

परंतु वो बार-बार उसकी तरफ जरूर देखते थे।

जाहिर था कि वह उसी के बारे में बात कर रहे थे। फिर वह वापस कमाण्डर करण सक्सेना के पास आ खड़े हुए।

“ठीक है।” नगाड़े पर थाप देने वाला बर्मी युवक बोला- “हम तुम्हारी बात पर यकीन करते हैं, लेकिन अब तुम हमसे क्या चाहते हो ?”

“मैं काफी थका हुआ हूँ ।” कमाण्डर ने खामखाह का बहाना बनाया- “इसलिए मेरी इच्छा है कि तुम लोग मुझे थोड़ी देर के लिए अपनी झोंपड़ी में आराम करने का मौका दो, जिससे मेरे घुटने का दर्द भी कुछ कम हो जाये और मेरी थकान भी उतरे।”

“उसके बाद तुम क्या करोगे ?”

“उसके बाद मैं कोई ऐसा जरिया तलाश करूंगा, जो रंगून (बर्मा की राजधानी) तक पहुँच सकूं। अगर किसी तरह मैं रंगून पहुँच गया, तो फिर वहाँ से वापस हिन्दुस्तान पहुँचना मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं होगी।”

वह दोनों बर्मी युवक मुस्कराये।

उनकी मुस्कान बड़ी रहस्यमयी थी।

“और अगर मान लो, हम तुम्हें अपनी झोंपड़ी में शरण देने के साथ-साथ कुछ ऐसा इंतजाम भी कर दें,

जो तुम इस खौफनाक जंगल में से निकलकर रंगून पहुँच जाओ, तो कैसा रहे ?"

"इससे अच्छी बात भला और क्या हो सकती है।" कमाण्डर ने खुश होकर कहा।

"लेकिन मेरे प्यारे दोस्त, यह काम ऐसे ही नहीं हो जायेगा। इसके लिए तुम्हें ढेर सारी मुद्रा खर्च करनी होगी।"

"मुद्रा की तुम बिल्कुल परवाह मत करो। तुम जितनी मुद्रा चाहोगे, मैं दूंगा, मेरा सिर्फ काम होना चाहिये। वैसे भी यह इत्तेफाक की बात है कि मेरे पास कुछ बर्मी टके (बर्मा की मुद्रा) हैं।"

"फिर तो तुम अपना काम बस हो गया समझो।" भाले वाला युवक बोला।

"लेकिन अभी तक मुद्रा के दर्शन तो कहीं नहीं हुए।" वह शब्द दूसरे बर्मी युवक ने कहे।

"मुद्रा के दर्शन भी अभी होते हैं।"

कमाण्डर ने फौरन अपने हैवरसेक बैग के अंदर हाथ डाला।

फिर जब उसका हाथ बाहर निकला, तो उसमें पांच हजार टके की एक करारी नोटों की गडडी थी।

उस नोटों की गड्डी को देखते ही उन दोनों बर्मी युवकों की आँखों में तेज चमक आ गयी।

"मैं समझता हूँ ।" कमाण्डर अपना ओवरकोट दुरूस्त करता हुआ बोला-"इस काम के लिए यह पाँच हजार टके काफी हैं।"

"बहुत हैं।"

कमाण्डर ने वह गड्डी उस भाले वाले नौजवान की तरफ उछाल दी, जिसे उसने फौरन चील की तरह झपट लिया।

फिर वह नोटों की गड्डी कब उसकी जेब में पहुँचकर गुम हुई, पता न चला।

"अब तुम मुझे रंगून पहुँचाने का इंतजाम कैसे करोगे ?" कमाण्डर करण सक्सेना ने पूछा।

"बस तुम देखते जाओ, मैं क्या करता हूँ ।" वह बर्मी युवक बोला और फिर उसने अपना भाला एक तरफ ले जाकर रख दिया।

"यहीं नजदीक में एक गांव हैं, मैं फौरन वहाँ जा रहा हूँ ।"

"गांव में जाकर क्या होगा ?"

"दरअसल गांव में कुछ पेशेवर मल्लाह हैं, जो नाव चलाकर अपना जीवन यापन करते हैं।" उस बर्मी ने बताया- "उनमें से किसी एक मल्लाह को यहाँ ले आऊंगा और बस वही मल्लाह तुम्हें रंगून पहुँचा देगा।"

कमाण्डर की आँखों में विस्मय के चिन्ह उजागर हुए।

"एक मल्लाह मुझे रंगून कैसे पहुँचायेगा ?"

"बहुत आसान है। वो मल्लाह तुम्हें अपनी नाव में बिठाकर इरावती नदी पार करा देगा। तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि इरावती नदी का जो दूसरा छोर है, वह जंगल बस वहीं तक फैला है। उससे आगे एक कस्बा है। इरावती नदी पार करते ही तुम उस कस्बे में पहुँच जाओगे। फिर वही मल्लाह तुम्हें उस कस्बे में ले जाकर किसी ऐसी बस में बिठा देगा, जो सीधे रंगून जाती हो। बड़ी हद शाम तक तुम रंगून में होओगे।"

कमाण्डर प्रभावित नजरों से अब उस बर्मी युवक को देखने लगा।

"वह शक्ल-सूरत से पूरी तरह जंगली और जाहिल नजर आता था, मगर नोटों की गड्डी जेब में पहुँचते ही उसका दिमाग इस तरह चलना शुरू हुआ था, जैसे किसी ने उसके दिमाग में चाबी भर दी हो।"

न जाने क्यों कमाण्डर को अब उन दोनों बर्मी युवकों पर कुछ संदेह होने लगा।

परन्तु वो चुप रहा।

"तुम्हें इस तरह रंगून पहुँचने में कोई परेशानी तो नहीं है ?" बर्मी युवक ने कमाण्डर की तरफ देखा।

"मुझे भला क्या परेशानी हो सकती है ? किसी भी तरह से पहुंचू, मुझे तो बस रंगून पहुँचने से मतलब है।"

"ठीक बात है। तो फिर मैं पास के गांव में जा रहा हूँ , तब तक तुम आराम करो।"

"ओके।"

वह युवक लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ वहाँ से चला गया।

□□□

अब उसका साथी कमाण्डर के पास था।

भाले वाले युवक के जाते ही उस दूसरे बर्मी युवक ने झोंपड़ी में से एक चारपाई निकालकर बाहर डाल दी।

"अगर तुम आराम करना चाहते हो, तो कर लो।" वह युवक बोला- "मेरा साथी तो अब आधा-पौने घण्टे से पहले लौटने वाला नहीं है या फिर उसे और भी देर लग सकती है।"

"क्यों, क्या गांव ज्यादा दूर है ?"

"नहीं, गांव तो ज्यादा दूर नहीं है।" युवक के होठों पर मुस्कान तैरी- "लेकिन बात कुछ और है।"

"और क्या बात हो सकती है ?" कमाण्डर करण सक्सेना के कान खड़े हुए।

उसके दिमाग में खतरे की घण्टी बजी।

"बात न ही पूछो तो बेहतर है।"

"फिर भी।"

"दरअसल उस गांव में एक लड़की है, मेरे दोस्त का आजकल उससे टांका भिड़ा हुआ है। अब यह कैसे हो सकता है कि वह किसी काम से उस गांव में जाये और उससे न मिले।"

"ओह !" कमाण्डर हंसा- "मैं कुछ और समझा था।"

"तुम क्या समझे थे ?"

"कुछ नहीं।"

कमाण्डर ने अपनी पीठ पर लदा हैवरसेक बैग उतारकर चारपाई के सिरहाने रख लिया।

"अब मैं आराम करता हूँ ।"

"ठीक है।"

कमाण्डर चारपाई पर पैर फैलाकर लेट गया।

दोनों इंजेक्शनों ने उस पर अच्छा-खासा असर दिखाया था और अब उसके घुटने में बिल्कुल भी दर्द नहीं था।

हालांकि रंगून पहुँचना कमाण्डर करण सक्सेना का लक्ष्य नहीं था और न ही उसने रंगून जाना था, लेकिन फिर भी वो उन दोनों बर्मी युवकों की हाँ में हाँ इसलिए मिला रहा था, क्योंकि वह उनके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी पाने का इच्छुक था।

उसने देखा, वहाँ मौजूद बर्मी युवक अब नगाड़े को लेकर उसी तरफ आ रहा था और फिर वो उसे रखने के लिए झोंपड़ी के अंदर चला गया।

थोड़ी देर बाद ही वो बाहर निकला।

"क्या चाय पिओगे ?" उसने कमाण्डर से बर्मी भाषा में ही पूछा था।

"नहीं, अभी इच्छा नहीं है।"

युवक ने कुछ न कहा।

वो वहीं चूल्हे के नजदीक बैठ गया।

फिर उसने अपनी जेब से केले का पत्ता निकाला, जिसे गोलाई में रोल किया गया था और जिसके अंदर कोई चीज बंद थी। उसने वह केले का पत्ता खोला, तो उसके अंदर से दो सिगार चमके। वह 'बर्मी सिगार' थे और कोई ज्यादा उम्दा क्वालिटी के नहीं थे।

उसने वह दोनों सिगार चूल्हे के अंदर रखी एक भभकती लकड़ी की आग में सुलगा लिये।

"लो।" फिर वह कमाण्डर करण सक्सेना से सम्बोधित हुआ- "सिगार तो पी लो।"

"नहीं, अभी मेरी कुछ भी पीने की इच्छा नहीं है। मैं बस आराम करके अपनी तबियत को थोड़ी हल्की करना चाहता हूँ ।"

"कमाल है। सिगार पीने से मना कर रहे हो।"

कमाण्डर सिर्फ मुस्कराया।

उसके मना करने के बावजूद बर्मी युवक ने दूसरा सिगार बुझाया नहीं था। उसने वह सिगार चूल्हें के पास ही थोड़ा तिरछा करके रख दिया।

उसके बाद वह उस सिगार के छोटे-छोटे कश लगाने लगा, जो उसने अपने लिये सुलगाया था।

"एक बात समझ नहीं आयी।" कमाण्डर चारपाई पर लेटे-लेटे बोला।

"क्या ?"

"तुम सुबह-ही-सुबह इतनी जोर-जोर से नगाड़े पर थाप किसलिये दे रहे थे ?"

"इसके पीछे एक खास वजह है।"

"क्या ?"

"दरअसल यह जंगल के अपने सिग्नल हैं।" उस बर्मी युवक ने बताया- "जब सुबह-ही-सुबह बर्मा के जंगलों में जोर-जोर से नगाड़े पर थाप दी जाती है, तो इसका यह मतलब होता है कि वहाँ रात बिल्कुल ठीक गुजरी है और कोई बुरी घटना नहीं घटी हैं। इससे आसपास के गावों में रहने वाले लोग राहत की सांस लेते हैं।"

"यानि बर्मा के जंगलों में नगाड़े पर थाप देना सकुशलता का प्रतीक है।"

"हाँ ।"

कमाण्डर करण सक्सेना शान्त भाव से लेटा रहा।

□□□

तभी एक घटना घटी।

जबरदस्त घटना !

जिसने कमाण्डर करण सक्सेना को उछालकर रख दिया। कमाण्डर ने चारपाई पर लेटे-लेटे देखा कि नीचे से ऊपर आसमान की तरफ धुएं की दो लकीर उठ रही हैं। वह पीले तथा काफी गाढ़े धुएं की लकीर थीं और एक-दूसरे के बिल्कुल समानान्तर थीं।

कमाण्डर की निगाह फौरन उस जगह पहुँची, जहाँ से गाढ़े धुएं की वह दोनों लकीरें उठ रहीं थीं।

वह 'बर्मी सिगार' में से उठते धुएं की लकीर थीं।

वह सिगार खास किस्म के पत्ते के बने हुए थे और इसलिये उनका धुआं इतना गाढ़ा था।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन बिजली जैसी फुर्ती के साथ चारपाई से उछलकर खड़ा हो गया।

इस बीच ओवरकोट की जेब से निकलकर कब उसके हाथ में अपनी कोल्ट रिवाल्वर आ गयी, यह भी पता न चला। सिर्फ कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में रिवाल्वर चमकी थी और चमकते ही उसकी उगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमीं। उसके बाद कमाण्डर ने पलक झपकते ही उस बर्मी युवक का गिरेहबान पकड़ लिया, जो चूल्हे के पास बैठा बड़े मजे से सिगार पी रहा था।

"क... क्या बात है ?" युवक हड़बड़ाया।

"बता हरामजादे !" कमाण्डर ने उसे बुरी तरह झिंझोड़ डाला- "बता, तेरा साथी इस वक्त कहाँ गया है ? जल्दी बोल, वरना मैं अभी तेरी खोपड़ी गोली से छलनी कर डालूगां।"

"अ... अभी बताया तो था।" युवक दहशतनाक स्वर में बोला- "वो गांव से किसी मल्लाह को लेने गया है, जो तुम्हें इरावती नदी पार करा सके।"

"नहीं, तुम झूठ बोल रहे हो। तुम बेवकूफ बना रहे हो। तुमने अभी दो सिगार सुलगाकर धुए के जो सिग्नल उपर की तरफ छोड़े हैं, उन सिग्नलों को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ । उन सिग्नलों का मतलब है कि तुम्हारा शिकार हमारे कब्जे में हैं और उसे फौरन यहाँ आकर पकड़ लो।"

बर्मी युवक के सीने पर घूंसा-सा पड़ा।

उसका चेहरा एकदम सफेद फक्क पड़ गया।

"जल्दी बता !" कमाण्डर ने रिवॉल्वर की नाल उसके माथे के बीचों-बीच रख दी- "कहाँ गया है तेरा साथी ? किसे बुलाने गया है ?"

"त... तुम्हें कोई गलतफहमी हो गयी है।"

"मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई।" कमाण्डर गरजा।

"लेकिन...।"

"फालतू बकवास नहीं। मुझे सिर्फ मेरे सवाल का जवाब दो।"

"मैं फिर कहूँगा।" बर्मी युवक थर-थर कांपता हुआ बोला- "वह नजदीक के गांव से किसी मल्लाह को बुलाने गया है और मैंने धुएं का कोई सिग्नल किसी को नहीं भेजा।"

"यानि तुम आसानी से कुछ नहीं बताओगे।"

"मैं बताऊंगा क्या, जब हम लोगों ने कुछ किया ही नहीं है।"

"ठीक है, मरो।"

कोल्ट रिवॉल्वर एक बार फिर कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द घूमी और गोली चली।

धांय !

गोली चलने की वह भीषण आवाज पूरे जंगल में गूंज गयी थी।

वह बर्मी युवक गला फाड़कर हिस्टीरियाई अंदाज में डकराया और फिर कटे वृक्ष की तरह नीचे गिरा।

उसकी खोपड़ी से थुल-थुल करके खून बहने लगा। उसे खुद पता न चला कि कब उसकी मौत हो गयी।

कमाण्डर ने अब एक सेकण्ड और भी वहाँ रूकना मुनासिब न समझा।

वो जानता था कि वहाँ खतरा है। कभी भी दुश्मन वहाँ आ सकता है।

कमाण्डर ने दौड़कर दोनों सिगार अच्छी तरह बुझाये।

हैवरसेक बैग अपनी पीठ पर कसा।

उसके बाद वो झाड़ियों का सहारा लेता हुआ जंगल में आगे की तरफ दौड़ पड़ा।

□□□
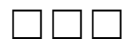
दुनिया का सबसे खतरनाक चाकूबाज हूपर उस समय जंगल के नीचे बनी एक काफी बड़ी सुरंग में मौजूद था। उस पूरे जंगल में सुरंगों का मायाजाल फैला था। वहाँ बड़ी-बड़ी सुरंगे थीं, जो जगंल में नीचे-ही-नीचे बनी थीं।

और तमाम सुरंगें एक-दूसरे से जुड़ी थीं। उन बारह योद्धाओं ने मिलकर ही उन सुरंगों का निर्माण किया था और आज की तारीख में वो सुरंगें उनकी बहुत बड़ी ताकत बनी हुई थीं। कुछ महीने पहले जब बर्मा की फौज ने जंगल में घुसकर उन सभी बारह योद्धाओं को तथा उनके जंगल में फैले पूरे साम्राज्य को खत्म कर देना चाहा था, तो वही सुरंगें उन योद्धाओं की सबसे बड़ी मददगार साबित हुई थीं। योद्धाओं ने सुरंगों में घुस-घुसकर ही कुछ इस तरह अलग-अलग दिशाओं से बर्मा की फौज पर आक्रमण किया कि फौज के छक्के छूट गये। जंगल में चारों तरफ फौजियों की लाशें-ही-लाशें बिछी नजर आने लगीं। बर्मा की फौज की सबसे बड़ी मुश्किल ये थी कि वो उन सुरंगों की निर्माण-पद्धति से भी वाकिफ नहीं थी।

नतीजतन बर्मा की फौज को उन योद्धाओं के सामने घुटने टेकने पड़े और जंगल छोड़कर भाग जाना पड़ा।

इसके अलावा उन योद्धाओं की एक और बहुत बड़ी ताकत थी। आसपास के गावों में जो जंगली लोग रहते थे और जो मूलतः बर्मा के ही नागरिक थे, वह भी अब उन बारह योद्धाओं के गुलाम बन चुके थे।

दरअसल वह जंगली उन योद्धाओं के नशीले पदार्थ खच्चरों पर ढो-ढोकर इधर-से-उधर ले जाते थे, जिनका उन्हें अच्छा-खासा मेहनताना मिलता।

दूसरे शब्दों में जब से वह बारह योद्धा जंगल में आये थे, तब से उन जंगलियों की किस्मत ही बदल गयी थी।

अब वह खुशहाल थे।

"क्या खबर लाये हो ?" हूपर ने सुरंग में एक हथियारबंद गार्ड को दाखिल होते देखकर पूछा।

भारी-भरकम शरीर वाला हूपर उस समय एक कुर्सी पर बैठा था।

"हूपर साहब, आपके आदेश के मुताबिक यह खबर पूरे जंगल में फैलायी जा चुकी है।" गार्ड ने आते ही कहा- "कि हमारा एक दुश्मन जंगल में घुस आया है, जिसके इरादे नेक नहीं मालूम होते। ज्यादातर संभावना इसी बात की है कि वो अकेला है, मगर हम लोगों ने इस बात को भी मद्देनजर रखकर चलना है कि उसके और साथी भी जंगल में हो सकते हैं।"

"यानि अब जंगल का हर आदमी इस बात को जानता है कि कोई अजनबी वहाँ घुस आया है ?" हूपर बोला।

"बिल्कुल।"

गार्ड की आवाज गरमजोशी से भरी थी।

"और क्या गांव वालों को भी यह बात बतायी गयी ? जंगलियों तक भी यह सूचना पहुँचाई गयी ?"

"उन तक भी यह सूचना पहुचाई जा चुकी है। इस वक्त आप यह समझें हूपर साहब, यह पूरा जंगल उस अजनबी के लिये खतरे की घण्टी बन चुका है। अब कोई भी जगह उसके लिये महफूज नहीं है, जल्द ही वो किसी-न-किसी की निगाह में जरूर आयेगा।"

"फिलहाल कहीं से कोई रिपोर्ट हासिल हुई ?"

"नहीं, अभी तो कोई रिपोर्ट नहीं मिली।"

"हूँ !"

हूपर ने धीरे से हुंकार भरी। वो निराश नहीं था।

वो जानता था, जल्द ही कहीं-न-कहीं से कोई शुभ समाचार उसे जरूर मिलेगा।

उस वक्त भी वो चमड़े की ही काली जैकिट और काली पेण्ट पहने था, जिसमें दर्जनों की संख्या में उसके पसंदीदा चाकू छिपे थे।

□□□
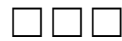
तभी सुरंग के अंदर से हलचल की आवाज हुई।

"लगता है, कोई इसी तरफ आ रहा है।"

सब चौकन्ने हो उठे।

सब उसी तरफ देखने लगे, जिधर से आवाज आ रही थी। शीघ्र ही एक हथियारबंद गार्ड और नजर आया, जो लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ उसी तरफ आ रहा था। उसके हाथ में दो बड़े-बड़े टिफिन कैरिअर भी थे।

"क्या नाश्ते का सामान लाये हो ?" हूपर उसे देखकर बोला।

"हाँ , नाश्ते का ही सामान है।"

"चलो अच्छा किया, जो नाश्ता ले आये। वैसे भी चाय पीने की इच्छा हो रही थी।"

उस हथियारबंद गार्ड ने अब दोनों टिफिन कैरिअर एक स्टूल पर रख दिये। फिर उसने प्लास्टिक के एक अनब्रेकेबल गिलास में चाय पटलकर हूपर की तरफ बढ़ाई।

"लीजिये हूपर साहब !"

"थैंक्यू !"

हूपर ने गिलास पकड़ लिया, फिर वो धीरे-धीरे चाय के घूंट भरने लगा।

आसपास खड़े गार्ड भी अब अपने वास्ते चाय पलटने लगे थे। जबकि एक गार्ड टिफिन कैरिअर में से गरमा-गरम पेटीज का पैकिट निकालकर खोल रहा था।

"क्या तुम यहाँ आने से पहले जैक क्रेमर साहब से भी मिले थे ?" हूपर ने पूछा।

"हाँ , हूपर साहब- दरअसल उन्होने ही मुझे नाश्ता लेकर यहाँ भेजा है।"

"ओह !"

"जैक क्रेमर साहब ने मुझसे यह भी कहा है कि मैं आपसे पता करके आऊं कि अभी दुश्मन के बारे में कुछ पता चला या नहीं ? उसे पकड़ने की दिशा में आप क्या कर रहे हैं ?"

"उनसे कहना, वो बहुत जल्द पकड़ा जायेगा। उसके जंगल में मौजूद होने की खबर हमने चारों तरफ फैला दी है। बस किसी भी क्षण उसके बारे में कोई खबर आती ही होगी।"

"ठीक है, मैं उनसे बोल दूंगा।"

हूपर गरमा-गरमा चाय चुसकता रहा।

वो सारी रात का जागा हुआ था। सारी रात उसकी बड़ी हंगामें से भरी गुजरी थी। उसने इधर से उधर दौड़-दौड़कर रात भर यही काम किया था कि किसी तरह वो खबर पूरे जंगल में फैल जाये।

बल्कि रात सबसे पहले तो उसने खुद ही गार्डों के साथ काफी सारा जंगल छान मारा था, लेकिन जब उसे वो आदमी कहीं नजर न आया, तो हूपर को लगा कि इस तरह से बात नहीं बनेगी।

जंगल काफी बड़ा था और उसमें से एकदम किसी आदमी को तलाश लेना कोई मजाक का काम न था।

इसीलिए हूपर ने अपनी रणनीति बदली।

इसीलिए उसने सबसे पहले उस आदमी के जंगल में मौजूद होने की खबर चारों तरफ फैलवानी शुरू की। इस तरह उस आदमी के जल्दी पकड़े जाने की संभावना थी, क्योंकि उस अवस्था में पूरा जंगल उसके पीछे होता।

तभी एक गार्ड बहुत जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरता हुआ नीचे सुरंग में आया।

"क्या हो गया ?" हूपर ने पूछा।

"अभी-अभी जंगल में दक्षिण की तरफ से धुएं का सिग्नल देखा गया है, हूपर साहब !" गार्ड आंदोलित लहजे में बोला- "ऐसा मालूम होता है, किसी जंगली ने वहाँ हमारे दुश्मन को पकड़कर रखा है।"

"क्या कह रहे हो तुम !" हूपर एकदम उछलकर खड़ा हो गया- "धुएं का सिग्नल !"

"हाँ , हूपर साहब। वह धुएं का सिग्नल ही है। जंगली लोग आमतौर पर सिगारों से इस तरह का सिग्नल सर्कुलेट करते हैं।"

"लगता है, हमारा काम बन गया है।"

हूपर ने ऊपर पहुँचकर दक्षिणी दिशा में देखा, लेकिन उस वक्त आसमान पूरी तरह साफ था।

"यहाँ तो धुएं का कोई भी सिग्नल नजर नहीं आ रहा।"

"कमाल है।" वही गार्ड बोला- "अभी-अभी तो मैंने खुद उस सिग्नल को अपनी आँखों से देखा था।"

"तुम्हें कोई वहम तो नहीं हुआ ?"

"सवाल ही नहीं है।"

तभी वहाँ कुछ और गार्ड भी आ गये। उन्होंने भी बताया कि थोड़ी देर पहले धुंए का वह सिग्नल उन्हें भी नजर आया था।

"फिर वह एकाएक गायब कैसे हो गया ?"

"मालूम नहीं, मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है।" गार्ड कुछ चिन्तित था।

"वैसे थोड़ी देर पहले उसी तरह हमारे दस-बारह गार्ड भी गश्त पर गये हैं हूपर साहब।" एक अन्य गार्ड बोला- "अगर उस तरफ कुछ गड़बड़ है, तो उस सम्बन्ध में उन्हें जरूर जानकारी हो जायेगी।"

"गार्डों को गये हुए कितनी देर हो गयी ?"

"कोई दस मिनट हो गये।"

उसी क्षण जंगल में से कुछ और आवाजें भी उभरीं। वह धप्प-धप्प की आवाजें थीं।

सब ध्यानपूर्वक उन आवाजों को सुनने लगे।

"लगता है।" हूपर बोला- "कोई तेज़ दौड़ता हुआ इसी तरफ आ रहा है।"

"कहीं वो हमारा दुश्मन तो नहीं है ?"

जैसे ही उसकी जबान से वो शब्द निकले, तुरंत बाकी तमाम गार्ड हरकत में आये। एक ही झटके में उन सबके हाथ में अपनी-अपनी राइफल आ चुकी थीं और वह राइफलें उसी तरफ तन गयीं, जिधर से किसी के दौड़कर आने की आवाजें आ रही थीं।

"कोई एक आदमी मालूम होता है।"

"एक ही है।" हूपर बोला- "अगर ज्यादा आदमी होते, तो ज्यादा कदमों की आवाजें सुनाई पड़ती।"

कदमों की आवाज अब काफी करीब आ चुकी थी।

फिर वो आदमी भी नजर आया, जो दौड़ता हुआ उस तरफ आ रहा था।

वो उनका दुश्मन नहीं था।

वो वही बर्मी युवक था, जिसने भाले की नोंक पर कमाण्डर करण सक्सेना को पकड़ा था और जो अब कमाण्डर से यह कहकर आया था कि वो पास के गांव से किसी मल्लाह को लेने जा रहा है।

"हमने दुश्मन को पकड़ लिया।" वो बर्मी युवक उन लोगों को देखकर दूर से ही चिल्लाया- "इस वक्त वो हमारी झोंपड़ी में है और वहीं आराम कर रहा है।"

दुश्मन के पकडे जाने की खबर सुनकर उन सबके चेहरे पर चमक आ गयी।

"क्या रास्ते में तुम्हें हमारे गार्ड नहीं मिले थे ?" हूपर बोला- "वो थोड़ी देर पहले इसी तरफ गये हैं ?"

"वो भी मिले थे, मैंने उन्हें भी दुश्मन के पकड़े जाने के बारे में बता दिया है। दरअसल उन्होंने ही मुझे इस वक्त यहाँ भेजा है कि मैं आप लोगों को भी यह खुशखबरी सुना दूं। फिलहाल वो दुश्मन को दबोचने झोंपड़ी की तरफ ही गये हैं।"

"वैरी गुड ! यानि हमने जो रात मेहनत की, वो कामयाब रही।" फिर हूपर ने अपने तमाम साथियों की तरफ एबाउट टर्न लिया- "दोस्तों हम सबको भी फौरन उसी तरफ बढ़ना चाहिये, जिधर दुश्मन मौजूद है, जल्दी चलो।"

सब तुरंत उस बर्मी युवक के साथ उसी तरफ दौड़ पड़े।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना को खतरे का अहसास हो रहा था।

उसे लग रहा था, उसके जंगल में मौजूद होने की खबर अब तक किसी तरह योद्धाओं तक जरूर पहुँच चुकी है।

हमला अब उसके ऊपर कभी भी हो सकता है।

किसी भी क्षण।

चलते-चलते कमाण्डर ठिठका।

उसे जंगल में सामने की तरफ से कुछ कदमों की आवाज सुनायी दे रही थी।

कमाण्डर ने ध्यानपूर्वक उस आवाज को सुना।

वह काफी सारे कदमों की आवाज थी। लगता था, कई आदमी लम्बे-लम्बे डग रखते हुए उसी तरफ चले आ रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन अपनी कोल्ट रिवॉल्वर निकाल ली और वह झपटकर नजदीक की झाड़ियों में ही जा छिपा।

उसने अपनी कोल्ट रिवॉल्वर का चैम्बर खोलकर देखा।

एक गोली कम थी।

कमाण्डर ने फौरन खाली चैम्बर में गोली डाल दी और चैम्बर बंद किया।

फिर वो आंगतुकों की प्रतीक्षा करने लगा।

जल्द ही उसे काफी सारे गार्ड नजर आये। वह मूंगिया रंग की फौजी ड्रेस पहने थे और उन सबके कंधों पर ए0के0 सैंतालिस असाल्ट राइफलें लटकी थीं। पैरों में ऐमीनेशन ब्लैक बूट थे और सिर पर मूँगिया रंग के ही फौजी हैट थे। अपनी वर्दी में ही वह कोई बहुत खतरनाक किस्म के लड़ाका नजर आ रहे थे।

वह कुछ बातें भी कर रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उन दसों गार्डों की बातचीत भी ध्यान से सुनीं।

उस वक्त वो सभी गार्ड उसी के बारे में बात कर रहे थे और उनके वार्तालाप से ऐसा महसूस हो रहा था कि वह सब झोंपड़ी की तरफ ही आ रहे हैं।

कमाण्डर ने तुरंत हरकत दिखाई।

वह एकाएक कोल्ट रिवॉल्वर हाथ में लिये-लिये झपटकर झाड़ियों के झुण्ड से बाहर निकल आया और शेर की तरह उन सबके सामने जा खड़ा हुआ।

वह सब हकबकाये।

कमाण्डर करण सक्सेना का आगमन एकदम इतने अप्रत्याशित ढंग से हुआ था कि उन्हें इतना मौका भी न मिल सका, जो अपनी-अपनी राइफल उतारें।

"कौन हो तुम ?" एक चीखा।

"तुम्हारा बाप ! जिसे दबोचने के लिए तुम सब लोग झोंपड़ी की तरफ आ रहे हो।"

वह कुछ करते, उससे पहले ही रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और फिर उसने धांय-धांय गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

फौरन चार गार्ड लुढ़क गये।

"यह वही है।" तभी एक गार्ड हलक फाड़कर चिल्लाया- "वही, जो जंगल में घुस आया है। मारो इसे ! मारो !"

तब तक कुछ गार्डों ने झपटकर अपने-अपने कंधों पर लटकी राइफलें उतार ली थीं और वह दौड़कर इधर-उधर झाड़ियों में जा छिपें। वहीं उन्होंने मोर्चाबंदी कर ली।

कमाण्डर करण सक्सेना भी अब दौड़कर वापस उन्हीं झाड़ियों में जा छिपा, जहाँ से वो प्रकट हुआ था।

तुरंत चारों तरफ से झाड़ियों पर गोलियां चलने लगीं।

कमाण्डर बिल्कुल जमीन से चिपककर लेट गया।

गोलियां पीठ पर बंधे उसके हैवरबैक बैग के ऊपर से होकर गुजरती रहीं। ऐसा लग रहा था, जैसे झाड़ियों पर गोलियों की बारिश हो रही हो। उनके पास चूंकि ए0के0 सैंतालिस असाल्ट जैसी अत्याधुनिक राइफलें थीं, इसलिए वो बर्स्ट फायर कर रहे थे।

फिर गोलियों की वो बारिश रूक गयी।

कमाण्डर तब भी कितनी ही देर जमीन से चिपका लेटा रहा।

उसके बाद उसने अपना सिर आहिस्ता से ऊपर उठाया।

चारों तरफ शान्ति थी।

गहन शान्ति।

ऐसा लगता था, जैसे वहाँ कोई न हो।

जबकि वह सभी यमदूत अभी भी झाड़ियों मे छिपे बैठे थे।

वह मौके की इंतजार में थे। जरा-सा मौका मिलते ही वह कमाण्डर करण सक्सेना को भूनते।

चारों लाशें अभी भी यथास्थान पड़ी थीं।

कमाण्डर उनकी तरफ से किसी दूसरे हमले की प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन कितनी देर तक भी उनकी तरफ से कोई हमला न हुआ।

कमाण्डर के कान खड़े हुए।

क्या चक्कर था ?

जरूर वह लोग कोई चाल चल रहे थे।

तभी कमाण्डर को झाड़ियों में अपने पीछे की तरफ से बहुत हल्की सरसराहट की आवाज सुनायी पड़ी ।

कमाण्डर ने अपनी गर्दन कछुए की तरह बिल्कुल निःशब्द अंदाज में दायीं तरफ घुमायी तथा फिर तिरछी निगाह करके पीछे की तरफ देखा।

तत्काल उसे अपने पीछे एक गार्ड चमका।

वह सरसराता हुआ उसी की तरफ बढ़ रहा था।

कमाण्डर बेपनाह फुर्ती के साथ झाड़ियों में उनकी तरफ घूम गया और घूमते ही उसने गोली चलायी।

गार्ड की आखें दहशत के कारण फटी की फटी रह गयीं।

उसने बिल्कुल अंतिम क्षणों में जो राइफल का ट्रेगर दबाने का प्रयास किया था, उसका वह प्रयास कामयाब न हुआ। वो राइफल पकड़े-पकड़े वहीं झाड़ियों में ढेर हो गया।

उसी क्षण कमाण्डर के ऊपर पुनः चारों तरफ से धुआंधार बर्स्ट फायर होने लगे।

कमाण्डर वापस जमीन से चिपक गया।

तभी उसने एक गार्ड को सामने वाली झाड़ियों में से निकलते देखा। वो बहुत गुस्से में था और राइफल से पागलों की तरह बर्स्ट फायर करता हुआ उसी की तरफ दौड़ा चला आ रहा था।

जरूर मरने वाला गार्ड उसका कोई सगा-सम्बन्धी था।

कोल्ट रिवॉल्वर एक बार फिर कमाण्डर की उंगलियों की गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और गोली चली।

वह गार्ड भी भैंसे की तरह डकरा उठा।

गोली ने ऐन उसके दिल में जाकर सुराख किया था।

उसके दिल में से खून का ऐसा तेज फव्वारा छूटा, मानों किसी ने नलका खोल दिया हो।

वो चीखता हुआ बीच रास्ते में से ही नीचे गिर पड़ा।

□□□
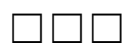
वहाँ एक बार फिर शांति छा गयी।

गहरी शान्ति।
छः गार्ड मर चुके थे, लेकिन चार अभी भी जिंदा थे।
कमाण्डर करण सक्सेना ने अपनी रिवॉल्वर का चैम्बर खोलकर देखा।
वह पूरी तरह खाली हो चुका था।
तुरंत कमाण्डर को एक चाल सूझी।
ऐसी चाल, जिसमें एक ही झटके में उन चारों को खत्म किया जा सकता था।
उसने अपने हैवरसेक बैग के अंदर से बड़ी सावधानी के साथ थर्टी सिक्स एच ई हैंडग्रेनेड बम निकाल लिया। फिर एक हाथ में उसने हैंड ग्रेनेड बम पकड़ा और दूसरे हाथ में खाली रिवॉल्वर। उसके बाद वो बहुत धीरे-धीरे झाड़ी में आगे की तरफ खिसका।
शीघ्र ही वो झाड़ी के मुहाने तक पहुँच गया था।
फिर उसने अपना रिवॉल्वर वाला हाथ कुछ इस तरह झाड़ी से बाहर निकाला, जो वह सबको नजर आ जाये और उसके बाद उसने जल्दी-जल्दी रिवॉल्वर का ट्रेगर दबाया।
हल्की पिट्-पिट् की आवाज चारों तरफ गूँजी।
कमाण्डर करण सक्सेना ने हाथ तुरंत वापस खींच लिया।
"लगता है, उसके रिवॉल्वर में गोलियां खत्म हो गयी हैं।" फौरन एक गार्ड की आवाज कमाण्डर करण सक्सेना के कानों में पड़ी।
"इससे पहले कि वह अपनी रिवॉल्वर को दोबारा लोड करे, हमें उसे दबोच लेना चाहिये।" वह दूसरे गार्ड की आवाज थी।
"जल्दी करो।"
वह चारों अपने-अपने हाथों में राइफल संभाले झाड़ियों में से बाहर निकल आये। जैसे ही वह चारों एक खास प्वाइंट पर पहुंचे, कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन हैंडग्रेनेड बम की पिन को अपने दांतों से पकड़कर खींचा और फिर बम उन चारों की तरफ उछाल दिया।
गगनभेदी विस्फोट हुआ।
तत्काल उन चारों की धज्जियां बिखर गयी।
अब वहाँ हर तरफ लाशें ही लाशें बिखरी पड़ी थीं।
"लगता है, इन लोगों से कदम-कदम पर जबरदस्त मुठभेड़ होने वाली है।"
कमाण्डर वहीं उन लाशों के बीच खड़ा होकर अपनी रिवॉल्वर को दोबारा से लोड करने लगा।

□□□

जंगल में पहले गोलियां चलने और फिर बम फटने की वह आवाजें हूपर तथा उसके साथियों ने भी सुनीं।
"ऐसा लगता है।" हूपर ठिठककर बोला- "हमारे गार्डों और दुश्मन के बीच मुठभेड़ हो रही है।"
"जरूर यही बात है।"
"लेकिन जिस तरह से मुठभेड़ हो रही है।" एक अन्य गार्ड बोला- "उससे तो लगता है कि दुश्मन बेहद खतरनाक है।"
"जो आदमी हम बारह यौद्धाओं के खिलाफ इस जंगल में घुसने की हिम्मत दिखा सकता है।" हूपर बोला- "वह खतरनाक ही होगा। हमें फौरन मुठभेड़ वाले स्थान पर पहुँचना चाहिये।"
हूपर तथा उसके साथी गार्ड लम्बे-लम्बे डग भरते हुए जंगल में आगे की तरफ बढ़े।
यूँ तो किसी का भी मुकाबला करने के लिए अकेला हूपर जैसा यौद्धा ही काफी था, लेकिन इस वक्त उसके साथ जो पन्द्रह बीस योद्धा और थे, वह उसे और भी ज्यादा शक्तिशाली बना रहे थे।
थोड़ी दूर जाते ही वह सब फिर ठिठके।
"ऐसा मालूम होता है।" एक गार्ड फुसफुसाकर बोला- "सामने की तरफ से कोई आ रहा है।"
सबने ध्यान से आवाजें सुनीं।
सचमुच सूखे पत्ते चरमराने की आवाज उन सभी को सुनायी पड़ी। वह पत्ते, जो किसी के जूतों के नीचे

आकर चरमरा रहे थे।

"लगता है, वह दुश्मन ही है, जो इस तरफ आ रहा है।" हूपर जल्दी बोला- "सब फौरन इधर-उधर छिप जाओ।"

हूपर के आदेश की देर थी, फ़ौरन वह सब झाड़ियों में छिप गये।

हूपर भी सामने वाली झाड़ियों में ही जा छिपा।

"अगर वह सचमुच हमारा दुश्मन है हूपर साहब।" एक गार्ड भयभीत होकर बोला- "तब तो उसने जरूर हमारे सभी दस गार्डो को मार डाला है। क्योंकि उनकी हत्या किये बिना वो जंगल में एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकता था।"

"सच बात तो ये है।" हूपर शुष्क स्वर में बोला- "यही डर मुझे सता रहा है।"

कदमों की पद्‌चाप अब काफी करीब आ चुकी थी।

गोलियां चलने या बम फटने की आवाजें अब उन्हें नहीं सुनाई दे रही थीं।

थोड़ी देर बाद ही रहस्य की धुंध छंटी और पेड़ों के झुरमुट में से निकलकर एक आदमी बाहर आया। उसने काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेन्सी हैट पहना हुआ था। हाथ में एक रिवॉल्वर थी और उसके चलने का अंदाज ऐसा था, जैसे वह किसी भी क्षण गोली चलाने के लिए तत्पर है।

"यह तो अकेला ही है।" झाड़ियों में छिपा बैठा गार्ड चौंका।

"इसी बात की संभावना ज्यादा थी कि वह अकेला है।" हूपर भी फुसफुसाया- "रेडियो बोर्ड पर भी इसका जो ट्रांसमीटर मैसेज सुना गया था, उससे भी यही जाहिर हो रहा था कि यह अकेला ही जंगल में घुस आया है।"

"अब हम लोग क्या करें ?"

"अब तुमने नहीं बल्कि मैंने कुछ करना है।" हूपर बोला।

फिर पलक झपकते ही एक छः इंच लम्बे चमकते फल वाला चाकू हूपर के हाथ में आ गया और उसने उसे जोर से कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ खींचकर मारा।

निशाना अचूक था। चाकू खचाक की आवाज करता हुआ सीधा कमाण्डर के रिवॉल्वर वाले हाथ पर जाकर लगा। कमाण्डर की चीख निकल गयी। रिवॉल्वर छूटकर उसके हाथ से नीचे गिर पड़ी।

उसी क्षण भारी-भरकर शरीर वाला हूपर जंगली सूअर की तरह जम्प लेकर कमाण्डर करण सक्सेना के सामने जा खड़ा हुआ, तब उसकी आस्तीनों में से निकलकर सांय-सांय करते हुए दो चाकू और हाथ में आ चुके थे।

फौरन ही झाड़ियों में छिपे तमाम गार्ड बाहर निकल आये।

बाहर आते ही उन्होंने कमाण्डर को चारों तरफ से घेर लिया और उसकी तरफ अपनी-अपनी राइफलें तान दीं।

"क... कौन हो तुम?" कमाण्डर की निगाह हूपर के चेहरे पर जाकर जम गयी।

वह उस चाकूबाज को देखते ही पहचान चुका था।

आखिर उस मिशन पर रवाना होने से पहले उन सभी बारह योद्धाओं की फाइलें उसने कण्ठस्थ की थीं और उनकी तस्वीरों को कई-कई मर्तबा देखा था।

"मेरा नाम हूपर है।" हूपर अपने हाथ में इधर-से-उधर चाकू घुमाता हुआ बोला- "दुनिया का सबसे खतरनाक चाकूबाज हूपर, मैं सपोर्ट ग्रुप का पहला यौद्धा हूँ।"

वह शब्द कहते ही हूपर ने धड़ाधड़ वह दोनों चाकू कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ खींचकर मारे।

दोनों चाकू सांय-सांय करते हुए उसके सिर के इधर-उधर से गुजर गये और खच्च की आवाज करते हुए सामने पेड़ में जा धंसे।

इस बीच आस्तीन में से ही निकलकर बड़े करिश्माई ढंग से दो और चाकू हूपर के हाथ में आ चुके थे।

"मैंने अपना परिचय तो तुम्हें दे दिया बेटे।" फिर हूपर बोला- "अब तुम भी अपने बारे में बता दो कि तुम कौन हो और बर्मा के इस खौफनाक जंगल में क्या करने आये हो।"

कमाण्डर करण सक्सेना, हूपर के उस चाकू प्रदर्शन से जरा भी विचलित नहीं हुआ था।

"मेरा नाम शायद तुम लोगों ने जरूर सुना होगा। मुझे कमाण्डर करण सक्सेना कहते हैं।"

"क... कमाण्डर करण सक्सेना।" वहाँ मौजूद गार्डों के दिमाग में धमाका हो गया- "अंतर्राष्ट्रीय जासूस कमाण्डर करण सक्सेना।"

"हाँ , वही।"

सब हैरानी से एक दूसरे की शक्ल देखने लगे।

उन्होंने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि उन खौफनाक जंगलो में उनका कमाण्डर करण सक्सेना जैसे जासूस से भी सामना हो सकता है।

"तुम यहाँ किसलिए आये हो ?"

"मैं बर्मा के इन जंगलों को तुम सभी बारह योद्धाओं के खौफ से आजादी दिलाने आया हूँ ।"

"साले, हमें मारने आया है।" हूपर फुफंकार उठा- "हम बारह योद्धाओं को मारने आया है।"

हूपर ने धड़ाधड़ दोनों चाकू कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर खींचकर मारे। कमाण्डर उसका एक्शन भांप गया, वह तुरन्त नीचे गिरा। चाकू सनसनाते हुए उसके ऊपर से गुजरे।

नीचे गिरते ही कमाण्डर ने अपने हैवरसेक बैग में से थर्टी सिक्स एच ई हैण्डग्रेड बम निकाल लिया था और उसने दांतों से पकड़कर हैण्डग्रेनेड की पिन खींची और बम सामने की तरफ उछाल दिया।

धड़ाम !

हैण्डग्रेनेड फटने का भीषण धमाका हुआ। कई गार्ड मर्मस्पर्शी ढंग से चिल्लाते हुए नीचे गिरे। जबकि बाकी अपनी-अपनी राइफल से धुआंधार गोलियां चलाने लगे।

कमाण्डर ने भागते हुए एक पेड़ के पीछे पोजिशन ले ली तथा फिर वहीं से दो-तीन हैण्डग्रेनेड बम और उन सबकी तरफ उछाले। प्रचण्ड विस्फोट हुए। वहाँ चारों तरफ धुआं-ही-धुआं फैल गया।

धुंआ छंटा तो कमाण्डर करण सक्सेना को वहाँ काफी सारी लाशें दिखाई दीं। ऐसा लगता था, मानो सारे ही गार्ड मर गये हों। कमाण्डर ने इधर-उधर नजर दौड़ाई। उसे कहीं कोई न दिखाई दिया।

कमाण्डर बेहद सावधानीपूर्वक पेड़ के पीछे से थोड़ा बाहर निकला। कुछ क्षण वो स्तब्ध भाव से वहीं खड़ा रहा।

किधर से कोई गोली न चली।

कमाण्डर रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े अब दबे पांव लाशों की तरफ बढ़ा।

तभी भारी-भरकम शरीर वाला हूपर एकदम लाशों के बीच में से जम्प लेकर उठ खड़ा हुआ। फिर उसकी काली जैकिट की आस्तीन में से सर्र-सर्र करते हुए दो चाकू और हाथ में प्रकट हुए।

"तुमने इन्हें तो मार डाला है कमाण्डर करण सक्सेना !" हूपर बड़े खतरनाक ढंग से चाकू अपने हाथ में नचाता हुआ बोला- "लेकिन अब तुम मेरे हाथों से मरोगे। बर्मा के इन जंगलों में घुसकर तुमने अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती कर दी है।"

"गलती तो मैं कर चुका हूँ ।" कमाण्डर के हाथ में मौजूद रिवॉल्वर भी फिरकनी की तरह घूमी- "लेकिन मै जंगल में अपने सिर पर कफन बांधकर घुसा हूँ । या तो तुम तमाम बारह योद्धाओं को मारूंगा या फिर खुद मरूंगा। अब कुछ-न-कुछ फैसला तो होकर रहेगा।"

"चिन्ता मत करो कमाण्डर !" हूपर हंसा- "फैसले के लिये तुम्हें ज्यादा लम्बा इंतजार नहीं करना होगा। लो मरो !" और हूपर ने बड़े अकस्मात् ढंग से दोनों चाकू कमाण्डर की तरफ खींचकर मारे।

ऐसा लगा, जैसे आकाश में चांदी के दो हंटर चमचमाये हों। तेज धार वाले चाकू कमाण्डर की तरफ झपटे।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन नीचे झुक गया।

दोनों चाकू सर्र-सर्र करते हुए उसके ऊपर से गुजरे तथा सामने पेड़ के मजबूत तने में जा धंसे।

कमाण्डर संभल पाता, उससे पहले ही सर्र-सर्र करते हुए दो चाकू और हूपर के हाथ में आ गये। इस बार वह उसकी जैकिट के कॉलर में से सनसनाते हुए बाहर निकले थे।

"लो मरो !"

उसने फिर चाकू कमाण्डर की तरफ खींच मारे। उसके चाकू फैंकने की गति चौंका देने वाली थी।

कमाण्डर फिर बचा।

परन्तु इस मर्तबा एक चाकू सीधे उसकी कोल्ट रिवॉल्वर में जाकर लगा।

टन्न !

लोहे से लोहा टकराने की तेज आवाज हुई।

रिवॉल्वर फौरन कमाण्डर के हाथ से छूटकर नीचे जा गिरी। जबकि दूसरा चाकू कमाण्डर के क्लेंसी हैट में जाकर लगा और वह उसके हैट को लेकर पीछे जा गिरा।

तुरन्त ही हूपर के हाथ में दो चाकू और नमूदार हुए।

उसने चमड़े की जो टाइट पेण्ट पहनी हुई थी, उस पेण्ट की साइड में चौड़ी-चौड़ी नालियां बनी हुई थीं और वह चाकू उन्हीं नालियों में-से बाहर निकलकर उसके हाथ में आये थे।

हूपर ने फौरन वह दोनों चाकू भी कमाण्डर की तरफ खींच मारे।

कमाण्डर ने इस बार अपने आपको बिल्कुल नीचे जमीन पर गिरा लिया।

वह निहत्था हो चुका था। जबकि हूपर के चाकू फैंकने की गति सचमुच अद्धितीय थी। वह सांस लेने का मौका भी नहीं दे रहा था। वह वाकई दुनिया का सबसे खतरनाक चाकूबाज था।

कमाण्डर ने अपने दिमाग का इस्तेमाल किया। उस जैसे खतरनाक योद्धा को किसी शातिराना चाल में फंसाकर ही मात दी जा सकती थी।

कमाण्डर ने देखा, हूपर के हाथ में बिजली जैसी फुर्ती के साथ दो चाकू और आ चुके थे। वह उसकी पेण्ट की मोहरी के अंदर से न जाने किधर से निकले थे।

कमाण्डर ने इस बार जबरदस्त एक्शन दिखाया। वो नीचे गिरते ही हूपर की तरफ झपटा।

लेकिन यह क्या, कमाण्डर झपटा नहीं था। वह उसका टाइगर क्लान का सुपर एक्शन था।

जिस तरह शेर अपने शिकार पर झपटने से पहले शिकार को एक बार धोखा देता है कि वह उसके ऊपर झपटने वाला है, कुछ इसी तरह की हरकत कमाण्डर ने दिखाई।

और हूपर चाल में फंस गया।

कमाण्डर के टाइगर क्लान के एक्शन में आते ही उसने समझा कि वह उसके ऊपर झपट रहा हैं, उसने फौरन दोनों चाकू बेपनाह फुर्ती के साथ कमाण्डर की तरफ खींच मारे।

कमाण्डर ने हवा में ही दोनों चाकू पकड़ लिये और फिर उन्हें वापस हूपर की तरफ खींचकर मारे।

दोनों चाकू खच्च-खच्च की आवाज करते हुए सीधे हूपर के सिर में जा धंसे।

भैंसे की तरह डकरा उठा हूपर !

उसके भयानक ढंग से आर्तनाद करने की आवाज पूरे जंगल को दहलाती चली गयी।

सिर से खून के बड़े तेज दो फव्वारे छूटे। फिर उसका भीमकाय शरीर किसी मदमस्त हाथी की तरह नीचे गिरा।

और गिरते ही ढेर हो गया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, बिल्कुल अंतिम समय में भी न जाने कहाँ से निकलकर हूपर के हाथ में दो चाकू आ चुके थे, जिन्हे बस वो फैंक नहीं सका था।

कमाण्डर, हूपर की लाश के करीब पहुँचा और फिर उसने उसके नितम्बों पर एक जोरदार ठोकर जड़ी।

दुनिया के सबसे खतरनाक चाकूबाज को यह कमाण्डर करण सक्सेना का एक मामूली-सा तोहफा था- "अलविदा दोस्त ! अभी तुम्हारे ग्यारह साथी योद्धाओं से और मुठभेड़ होनी बाकी है। बर्मा के खौफनाक जंगलों में एक ऐसा इतिहास लिखा जाने वाला है, जो फिर कोई सदियों तक भी इस तरफ बुरी निगाह उठाकर नहीं देखेगा।"

वहाँ चारों तरफ अब लाशें-ही-लाशें पड़ी थीं।

फिर कमाण्डर ने कुछ महत्वपूर्ण कार्य और किये।

बर्मा के उन जंगलों में आने से पहले कमाण्डर ने कुछ किताबें पढ़ी थीं, जिनमें जंगल वारफेयर के बारे में लिखा था कि किसी भी यौद्धा को जंगल में लड़ाई करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये। जैसे अपने दुश्मन को मारने के बाद भी योद्धा इस बात की अच्छी तरह तस्दीक कर ले कि वह मर गया है या नहीं। उसमें कोई सांस तो बाकी नहीं हैं, क्योंकि अगर दुश्मन में जरा भी सांस बाकी हुई, तो वह जंगली युद्ध में कहर ढा सकता है। वो पीछे से आकर हमला कर सकता है, जो बस जानलेवा ही साबित होगा।

इसके अलावा जंगल वारफेयर (जंगल युद्ध) का एक नियम और है कि दुश्मन को मारने के बाद उसके हथियार या तो तहस-नहस कर डालो या फिर अपने पास रखकर आगे बढ़ो, ताकि पीछे आ रहा दुश्मन का

कोई और आदमी उन हथियारों का इस्तेमाल न कर सके।
कमाण्डर ने जंगल वारफेयर के उन सभी नियमों का पालन किया।
उसने सबसे पहले अपना क्लेंसी हैट उठाकर झाड़ा और उसे अपने सिर पर रख लिया।
हैट की ग्लिप में कोल्ट रिवॉल्वर अभी भी सुरक्षित थी।
फिर उसने दूसरी रिवॉल्वर भी उठाकर अपने ओवरकोट की जेब में रखी।
उसके बाद कमाण्डर ने जांघ के साथ बंधा अपना स्प्रिंग ब्लेड बाहर निकाल लिया तथा फिर वह एक-एक लाश के पास जाकर उसे चैक करने लगा।
हर लाश को वह सीधी करके देखता कि उसमें कोई सांस तो बाकी नहीं है।
खूब अच्छी तरह से यह तस्दीक होने के बावजूद भी कि गार्ड मर चुका है, वह उसके दिल में नौ इंच लम्बा दोधारी स्प्रिंग ब्लेड जरूर उतार देता। इससे उसके जीवित होने की अगर कोई संभावना होती, तो वह भी खत्म हो जाती।
कई गार्ड के दिल में स्प्रिंग ब्लेड उतारने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने जैसे ही एक और गार्ड की लाश को सीधा किया, तुरंत वहाँ बिजली-सी लपलपाई।
खून में बुरी तरह लथपथ नजर आने वाला वो गार्ड एकाएक जम्प लेकर सीधा खड़ा हो गया था।
उसके हाथ में राइफल थी।
उसने राइफल कमाण्डर की तरफ तान दी और इससे पहले कि वो राइफल का ट्रेगर दबा पाता, बेपनाह फुर्ती के साथ कमाण्डर का स्प्रिंग ब्लेड चल गया और उसका नौ इंच लम्बा दोधारी फल गार्ड के सीने को फाड़ता चला गया।
गार्ड के हलक से वीभत्स चीख निकली।
झटके के साथ कमाण्डर ने स्प्रिंग ब्लेड वापस खींचा और फिर उसकी गर्दन पर वार किया।
गार्ड की गर्दन कटकर अलग जा गिरी।
राइफल उसके हाथ से छूट गयी। फिर उसका धड़ भी नीचे गिरा।
सब कुछ पलक झपकते हुआ था।
तेजी से।
अगर कमाण्डर करण सक्सेना स्प्रिंग ब्लेड चलाने में जरा भी देर कर जाता, तो बिना शक गार्ड ने उसके ऊपर गोलियां चला देनी थी।
बहरहाल शुक्र था, जो कोई अनहोनी न हुई।
फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने और भी ज्यादा सावधानी से एक-एक लाश को चैक किया तथा उनके दिल में स्प्रिंग ब्लेड उतारे।
उसके बाद उसने तमाम गार्डों की असॉल्ट राइफलें भी तहस-नहस कर दीं।
सिर्फ एक राइफल को अपने कंधे पर लटका लिया।
गार्डो के पास गोलियों का भी काफी सारा स्टॉक था। कुछ स्टॉक उसने अपने हैवरसेक बैग में भर लिया, जबकि बाकी गोलियों को भी उसने तोड़-फोड़ डाला।
उसके बाद कमाण्डर बर्मा के उन जंगलों में आगे की तरफ बढ़ा।

□□□

वह जंगलों में नीचे बनी सुरंग का एक अंधियारा हिस्सा था।
उस पतली सी सुरंग में इस वक्त एक चटाई बिछी हुई थी और उस चटाई पर दो साये आपस में बुरी तरह गुंथे हुए थे।
दोनों निर्वस्त्र थे।
जिस्म पर कपड़े की एक धज्जी तक नहीं।
लड़की नीचे थी।
पुरुष ऊपर!
तभी पुरुष के हाथ सरसराते हुए लड़की की दोनो जांघों पर पहुँच गये।

जांघे, जो धधककर अंगारा बनी हुई थीं।

"क्या कर रहे हो ?" लड़की कुलबुलाई।

"क्यों, क्या तुम्हें मालूम नहीं?"

लड़की हंसी।

उसकी हंसी खनकती हुई थी।

मादकता से भरी।

वह दोनों 'सैक्स' का भरपूर आनंद लूट रहे थे।

तभी पुरुष ने अपने धधकते हुए होंठ लड़की की मांसल उरोजों पर रख दिये।

सनसनी सी मचती चली गयी लड़की के शरीर में।

उसके मुँह से तीव्र सिसकारी छूटी और उसने अपनी दोनों मुट्टियों में पुरुष के कंधे कसकर जकड़ लिये।

"ओह मारकोस, तुम मुझे पागल बना देते हो। बिल्कुल पागल।" लड़की ने उसका एक गरमा-गरम चुम्बल ले डाला।

"और डार्लिंग, क्या तुम भी मेरा यही हाल नहीं करतीं।" पुरुष बोला- "तुम भी तो मुझे दीवाना बना डालती हो।"

दोनों हंसे।

वह दोनों खतरनाक योद्धा थे और सपोर्ट ग्रुप के मैम्बर थे।

लड़की का नाम 'बार्बी' था।

बार्बी, जो जापानी थी और जूडो कराटे की जबरदस्त एक्सपर्ट थी। यूं तो उसका असली नाम यून ही सून था, मगर ज्यादातर लोग उसे बार्बी के नाम से ही जानते थे।

पुरुष का नाम 'ली मारकोस' था।

ली मारकोस, जबरदस्त समुराई फाइटर, वो बार्बी की तरह ही जापानी था और समुराई फाइटिंग में उसे 'ग्रेंड मास्टर' जैसी उच्च उपाधि हासिल थी।

वह दोनों एक-दूसरे से प्यार करते थे।

सिर्फ प्यार ही नहीं करते थे बल्कि उनका सपना भी था, जब वह सभी बारह यौद्धा मिलकर पूरे बर्मा पर कब्जा करने में कामयाब हो जायेंगे, तो वह दोनों उसी दिन शादी भी कर लेंगे।

ली मारकोस ने अब अपने होंठ बार्बी के उरोजों पर रख दिये और फिर वह बिल्कुल बच्चा बन गया।

अबोध शिशु।

बार्बी की नस-नस में अंगारे भरते चले गये।

हालांकि ली मारकोस समुराई फाइटर था, जिन्हें संयम बरतने की खास ट्रेनिंग दी जाती है।

लेकिन जब बार्बी जैसी नवयौवना बाहो में हो, तो भला कौन संयम बरत सकता है ?

वही हाल इस समय ली मारकोस का था।

वह बड़े दीवानागार आलम में बार्बी के चुम्बन लेता चला गया।

ढेरों चुम्बन !

उसके जिस्म का ऐसा कोई हिस्सा न था, जहाँ ली मारकोस ने अपने होंठों की मुहर न लगाई हो।

फिर उसकी दृष्टि बार्बी की जांघों पर जाकर केन्द्रित हो गयी।

बार्बी मुस्करायी।

वह उसका इरादा भांप गयी।

अगले क्षण तूफानी थे।

जबरदस्त तूफानी।

बार्बी के मुंह से हल्की चीख उबल पड़ी और उसके बाद सब कुछ शांत होता चला गया।

बिल्कुल शांत।

□□□

दोनों चटाई पर पड़े बुरी तरह हाँफ रहे थे।

दोनों के शरीर पसीनों से इतने लथपथ थे कि मानों किसी ने उन दोनों के ऊपर बाल्टी भरकर पानी डाल दिया हो।

बगलें भभक रही थीं।

"सैक्स भी कितनी अद्‌भुत चीज है।" बार्बी अभी भी मारकोस के शरीर से किसी लता की तरह चिपकी हुई थी- "जब यही सैक्स किसी के साथ जबरदस्ती किया जाता है, तो बेहद घिनौना और गंदा बन जाता है। लेकिन जब इस सैक्स में दोनों तरफ से प्यार का समावेश हो, तो फिर यह किसी खूबसूरत सपने से कम नहीं होता।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" ली मारकोस ने बार्बी को और भी ज्यादा कसकर अपनी बाहों में समेटा।

वो जानता था, बार्बी के साथ बलात्कार से संबंधित कुछ यादें जुड़ी हुई हैं, जो उसे कभी भी बेचैन कर डालती हैं।

"क्या सोच रही हो ?" ली मारकोस ने उसके बालों में हाथ फिराया।

"कुछ नहीं !"

"कुछ तो।"

"उस अंजान दुश्मन के बारे में सोच रही हूँ।" बार्बी ने गहरी सांस ली- "जो इन जंगलों में घुस आया है। वह न जाने कौन है और किस इरादे के साथ जंगल में घुसा है ?"

"उसके बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं है।" ली मारकोस बोला- "उससे निपटने के लिए हूपर गया है। अब तक मुमकिन है, हूपर ने उसे जहन्नुम में पहुँचा दिया हो। उसके खतरनाक चाकुओं की धार से कोई भी आसानी से नहीं बच सकता।"

"तुम कुछ भी कहो, मुझे न जाने क्यों उस दुश्मन के बारे में सोचकर कुछ भय हो रहा है।"

"कैसा भय ?"

"वह आदमी अगर हम बारह योद्धाओं का मुकाबला करने के लिए अकेला ही रणक्षेत्र में उतरा है, तो उसमें जरूर कोई न कोई खास बात होगी। फिर वह जरूर कोई बहुत खतरनाक योद्धा होगा और ऐसे खतरनाक तथा हिम्मतवर यौद्धा को अकेले ही जान से मारना हूपर के लिए कोई बहुत ज्यादा आसान नहीं होगा।"

"तुम शायद भूल रही हो।" ली मारकोस बोला- "हूपर दुनिया का सबसे खतरनाक चाकूबाज है।"

"मैं कुछ भी नहीं भूली।"

"फिर यह भी तुम्हारी गलतफहमी है कि हूपर अकेला है। उसके साथ ढेरों हथियारबंद गार्ड हैं और जंगल में रहने वाले तमाम बर्मीज लोग हैं।"

"मुझे मालूम है।" बार्बी ने उसके चौड़े-चकले सीने पर अपना चेहरा रगड़ा- "फिर भी न जाने क्यों मेरा मन किसी अंजानी आशंका से कांप रहा है। मुझे लग रहा है कि हम बर्मा पर कब्जा करने वाले अपने इस मिशन में कामयाब नहीं हो पायेंगे।"

"डार्लिंग, ऐसी बात मत करो।" ली मारकोस ने उसके ढीले पड़ चुके गुलाबी उरोजों का एक चुम्बन लिया- "आओ, ऊपर हैडक्वार्टर में चलकर देखते हैं- शायद अब तक हूपर वहाँ उस दुश्मन के मरने की खबर भी लेकर आ चुका हो।"

"चलो।"

ली मारकोस उसके ऊपर से उठकर खड़ा हो गया और अपने कपड़े पहनने लगा।

फिर बार्बी भी चटाई से उठी।

उसने भी अपने कपड़े पहनने शुरू किये।

सबसे पहले उसने पेंटी पहनी।

फिर ब्रा के कप्स अपने दोनों उरोजों पर चढ़ाकर हाथ पीछे करके हुक लगाने लगी।

उसका शरीर काफी कसा हुआ था।

बेहद सुडौल !

उसकी कद-काठी दूसरी जापानी लड़कियों की तरह ही थी और रंग बेहद गोरा था।

उसके शरीर में सबसे खूबसूरत उसकी आँखें थी।

नीली-नीली आँखें ।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि इतनी खूबसूरत गुड़िया सी नजर आने वाली वो लड़की अपनी जिंदगी में दर्जनों आदमियों को मौत के घाट उतारी चुकी है।

□□□
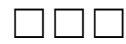
वह बुरी तरह जख्मी एक गार्ड था।

शरीर में गोलियां लगीं हुई थीं।

कपड़े फटे हुए।

खून और बारूद में लिपटा हुआ।

उसकी हालत इतनी नाजुक थी कि उसे देखकर यही आश्चर्य होता था, वह अभी तक जीवित कैसे है ? उसके कंधे पर राइफल झूल रही थी और वो बेहद लड़खड़ाते हुए कदमों से योद्धाओं के हैडक्वार्टर की तरफ चला आ रहा था।

जैसे ही वो हैडक्वार्टर के नजदीक आया, फौरन उसे गश आ गया और वहीं लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

हैडक्वार्टर के बाहर जो गार्ड तैनात थे, वह तुरंत उसकी तरफ झपटे।

"अरे !" तभी उनमें से एक गार्ड बुरी तरह चौंककर बोला- "यह तो विक्टर है।"

"विक्टर !"

"हाँ, रात ही तो यह हूपर साहब के साथ जंगल में गया था, दुश्मन को पकड़ने के लिए।"

"जरूर यह उसी संबंध में कोई खबर लाया है।"

कई सारे गार्ड अब बुरी तरह जख्मी होकर विक्टर के नजदीक पहुँच चुके थे।

"विक्टर-विक्टर !"

उन्होंने विक्टर को बुरी तरह झिंझोड़ा।

परन्तु विक्टर में कोई हरकत न हुई।

"लगता है, यह बेहोश हो गया। जल्दी से कोई पानी लाओ।"

फौरन एक गार्ड पानी लाने के लिए अंदर की तरफ दौड़ा।

जल्द ही वो एक गिलास में पानी ले आया, जिसे उस जख्मी गार्ड के चेहरे पर छिड़का गया।

"विक्टर-विक्टर !"

गार्ड ने उसे पुनः जोर जोर से झिंझोड़ा।

"म... मैं कहाँ हूँ ?" विक्टर नाम का वो गार्ड आहिस्ता से कुलबुलाया और उसने अपनी आँखें खोली।

"तुम इस समय हैडक्वार्टर में हो विक्टर और बिल्कुल सुरक्षित हो, लेकिन तुम्हारी यह हालत किसने की ?"

"म... मुझे जल्दी से जैक... जैक क्रेमर साहब के पास ले चलो। उ... उन्हीं के सामने मैं सारी बात बताऊंगा। हम... हम सब भारी खतरे में हैं।"

"कैसा खतरा ?"

"म... मुझे जल्दी जैक... जैक क्रेमर साहब के पास ले चलो।"

"मैं समझता हूँ।" तभी एक गार्ड, दूसरे गार्ड से बोला- "हमें विक्टर को फ़ौरन क्लीनिक में लेकर चलना चाहिये, पहले इसे इलाज की जरूरत है।"

वहीं योद्धाओं के पैगोडा जैसे हैडक्वार्टर में एक छोटा सा नर्सिंग होम भी बना हुआ था, जहाँ लगभग सभी चिकित्सकीय सुविधायें मौजूद थीं।

"नहीं।" विक्टर ने तुरंत उस गार्ड की बात कही- "म... मुझे बस जैक... जैक क्रेमर साहब के पास ले चलो...जल्दी ! म... मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।"

"चलो, इसे पहले जैक क्रेमर साहब के पास ही लेकर चलते हैं।"

"ठीक है, वहीं चलो।"

कई गार्ड ने अब बुरी तरह जख्मी विक्टर को अपने हाथों में उठा लिया और फिर वह उसे लेकर अंदर की तरफ दौड़े।

□□□

वह हैडक्वार्टर का रेडियो रूम था, जहाँ इस समय तमाम योद्धा ज़मां थे और सब बहुत बेचैन थे।

जैक क्रेमर, ली मारकोस, बार्बी, डायमोक, मास्कमैन, हिटमैन, मास्टर, हवाम, अबू, निदाल, माइक और रोनी।

"हूपर के बारे में कुछ पता चला ?" अबू निदाल कह रहा था।

"अभी तक तो कुछ मालूम नहीं हुआ है।" जैक क्रेमर बोला- "रेडियो पर भी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। सुबह एक जानकारी जरूर मिली थीं।"

"क्या ?"

"सुबह जो गार्ड हूपर और उसके साथियों को नाश्ता पहुँचाने गया था, उसी ने आकर बताया, हूपर ने फिलहाल यह खबर पूरे जंगल में फैला दी है कि कोई दुश्मन जंगल में घुस आया है। सब उस पर निगाह रखें। इसके अलावा उसने एक और बड़ी सनसनीखेज जानकारी दी।"

"क्या ?"

"उस गार्ड ने बताया।" जैक क्रेमर बोला- "कि जब वह नाश्ता देने के बाद वापस लौटने ही वाला था, तभी एक गार्ड ने दौड़ते हुए आकर हूपर से कहा है कि उसने आसमान में अभी-अभी धुएं का एक सिग्नल देखा है।"

"धुएं का सिग्नल !"

सभी खूंखार योद्धाओं की आँखें एक-दूसरे से टकराई।

"हाँ, धुएं का सिग्नल।"

"लेकिन बर्मा के जंगली लोग धुएं का सिग्नल तो तब देते हैं सर।" मास्टर बोला- "जब दुश्मन उनके कब्जे में हो। धुएं के सिग्नल का अर्थ है कि दुश्मन हमारे पास है, उसे जल्दी से आकर पकड़ लो।"

"बिल्कुल सही।"

"इसका मतलब तो ये है सर !" बर्मा के एक्सपर्ट समझे जाने वाले मास्कमैकन का विस्फारित स्वर- "कि जंगली लोगों ने दुश्मन को पकड़ लिया था।"

"लगता तो ऐसा ही था, हूपर तुरंत ही दौड़ता हुआ सुरंग से ऊपर पहुँचा था, लेकिन तब तक धुंए का सिग्नल नजर आना बंद हो गया था। तभी एक जंगली और भागता हुआ हूपर के पास आया तथा उसने हूपर से आकर कहा- दुश्मन उनके कब्जे में है, वह फौरन उसके साथ चलें।"

"फिर ?"

"फिर क्या, हूपर और उसके तमाम गार्ड जंगली के साथ चले गये। बस तभी से उनकी कोई खबर नहीं है। अगर हूपर ने दुश्मन को पकड़ लिया होता, तो वह जरूर रेडियो पर यह खुशखबरी भेजता।"

"कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है सर ?"

"क्या कहा जा सकता है।"

सब और फिक्रमंद हो उठे।

सबको हूपर की चिंता सताने लगी।

वह सब अभी रेडियो रूम में ही जमा थे, तभी उन्होंने हैडक्वार्टर में बाहर से तेज कौलाहल की आवाज सुनी।

"यह कैसी आवाजें हैं ?"

"मैं देखता हूँ ।" तुरंत डायमोक बाहर की तरफ दौड़ा।

उसके पीछे-पीछे ली मारकोस और बार्बी भी दौड़े।

जितनी तेजी से वह बाहर गये थे, उतनी ही तेजी के साथ वापस रेडियो रूम में आये।

"क्या हो गया ?"

"कोई बुरी तरह जख्मी गार्ड है।" बार्बी बोली- "उसी को कुछ गार्ड उठाकर इस तरफ ला रहे हैं।"

"जख्मी गार्ड।"

"हाँ ।"

सबके बीच और भी ज्यादा आतंक की लहर दौड़ गयी।

कोलाहल की आवाजें अब और भी करीब आ चुकी थीं। तभी रेडियो रूम का दरवाजा पुनः खुला और कुछ लोग एक बुरी तरह जख्मी गार्ड को लेकर अंदर आ गये। उसकी बस कोई-कोई सांस चल रही थी और उसकी हालत बताती थी, वह थोड़ी देर का मेहमान है।

"इसे क्या हुआ ?" जैक क्रेमर शीघ्रतापूर्वक कुर्सी से उठकर जख्मी गार्ड की तरफ बढ़ा।

"यह विक्टर है सर !" गार्डों ने अब उसे वहीं नीचे रेडियो रूम के फर्श पर लिटा दिया- "रात यह हूपर साहब के साथ गया था और अब अकेला इस हालत में लौटा है।"

"विक्टर !" जैक क्रेमर वही नीचे उसके पास बैठ गया और उसने उसे झिंझोड़ा- "तुम्हारे बाकी साथी कहाँ है ? हूपर कहाँ हैं ?"

"स... सब मारे गये।" विक्टर की आँखों में आंसू उमड़ आये- "सब... क... कोई नहीं बचा।"

सबको जोरदार शॉक लगा।

"सब !" हवाम का भौचक्का स्वर- "क्या कह रहे हो तुम ?"

"य... यह सच है।"

"क्या हूपर भी नहीं बचा ?"

"हाँ , सर।"

"माई गॉड ! हूपर जैसा यौद्धा भी मारा गया।"

सबकी आँखें फटी की फटी रह गयी।

सब मानों जड़वत् अवस्था में अपनी-अपनी जगह खड़े रह गये थे।

"म... मैं भी सिर्फ इसलिए ब... बच गया सर !" विक्टर बेहद अटके-अटके स्वर में बोला- "क... क्योंकि गोलियां लगते ही हैंडग्रेनेड ब... बम छूटते ही मैं वहाँ से भाग खड़ा हुआ और... और दूर झाड़ियों में जा छिपा। फ... फिर सबको मरते मैंने अपनी आँखों से देखा। उसने स... सबको मार डाला।"

"क्या हमारे जो दुश्मन जंगल में घुस आये हैं।" जैक क्रेमर ने कौतूहलतापूर्वक पूछा- "उनकी संख्या काफी ज्यादा है ?"

"न...नहीं सर ! इसी बात की तो सबसे बड़ी हैरानी है, वह अकेला है। ब... बिल्कुल अकेला।"

"अकेला !"

"यस... यस सर ! अकेला ! अ... और वो अकेला ही हम सब पर भारी है। शायद आपने नाम भी सुना हो।"

"क्या नाम है ?"

"क... कमाण्डर करण सक्सेना !"

सबके दिमाग में आतिशबाजी छूटती चली गयी।

उस नाम को सुनते ही सबके दिमाग में धमाके हुए।

"अंतर्राष्ट्रीय जासूस कमाण्डर करण सक्सेना ?"

"व... वही।"

"ओह !" अब निढाल और खतरनाक निशानेबाज भी कांप गया।

सबके शरीर में सिहरन दौड़ी।

"क... कमाण्डर से अपने आपको ब... बचाइये सर।" विक्टर की आवाज अब और भी ज्यादा अटक रही थी, उसकी सासें उल्टी सीधी चल रही थीं- "व... वह आप सब बारह योद्धाओं को खत्म करने के इरादे से बर्मा के इन ज... जंगलों में दाखिल हुआ है। म... मैंने खुद अपने कानो से सुना था सर, व... वो हूपर साहब से कह रहा था कि ब... बर्मा के इन जंगलों को आप सब लोगों के खौफ से अ... आजादी दिलाना उसका मकसद है। व... वो बहुत खतरनाक है स...।"

बोलते-बोलते विक्टर की आवाज जैसे कहीं अटक गयी।

"विक्टर-विक्टर !"

विक्टर की गर्दन दूसरी तरफ जा पड़ी।

उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं।

"है माई जीसस !" जैक क्रेमर ने अपने सीने पर क्रॉस का निशान बनाया- "लगता है, यह बस अभी तक इसीलिए जिंदा था, ताकि इस खौफनाक खबर को हम तक पहुँचा सके।"

जैक क्रेमर ने उसकी आँखें बंद कर दीं।
फिर वो गहरी सांस लेकर अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ।

□□□
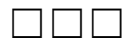
सभी यौद्धा सन्नाटे में डूबे हुए थे।
सकते में !
यह बात उन सबको बहुत आंदोलित कर रही थी कि उनका एक साथी यौद्धा मारा जा चुका है।
रेडियो-रूम से अब विक्टर की लाश हटाई जा चुकी थी। हालांकि बर्मा के उन जंगलों में उन बारह योद्धाओं ने बहुत बार दुश्मन का सामना किया था, लेकिन किसी यौद्धा के मरने जैसी नौबत पहले कभी नहीं आयी थी। हर बार उन्होंने ही दुश्मन के छक्के छुटाये थे।
"हालात ठीक नहीं है।" जैक क्रेमर बड़ी बेचैनी के साथ इधर से उधर टहलता हुआ बोला- "अगर सचमुच इस बार हमारा दुश्मन कमाण्डर करण सक्सेना ही है, तो यह हमारे लिए बहुत खतरनाक बात है, वह एक तूफान है, जो अब जंगल में घुस आया है और बड़ी तेजी के साथ हम लोगों की तरफ बढ़ रहा है।"
"लेकिन वह तूफान तबाही मचाता हुआ हमारे इस हैडक्वार्टर तक पहुंचे सर !" हिटमैन बोला- "इससे पहले ही हमने इसे रोकना होगा।"
"ठीक बात है।"
"मगर आगे बढ़ते हुए कमाण्डर को रोकना इतना आसान नहीं है।" वह शब्द अबू निदाल ने कहे- "दुनिया के नक्शे पर ऐसी कई कहानियाँ मौजूद हैं, जिन्हें कमाण्डर करण सक्सेना ने अपनी तबाही के खून से रंगा हैं, अमरीका की सी0आई0ए0 से लेकर चीन की एम0एस0एस0 और पाकिस्तान की आई0एस0आई0 जैसी बड़ी-बड़ी जासूसी संस्थाओं को उसने अकेले ही अपने दम पर छक्के छुटाये हैं।"
"मिस्टर अबू निदाल।" समुराई फाइटर ली मारकोस गुस्से में फुंफकारकर बोला- "मैं नहीं जानता कि कमाण्डर ने आज तक इतिहास के कौन-कौन से पन्ने रंगे हैं, परन्तु मैं एक बात जरूर कहूँगा।"
"क्या ?"
"बर्मा के इन खौफनाक जंगलों में आकर कमाण्डर ने अपनी मौत को ही दावत दी है। वो यहाँ अपनी मर्जी से घुस तो आया है, लेकिन अब जिंदा वापस नहीं जा सकेगा सर।" ली मारकोस, जैक क्रेमर की तरफ घूमा- "आप मुझसे कहें, जगल में आगे बढ़ते उस तूफान को रोकने की जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ । मै कमाण्डर को मारूंगा।"
सबकी निगाहें ली मारकोस पर जाकर ठहर गयीं।
जापानी यौद्धा।
पौने छः फुट लम्बा कद।
शरीर ऐसा छरहरा और तना हुआ, जैसे वह किसी हाड़-मांस का न होकर रबड़ का पुतला हो।
"मैं समझता हूँ ।" जैक्र क्रेमर कुछ सोचता विचारता हुआ बोला- "इस बार कमाण्डर का मुकाबला करने के लिए किसी अकेले योद्धा का जाना ठीक नहीं है।"
"फिर ?"
"तुम्हारे साथ एक योद्धा और जाना चाहिये। इसके अलावा गार्डो की संख्या भी पहले से ही कहीं ज्यादा हो।"
"अगर आप कहें सर !" फौरन ही बार्बी बोली- "तो दूसरे योद्धा के तौर पर मैं मारकोस के साथ जाना चाहूँ गी।"
जैक क्रेमर की आँखें अब बार्बी पर जाकर ठहर गयीं।
वो जानता था, खूबसूरत सी नजर आने वाली वो लड़की वास्तव में कितनी खतरनाक है।
कितनी दुर्दांत है।
मार्शल आर्ट का उस जैसा योद्धा तो सिर्फ जापान के अंदर ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में दूसरा कोई नहीं था। उसने जूडो के अंदर बारहवां दन, ताइक्वांडो में आठवां दन, कराटे में दसवा दन और बर्मी बाक्सिंग सवाटे के अंदर सातवें दन के अलावा और भी न जाने किन-किन युद्ध कलाओं में महारथ हासिल

कर रखी थी।

"ठीक है।" जैक क्रेमर बोला- "दूसरे यौद्धा के तौर पर तुम ही मारकोस के साथ जाओगी।"

"थैंक्स सर।"

बार्बी के होंठों पर मुस्कान दौड़ गयी।

उसे मानों मुंह मांगी मुराद हासिल हो गयी थी।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना जंगल में लगातार आगे बढ़ रहा था।

बेहद चौकन्नी अवस्था में।

कभी वो बिल्कुल दबे पांव जंगल में चीते की तरह दौड़ता, तो कभी शेर की तरह और कभी ज्यादा खतरा भांपने पर झाड़ियों में सांप की तरह भी रेंगता। फौजियों को और जासूसों को दुश्मन के इलाके में घुसने पर एक खास तरह से चलने की ट्रेनिंग दी जाती है। जिसे चीता चाल, शेर चाल और सर्प चाल कहते है। इस समय कमाण्डर उसी ट्रेनिंग का फायदा उठा रहा था।

शाम का धुंधलका अब धीरे-धीरे चारों तरफ फैलने लगा।

जैसाकि पहले बताया जा चुका है, बर्मा के जंगलों में अंधेरा वैसे भी कुछ ज्यादा जल्दी होता है। वहाँ के पेड़ एक खास किस्म का आकार लिये हुए हैं।

कमाण्डर ने झाड़ियों में ही एक जगह रूककर अपने हैवरसेक बैग में से एक नक्शा निकाला।

वो काफी बड़ा नक्शा था और बर्मा के उन्हीं जंगलों का था।

कमाण्डर कुछ देर उस नक्शे का गहराई से अध्ययन करता रहा।

यौद्धाओं का हैडक्वार्टर अभी वहाँ से बहुत दूर था।

कुछ देर अध्ययन करने के बाद कमाण्डर ने वो नक्शा वापस हैवरसेक बैग में रख लिया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अपनी रिस्टवॉच देखी।

शाम के सात बज रहे थे।

मगर अंधेरा वहाँ ऐसा फैला हुआ था, जैसे आधी रात हो गयी हो।

जंगल में एक बहुत ऊंचे और घने पेड़ के पास पहुँचकर कमाण्डर ठिठका।

अब उसे वहाँ रात गुजारने का इंतजाम करना था।

उसे फिर अपनी फौजी ट्रेनिंग याद आयी।

उसने आसपास पड़ा हुआ ढेर सारा घास-फूंस उठाकर उस पेड़ के नीचे जमा करना शुरू कर दिया और फिर उस घास-फूंस के ऊपर कम्बल डाल दिया।

वहीं कम्बल के पास उसने वो ए0के0 सैंतालिस असाल्ट राइफल भी रख दी, जिसे वो पीछे से उठाकर लाया था।

अब कोई भी उस जगह को देखता, तो यही समझता, जैसे वहाँ कोई सो रहा है।

"दुश्मन को धोखा देने के लिए यह अच्छा तरीका है।" कमाण्डर मुस्कराया-"अब मुझे खुद पेड़ के ऊपर चढ़कर आराम करना चाहिये।"

फिर कमाण्डर ने उस घने पेड़ का मोटा तना अपने दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और उसके बाद उसने बेहद सधे हुए अंदाज में धीरे-धीरे ऊपर की तरफ रेंगना शुरू किया।

वह बिल्कुल छिपकली की तरह रेंग रहा था।

निःशब्द आवाज में।

हैवरसेक बैग अभी भी उसकी पीठ पर कसा था।

शीघ्र ही कमाण्डर पेड़ के घने पत्तों के बीच में पहुँच गया।

वहाँ पहुँचकर उसने एक नया ही काम किया।

उसने अपने बैग में से एक मोटा कम्बल निकाला और उसके चारों कोने पेड़ की मजबूत डालों के साथ अच्छी तरह कसकर बांध दिये।

अब वह कम्बल जमीन से कई मीटर ऊपर पेड़ के घने पत्तों के बीच में किसी चारपाई की तरह तन

चुका था।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने पीठ से हैवरसेक बैग उतारकर एक तरफ टांग दिया।

उसके बाद वो उस चारपाईनुमा कम्बल पर आराम से लेट गया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने एक काम और किया- उसने बैग में से एक 'कैमोफ्लाज किट' (झाड़ीनुमा छतरी) निकाली।

वह एक खास तरह का कवर था, जो ऊपर से देखने पर झाड़ीनुमा नजर आता था।

जबकि वास्तव में वो कवर बुलेटप्रूफ था।

उस पर थ्री नॉट थ्री की गोली से लेकर तोप के गोले तक का भी कोई असर नहीं होता था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने वह 'कैमोफ्लाज किट' अपने ऊपर डाल ली।

अब वो बिल्कुल सुरक्षित था।

फिर लेटे-लेटे कब उसे नींद आ गयी, पता न चला।

□□□

"हम लोग काफी आगे निकल आये हैं।" एक गार्ड कह रहा था- "मैं समझता हूँ कि कमाण्डर करण सक्सेना अब जंगल में यहीं कहीं होना चाहिये।"

"नहीं।" ली मारकोस बोला- "अभी और आगे चलो।"

"क्या हम ठीक जगह पर नहीं पहुंचे है?"

"नहीं, कमाण्डर अभी यहाँ तक नहीं पहुँचा होगा। आखिर हूपर की हत्या हुए अभी ज्यादा समय नहीं गुजरा है।"

"ओके, तो मैं जीप और आगे बढ़ाता हूँ ।"

जीप पहले की तरह ही जंगल में और आगे बढ़ चली।

वह कई सारी जीपों का काफिला था, जो बर्मा के उन जंगलों में अंदर ही अंदर कच्ची चकरोड सड़क से होकर आगे की तरफ बढ़ता जा रहा था।

सबसे आगे वाली जीप में ली मारकोस और बार्बी बैठे थे।

इसके अलावा उस जीप में तीन गार्ड और थे।

जबकि पिछली तमाम जीपों में तो दर्जनों की संख्या में हथियारबंद गार्ड भरे हुए थे।

सब-के-सब बेहद खतरनाक।

भिन्न-भिन्न युद्ध कलाओं में महारथी।

ली मारकोस भी उस समय अपने खतरनाक शस्त्र 'समुराई तलवार' के साथ जीप में मौजूद था और अपने चिर-परिचित समुराई फाईटरों वाली ड्रेस में था।

समुराई फाइटर हमेशा सिर से पांव तक काले रंग की ड्रेस पहनते हैं, जो उनके शरीर से चिपकी होती है।

वैसी ही काले रंग की चिपकी हुई ड्रेस इस वक्त ली मारकोस ने पहनी हुई थी।

उसकी समुराई कमर के साथ बंधी थी।

समुराई की म्यान लकड़ी की थी और उसकी मूठ पर लाल रंग का रिबन बंधा था। समुराई की एक खास बात और होती है, उसके दोनों तरफ धार मिलेगी।

धार भी बेहद पैनी!

जो समुराई का 'ग्रेंड मास्टर' होता है, वह अपनी समुराई से पेड़ के मजबूत तने से लेकर लोहे के पाइप तक को काट डालता है।

और ली मारकोस भी 'ग्रेंड मास्टर' ही था।

कभी समुराई फाइटिंग में उसने पूरे जापान के अंदर तहलका मचा दिया था।

उसने दर्जनों की तादाद में समुराई के बड़े-बड़े मुकाबले जीते।

उसके नाम का आतंक पूरे समुराई जगत पर छाता चला गया। परन्तु ली मारकोस में एक भयंकर कमी भी थी। वह अपराध प्रवृत्ति का आदमी था। दौलत का बेपनाह भूखा था। जब उन मुकाबलों से

हासिल होने वाली दौलत से भी उसका पेट नहीं भरा, तो वह अपराध की दुनिया में आ गया और अपनी समुराई से भोले-भाले लोगों पर कहर बरपा करने लगा।

अपराध का वह सिलसिला जो एक बार शुरू हुआ, तो फिर अभी तक जारी था।

"जरा सोचो !" ली मारकोस के बराबर में बैठी बार्बी कह रही थी- "अगर कमाण्डर इस समय एकाएक हम लोगों के सामने आ जाये तो क्या होगा।"

"कुछ भी नहीं होगा।" ली मारकोस फुंफकारकर बोला- "फौरन बिजली जैसी अद्वितीय तेजी के साथ मेरी समुराई म्यान से बाहर निकलेगी और अगले ही क्षण उसकी गर्दन धड़ से कटकर अलग जा पड़ेगी।"

"क्या सचमुच कमाण्डर करण सक्सेना को मारना इतना ही आसान होगा ?"

"इससे भी कहीं ज्यादा आसान होगा डार्लिंग।" ली मारकोस घमण्डपूर्वक बोला- "एक बार तुम उसे बस मेरे सामने आने दो, फिर मेरी समुराई का जौहर देखना। उसे चीखने तक का मौका भी नहीं मिलेगा।"

बार्बी ने कुछ न कहा।

परन्तु वो कमाण्डर को इतना साधारण इंसान नहीं समझती थी, जिसे इतनी सहजता के साथ शिकस्त दी जा सके।

जीपों का काफिला पहले की तरह ही आगे बढ़ रहा था।

"बस !" तभी एकाएक ली मारकोस ने कहा- "जीप यहीं रोक दो।"

गार्ड ने फौरन जीप के ब्रेक अप्लाई किये।

पहिये चीख उठे।

वो काफी दूर तक घिसटते चले गये थे और फिर रूक गये।

उस जीप के रूकते ही पीछे जितनी भी जीपे चली आ रही थीं, वह भी एक-एक करके रूकती चली गयीं।

ली मारकोस दूरबीन आँखों पर चढ़ाकर जंगल का अब अच्छी तरह मुआयना कर रहा था। फिर उसने दूरबीन गले में डाल ली।

"हम बिल्कुल ठीक जगह है।" उसके बाद वो जीप से बाहर निकलता हुआ बोला- "हमारा दुश्मन अब इससे आगे जंगल में कही भी हो सकता है, किसी भी जगह हो सकता है।"

फिर एक-एक करके तमाम हथियार बंद गार्ड जीपों से बाहर निकलने लगे।

□□□

अंधेरा अब धीरे-धीरे चारों तरफ फैलना शुरू हो गया।

लेकिन वो अंधेरे से कोई बहुत ज्यादा घबराये हुए नहीं थे। उनके पास बहुत हाई पावर की टार्चे थीं और वैसे भी वो अंधेरे के अंदर जंगल में घूमने के अभ्यस्त थे।

"नक्शा किधर है ?" ली मारकोस बोला।

"अभी लाता हूँ।"

एक हथियार बंद फौरन जीप की तरफ बढ़ गया तथा फिर उसके अंदर से नक्शा लेकर लौटा।

वो काफी बड़ा नक्शा था, जिसे गोलाई में फोल्ड किया गया था।

"लीजिए मारकोस साहब !"

ली मारकोस ने नक्शा लेकर उसे जीप के हुड पर फैला लिया।

तमाम हथियारबंद गार्ड अब उसके इर्द-गिर्द भीड़ के छत्ते के रूप में जमा होने लगे थे।

"यह वो जगह है।" फिर वो यकायक नक्शे पर एक जगह उंगली टिकाता हुआ बोला- "जहाँ इस वक्त जंगल में हम सब लोग खड़े हैं। मैं कुछ गलत तो नहीं कह रहा बार्बी ?"

"नहीं।" बार्बी, जो खुद भी नक्शे पर ही गौर से नजरे गड़ाये हुए थी, उसने फौरन स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "तुम्हारा आइडिया दुरुस्त है। मारकोस ! हम सचमुच जंगल में इसी प्वाइंट पर खड़े हैं।"

"और यह वो जगह है।" ली मारकोस ने नक्शे पर काफी दूर एक अन्य जगह उंगली टिकाई- "जहाँ कमाण्डर करण सक्सेना को सबसे पहले दो जंगली युवकों ने अपनी झोपड़ी में शरण दी थी।"

जबकि ली मारकोस की पैनी निगाह अब नक्शे पर कुछ और चीज तलाश रही थीं।

"फिलहाल हमें नक्शे पर एक स्थान और ढुंढ़ना है ।" ली मारकोस बोला ।

"कौन सा स्थान ?"

"जिस स्थान पर हूपर तथा उसके साथी गार्डों की जंगल में कमाण्डर करण सक्सेना से मुठभेड़ हुई और वह सब मारे गये । उसी मुठभेड़ वाले संभावित स्थान का पता लगाने के बाद हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि कमाण्डर करण सक्सेना इस वक्त जंगल में किस जगह होना चाहिये ।"

तमाम लोग अब बहुत गौर से नक्शे को देखने लगे ।

सबकी निगाहें उसी जगह के आसपास घूम रही थीं, जहाँ दो जंगली युवकों ने कमाण्डर करण सक्सेना को अपनी झोपड़ी में शरण दी थी ।

"हालांकि मुठभेड वाली जगह का एकदम सही तरह से पता लगाना काफी मुश्किल काम है ।" बार्बी नक्शे पर ही निगाह गड़ाये हुए बोली- "क्योंकि उस जगह के बारे में हमें कोई सूचना उपलब्ध नहीं है । फिर भी अंदाजे से एक बात जरूर कही जा सकती है ।"

"क्या ?"

"वो मुठभेड़ वाली जगह उसी झोपड़ी के आसपास एक किलोमीटर के दायरे में कहीं होनी चाहिये, जहाँ दो जंगली युवकों ने कमाण्डर को शरण दी थी ।"

"यानि !" ली मारकोस ने नक्शे पर एक अन्य स्थान पर उंगली टिकाई- "इस जगह ?"

"हाँ ।" बार्बी थोड़ा हिचकिचाते हुए बोली- "संभवतः यही मुठभेड़ वाली वो जगह होनी चाहिये ।"

"मेरा भी यही विचार है ।" ली मारकोस, बार्बी की तरफ देखकर बेहद उत्साहपूर्वक बोला- "मुठभेड़ वाली जगह यहाँ होनी चाहिये । और दोस्तो, अगर हमारा यह विचार दुरूस्त है, तो इस वक्त हम उस मुठभेड़ वाली जगह से कोई आठ किलोमीटर दूर खड़े हैं । आठ किलोमीटर हालांकि यह दूरी बहुत है । लेकिन मैं समझता हूँ कि कमाण्डर अब आठ किलोमीटर के इसी वर्ग क्षेत्रफल में कहीं होना चाहिये । क्योंकि हूपर की मौत को जितना समय गुजरा है, उस समय को अगर पैदल चलने वाले व्यक्ति की चाल से कैलकुलेट किया जाये, तो यही रिजल्ट निकलकर सामने आता है कि कमाण्डर ने अभी आठ किलोमीटर का यह वर्ग क्षेत्रफल पार नहीं किया होगा । अब हमें एक दूसरा काम करना है ।"

"क्या ?"

"हमने जंगल के इस पूरे आठ किलोमीटर के क्षेत्र को चारों तरफ से घेरकर आगे की तरफ बढ़ना है और कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही गोली मारनी है । याद रहे, वो बहुत खतरनाक आदमी है । वो बचना नहीं चाहिये ।"

"ऐसा ही होगा ।"

कई सारे गार्ड भभके स्वर में बोले ।

"अगर उस आदमी को अपनी जान बचाने का जरा भी मौका हासिल हुआ ।" ली मारकोस बोला- "तो उस क्षण के बाद तुममें से कोई नहीं बचेगा ।"

"हम उसे कोई मौका नहीं देंगे मारकोस साहब ।"

"गुड !"

ली मारकोस ने जीप के हुड पर बिछा नक्शा उठा लिया और फिर वह उसे फोल्ड करने लगा ।

□□□

तभी काफी सारे जंगली जोर-जोर से रणहुंकार करते हुए वहाँ आ पहुंचे ।

वह नजदीक के ही एक गांव में रहते थे और एक हथियारबंद गार्ड उन्हें वहाँ बुलाकर लाया था ।

सब अधनंगे थे ।

उन्होंने अपनी गुप्तांगों वाली जगह पर मामूली सी कपड़े की धज्जी लपेटी हुई थी, बाकी जांघों के चारों तरफ एक धागे में बंधे हुए लम्बे-लम्बे पत्ते झूल रहे थे ।

सिर पर भी पत्तों का झुरमुट था ।

उन सब जंगलियों के हाथ में बड़े नुकीले भाले थे और वह खूब उछल-उछलकर बर्मी भाषा में ही अजीब-अजीब सी आवाजें निकाल रहे थे ।

कानों में कुण्डल पड़े हुए।
शरीर पर जगह-जगह नीले गोदने के चिन्ह।
एक जंगली के गले में छोटी-सी ढोलक भी पड़ी थी, जिस पर वह बार-बार थाप देता।
"सब खामोश हो जाओ।" ली मारकोस अपने दोनों हाथ उठाता हुआ जंगलियों के सामने खड़ा हो गया और बर्मी भाषा में ही चिल्लाया- "सब खामोश हो जाओ।"
जंगली चुप हो गये।
वहाँ सन्नाटा छा गया।
घोर सन्नाटा।
"जैसाकि तुम लोगों को मालूम ही है।" ली मारकोस जंगलियों के सामने चिल्लाता हुआ ही बोला- "कि हमारे इन जंगलों में एक बहुत खतरनाक दुश्मन घुस आया है और उसने यहाँ का सारा अमन चैन उजाड़कर रख दिया है। उसने हूपर जैसे खतरनाक योद्धा को भी मार डाला है और ढेरो हथियारबंद गार्डों की हत्या भी कर दी है।"
"आप हमें यह बताइये मारकोस साहब!" एक जंगली ने भी चिल्लाकर ही कहा- "कि हमें क्या करना है?"
उसी क्षण दूसरे जंगली ने ढोलक पर थाप भी दी।
"मैं चाहता हूँ कि आज रात तुममें से कोई भी न सोये।"
"क्यों?"
"क्योंकि दुश्मन जंगल में यही कहीं आसपास मौजूद है। तुम सब लोगों ने मिलकर आज रात उस दुश्मन को पकड़ने में हमारी पूरी मदद करनी है। दुश्मन तुम लोगों को कहीं भी दिखाई दे, तो तुमने उसे बिना कोई मौका दिये मार डालना है। बोलो, क्या तुम यह काम करने के लिए तैयार हो?"
"बिल्कुल तैयार हैं।" कई सारे जंगली एक साथ चिल्लाकर बोले- "जंगल देवता की ख़ुशी के लिए हम कुछ भी करेंगे।"
वह जोर-जोर से उछले और ढोलक पर रणभेदी अंदाज में पुनः थाप दी गयी।
"मैं एक बात तुम्हे और बताना चाहता हूँ।"
"क्या?"
"दुश्मन जैसे ही तुम्हें जंगल में कहीं दिखाई दे, तो तुमने फौरन ही उसका मुकाबला करने के साथ-साथ एक काम और करना है। तुमने ढोलक पर जोर-जोर से थाप देकर हमें सूचित भी करना है कि दुश्मन तुम्हें मिल गया हैं, ताकि फौरन ही तमाम लोग तुम्हारी मदद के वास्ते उस जगह पहुँच सके।"
"लेकिन उस एक दुश्मन से निपटने के लिए हम सब ही बहुत हैं।" जंगली बोले।
"नहीं। जो मैं कह रहा हूँ, सिर्फ वह सुनो। तुमने तुरंत ढोलक की ध्वनि द्वारा सूचना देनी है।"
"ठीक है।"
जिस तरह कभी अफ्रीका में ओझा सम्प्रदाय के लोग ध्वनियों द्वारा सूचनायें इधर से उधर पहुँचाते थे, उसी प्रकार उन जंगलियों को भी ध्वनि शास्त्र में महारथ हासिल थी।
उन्होंने अलग-अलग ध्वनियों के अलग-अलग संकेत बनाये हुए थे, जिसके कारण वह ध्वनियों द्वारा अपनी बात बड़ी आसानी से एक-दूसरे तक पहुँचा देते थे। जबकि दुश्मन को पता भी नहीं चल पाता था, वह क्या कर रहे हैं।
"अब तुम लोग जंगल में घुसकर फौरन ही अपने-अपने काम में जुट जाओ।"
आदेश की देर थी, तुरंत वह सारे जंगली पहले की तरह ही जोर-जोर से रणहुंकार करते हुए और अपने भाले ले-लेकर जंगल में अंदर की तरफ दौड़ पड़े।
थोड़ा आगे पहुँचते ही उनकी आवाजें आनी बंद हो गयीं।
"मैं समझती हूँ।" बार्बी बोली- "अब हमें भी समय नष्ट करने की बजाय उन लोगों के पीछे-पीछे ही आगे बढ़ना चाहिये।"
"ठीक बात है।" ली मारकोस बोला।
उसके बाद ली मारकोस ने बड़ी सक्रियता का परिचय दिया।
उसके साथ जितने भी गार्ड थे, उसने उन्हें दो अलग-अलग टुकड़ियों में बांट दिया।

पहली टुकड़ी का लीडर खुद ली मारकोस बना।
दूसरी टुकड़ी की लीडर, बार्बी।
फिर वह दोनों टुकड़ियां अलग-अलग दिशाओं में जंगल में आगे की तरफ बढ़ी। ली मारकोस वाली टुकड़ी जहाँ जंगल में दो तरफ से आगे बढ़ी, वहीं बार्बी वाली टुकड़ी बायीं तरफ से।
कुल मिलाकर वह उस जंगल को चारों तरफ से घेरते हुए आगे बढ़ रहे थे।

□□□

जैक क्रेमर चिंतित था।
परेशान !
कमाण्डर करण सक्सेना की उन खौफनाक जंगलों में घुसने वाली खबर ने उसकी नींद उड़ा दी थी। खासतौर पर जब से उसे हूपर के मरने की सूचना मिली थी, तब से तो वह कुछ ज्यादा ही डरा हुआ था। इस समय वो अपने आलीशान शयन कक्ष में आराम कुर्सी पर बैठा था और दुनिया की सबसे कीमती 'श्री डब्ल्यू पीटरसंस' शराब का पैग बनाकर पी रहा था।
उस एक शराब की बोतल की कीमत लगभग सत्तर हजार रूपये होती है।
आहट सुनकर उसने दरवाजे की तरफ देखा।
वहाँ हिटमैन खड़ा था।
"आओ हिटमैन !"
हिटमैन धीरे-धीरे कदमों से चलता हुआ उसके करीब आया और फिर सामने पड़ी एक दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।
"क्या जंगल से कोई खबर आयी है ?"
"नहीं, अभी तक कोई सूचना नहीं है।"
"हूँ ।"
जैक क्रेमर ने धीरे से हुंकार भरी तथा फिर हिटमैन के लिए 'श्री डब्ल्यू पीटरसंस' का एक पैग तैयार करने लगा।
"नहीं।" हिटमैन ने उसे टोका- "मेरी इच्छा नहीं है।"
"एक पैग ले लो।"
हिटमैन खामोश रहा।
इस बीच जैक क्रेमर ने उसके लिए एक पैग तैयार कर दिया था, जिसे फिर हिटमैन ने उठा लिया।
"मैं आपसे एक बहुत खास विषय पर बात करने आया हूँ सर !" हिटमैन बोला।
"किस विषय पर ?"
"आपको शायद मालूम नहीं है।" हिटमैन ने शराब का एक घूंट भरा- "कि कल नारकाटिक्स (नशीले पदार्थ) की एक बहुत बड़ी खेप रंगून के लिए रवाना होने वाली है।"
"फिर क्या प्रॉब्लम है ?"
"प्रॉब्लम कहीं कुछ नहीं है सर ! रंगून जो खेप जाने वाली है, वह खेप पूरी तरह तैयार है। इसके अलावा वो जंगली लोग भी तैयार हैं, जो हमारे नशीले पदार्थ अपने खच्चरों पर लादकर तथा जड़ी-बूटियों की आड़ में छिपाकर जंगल में बाहर ले जाते हैं और फिर बर्मा सरकार की आँखों में धूल झोंककर रंगून तक पहुँचाते हैं। बस प्रॉब्लम एक ही जगह है सर, और बहुत बड़ी प्रॉब्लम है।"
"क्या ?"
"हमारी वो खेप जिस रास्ते से होकर रंगून जाने वाली है, वो जंगल का वही रास्ता है, जिस पर इस समय कमाण्डर करण सक्सेना मौजूद है।"
"ओह !"
"सर !" हिटमैन थोड़ा आगे को झुक गया और उसने शराब के दो घूंट भरे- "अगर इत्तेफाक से वो खेप कमाण्डर करण सक्सेना की निगाह में आ गयी, तो वो हमारी उस पूरी नारकाटिक्स खेप को तबाह कर सकता है, जो हमारे लिए बड़ा नुकसान होगा।"

"क्या वो खेप जंगल के किसी और रास्ते से होकर रंगून तक नहीं पहुँच सकती है ?" जैक क्रेमर ने अपना जाम खाली करके टेबिल के ऊपर रखा।

"आप तो जानते ही हैं सर, दूसरे रास्ते की तरफ विशाल डरावनी नदी बहती है और वो नदी भी आगे जाकर अवरुद्ध हो गयी है, इसलिए उस तरफ से भी जाना मुमकिन नहीं है।"

"हूँ।"

जैक क्रेमर के माथे पर चिन्ता की गहरी लकीरें खिंच गयी।

समस्या वाकई जटिल थी।

"फिर तो बस एक ही तरीका है।"

"क्या?"

"फिलहाल नारकाटिक्स खेप को रंगून भेजे जाने का प्रोग्राम पोसपोण्ड कर दो।"

"लेकिन कब तक के लिए ?"

"जब तक कमाण्डर करण सक्सेना मार नहीं दिया जाता। जब तक दहशत का वो माहौल खत्म नहीं हो जाता, जो कमाण्डर के जंगल में आने की वजह से बना है।"

"परंतु अगर इस मिशन के पूरा होने में ज्यादा लम्बा समय लग गया, तो फिर क्या होगा ?" हिटमैन ने भी अपना पैग खाली करके सामने टेबिल पर रखा- "जरा सोचिये, नारकाटिक्स का कारोबार ही हम तमाम यौद्धाओं की असली ताकत है। इसी कारोबार के बल पर हम दौलत इकटठी कर रहे हैं और एक दिन पूरे बर्मा पर कब्जा करने के अपने सपने को साकार रूप दे रहे हैं। अगर हमारा यही कारोबार बंद हो जायेगा, तो फिर हम क्या करेंगे ?"

"बेवकूफो की तरह बात मत करो हिटमैन !" जैक क्रेमर ने अपने सन जैसे सफेद बालों को झटका देकर कुर्सी के हत्थे पर घूंसा मारा और फिर खड़ा हो गया- "यह कोई ऐसी समस्या नहीं है, जो हमेशा रहने वाली है। हो सकता है, आज की रात ही कमाण्डर के जीवन की आखिरी रात हो।"

"लेकिन... !"

"प्लीज हिटमैन, फिलहाल हमें अपना सारा ध्यान कमाण्डर की तरफ लगाना चाहिये। इस वक्त नारकाटिक्स खेप भेजे जाने की कोई बात मत करो।"

"ओके सर।"

हिटमैन भी अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

"कोई और सूचना ?"

"नहीं सर ! इस वक्त मैं रेडियो रूम में जा रहा हूँ। देखता हूँ, शायद वहाँ कमाण्डर से संबंधित कोई खबर आयी हो।"

"बेहतर है।"

हिटमैन वहाँ से चला गया।

□□□

कमाण्डर उस वक्त 'कैमोफ्लाज किट' से ढका हुआ इत्मीनान की गहरी नींद सो रहा था, जब एकाएक झटके से उसकी आँख खुल गयी।

उसने सोते-सोते कुछ आवाज सुनी थी।

कुछ आदमियों के जोर-जोर से चिल्लाने की आवाजें।

रणहुंकार जैसी आवाजें।

पेड़ के ऊपर लेटे-लेटे कमाण्डर ने जल्दी से 'कैमोफ्लाज किट' हटाई और उसे फोल्ड किया। फिर उसने नीचे की तरफ झांका।

नीचे झांकते ही उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं।

आश्चर्य से।

कमाण्डर ने उस पेड़ के नीचे काफी सारे जंगली लोग देखे, जो अर्द्धनग्न थे और जिनके हाथ में बड़े नुकीले भाले थे। वह उन नुकीले भालों से जोर-जोर से कम्बल पर प्रहार कर रहे थे और मुंह से अजीब-अजीब आवाजें निकालते हुए उछल रहे थे।

उन सबसे थोड़ी ही दूर खड़ा एक और जंगली अपनी ढोलक पर जोर-जोर से थाप दिये जा रहा था।

चारों तरफ कोहराम मचा था।

कमाण्डर करण सक्सेना समझ गया, उसे जितना सोना है, वह सो चुका है।

अब उसे उन खतरनाक जंगलियों से मुकाबला करना था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने आनन-फानन 'कैमोफ्लाज किट' अपने हैवरसेक बैग के अंदर रखी। कम्बल खोलकर उसे भी बैग में रखा। फिर उसने वो बैग पहले की तरह ही अच्छी तरह अपनी पीठ पर कस लिया।

उसके बाद उसने पुनः नीचे की तरफ देखा।

जंगलियों का अभी भी वही हाल था।

वह जोर-जोर से रणहुंकार भरते हुए कम्बल पर भाले बरसाये जा रहे थे।

शुक्र था, अभी उन्हें इस बात का पता नहीं चला था कि वह कितने बड़े धोखे में हैं।

कमाण्डर ने फौरन अपने हैवरसैक बैग में से दो थर्टी सिक्स एच ई हैंडग्रेनेड बम निकाल लिए और फिर दांतों से पिन खींचकर नीचे जंगलियो की तरफ फेंके।

धड़ाम !

धड़ाम ! !

बम फटने के अत्यंत भीषण धमाके हुए।

जो जंगली थोड़ी देर पहले तक खुशी से रणहुंकार भर रहे थे, एकाएक उनकी दहशतनाक चीखों से सारा जंगल थर्रा उठा।

उनकी लाशों के चीथड़े उड़कर इधर-से-उधर उछलते नजर आये।

बम काफी शक्तिशाली थे।

कमाण्डर जिस पेड़ पर बैठा था, वह काफी ऊंचाई पर था, वरना बिना शक बमों के उन प्रचण्ड धमाकों से वह खुद भी हताहत होता।

कमाण्डर ने दो हैंड ग्रेनेड बम और निकाले तथा पिन खींचकर उन्हें भी उन जंगलियों की तरफ उछाला।

धड़ाम !

धड़ाम ! !

दो प्रचण्ड धमाके और हुए।

तब तक कुछ जंगलियों की निगाह पेड़ पर बैठे कमाण्डर पर पड़ चुकी थी, उन्होंने तत्काल निशाना साधकर अपने-अपने भाले उस तरफ उछाले।

सर्र-सर्र !

भाले इस प्रकार कमाण्डर की तरफ झपटे, जैसे आसमान को चीरकर कुछ मिसाइलें उसकी तरफ उड़ी चली आ रही हों। उन जंगलियों ने अपनी पूरी शक्ति के साथ वो भाले उसकी तरफ फेंके थे।

कमाण्डर करण सक्सेना भी आखिर मार्शल आर्ट का योद्धा था।

उसने सेकेंड के सौवे हिस्से में कोई दो फुट नीचे वाली पेड़ की एक दूसरी मजबूत डाल की तरफ छलांग लगा दी। तुरंत तमाम भाले सर्र-सर्र की आवाज करते हुए उसके ऊपर से गुजरे तथा पेड़ की मजबूत डालों को पैने ब्लेडों की तरह काटते और उनकी धज्जियां उड़ाते चले गये।

उसी क्षण नीचे वह दो हैंड ग्रेनेड और फटे, जिन्हें कमाण्डर ने फैंका था।

तत्काल बाकी बचे जंगलियों की चीखें भी वहाँ गूंज गयीं।

अब सिर्फ चार जंगली जिंदा बचे थे।

चार !

परंतु अपने चारों तरफ इतनी सारी लाशें देखकर उनके भी होश उड़ गये।

फिर उनमें से किसी में इतना हौसला न हुआ, जो वो वहाँ रूकते और कमाण्डर का मुकाबला करते।

मगर भागकर भी अब उन्होंने कहाँ जाना था।

कमाण्डर ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए उस काफी ऊंचे पेड़ से नीचे छलांग लगा दी।

वह धम्म से नीचे जाकर गिरा और स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति उछलकर खड़ा हो गया।

वह उसकी तरफ भाले तानते, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में वहीं कम्बल के पास पड़ी ए0के0 सैंतालिस असाल्ट राइफल आ चुकी थी। अगले ही पल उसने उस असाल्ट राइफल का बस्ट फायर खोल दिया।

धड़-धड़-धड़ करके गोलियां चलती चली गयीं और वह चारों जंगली भी दहाड़े मारते हुए नीचे गिरे।

फिर वहाँ खामोशी छा गयीं।

गहरी खामोशी !

□□□
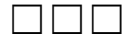
आसपास अब लाशें ही लाशें पड़ी थीं।

खून में लथपथ लाशें !

कमाण्डर ने राइफल वापस कंधे पर टांग ली।

खतरा वो अभी भी अपने बिल्कुल सिर पर मंडराता अनुभव कर रहा था।

वो जानता था, वहीं नजदीक में ही कहीं और भी दुश्मन मौजूद है। जिन्हें उन जंगलियों ने ढोलक पर थाप दे देकर उसकी वहाँ उपस्थिति के बारे में बता दिया है और जो अब उसके लिए किसी भी पल खतरनाक साबित हो सकते थे।

उसने अपनी रिस्टवाच देखी।

रात के दो बजे थे।

दुश्मन को धोखा देने वाली फौजी ट्रेनिंग आज उसके काफी काम आयी थी।

तभी एक घटना घटी।

नई घटना।

उसने हल्की ब्लिप-ब्लिप की आवाज सुनी।

उस आवाज को सुनते ही कमाण्डर तेजी से फिरकनी की तरह आवाज की दिशा में घूम गया।

कमाण्डर जानता था कि वह किसी ट्रांसमीटर सैट में से निकलने वाली आवाज थी।

तुरंत ही उसकी निगाह एक जंगली के हाथ पर जाकर ठहर गयी। उसने अपनी बाई कलाई में एक रिस्टवॉच बांधी हुई थी, जो काफी कीमती रिस्टवॉच थी।

कमाण्डर को एक जंगली के हाथ में इतनी कीमती रिस्टवॉच देखकर बड़ी हैरानी हुई।

ब्लिप-ब्लिप की वह आवाज उसी रिस्टवॉच के अंदर से निकल रही थी।

जरूर वो रिस्टवॉच ट्रांसमीटर सैट भी था।

कमाण्डर ने उसका ट्रांसमीटर स्विच ऑन किया। फौरन ही उसके अंदर से आवाज निकलने लगी।

"हैलो ! हैलो ! क्या रिपोर्ट हैं ?" वह बिल्कुल अंजान आवाज थी- "तुम कुछ बोल नहीं रहे हो एडगर, तुम खामोश क्यों हो ?"

"एडगर, रिपोर्ट दो ! तुम्हारे ट्रांसमीटर से ऐसी फ्रीक्वेंसीज निकलकर यहाँ हैडक्वार्टर तक क्यों पहुँच रही हैं, जैसे तुम्हारे आसपास बम फट रहे हों। गोलियां चल रही हों।"

कमाण्डर ने ट्रांसमीशन स्विच वापस ऑफ कर दिया।

अगर उसने उस युवक की एक बार भी आवाज सुनी होती, तो वह बिल्कुल उसी की आवाज में ट्रांसमीटर पर बात कर सकता था।

फिर उसने उस जंगली के चेहरे की तरफ देखा, जिसके हाथ में वो रिस्टवॉच बंधी हुई थी।

एडगर !

तो उस आदमी का नाम एडगर था।

कमाण्डर को संदेह हुआ, उस आदमी ने जरूर अपने चेहरे पर मैकअप किया हुआ है। एडगर नाम का कोई आदमी बर्मा का जंगली युवक नहीं हो सकता था। कमाण्डर ने उसके चेहरे को टटोला, तो फौरन एक पतली सी झिल्ली उतरकर कमाण्डर के हाथ में आती चली गयी। जो फेस-मास्क था।

नीचे से अब युवक का बिल्कुल सफेद मुखड़ा चमकने लगा।

वह अंग्रेज था और कोई अमरीकन मालूम होता था।

"ओह, तो यह चक्कर है।" कमाण्डर होंठों ही होंठों में बुदबुदाया- "जैक क्रेमर ने बर्मा के जंगली

आदिवासियों के बीच भी अपने आदमी घुसा रखे हैं, जो उन सीधे-सादे जंगलियों के बीच भी जासूसी का काम करते होंगे।"

ट्रांसमीटर में से ब्लिप-ब्लिप की आवाज निरंतर निकल रही थीं।

कमाण्डर करण सक्सेना ने उस अंग्रेज युवक की हार्ट-बीट चैक की।

यह देखकर वो चौंका, उसकी हार्ट-बीट चालू थी।

हालांकि हैंडग्रेनेड के धमाकों के कारण उसका आधे से ज्यादा शरीर क्षतिग्रस्त हो चुका था। कमाण्डर ने एडगर का गाल पकड़कर जोर-जोर से थपथपाया और फिर उसके सिर के बाल पकड़कर जोर से ऊपर की तरफ खींचें।

"प...पानी !" एडगर धीरे से कुलबुलाया, उसकी बेहोशी टूटी- "प... पानी !"

कमाण्डर ने अपने बैग में से कैन निकाली और थोड़ा सा पानी उसके मुंह में डाला।

"प... पानी !" वह फिर बुदबुदाया- "पानी।"

कमाण्डर ने इस बार उसकी आवाज ज्यादा ध्यानपूर्वक सुनी।

अब उसका काम बन गया था।

तुरंत उसने कुंगफू लॉक का एक्शन दिखाया। उसने एडगर की गर्दन मे उंगली फंसाकर झटके से नीचे की तरफ खींच दी, उसकी गर्दन की रिब्स टूट गयी। रिब्स टूटते ही वह मर गया।

ट्रांसमीटर में से ब्लिप-ब्लिप की आवाज अभी भी निकल रही थी।

कमाण्डर ने पुनः ट्रांसमिशन स्विच ऑन किया, ट्रांसमीशन स्विच ऑन करते ही आवाज आने लगी।

"एडगर, तुम बोल क्यों नहीं रहे हो ?" दूसरी तरफ से कोई लगातार चिल्ला रहा था।

"यस सर !" कमाण्डर के मुंह से बिल्कुल उस अंग्रेज युवक जैसी आवाज निकली- "एडगर स्पीकिंग।"

"तुम इतनी देर से खामोश क्यों हो एडगर ?" दूसरी तरफ से जैक क्रेमर बोल रहा था- "तुम ट्रांसमीटर पर बात क्यों नहीं कर रहे ? ऐसा क्यों लग रहा है, जैसे तुम्हारे आसपास धमाके हो रहे हों।"

"यहाँ दुश्मन और हमारे बीच जबरदस्त युद्ध ही चल रहा था सर।" कमाण्डर करण सक्सेना तत्पर लहजे में बोला- "इसीलिए मैं ट्रांसमीटर ऑन नहीं कर सका। लेकिन अब आपके लिए एक खुशखबरी है, हमने दुश्मन को मार डाला। हमारा मिशन सफल रहा।"

"क्या कह रहे हो तुम !" जैक क्रेमर जोर से चौंका- "क्या सचमुच कमाण्डर करण सक्सेना मारा जा चुका है ?"

"यस सर, कमाण्डर मारा जा चुका है। उसकी लाश इस वक्त मेरी आँखों के सामने ही पड़ी है। हमने उसके शरीर को नुकीले भालों से गोद डाला है।"

"मैं यकीन नहीं कर पा रहा हूँ ।"

"आप जब खुद यहाँ आकर उसकी लाश अपनी आँखों से देखेंगे सर।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "तब आपको यकीन भी आ जायेगा।"

"तुम इस वक़्त कहाँ हो ?"

"मैं जंगल में उत्तरी छोर के कोई चालीस डिग्री ऐंगिल पर हूँ ।"

"ओके, मैं अभी भी मारकोस को तुम्हारे पास भेजता हूँ ।"

कमाण्डर ने ट्रांसमीशन स्विच ऑन कर दिया।

एक महत्वपूर्ण काम वो कर चुका था।

ली मारकोस।

वह नाम सुनते ही कमाण्डर की आँखों के गिर्द उस समुराई फाइटर का चेहरा कौंध उठा, जो अपने फील्ड का ग्रेंड मास्टर था।

यानि अब उसकी मुठभेड़ ली मारकोस से होने वाली थी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने गहरी सांस ली। फिर उसने दूसरा महत्वपूर्ण कार्य अंजाम दिया।

तुरंत ही उसके हाथ में चमचमाते फल वाला अपना स्प्रिंग ब्लेड नजर आने लगा था। फिर उसके बाद वहाँ जितने भी जंगली लोगों की लाशें पड़ी थीं, उसने उन सब लाशों के ठीक दिल में स्प्रिंग ब्लेड पेवश्त करना शुरू कर दिया।

अगर थोड़ी बहुत किसी में सांस बाकी भी थी, तो वह भी खत्म हो गयी।

अब वह सब निश्चित रूप से मर चुके थे।

फिर कमाण्डर ने उन सबके भाले भी तोड़ डाले और उसके बाद जंगल की अनाम, अंजान राहों पर आगे बढ़ना शुरू किया।

जहाँ कदम-कदम पर उसके लिए मौत बिछी थी।

□□□

ली मारकोस और बार्बी की हथियारबंद टुकड़ियां घनघोर जंगल में निरंतर आगे की तरफ बढ़ रही थीं।

एक बात उन दोनों टुकड़ियों के बीच पहले ही तय हो चुकी थी कि जंगल में एक खास प्वाइंट पर पहुँचकर वह दोनों टुकड़ियां फिर एक जगह मिलेंगी और उसी प्वाइंट पर वहाँ तक घटी तमाम घटनाओं की सूचनाओं का उनके बीच आदान प्रदान होगा।

दोनों टुकड़ियां जब बिल्कुल अलग-अलग दिशाओं से चलती हुई उस एक खास प्वाइंट पर पहुंची, तो आधी रात हो चुकी थी और अंधेरा अब उस पूरे जंगल में इस कदर फैल चुका था कि हाथ को हाथ सुझाई देना भी मुश्किल था।

उस प्वाइंट पर पहुँचते ही बार्बी ने एक छोटा सा कैंडिल स्टैंड जलाया, जो पारदर्शी कांच के एक ग्लोब से ढका हुआ था।

उसकी रोशनी वहाँ आसपास फैल गयी।

"दुश्मन का कुछ पता चला ?" ली मारकोस ने बार्बी से सबसे पहला सवाल यही किया।

"अभी तक तो कुछ मालूम नहीं हुआ, क्या तुम्हें पता चला ?"

"नहीं, मुझे भी कुछ पता नहीं चला है। जबकि हम लोग तीन किलोमीटर आगे जा चुके हैं।" ली मारकोस बोला- "हम जिस प्रकार व्यूह रचना करते हुए यहाँ तक आये हैं, उससे तो यही साबित होता है कि दुश्मन तीन किलोमीटर के उस क्षेत्रफल में था ही नहीं, वरना वो हमारी नजरों से छिपा न रहता।"

"जंगली लोग कहाँ है ?"

"वह शायद हमसे काफी आगे निकल गये हैं।" ली मारकोस बोला- "उनकी आवाजें भी नहीं आ रही हैं।"

"हूँ ।"

"अब क्या करना है ?"

बार्बी ने कैंडिल स्टैंड के नजदीक जाकर अपनी रिस्टवॉच देखी।

बारह पैंतीस का टाइम था।

"मैं समझती हूँ ।" बार्बी बोली- "फिलहाल रात काफी हो चुकी है। साढ़े बारह बज रहे हैं। अब हमें थोड़ी देर यहीं आराम करना चाहिये, जब कुछ घण्टे बाद थोड़ी रोशनी हो जायेगी, तब हम फिर आगे बढ़ेंगे। क्या विचार है ?"

"विचार बुरा नहीं।" ली मारकोस बोला- "मैं भी यही सोच रहा था कि थोड़ी देर आराम किया जाये। दोस्तों !" ली मारकोस हथियारबंद गार्डों की तरफ घूमा- "रात गुजारने का यही इंतजाम करो। जीप से निकलकर कुछेक तम्बू गाड़ लो।"

"ठीक है मारको साहब, अभी रात गुजारने का बंदोबस्त करते हैं।"

तुरंत ही कई सारे गार्ड जीपों के अंदर रखे छोटे-छोटे तम्बू निकालने लगे तथा उन्हें वहीं जंगल में गाड़ने के कार्यकलाप में जुट गये।

उन तम्बुओं की संख्या कोई दस थी, जो जंगल में एक ही जगह पर थोड़े-थोड़े फासले से गाड़ दिये गये थे।

वह नीली और सफेद पट्टियों वाले तम्बू थे।

जहाँ ज्यादातर गार्ड उन तम्बुओं में आराम करने के लिये चले गये थे, वहीं कुछेक गार्ड ऐसे भी थे, जो अपनी-अपनी राइफलें लेकर तम्बुओं के बाहर पहरे पर तैनात रहे। उन्हीं में से एक तम्बू के अंदर ली मारकोस और बार्बी लेटे हुए थे।

दोनों ही एक बिस्तर पर थे।

वह सफेद रंग की हल्की दरीनुमा बिछावन थी, जो तम्बू के अंदर कर दी गयी थी, वहीं उस तम्बू के एक कोने में कैण्डिल स्टैण्ड भी रखा हुआ था, जिसका बहुत धुंधला-धुंधला सा प्रकाश तम्बू के चारों तरफ बिखरा था।

"क्या सोच रही हो ?" ली मारकोस खूबसूरत गुड़िया-सी बार्बी को अपनी बाहों के दायरे में समेटता हुआ बोला।

"कुछ नहीं।"

"फिर भी, कुछ तो ?" ली मारकोस ने अपने दहकते हुए होंठ बार्बी के होंठों पर रखे।

फिर ली मारकोस का हाथ सरसराता हुआ बार्बी के पेट पर रेंगने लगा और उसने उसकी मिडी के बटन खोलने शुरू किये।

"क्या कर रहे हो ?" बार्बी कुलबुलाई- "क्या जंगल में भी चैन नहीं है ?"

ली मारकोस मुस्कराया।

उसकी मुस्कान उन्मुक्त थी।

"डार्लिंग !" वह बोला- "जंगल में तो आदमी और भी ज्यादा शैतान बन जाता है। शुक्र करो, अभी मैं तुम्हारे साथ शैतानों की तरह पेश नहीं आ रहा हूँ।"

बार्बी भी मुस्करायी।

तब तक ली मारकोस ने उसकी मिडी के सारे बटन खोल दिये थे और फिर वह उसके चेहरे के बेतहाशा चुम्बन लेने लगा।

बार्बी भी उसके सीने से थोड़ा सट गयी।

अब उसे भी आनन्द आना शुरू हो गया था।

"तुम देख लेना।" ली मारकोस गरमजोशी के साथ बोला- "आज की रात करण सक्सेना के जीवन की आखिरी रात होगी। मेरी समुराई उसकी गर्दन धड़ से अलग कर डालेगी।"

"क्या सचमुच ?" बार्बी हंसी।

"बिल्कुल। तुम जानती ही हो बार्बी, एक बार अगर मेरा दुश्मन मेरी समुराई के सामने आ जाता है, तो फिर दुनिया की बड़ी-से-बड़ी ताकत भी उसे नहीं बचा पाती।"

"लेकिन मत भूलो मारकोस, वह कमाण्डर करण सक्सेना है। एक अन्तराष्ट्रीय जासूस !"

"वह चाहे कोई भी है।" ली मारकोस फुंफकारा- "मेरी समुराई जब सांय-सांय करती हुई चलेगी, तो वह उसकी शर्म करने वाली नहीं है।"

ली मारकोस के होंठ अब बार्बी की गर्दन पर सरसरा रहे थे।

एक हाथ बार्बी की पीठ पर रेंग रहा था।

फिर उसने दो उंगलियों की मदद से उसकी स्कर्ट की जिप खोल डाली और फिर ली मारकोस का हाथ बार्बी की नग्न पीठ पर सरसराने लगा।

बार्बी नीचे चुस्त पेण्ट पहने थी, जिसमें उसके भरे-भरे सुडौल नितम्ब बड़े जानलेवा अंदाज में मुखर हो रहे थे।

पीछे से स्कर्ट की जिप खुल जाने के कारण अब बार्बी का कमर तक का सारा भाग नग्न हो गया।

ली मारकोस की आँखों में वासना के डोरे खिंच गये।

तभी उसने बार्बी की स्कर्ट पकड़कर खींच दी। फौरन उसके गुलाबी रंग के बेहद उन्नत उरोज चमक उठे, जिनमें रक्तिम आभा दौड़ रही थी।

ली मारकोस ने अब बार्बी को बिल्कुल सीधा चित करके लिटा दिया और उसके वक्षस्थलों पर अपना सिर रख दिया।

बार्बी के मुंह से तेज मादक सिसकारी छूटी।

उसने उत्तेजनावश ली मारकोस के बाल अपनी मुट्ठी में जकड़ लिये।

बार्बी बहुत खेली खाई युवती थी।

उसका आधे से ज्यादा जीवन जापान की सायोनारा नामक बंदरगाह के करीब गुजरा था, जो आज भी जापान का सबसे बड़ा वेश्यावृत्ति का अड्डा समझा जाता है।

कभी जापान में इतनी वेश्यावृत्ति नहीं थी। बल्कि गरम गोश्त के इस कारोबार को कभी जापानी लोग बहुत घृणा की नज़र से देखते थे। मगर इतिहास बदलता है। द्वितीय विश्व युद्व के दौरान जब जापान में जनरल मेकारथो का शासन था, तो अमरीकी सैनिकों ने सायोनारा नामक बंदरगाह में घुसकर वेश्यावृत्ति को जन्म दिया। उन्होंने सुन्दर-सुन्दर जापानी लड़कियों के साथ सामूहिक बलात्कार किये और फिर उन्हें छोड़ दिया, उस शहर की अंधेरी तथा गुमनाम गलियों में भटकने के लिये।

बार्बी भी एक वेश्या मां की संतान थी।

परन्तु बचपन से ही बार्बी ने दृढ़ सकंल्प कर लिया था कि वह खुद वेश्या नहीं बनेगी। टोक्यो की गलियों में घूमते हुए तथा औरत के भूखे सड़कछाप भेड़ियों का मुकाबला करते हुए उसने जूडो के अंदर बारहवां दन, ताइक्वाण्डो में आठवां दन प्राप्त कर लिया। बहरहाल आज पूरी दुनिया में उससे खतरनाक मार्शल आर्ट का योद्वा नहीं था।

शीघ्र ही वह दोनों कमर से उपर तक नग्न हो चुके थे।

बार्बी अब काफी उत्तेजित थी।

उसने एकाएक झपटकर ली मारकोस को नीचे गिराया तथा फिर अपने उन्नत उरोज उसके सीने से बुरी तरह चिपका दिये।

ली मारकोस के हाथ अब बार्बी के नितम्बों पर जा पहुंचे। शीघ्र ही उसकी उंगलियां बार्बी की पेण्ट को खोल रही थीं।

"कभी-कभी एक विचार मेरे दिमाग में आने लगता है मारकोस।"

बार्बी उसके ऊपर भरपूर प्यार लुटते हुए बोली।

"क्या?"

"हमने बर्मा के इन जंगलों में आकर अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती की है। जैक क्रेमर का यहाँ आने का प्रपोज़ल हमें कबूल नहीं करना चाहिये था। जरा सोचो मारकोस, जापान में ही हमारे पास क्या कमी थी। सब कुछ था। अच्छा-खासा खुशहाल जीवन था।"

"नहीं।" ली मारकोस दृढ़ लहजे में बोला- "हमनें यहाँ आकर कोई गलती नहीं की है बार्बी।"

"लेकिन...।"

"जरा सोचो !" ली मारकोस बोला- "अगर बर्मा पर कब्जा करने वाला हमारा यह मिशन कामयाब हो गया, तो वह हमारे जीवन की कितनी बड़ी उपलब्धि होगी। अभी तक तमाम धन-सम्पदा पाने के बावजूद भी हमारी क्या हैसियत है। हम सिर्फ कानून से बचकर भागते फिरने वाले अपराधी हैं, जिन्हें पुलिस पकड़कर कभी भी सलाखों के पीछे धकेल सकती है। जबकि इस मिशन में कामयाब होते ही हम तमाम योद्धाओं की हैसियत बादशाहों जैसी होगी। बर्मा की तमाम बहुमूल्य धातुओं से भरी खदानों पर हमारा कब्जा होगा। दुनिया के बड़े-बड़े राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हमारे मित्र होंगे। यूं तो यह सारी बातें सपने जैसी लगती हैं बार्बी ! लेकिन मैं जानता हूँ कि एक दिन हम योद्धाओं का यह सपना जरूर पूरा होगा। जरूर पूरा होगा।"

ली मारकोस, बार्बी के साथ कुछ और चिपक गया।

इस बीच वह उसकी पेंटी खोलने में कामयाब हो गया था। फिर वो धीरे-धीरे उस चुस्त पेंटी को नीचे की तरफ खींचने लगा।

"तुम कुछ भी कहो मारकोस !" बार्बी के मुंह से पुनः मादक सिसकारी छूटी-"मुझे शक है कि हमारा यह मिशन सफल हो पायेगा।"

"कोई शक करने की जरूरत नहीं है। हम जरूर कामयाब होंगे।"

ली मारकोस ने झटके के साथ उसकी पेंटी नीचे खींच दी।

अब वह निर्वस्त्र थी।

फिर वह दोनों बेतहाशा एक दूसरे के चुम्बन लेने लगे।

ली मारकोस उसे अपनी बाहों में भरे-भरे घूमा, तो बार्बी फिर उसके नीचे आ गयी।

ली मारकोस ने उसके दोनों कंधे कसकर पकड़ लिये।

उनके शरीर में आग धधक रही थी।

धधकती जा रही थी।

□□□

वह आग अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच पाती, उससे पहले ही वह चौंक उठे।

उनके शरीर एकाएक थमककर रूक गये।

उन्होंने कुछ आवाजें सुनीं।

आवाजें जो अभी भी निरंतर सुनाई दी रही थीं।

"क्या यह ढोलक बजने की आवाजें हैं ?" ली मारकोस ने चिहुंककर पूछा।

"शायद !" बार्बी भी बड़े स्तब्ध भाव से उन आवाजों को सुन रही थी- "शायद यह ढोलक बजने की ही आवाजें हैं, जो काफी दूर से आ रही हैं।"

"जरूर जंगलियों ने कमाण्डर करण सक्सेना को ढूंढ निकाला है।"

"ऐसा ही लगता है।"

तभी उन्हें बाहर से भी शोर-शराबे की आवाजें सुनाई देने लगीं।

जरूर हथियारबंद गार्डों ने भी ढोलक बजने की उन आवाजों को सुन लिया था।

"जल्दी चलो।"

ली मारकोस फौरन जम्प लेकर खड़ा हो गया तथा फिर जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

बार्बी ने भी आनन-फानन कपड़े चढ़ाने शुरू किये थे।

"क्या टाइम हुआ है ?" बार्बी अपने स्कर्ट की जिप खींचते हुए बोली।

"अभी तो दो बजे हैं।"

जल्द ही वह दोनों कपड़ें पहनकर लगभग दौड़ते हुए तम्बू से बाहर निकले।

उन्होंने देखा, गार्ड भी दौड़ते हुए ही तम्बूओं से निकल रहे थे और बाहर जमा हो रहे थे।

शीघ्र ही सारे तम्बू खाली हो गये।

बार्बी कैंडिल स्टैंड अपने साथ ही बाहर ले आयी, जिससे वहाँ कुछ रोशनी फैल गयी।

"क्या हो गया ?" बार्बी बाहर आते ही बोली।

"ढोलक की आवाज आ रही हैं मैडम।" एक गार्ड बोला- "ऐसा मालूम होता है, जंगलियों ने कमाण्डर को ढूंढ निकाला है।"

ढोलक बजने की आवाज अभी भी आ रही थीं।

तभी एक नई घटना घटी।

एक बहुत जोरदार धमाके की आवाज वहाँ तक सुनाई पड़ी।

उस धमाके की आवाज के बाद ढोलक बजनी भी बंद हो गयी।

उसी क्षण एक और धमाके की आवाज आयी।

"यह कैसी आवाजें हैं ?" एक गार्ड के चेहरे पर आतंक की छाया दौड़ी।

"किसी बम के फटने जैसी आवाज थी। ऐसा लगता है, जंगलियों और कमाण्डर करण सक्सेना के बीच जमकर मुठभेड़ हो रही है।"

फिर कुछ धमाकों की आवाज और सुनाई दी।

फिर गोलियां चलने की भी आवाजें आयीं।

"लगता है, यह सारे बम कमाण्डर करण सक्सेना फैंक रहा है।" बार्बी के शरीर में झुरझुरी दौड़ी- "हमें फ़ौरन जंगलियों की मदद के लिए घटनास्थल पर पहुँचना चाहिये।"

"जल्दी से सारे तम्बू उखाड़ो।" ली मारकोस चिल्लाया- "जल्दी !"

हथियारबंद गार्ड बेहद आनन-फानन तम्बू उखाड़ने के काम में जुट गये।

इस बीच गोलियां चलने और बम फटने की वह आवाजें आनी बंद हो गयी थीं।

फिर वहाँ शांति छा गयी।

घोर शांति।

"यह आवाजें क्यों बंद हो गयीं ?" बार्बी बोली।

"क्या कहा जा सकता है।"

ली मारकोस के चेहरे पर भी अब चिंता की लकीरे दिखाई पड़ने लगी थीं।

तब तक गार्ड सारे तम्बू उखाड़कर जीप में रख चुके थे।
ली मारकोस के हाथ में एक रिस्टवॉच बंधी हुई थी, जो वास्तव में ट्रांसमीटर था। तभी उसके अंदर से ब्लिप-ब्लिप की आवाज निकलने लगी।
ली मारकोस ने फौरन ट्रांसमिशन स्विच ऑन किया।
"हैलो !" ली मारकोस ट्रांसमीटर पर चिल्लाने लगा- "हैलो, ली मारकोस स्पीकिंग !"
"मारकोस, मैं हैडक्वार्टर से जैक क्रेमर बोल रहा हूँ।"
"कहिये सर।"
जैक क्रेमर की आवाज सुनते ही मारकोस अलर्ट हो गया।
"क्या तुम जंगल में बम फटने की आवाज सुन रहे हो मारकोस ?" जैक क्रेमर की आवाज बेहद आंदोलित थी- "कुछ गोलियां चलने की आवाजें।"
"यस सर !" ली मारकोस बड़े तत्पर भाव से बोला- "हमने अभी-अभी वो आवाजें सुनी थीं। लेकिन अब वो आवाजें आनी बंद हो गयीं। अब शांति है। ऐसा लगता है, जैसे जंगल के किसी दूर-दराज के हिस्से में कमाण्डर करण सक्सेना और बर्मी आदिवासियों के बीच ज़बरदस्त मुठभेड़ चल रही है।"
"ठीक कहा तुमने। उन जंगलियों के बीच मेरा भी एक आदमी था, एडगर !"
"एडगर !"
"हाँ।"
"लेकिन उनके बीच तो मैंने किसी अंग्रेज को नहीं देखा सर ?"
"वह मेकअप में था। वह फेस मास्क चढ़ाकर बिल्कुल बर्मी आदिवासी बना हुआ था।"
"ओह !"
"उसके ट्रांसमीटर से निकलने वाली फ्रीक्वेंसी यहाँ रेडिया रूम में बोर्ड पर स्पार्क कर रही थी, जिससे पता चल रहा था कि उसके आसपास धमाके हो रहे हैं। मैंने वस्तुस्थिति पता लगाने के लिए उससे ट्रांसमीटर पर बात करनी चाही, तो एक नई घटना घटी। दूसरी तरफ से कमाण्डर ने एडगर बनकर मुझसे बात की।"
"क्या कह रहे हैं आप !" ली मारकोस के मुंह से तीव्र सिसकारी छूट गयी- "कमाण्डर करण सक्सेना ने।"
"हाँ।"
"लगता है, कमाण्डर करण सक्सेना ने उन सब जंगलियों को मार डाला है मारकोस !" जैक क्रेमर बेहद बैचेनी के साथ बोला- "वहाँ कोई नहीं बचा हैं, वहाँ सिर्फ लाशें ही लाशें हैं।"
"मगर आपको यह कैसे मालूम हुआ सर।" ली मारकोस बोला- "कि ट्रांसमीटर पर आपसे बात करने वाला व्यक्ति एडगर नहीं कमाण्डर करण सक्सेना है ?"
"तुम जानते ही हो, हम योद्धाओं के बीच पहले से ही एक 'कोड' तय है। जब भी हम अपने किसी दुश्मन को मारते हैं, तो रिपोर्ट यही देते हैं कि 'सूर्य छिप गया है। यही हमारा 'कोड' है। परंतु ट्रांसमीटर पर बात करने के दौरान उसने मुझे सीधे-सीधे कमाण्डर करण सक्सेना के मरने की खबर सुनायी। इसी से मैं भांप गया, वह एडगर नहीं था। वो खुद कमाण्डर था।"
"ओह।"
ली मारकोस के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें और गहरा गयीं।
"तुम अब क्या कर रहे हो मारकोस ?" जैक क्रेमर बोला।
"हम जंगल में उसी दिशा में आगे बढ़ने की तैयारी कर रहे हैं सर, जिस तरफ से थोड़ी देर पहले धमाकों की आवाज सुनी गयी थीं।"
"फिलहाल थोड़ा संभलकर आगे बढ़ना, कमाण्डर करण सक्सेना अपने पूरे रोद्र रूप में मालूम होता है।"
"ठीक है।"
ली मारकोस ने ट्रांसमिशन स्विच ऑफ कर दिया।
जंगल में खतरा हर पल बढ़ता जा रहा था।
"क्या हो गया ?" बार्बी बोली।

"कुछ नहीं। ऐसा मालूम होता है, कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारे तमाम जंगली साथियों की हत्या कर डाली है।"

"न...नहीं।"

बार्बी सहित तमाम हथियारबंद गार्डों के रोंगटें खड़े हो गये।

"घबराओ मत !" ली मारकोस बोला- "पूरी हिम्मत के साथ आगे बढ़ो। जंगलियों के पास सिर्फ भाले थे, जबकि हमारे पास कमाण्डर करण सक्सेना का मुकाबला करने के लिए ऑटोमैटिक गने हैं। गोला बारूद है। फिर हम संख्या में भी काफी ज्यादा हैं।"

वह तमाम लोग वापस दो टुकड़ियों में बंट गये और पहले की तरह ही जंगल को चारों तरफ से घेरते हुए आगे बढ़े।

□□□

कमाण्डर भी निरंतर बर्मा के उन खौफनाक जंगलों की अनाम, अंजान राहों पर आगे बढ़ा जा रहा था।

चारों तरफ क्योंकि अंधेरा व्याप्त था, इसलिये उसने अपनी आँखों में अब इन्फ्रॉरेड लैंस लगा लिये थे। यह बहुत उच्च क्वालिटी के इन्फ्रॉरेड लैंस थे, जिनसे अंधेरे में भी सब कुछ साफ-साफ देखा जा सकता था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अभी थोड़ी ही दूरी तय की होगी, तभी एकाएक उसके कदम ठिठक गये। उसने किसी जानवर के बहुत गहरे-गहरे सांस लेने की आवाज सुनी।

वह ऐसी आवाज थी, जैसे कोई बहुत भीमकाय शरीर वाला जानवर उसके आसपास हो।

कमाण्डर वहीं झाड़ियों में छिप गया।

उसने अपनी सांस रोक ली और वह बड़ी चौकस आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

काफी दूर-दूर तक भी उसे कोई नजर न आया।

मगर कमाण्डर खतरा भांप चुका था।

उसे लग रहा था, वहाँ आसपास जरूर कोई भयानक जीव है। अब उसके सांस लेने की आवाजें भी नहीं आ रही थीं। उसने खतरनाक जंगली जानवरों के बारे में बहुत सी बातें सुनी थीं। जैसे वह आदमी के ऊपर धोखे से हमला करते हैं और फिर पलक झपकते ही उसे फाड़ डालते हैं। फिर बर्मा के उन जंगलों की जमीन दलदली भी ज्यादा थी, जिनमें खतरनाक घड़ियालों के पाए जाने की आशंका भी काफी होती है।

कमाण्डर करण सक्सेना अपनी जगह स्तब्ध बैठा रहा।

क्योंकि जीव के सांस लेने की आवाज भी अब उसे नहीं आ रही थी, इसलिए इस बात ने भी उसे काफी शंका में डाल दिया।

क्या जीव उसे देख चुका था।

क्या वो उसके ऊपर घात लगाये बैठा था ?

जब काफी देर तक भी कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर कोई हमला न हुआ, तो कमाण्डर ने उसे अपने मन का वहम समझा और फिर आगे का रास्ता तय करने के लिए झाड़ियों के उस दायरे से बाहर निकला।

झाड़ियों से बाहर निकलते ही उसके हलक से एकाएक अत्यंत भयप्रद चीख निकल पड़ी।

वह अनाकोंडा जाति का कोई आठ फुट लम्बा और काफी मोटे आकार का अजगर था, जो पेड़ के तने से कुछ इस प्रकार लिपटा हुआ था कि एकाएक उसे देखकर यही अंदाजा नहीं होता था कि वह पेड़ का तना है या फिर अनाकोंडा है। कमाण्डर के बाहर निकलते ही अनाकोंडा उसके ऊपर झपटा। कमाण्डर के हलक से सिर्फ चीख ही निकली थी, उससे पहले ही अनाकोंडा कमाण्डर को लिये-लिये नीचे जमीन पर ढेर हो गया।

नीचे गिरते ही आठ फुट लम्बे अनाकोंडा ने उसे पूंछ की तरफ से अपनी गिरफ्त में लेना शुरू कर दिया।

अगर उस समय कमाण्डर की जगह कोई दूसरा नौजवान होता, तो निःसंदेह दहशत से उसका हार्टफेल हो जाता।

लेकिन नहीं !

वो कमाण्डर करण सक्सेना था।

मार्शल आर्ट का कुशल योद्धा।

अभी अनाकोंडा ने उसे अपनी गिरफ्त में लेना शुरू ही किया था कि तभी कमाण्डर करण सक्सेना ने बेपनाह फुर्ती के साथ जम्प ली और अपनी पूरी ताकत के साथ अतामी तोबागिरी नामक एक ऐसी भयानक किक अनाकोंडा पर जड़ी, जिसका प्रदर्शन मार्शल आर्ट में भी ताइक्वांडो के 'ग्रेंड मास्टर' ही कर सकते हैं।

अगर कमाण्डर ने वो किक किसी इंसान के जड़ दी होती, तो बिना शक वह सेकंड में दम तोड़ चुका होता।

लेकिन नहीं।

वो अनाकोंडा था।

दुनिया की सबसे भयानक जाति का अजगर !

किक लगते ही वह जोर से फुंफकारा। उसकी फुंफकार बता रही थी कि वह अब और खूनी बन गया है।

और भी खतरनाक।

कमाण्डर उसके शिकंजे से आजाद होता, उससे पहले ही उसकी पूंछ कमाण्डर करण सक्सेना के पैरों के गिर्द कस गयी।

कमाण्डर छटपटाया।

लेकिन उसकी गिरफ्त बहुत मजबूत थी।

एकाएक कमाण्डर उसके सामने खुद को असहाय अनुभव करने लगा।

उसका हाथ फौरन जांघों के साथ चिपके स्प्रिंग ब्लेड पर पड़ा।

कमाण्डर ने झपटकर अपने दोनों स्प्रिंग ब्लेड निकाल लिये और फिर उन दोनों स्प्रिंग ब्लेडों के भरपूर प्रहार अनाकोंडा पर किये।

नौ इंच लम्बे दोधारी स्प्रिंग ब्लेड अनाकोंडा के शरीर में जाकर धंस गये।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने उन स्प्रिंग ब्लेडों को अपनी पूरी ताकत से नीचे की तरफ खींचा। अनाकोंडा का पेट फटता चला गया।

खून के फव्वारे छूट पड़े।

परन्तु बड़े ही गजब की हिम्मत वाला था अनाकोंडा भी।

पेट फटने के बावजूद उसने अपनी गिरफ्त नहीं छोड़ी। उसका मुंह कमाण्डर करण सक्सेना को निगलने के लिए उसके सिर की तरफ झपटा।

कमाण्डर ने भी बेपनाह फुर्ती दिखाई।

उसने फौरन अपना हैवरसेक बैग उतारकर अनाकोंडा के खुले हुए मुंह में दे दिया।

तुरंत ही उसके स्प्रिंग ब्लेड चले और अनाकोंडा की आँखों को फोड़ते चले गये।

बिलकुल किसी जंगली भैसे की तरह डकरा उठा अनाकोंडा।

वह अंधा हो चुका था।

वह बड़े वहशी अंदाज में अपना मुंह इधर-उधर लहराने लगा।

वह शायद कमाण्डर को टटोल रहा था। उसके मुंह में हेवरसैक बैग अभी भी फंसा था।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने अनाकोंडा को एक सेकंड की भी और मोहलत देना बेवकूफी समझा।

एक बार फिर उसके स्प्रिंग ब्लेड चले और इस मर्तबा उसकी गर्दन काटते चले गये।

अनाकोंडा ने भयानक चीत्कार की।

इसके मुंह से हैवरसेक बैग निकलकर नीचे जा पड़ा।

दोनों स्प्रिंग ब्लेडों ने उसकी आधे से ज्यादा गर्दन काट डाली थी।

वो लहराकर नीचे गिरा।

अनाकोंडा का सारा शरीर खून में लथपथ होता चला गया।

नीचे गिरते ही उसकी पूंछ जो कमाण्डर करण सक्सेना की टांगों के गिर्द लिपटी हुई थी, वह भी ढीली पड़ती चली गयी।

वह बिल्कुल ढेर हो गया।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना झाड़ियों में पड़ा हुआ था।

उसकी सांसे जोर-जोर से चल रही थीं, उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कई मील लम्बी मैराथन दौड़ में हिस्सा लेकर आ रहा हो। उसे अपनी टांगे सुन्न और बेजान पड़ती महसूस हुईं।

कमाण्डर करण सक्सेना न जाने कितनी देर तक इसी तरह झाड़ियों में पड़ा हाँफता रहा।

उससे थोड़ा ही फासले पर आठ फुट लम्बे अनाकोंडा की खून में लथपथ लाश पड़ी थी।

हैवरसेक बैग अब कमाण्डर के पास था। परन्तु वो महसूस कर रहा था कि फिलहाल वो जंगल में आगे चलने योग्य नहीं रहा है। कमाण्डर करण सक्सेना को इसी बात को लेकर आशंका थी कि इस वक्त वो अपने पैरों पर खड़ा भी हो पायेगा या नहीं। अनाकोंडा ने अपने उस बंधन को और ज्यादा नहीं कस दिया, वरना कमाण्डर के पैरों की तमाम हड्डियां चकनाचूर हो गयी होतीं और फिर शायद ही वो कभी जीवन में अपने पैरों पर चलने योग्य रहता।

तभी कमाण्डर को ऐसा लगा, जैसे बेहोशी उसके ऊपर छाती जा रही है।

उसने खुद को बेहोश होने से रोकने की बेपनाह कौशिश की, लेकिन जब वो अपनी उस कौशिश में कामयाब होता न दिखाई दिया, तो उसने हैवरसेक बैग में से निकालकर 'कैमोफ्लाज किट' अपने ऊपर डाल ली, जो उन झाड़ियों में बिल्कुल घुल-मिल गयी।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना कब बेहोश हो गया, यह खुद उसे भी न मालूम हुआ।

वह न जाने कितनी देर तक उसी अवस्था में पड़ा रहा।

कमाण्डर करण सक्सेना को सिर्फ इतना अहसास था कि वो काफी देर बाद होश में आया था।

आधा घण्टा। एक घण्टा या फिर उससे भी ज्यादा।

अलबत्ता उसकी टांगे अब उतना दर्द नहीं कर रही थीं। उसने अपनी टांगों को इधर-उधर हिलाया, तो वह आसानी से हिल गयीं। सिर भी भारी-भारी नहीं था।

कुछ देर की बेहोशी ने उसकी काफी थकान मिटा दी थी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, कैमोफ्लाज किट अभी भी उसके ऊपर थी। अलबत्ता जंगल में अब आसपास से काफी लोगों के चलने की आवाजें आ रही थीं। ऐसा मालूम होता था, जैसे काफी सारे लोग जंगल में वहीं आसपास थे।

कमाण्डर ने थोड़ी सी कैमोफ्लाज किट हटाकर बाहर झांका।

अगले ही पल वो सन्न रह गया।

सामने ही उसे काफी सारे हथियारबंद गार्ड नजर आये, जो अभी वहाँ पहुंचे थे। उन्हीं के बीच उसे छरहरे बदन और अभूतपूर्व तेजयुक्त चेहरे वाला समुराई फाइटर भी चमका, जिसकी लम्बी समुराई कमर से बंधी हुई अंधेरे में भी अलग नजर आ रही थी।

"यह क्या ?" ली मारकोस वहाँ पहुँचते ही चौंका- "अनाकोंडा की लाश।"

"ऐसा लगता है मारकोस साहब !" एक गार्ड बोला- "इस जगह कमाण्डर और अनाकोंडा के बीच जमकर द्वंद्वयुद्ध हुआ था।"

"हूँ।"

ली मारकोस वहीं अनाकोंडा की लाश के नजदीक बैठ गया और फिर उसे काफी गौर से देखने लगा।

"सचमुच वो काफी बहादुर है।" ली मारकोस धीमे स्वर में बुदबुदाया- "जिस तरह उसने अनाकोंडा का सामना किया है और फिर उसके पेट तथा गर्दन को फाड़ा है, ऐसा दिलेरी से भरा काम कोई जबरदस्त फाइटर ही अंजाम दे सकता है। वरना कोई साधारण आदमी तो अनाकोंडा का देखकर ही दहशत से मर जायेगा।"

"वाकई !" एक अन्य गार्ड बोला- "अब तो मुझे भी लगने लगा है कि हमारी एक खतरनाक आदमी से मुठभेड़ होने वाली है।"

वहाँ अभी सिर्फ ली मारकोस वाली टुकड़ी पहुंची थी। जबकि बार्बी वाली जो टुकड़ी जंगल में दूसरी तरफ आगे बढ़नी शुरू हुई थी, वह अभी भी आगे बढ़ रही थी और उनसे काफी फासले पर थी।

"लेकिन एक बात समझ में नहीं आयी मारकोस साहब !"

"क्या ?"

"जब कमाण्डर करण सक्सेना और अनाकोंडा की इस स्पॉट पर मुठभेड़ हुई थी, तो फिर कमाण्डर करण सक्सेना हमें उसी रास्ते पर कहीं टकराना चाहिये था, जिस रास्ते में हम होकर आ रहे हैं। जबकि हमने उसे वहाँ कहीं भी नहीं देखा।"

"इसके पीछे एक दूसरी वजह भी हो सकती है।" ली मारकोस, अनाकोंडा के पास से खड़े होकर गंभीर मुद्रा में बोला।

"क्या?"

"अनाकोंडा को मरे हुए अभी कोई ज्यादा वक्त नहीं गुजरा है।" ली मारकोस की निगाहें अनाकोंडा पर ही टिकी थीं- "खून बिल्कुल ताजा है और काला नहीं पड़ा है। ऐसी परिस्थिति में यह भी मुमकिन है कि कमाण्डर करण सक्सेना यहीं कहीं आसपास मौजूद हो। जख्मी हालत में हो या फिर काफी थका हुआ हो।"

"हाँ , यह संभव है।"

तमाम गार्डों को ली मारकोस की बात में दम लगा।

"यानि !" एक अन्य गार्ड बोला- "हमें यहाँ फौरन कमाण्डर करण सक्सेना को तलाश करना चाहिये।"

"बिल्कुल !"

तुरंत सारे गार्ड इधर-उधर फैलने शुरू हो गये।

अपनी राइफलें अब उन्होंने मुस्तैदी से पकड़ ली थीं। जबकि कुछ के हाथ में लाइट मशीनगनें भी थीं।

जिन्हें एल0एम0जी0 कहते हैं।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना भी चौकन्ना हो उठा था।

वो भांप गया था, अब ज्यादा देर तक वो उस कैमोफ्लाज किट के नीचे छुपा रहने वाला नहीं है।

उसने अपनी ए0के0 सैंतालीस असाल्ट राइफल को गोलियों से पूरी तरह लोड किया। उस खतरनाक माहौल में सिर्फ कोल्ट रिवॉल्वर से काम चलने वाला नहीं था।

वहाँ तो कदम कदम पर बस्ट फायर की जरूरत थी। उसके बाद उसने अपने बैग में से पांच-छः हैंडग्रेनेड बम भी निकाल लिये।

फिर वो तुरंत हरकत में आ गया।

इससे पहले कि वह हथियारबंद गार्ड उसे तलाश करने के लिए उस जगह से इधर-उधर होते, कमाण्डर ने वहीं कैमोफ्लाज किट के नीचे लेटे-लेटे एक थर्टी सिक्स एच ई हैंड ग्रेनेड बम की पिन अपने दांतों से पकड़कर खींची और फिर झटके के साथ बम गार्डों की तरफ उछाल दिया।

धड़ाम !

बम इतने प्रचण्ड रूप में फटा कि कमाण्डर को ऐसा लगा, मानों धरती तक कांप उठी हो।

गार्डों की चीख गूंज गयी।

उनकी लाशों के चीथड़े उड़ते नजर आये।

फौरन ही कमाण्डर ने दो हैंडग्रेनेड और उनकी तरफ उछाले।

पहले से भी ज्यादा प्रचण्ड धमाके हुए।

अधिकतर गार्ड जहाँ थे, वही लाशों के ढेर में बदल गये, वहीं कुछ बुरी तरह जख्मी हालत में इधर-उधर भागे।

"वो रहा कमाण्डर करण सक्सेना !" तभी खून में लथपथ एक गार्ड कैमोफ्लाज किट की तरफ उंगली उठाकर चिल्लाया- "वो रहा।"

गार्ड के चिल्लाने की देर थी, फौरन भागते हुए गार्ड रूक गये।

तुरंत ही उनकी असाल्ट राइफलों और लाइट मशीनगनों के मुंह उसकी तरफ घूम गये तथा फिर उन्होंने बस्ट फायर खोल दिये।

धड़-धड़-धड़ करके कुछ इस तरह गोलियां चलीं, जैसे जंगल का वह हिस्सा युद्ध भूमि में बदल गया हो। लेकिन वह सारी गोलियां कमाण्डर करण सक्सेना की कमोफ्लाज किट से आकर टकरायीं और बेकार हो

गयीं।
गार्डों के हरकत में आते ही कमाण्डर ने भी अपनी असाल्ट राइफल का बस्ट फायर खोल दिया था।
कमाण्डर का बस्ट फायर खोलना गार्डों को काफी महंगा पड़ा। वह हृदय विदारक ढंग से चीखते हुए लाशों में बदलते चले गये।
तभी टन्न की आवाज करती हुई कोई चीज कमाण्डर की कैमोफ्लाज किट से आकर टकराई और तुरंत उसकी कैमोफ्लाज किट उछलकर एक तरफ जा गिरी।
कमाण्डर फौरन बिजली जैसी तेजी के साथ घूम गया और पलटा।
उसके पीछे ली मारकोस खड़ा था।
समुराई फाइटर !
उसकी समुराई अब अपनी लकड़ी की म्यान से निकलकर बाहर आ चुकी थी और उसकी मूठ में बंधा लाल रिबन बड़े ही खतरनाक अंदाज में लहरा था। अंधेरे में भी समुराई की दोनों तरफ की धार ऐसे चमक रही थी, जैसे हीरे चमक रहे हों।
ली मारकोस की आँखों में खून था।
खून ही खून !
"बर्मा के इन जंगलों में आकर तू बहुत लाशें बिछा चुका है कमाण्डर करण सक्सेना !" ली मारकोस फुंफकारा- "अब तेरी अंतिम क्रिया का समय है, ले मर !"
सर्राटे के साथ समुराई चली।
ऐसा लगा, जैसे जम्बोजेट विमान ने गर्जना की हो।
कमाण्डर करण सक्सेना सिर्फ एक क्षण के लिए टाइगर क्लान के एक्शन में आया था, परन्तु अगले ही पल वो अपने स्थान से जम्प लेकर उछल पड़ा।
फौरन उन झाड़ियों को समुराई बड़ी सफाई के साथ काटती चली गयी, जहाँ कमाण्डर सिर्फ चंद सेकण्ड पहले मौजूद था।
जम्प लेते ही कमाण्डर अपने पैरों पर खड़ा हो गया।
अब वह दोनों योद्धा आमने-सामने थे।
रोद्र रूप में।
ली मारकोस के हाथ में जहाँ उस समय अपनी समुराई थी, वहीं कमाण्डर करण सक्सेना निहत्था था।
असॉल्ट राइफल भी उसकी वहीं कैमोफ्लाज किट के पास छूट गयी थी।
तभी ली मारकोस ने अपनी समुराई को सर्राटे के साथ हवा में इतनी तेजी से घुमाया कि वो सर्र-सर्र करती हुई पंखुड़ियों की मानिन्द घूमती चली गयी।
सचमुच उसे समुराई चलाने में महारथ हासिल थी।
फिर समुराई दोबारा कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ झपटी।
कमाण्डर करण सक्सेना पुनः उछल पड़ा।
इस बार समुराई पेड़ के एक मोटे तने को काटती चली गयी थी। वह भारी भरकम पेड़ गड़-गड़ करता हुआ धड़ाम से नीचे गिरा।
"आज की रात तुम बचोगे नहीं कमाण्डर।" ली मारकोस भभके स्वर में बोला-"भारत सरकार को हमेशा इस बात का अफसोस रहेगा कि उसने तुम्हें इस मिशन पर भेजा, तो क्या भेजा ?"
"यह वक्त बतायेगा।" कमाण्डर उन जटिल परिस्थितियों में भी मुस्कराया- "कि अफसोस किसे होता है ?"
तुरंत समुराई प्रहार करने के लिए पुनः झटके के साथ आसमान की तरफ उठी।
मगर इस बार चूका नहीं कमाण्डर करण सक्सेना भी।
वो उस वक्त कैमोफ्लाज किट के नजदीक ही खड़ा था। उसने फौरन झपटकर अपनी ए.के. सैंतालिस असालट राइफल उठा ली।
राइफल उठाते ही उसने नाल ली मारकोस की तरफ घुमाई और फिर उसका बस्ट फायर खोल दिया। धड़-धड़-धड़ करके गोलियां चलती चली गयीं।
ली मारकोस प्रहार करना भूल गया।

उसने गोलियों से बचने के लिए खतरनाक एक्शन दिखाया।

सांस रोक देने वाला एक्शन !

उसने खड़े-खड़े इतनी ऊंची जम्प लगायी कि वह कमाण्डर करण सक्सेना के सिर से भी ऊपर उछल पड़ा।

समुराई फाइटर बेहद फुर्तीले शरीर के मालिक होते हैं, इसीलिए दौड़ने में या जम्प लेने में उनका कोई सानी नहीं होता।

फिर वह तो ग्रेंड मास्टर था।

हवा में उछलते ही ली मारकोस की समुराई भी चली।

आश्चर्य !

घोर आश्चर्य !

समुराई उसकी राइफल की नाल को बड़ी सफाई के साथ काटती चली गयी। चूंकि राइफल में से बर्स्ट फायर चल रहे थे, इसीलिए गोलियां वहीं कमाण्डर करण सक्सेना के नजदीक फट पड़ी।

राइफल खुद ब खुद कमाण्डर के हाथ से उछलकर दूर जा गिरी।

हंसा ली मारकोस, बुलंद अंदाज में कहकहा लगाकर हंसा।

"किसी समुराई फाइटर पर गोलियां चलाना इतना आसान नहीं होता कमाण्डर, फिर ली मारकोस तो मौत का फरिश्ता है, जिससे मौत भी पनाह मांगती है।"

ली मारकोस एक बार फिर कमाण्डर करण सक्सेना के सामने खड़ा था।

कमाण्डर करण सक्सेना दूसरी राइफल उठाने के लिए पीछे की तरफ भागा।

उसी क्षण ली मारकोस ने समुराई का एक और जानलेवा एक्शन पेश कर दिया।

उसने अपनी समुराई हवा में उछाली।

समुराई उछालते ही वह नीचे गिरा और नीचे गिरते ही उसने दोनों टांगें घुमाकर इतनी जबरदस्त 'राउण्ड किक' लगायी कि वह 'राउण्ड किक' सीधे भगाते हुए कमाण्डर की टांगों में जाकर उलझ गयी।

कमाण्डर चीखता हुआ नीचे गिरा।

उसी क्षण हवा में उछाली गयी समुराई दोबारा से ली मारकोस के हाथ में आ गयी थी।

"अब तेरा खेल खत्म !"

समुराई सर्र-सर्र करती हुई पुनः विद्युत-गति से हवा में घूमी तथा फिर कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ झपटी।

कमाण्डर ने फिर कलाबाजी खाई।

कलाबाजी खाते ही इस बार कमाण्डर के दिमाग की मांस-पेशियों ने हरकत दिखा दी थी। फौरन क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसी रिवॉल्वर निकालकर उसके हाथ में आ गयी।

हाथ में आते ही रिवॉल्वर फिरकनी की तरह घूमी और धांय से गोली चली।

भैंसे की तरह डकरा उठा ली मारकोस !

गोली सीधे उसके माथे में जाकर लगी थी।

माथे से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

कमाण्डर ने तुरन्त उसके हाथ से समुराई छीन ली। फिर बड़े दक्ष समुराई फाइटर जैसे अंदाज में ही सर्र-सर्र करती हुई समुराई आकाश की तरफ उठी और फिर सीधे ली मारकोस के दिल में इस तरह उतरती चली गयी, जैसे मक्खन की टिकिया में कोई छुरी पेवस्त होती चली जाती है।

ली मारकोस वहीं ढेर हो गया।

कमाण्डर ने जोर से जूते की एक ठोकर उसके मुंह पर जड़ी।

"ली मारकोस !" कमाण्डर करण सक्सेना फुंफकारा था- "यह जरूरी नहीं कि समुराई फाइटिंग का हर मुकाबला उसका 'ग्रेंड मास्टर' ही जीते। कभी-कभी मुकाबला वो भी जीतते हैं, जिन्होंने समुराई अपने हाथ में लेकर देखी भी नहीं होती।"

उसने ली मारकोस के मुंह पर थूक दिया।

□□□

बार्बी जंगल के उत्तरी छोर पर थी और अपनी टुकड़ी के साथ निरंतर आगे की तरफ बढ़ रही थी।
उसके साथ कोई पच्चीस हथियारबंद गार्ड थे।
सब बेहद चौकन्ने !
वह एक-एक पेड़ और झाड़ियों को ध्यानपूर्वक देखते हुए आगे बढ़ रहे थे कि कहीं वहाँ उनका दुश्मन तो छिपा हुआ नहीं है। अलबत्ता अंधेरे के कारण उन्हें दुश्मन को देखने में थोड़ी मुश्किल जरूर पेश आ रही थी। तभी बम के धमाकों और गोलियों की आवाजों ने उन सबको चौंकाकर रख दिया।
"यह कैसी आवाजें हैं ?"
"लगता है, मारकोस वाली टीम कमाण्डर करण सक्सेना तक पहुँचने में कामयाब हो गयी है।" बार्बी ठिठककर बोली- "हमें फौरन उनकी मदद के लिये जल्दी से वहाँ पहुँचना चाहिये।"
तुरन्त वह सब उसी दिशा की तरफ दौड़ पड़े, जिधर से धमाकों की आवाज आ रही थी।
वह जंगल में अभी थोड़ी ही दूर पहुंचे होंगे, तभी एकाएक वह आवाज आनी बंद हो गयी।
"रूको !" बार्बी दौड़ते-दौड़ते फौरन एक जगह ठिठककर रुक गयी- "रूको !"
सब ठिठके।
आवाज अब बिल्कुल नहीं आ रही थी।
"यह आवाज क्यों बंद हो गयी ?"
"लगता है मैडम !" एक गार्ड बोला- "कमाण्डर करण सक्सेना मर गया है।"
"अगर कमाण्डर करण सक्सेना मर गया होगा।" बार्बी बोली- "तो मिस्टर मारकोस अभी ट्रांसमीटर पर मुझे सूचना देंगे।"
"और अगर ट्रांसमीटर पर कोई सूचना न आयी ?"
"तो...तो फिर उसका मतलब होगा।" बार्बी हिचकिचाते हुए बोली- "कि कमाण्डर ने मारकोस और उसके साथियों को भी वहाँ पहुँचा दिया है, जहाँ हूपर को पहुँचाया था।"
"न...नहीं।"
सब भयभीत हो उठे।
सब एकाएक डरे-डरे नजर आने लगे।
फिर उन्होंने जंगल में उसी स्थान पर खड़े होकर ट्रांसमीटर कॉल का इंतजार करना शुरू किया।
काफी समय गुजर गया, लेकिन मारकोस की कोई ट्रांसमीटर कॉल न आयी।
ट्रांसमीटर कॉल न आने से उन सबकी परेशानी और बढ़ गयी।
"अ...आखिर वही हो गया।" बार्बी शुष्क स्वर में बोली- "जिसका मुझे डर था, मारकोस मारा गया।"
"मैडम, ऐसा भी तो हो सकता है कि वह अभी जिंदा हों।"
"नहीं, ऐसा किसी हालत में नहीं हो सकता।" बार्बी को अपनी आँखों के गिर्द चाँद-तारे मंडराते नजर आने लगे- "अगर मारकोस जिंदा होता, तो वह ट्रांसमीटर पर मुझे जरूर घटना की जानकारी देता। वह मुझे जरूर बताता कि उसके साथ क्या हुआ है।"
सबकी बेचैनी एकाएक बहुत बढ़ गयी।
"अब हम लोग क्या करें ?"
"ऐसी हालत में फिलहाल हमारा आगे बढ़ना ठीक नहीं है।" बार्बी बोली- "दुश्मन के हौंसले बहुत बुलंद हैं। वह हमारे दो योद्धा और ढेर सारे गार्ड मार चुका है। हमें अब जंगल में यहीं रूककर दिन निकलने का इंतजार करना चाहिये।"
"इसका मतलब हम यहीं अपने तम्बू गाड़ लें मैडम !"
"नहीं, तम्बू गाड़ने मुनासिब नहीं रहेगें। तम्बू दुश्मन की निगाह में आ सकते हैं।"
"फिर ?"
"हमें रात गुजारने के लिये कोई और ऐसी जगह तलाश करनी होगी, जो सुरक्षित भी हो और जहाँ से हम दुश्मन पर निगाह भी रख सकें।"
जल्द ही उन्होंने पत्थरों की एक ऐसी छोटी गुफा को खोज निकाला, जो रात गुजारने के लिये उनके काम आ सकती थी।
बर्मा के उन जंगलों में छोटी-छोटी काफी सारी गुफायें थीं। जिन्हें या तो जंगली जानवर अपने

इस्तेमाल में लाते थे या फिर वो खाली पड़ी रहती थीं।

जो गुफा उन्हें मिली, वह खाली थी और वहाँ ऐसा कोई निशान भी न था, जिससे साबित होता हो कि उस जगह पर किसी जगंली जानवर का वास है।

अपनी जीपें उन्होंने गुफा के इर्द-गिर्द ही छिपा दीं। दो गार्ड अपनी-अपनी राइफल के साथ गुफा के बाहर झाड़ियों में छुपकर बैठ गये, ताकि अगर दुश्मन दिखाई दे, तो वह गोलियां चलाकर गुफा के अंदर मौजूद अपने साथियों को सूचित कर सकें, जबकि बाकी सारे लोग गुफा में चले गये।

बार्बी का दिल उस समय बहुत आंदोलित था।

बार-बार उसकी आँखों में आंसू आ रहे थे, जिन्हें वो बड़ी मुश्किल से छिपाये हुए थी।

ली मारकोस से उसने बहुत प्यार किया था।

उसे अपने दिल में बसाकर ऐसे ढेरों सपने देखे थे, जो कोई औरत ही देख सकती है।

उसकी शुरू से ही इच्छा नहीं थी कि जैक क्रेमर का प्रस्ताव स्वीकार किया जाये और वह दोनों बर्मा के उन खौफनाक जंगलों में आये। मगर ली मारकोस की जिद के कारण ही उसे वहाँ आना पड़ा।

मजबूरी में आना पड़ा।

जबकि ढेर सारा धन कमाने के बाद उसने तो यह सपना देखा था कि अब वह दोनों शादी करके सकून की जिंदगी गुजारें। परन्तु बार्बी का वह सपना चकनाचूर हो गया।

वह गुफा के एक तन्हा कोने में जाकर लेट गयी।

उसे सायोनारा बंदरगाह की याद आने लगी।

सायोनारा!

जिसका अर्थ है, विदाई!

बार्बी की आधी से ज्यादा जिंदगी उसी बंदरगाह पर गुजरी थी। बार्बी को लगा, जैसे सायोनारा बंदरगाह उसे आवाज दे रही है।

उसे वापस अपने पास बुला रही है।

बार्बी की आँखों में आंसू मंडराने लगे।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना एक बार फिर लाशों के ढेर के बीच में खड़ा था। उसने अपनी टांग कसकर दबाई।

"दर्द फिर होने लगा है।"

समुराई फाइटर को मारने में उसे अच्छी-खासी मेहनत करनी पड़ गयी थी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने एक 'डनहिल' सुलगा ली और फिर उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा।

सिगरेट पीने से उसके अंदर थोड़ी ताजगी दौड़ी।

"मुझे इंजेक्शन लेना चाहिये, जिससे दर्द कुछ कम हो।"

उसने बैग में से फर्स्ट-एड किट निकाली और फिर एक इंजेक्शन लिया।

उसकी छठी इंद्री बता रही थी कि अभी और भी दुश्मन उसके आसपास मौजूद हैं।

उस समुराई फाइटर के ही कुछ और साथी!

खतरा बरकरार था।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फिर कुछ काम और निपटाये।

जैसे उसके आसपास जितनी भी लाशें पड़ी हुई थीं, उसने स्प्रिंग ब्लेड से उन सबके दिल चीर डाले।

उनकी गर्नें तोड़ डाली।

इसके अलावा जितना भी गोलियां थीं, वह सब उसने अपने बैग में भरीं।

गोलियों का अच्छा-खासा स्टॉक उसके पास जमा हो गया था।

अलबत्ता अब हैण्डग्रेनेड की संख्या कम थी।

फिर कमाण्डर ने अपनी उस ए0 के0 सैंतालिस असाल्ट राइफल को देखा, जिसकी नाल ली मारकोस ने अपनी समुराई से काट डाली थी।

वह राइफल बेकार हो चुकी थी।

कमाण्डर ने उसके भी दो टुकड़े कर डाले।
फिर एक 'लाइट मशीनगन' उसने अपने कंधे पर लटका ली।
अब वही मशीनगन उसके काम आनी थी।
उसके बाद उसने कैमोफ्लाज किट को भी फोल्ड करके अपने बैग में रखा।
शीघ्र ही वो आगे बढ़ने के लिये पूरी तरह तैयार था।
रेडी !
अंधेरा अभी भी घिरा हुआ था।
तभी कमाण्डर के दिमाग में एक तरकीब सूझी।
अगर समुराई फाइटर के कुछ और साथी वहीं जंगल में आसपास मौजूद थे, तो उन्हें एक चाल में फंसाकर वहाँ बुलाया जा सकता था।
कमाण्डर दौड़कर ली मारकोस की लाश के करीब पहुँचा और उसने उसकी तलाशी ली।
शीघ्र ही कमाण्डर की निगाह ली मारकोस की रिस्टवॉच पर जाकर ठहर गयी, जो एक ट्रांसमीटर सैट था।
कमाण्डर ने फौरन उसका ट्रांसमिशन स्विच ऑन किया तथा फिर धीरे-धीरे उसकी नॉब घुमाने लगा।
जल्द ही उसने सिग्नल पकड़ लिया था और दूसरी तरफ ब्लिप-ब्लिप की आवाज आने लगी।
"हैलो !" तुरन्त दूसरी तरफ से एक लड़की की बहुत घबराई हुई आवाज कमाण्डर के कानों में पड़ी- "हैलो, कौन मारकोस ? क्या तुम मारकोस बोल रहे हो ?"
कमाण्डर खामोश रहा।
"मारकोस !" लड़की चिल्लाने लगी- "तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे मारकोस ?"
"प... प्लीज हैल्प मी !" कमाण्डर बिल्कुल ली मारकोस की आवाज में ही टूटे-टूटे शब्दों में बोला- "म... मेरी मदद करो।"
"मारकोस !" लड़की स्तब्ध रह गयी- "त...तुम्हें क्या हो गया है मारकोस ?"
"प... प्लीज हैल्प मी, प... प्लीज...।"
कमाण्डर ने आगे के शब्द जानबूझकर अधूरे छोड़ दिये।
"मारकोस !" लड़की लगातार चिल्ला रही थी- "मारकोस !"
कमाण्डर करण सक्सेना फिर कुछ न बोला। न ही उसने ट्रांसमीटर बंद किया। लड़की के बदहवास अंदाज में चिल्लाने की आवाज निरंतर उसके कानों में पड़ रही थी।
कमाण्डर जानता था, उसका काम हो गया है।

□□□

उस ट्रांसमीटर कॉल के पहुँचते ही गुफा में हलचल मच गयी।
"मारकोस जिंदा है !" बार्बी बदहवासों की तरह बोली- "जरूर वो जख्मी है, हमें फौरन उसकी मदद के लिये आगे जाना चाहिये।"
वहीं जैकब भी था।
जैकब !
जैक क्रेमर का खास आदमी।
वह मुख्य तौर पर नारकाटिक्स का काम देखता था।
"लेकिन मौजूदा हालात में हमारा आगे बढ़ना ठीक नहीं है मैडम !" जैकब बोला।
"क्यों ?"
"क्योंकि यह दुश्मन की कोई चाल भी हो सकती है। यह भी हो सकता है कि कमाण्डर करण सक्सेना ने हम सबको फंसाने के लिये यह कोई षडयंत्र रचा हो ?"
"तुम इस बात का दूसरा पहलू भी देखो जैकब !"
"कौन-सा पहलू ?"
"यह भी तो हो सकता है कि मारकोस को सचमुच हमारी मदद की जरूरत हो। वह सचमुच हमें मदद

के लिये पुकार रहा हो। अगर ऐसा हुआ और हम उसकी मदद के लिये न पहुंचे, तो कितना गलत होगा।"

जैकब लाजवाब हो गया।

चुप!

उलझन गहरी थी।

"हमें जल्दी से कोई फैसला लेना चाहिये।" एक अन्य गार्ड बोला।

"मैडम, हमें कोई ऐसी तरकीब सोचनी होगी।" वह शब्द जैकब ने कहे- "जो अगर यह कमाण्डर करण सक्सेना की चाल हो, तो हम उसकी चाल में न फंसें।"

"ऐसी क्या तरकीब हो सकती है ?"

"फिलहाल यही सोचना है।"

बार्बी के माथे पर सिलवटें पड़ गयीं।

इस वक्त उसके दिमाग में एक ही बात थी, अगर मारकोस जख्मी है, तो उसे उसकी हर हालत में मदद करने के लिये पहुचंना चाहिये।

"दुश्मन की चाल में न फंसने का एक तरीका है।" बार्बी बोली।

"क्या ?"

"हम अपनी इस एक टुकड़ी को भी दो हिस्सों में बांटेंगे। इस वक्त हमारे पास पच्चीस आदमी हैं। बीस आदमी हमारी टुकड़ी में आगे पैदल चलेंगे और उनसे कोई सौ मीटर पीछे बेहद धीमी गति से एक जीप चलेगी, जिसमें बाकी पांच जने होंगे। मैं भी जीप में रहूँ गी। अगर यह कमाण्डर करण सक्सेना की चाल हुई, तो कमाण्डर पहले हमारे बीस आदमियों पर हमला करेगा। उसके हमला करते ही हमें पता चल जायेगा कि यह वास्तव में उसका प्लान था। तुरन्त ही हम लोग पीछे से उस पर अटैक कर देंगे।"

गुफा में मौजूद तमाम गार्डों की आँखें चमक उठीं।

"गुड आइडिया!" जैकब ने भी उसके प्लान की तारीफ की।

"तो फिर चलें ?"

"चलो।"

□□□

कमाण्डर उस समय पेड़ पर चढ़ा हुआ था।

दूरबीन उसकी आँखों से चिपकी थी और वह जंगल का दूर-दूर तक का नजारा कर रहा था।

फिलहाल 'इन्फ्रारेड लैंसों' से उसे काफी मदद मिल रही थी। उन्हीं की बदौलत वो उस घने अंधेरे में भी दूर-दूर तक देख पा रहा था।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना चौंका- एकाएक उसे काफी सारे लोग दिखाई दिये, जो उसी तरफ बढ़े चले आ रहे थे।

सब पैदल थे।

सबके हाथों में राइफलें!

कमाण्डर की निगाहें अभी उन हथियारबंद गार्डों पर ही टिकी हुई थीं, तभी उसे उन गार्डों से और बहुत पीछे एक काला धब्बा-सा नजर आया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने दूरबीन के लैंसों को घुमाया।

उन्हें और फोकस किया।

तुरन्त ही वह धब्बा भी स्पष्ट हो गया।

वह एक जीप थी, जो उन गार्डों से काफी फासला बनाकर आगे बढ़ रही थी।

कमाण्डर उनकी चाल भांप गया।

वह शीघ्रतापूर्वक पेड़ से नीचे उतरा।

पेड़ के नीचे उतरते ही उसने भी अपनी 'चालाकी के पत्ते' फैलाने शुरू कर दिये।

उसने सबसे पहले वहाँ इधर-उधर बिखरी लाशों को उठाकर नजदीक की झाड़ियों में डाला, जिससे एकाएक किसी की नजर उन लाशों पर न पड़े।

फिर वो एक गुफा की तरफ बढ़ा।

थोड़ी देर पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना ने वो गुफा देखी थी।

वो बहुत संकरी-सी गुफा थी और काफी खतरनाक थी।

उस गुफा का दहाना तो जरा-सा था, जिसमें कोई एक आदमी भी बड़ी मुश्किल से दाखिल हो सकता था, लेकिन अंदर से वो गुफा काफी बड़ी थी।

कमाण्डर करण सक्सेना ने गुफा में पहुँचते ही वहाँ डायनामाइट फिट करने शुरू कर दिये।

उसने कुल चार 'डायनामाइट छड़ें' उस गुफा के अंदर फिट कीं।

उनके टाइम-पैनल में कमाण्डर ने पंद्रह मिनट बाद का टाइम भरा।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने हैवरसैक बैग में से एक पॉकिट साइज टेपरिकॉर्डर निकाला और उस टेपरिकॉर्डर में कुछ ऐसी आवाजें भरीं, जैसे कोई बुरी तरह कराह रहा हो।

फिर उस टेपरिकॉर्डर को ऑन करके तथा उसे गुफा में ही रखकर वो बाहर निकल आया। अब गुफा में से किसी के बुरी तरह कराहने की आवाजें आ रही थीं।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन नजदीक की झाड़ियों में छिप गया।

तभी बीस हथियारबंद गार्डों का दस्ता भी वहा आ पहुँचा।

किसी के कराहने की आवाज सुनते ही गार्ड ठिठके।

"यह कैसी आवाज है ?"

"लगता है, मारकोस साहब यहीं कहीं हैं।" दूसरा गार्ड स्तब्ध भाव से बोला- "यह उन्हीं के कराहने की आवाज हैं।"

"हाँ , यह मारकोस साहब ही कराह रहे हैं।"

सब इधर-उधर देखने लगे।

"लगता है।" तभी एक अन्य गार्ड बोला- "कराहने की यह आवाज गुफा के अंदर से आ रही है।"

सब गुफा की तरफ झपटे।

आवाज सचमुच उसी के अंदर से आ रही थी। उस आवाज को सुनते ही तमाम गार्ड गुफा के अंदर दाखिल हो गये।

कमाण्डर तुरन्त हरकत में आया।

वह झाड़ियों में से निकलकर गुफा की तरफ झपटा।

वहीं गुफा के दहाने के ऊपर एक पत्थर कुछ इस अंदाज में रखा हुआ था कि अगर उसके नीचे का एक छोटा सा पत्थर हटा दिया जाता, तो वह विशालकाय पत्थर धड़ाम से दहाने के सामने आ गिरता।

कमाण्डर करण सक्सेना ने वही किया।

उसने वो पत्थर हटा दिया।

तत्काल उसके ऊपर रखा विशालकाय पत्थर गुफा के दहाने के सामने आकर गिरा और वह दहाना बिल्कुल इस तरह बंद हो गया, जैसे उसके पीछे कोई गुफा थी ही नहीं।

अब वह सभी बीस आदमी उस गुफा में फंस गये थे।

जल्द ही उनकी घुटी-घुटी चीखों की आवाजें गुफा के अंदर से आने लगी।

कमाण्डर ने बिल्कुल उसी तरह दो-तीन विशालकाय पत्थर और ऊपर से गिराये।

गुफा का दहाना अब और ज्यादा कसकर बंद हो गया।

गार्डों के चीखने-चिल्लाने की आवाजें आनी भी बंद हो गयीं। उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना 'मौत का फरिश्ता' बना हुआ जीप की तरह बढ़ा।

□□□

"बस !" बार्बी बोली- "जीप यहीं रोक दो।"

बार्बी के आदेश की देर थी, फौरन जीप के पहिये चीख उठे और वह घनी झाड़ियों के बीच पहुँचकर रूक गयी।

फिलहाल उस जीप को जैकब चला रहा था।

बार्बी उस जीप की अगली सीट पर ही बैठी थी।

"यहाँ वातावरण में जले हुए बारूद की गंध आ रही है।" बार्बी बहुत ध्यान से आसपास की गंध लेते हुए बोली- "ऐसा लगता है, मारकोस की कमाण्डर करण सक्सेना से मुठभेड़ यहीं कहीं हुई थी। इस हिसाब से कमाण्डर करण सक्सेना को भी आसपास ही होना चाहिये।"

"अगर कमाण्डर करण सक्सेना इसी क्षेत्र में है।" जैकब बोला- "तो हमारे आगे बीस गार्ड गये हैं, वह उनसे जरूर टकरायेगा। लेकिन माहौल में जिस प्रकार निस्तब्धता है, उससे तो यही लगता है कि वो उनसे नहीं टकराया है।"

"न जाने क्यों मुझे अब खतरे का अहसास हो रहा है।" बार्बी थोड़ा सहमकर बोली।

"कैसा खतरा ?"

"खतरा किसी भी तरह का हो सकता है।"

जैकब खामोश रहा। सच बात तो ये है, उसके दिल में भी अजीब-सी घबराहट हो रही थी।

"मैं एक काम करती हूँ।" बार्बी ने कहा।

"क्या ?"

"तुम दो गार्डों के साथ यहीं जीप में रूको। जबकि बाकी के दो गार्ड लेकर मैं पैदल आगे का माहौल देखने जा रही हूँ कि वहाँ कुछ गड़बड़ तो नहीं हैं।"

"ठीक है।"

बार्बी ने फौरन दो गार्डों को इशारा किया।

तुरन्त दो गार्ड उसके साथ-साथ जीप से नीचे उतर गये।

कमाण्डर करण सक्सेना जो नजदीक की झाड़ियों में ही छिपा हुआ, वह सारा मंजर देख रहा था, उसने फौरन झटके के साथ अपना नौ इंच लम्बा स्प्रिंग ब्लेड बाहर निकाल लिया।

उसने क्या करना है, वो सोच चुका था।

वह बड़ी तेजी के साथ झाड़ियों में सांप की तरह रेंगता हुआ उन तीनों के पीछे-पीछे चला।

उसके रेंगने की बिल्कुल भी आवाज नहीं हो रही थी।

अपनी फौजी ट्रेनिंग का उस मिशन के दौरान उसे कदम-कदम पर फायदा मिल रहा था।

शीघ्र ही वह जीप से काफी आगे निकल आये।

अब जीप नजर नहीं आ रही थी।

कमाण्डर ने गौर से उन तीनों की पोजिशन नोट की।

बार्बी उनमें सबसे आगे थी और बहुत चौकन्नी थी।

बार्बी से कोई पांच फुट पीछे एक दूसरा गार्ड चल रहा था।

उससे इतना ही और पीछे तीसरा गार्ड था।

वह एक खास पोजिशन में चल रहे थे।

कमाण्डर करण सक्सेना हरकत में आया।

वह झाड़ियों में रेंगता हुआ ही तीसरे गार्ड के बिल्कुल पीछे पहुँच चुका था।

फिर इससे पहले की तीसरे गार्ड को उसकी जरा भी भनक मिल पाती, वह जम्प लेकर उठा और तुरन्त पीछे से उसके मुंह पर कसकर हाथ जकड़ दिया।

गार्ड छटपटाया।

उसके नेत्र दहशत से फटे।

लेकिन कमाण्डर करण सक्सेना की पकड़ बहुत मजबूत थी।

वह उसे लिये-लिये नीचे घनी झाड़ियों में गिरा और गिरते ही उसने स्प्रिंग ब्लेड से उसकी गर्दन काट डाली।

खून का तेज फव्वारा छूटा।

मगर कमाण्डर ने फिर भी उसके जबाड़े के ऊपर से तब तक हाथ न हटाया, जब तक इस बात की पूरी संतुष्टि न कर ली कि वह मर गया है।

उसके बाद उसने गर्दन उठाकर बार्बी तथा उस दूसरे गार्ड की तरफ देखा।

उन्हें उस हादसे की भनक तक न थी।

वह सीधे-सीधे चले जा रहे थे।

कमाण्डर दोबारा झाड़ियों के अंदर-ही-अंदर बहुत तेजी से सांप की तरह रेंगता हुआ अब दूसरे गार्ड की तरफ झपटा।

वह जितनी तेजी से और जितनी बेआवाज अंदाज में रेंग रहा था, वह सचमुच कमाल था।

जल्द ही वह दूसरे गार्ड के भी पीछे जा पहुँचा।

फिर वह दोबारा चीते की तरह उछला और उस गार्ड को अपने फौलादी शिकंजे में दबोचे-दबोचे वापस झाड़ियों में गिरा।

झाड़ियों में गिरते ही उसने उसकी गर्दन भी स्प्रिंग ब्लेड से काट डाली।

उसने भी छटपटाकर वहीं दम तोड़ दिया।

कमाण्डर ने आहिस्ता से उसके जबाड़े के ऊपर से हाथ हटाया। उसकी लाश भी वहीं झाड़ियों में लिटाई तथा फिर गर्दन उठाकर बार्बी की तरफ देखा।

कमाण्डर करण सक्सेना ने वह दोनों हत्यायें इतनी सफाई के साथ की थीं कि बार्बी को अभी भी उनके मरने की खबर न थी।

वह काफी आगे निकल गयी थी।

कमाण्डर ने स्प्रिंग ब्लेड का खून से सना फल वहीं झाड़ियों में रगड़कर साफ किया और फिर उसे वापस उसके खांचे में फिट कर दिया।

फिर वह झाड़ियों में-से फिरकनी की तरह वापस घूमा।

अब कमाण्डर करण सक्सेना उसी जीप की तरफ वापस बड़ी तेजी से रेंग रहा था, जिसमें जैकब दो गार्डों के साथ बैठा था।

वह तीनों उस वक्त बिल्कुल लापरवाह थे।

“अब मुझे इस जीप का इलाज करना चाहिये।” कमाण्डर करण सक्सेना मन-ही-मन बुदबुदाया।

झाड़ियों में रेंगता हुआ वह जीप से आगे निकल गया।

फिर वह बेखौफ झाड़ियों से बाहर निकला।

इस वक्त कमाण्डर जीप के बिल्कुल पीछे था और उन तीनों हथियारबंद गार्डों की पीठ उसकी तरफ थी।

कमाण्डर बेहद दबे पांव चलता हुआ जीप तक पहुँचा और उसके बाद निःशब्द ढंग से जीप के नीचे घुस गया।

उन तीनों को कानों-कान भनक तक न लगी कि जिस दुश्मन की तलाश में वो वहाँ आये हैं, उनका वही दुश्मन उस वक्त जीप के नीचे था।

उधर!

जीप के नीचे पहुँचते ही कमाण्डर ने अपने हैवरसेक बैग में-से नारंगी रंग की एक गेंद निकाली।

गेंद, जो बहुत शक्तिशाली टाइम-बम था।

“अब यह टाइम-बम तुम्हें जहन्नुम का रास्ता दिखायेगा दोस्तों!”

कमाण्डर करण सक्सेना ने उस टाइम-बम में ठीक दो मिनट बाद का टाइम सैट किया।

फिर उसकी उगलियां जीप के कुछ पुर्जों के साथ छेड़छाड़ करने लगीं।

जल्द ही उसने वो टाइम-बम जीप के कलपुर्जों के बीच फिट कर दिया।

“अलविदा दोस्तों! गुडबाय!”

कमाण्डर करण सक्सेना पिछली साइड से ही जीप से बाहर निकला और दौड़कर वापस झाड़ियों में समां गया।

तभी कमाण्डर को बार्बी नजर आयी, वह बड़ी चौकन्नी और घबराई हुई मुद्रा में जीप की तरफ चली आ रही थी।

“दुश्मन का पता चला?” जैकब ने ड्राइविंग सीट पर बैठे-बैठे पूछा।

“नहीं, दुश्मन का तो कुछ पता नहीं चला।” बार्बी बोली- “लेकिन एक बड़ी भारी गड़बड़ हो गयी है।”

“कैसी गड़बड़?”

“मेरे साथ जो दो गार्ड गये थे और जो मेरे पीछे-पीछे चल रहे थे, वह न जाने कहाँ गायब हो गये हैं, मैं उन्हें सब जगह तलाश चुकी हूँ। मगर उनका कहीं कुछ पता नहीं।”

“वो कहाँ चले गये ?”

“खुद मेरे कुछ समझ नहीं आ रहा।”

अब बार्बी के साथ जैकब और दोनों गार्ड भी घबराये हुए नजर आने लगे।

स्थिति वाकई जटिल थी।

जंगल में जो भी आगे जा रहा था, वही गायब हो रहा था।

बार्बी भी जीप में बैठ गयी।

“अब क्या करना है ?”

“जीप आगे बढ़ाओ।” बार्बी बोली।

जैकब ने जीप को आगे बढ़ाया।

जीप अभी मुश्किल से थोड़ी ही दूर गयी होगी, तभी उसके नीचे लगा टाइम-बम फट पड़ा और एक बहुत प्रचण्ड धमाका हुआ।

तत्काल पूरी जीप की धज्जियां बिखर गयीं।

आकाश की तरफ भीषण आग के शोले उठते नजर आये।

जैकब और दोनों गार्ड तो फौरन मारे गये। अलबत्ता बार्बी जीप के अंदर बहुत चौकन्नी मुद्रा में बैठी थी, जैसे ही धमाका हुआ, उसने बहुत आनन-फानन जीप से बाहर छलांग लगा दी। इसीलिए वो बच गयी।

फिर भी जख्मी काफी हुई।

वो दूर झाड़ियों में जाकर गिरी थी। झाड़ियों में गिरते ही बार्बी ने बिल्कुल चीते की तरह कलाबाजी खाई। सबसे अच्छी बात ये हुई कि राइफल अभी भी उसके हाथ में थी।

उसने राइफल अपने आगे तान दी।

कोई आसपास नहीं था।

बम-विस्फोट में उसके कपड़ों के चीथड़े बिखर गये थे, वह अपनी टांग को काफी जख्मी महसूस कर रही थी और उसके बायें कंधे में-से भी खून रिस रहा था।

वहीं झाड़ियों में पड़े-पड़े बार्बी ने ट्रांसमीशन स्विच ऑन किया और जल्दी हैडक्वार्टर से सम्पर्क स्थापित करने के प्रयास में जुट गयी।

“हैलो-हैलो !” वह बड़े दहशतनाक अंदाज में ट्रांसमीटर पर चिल्ला रही थी- “कैन आई स्पीक टू जैक क्रेमर ?”

“कैन आई स्पीक टू जैक क्रेमर ?”

जल्द ही उसका जैक क्रेमर से सम्पर्क स्थापित हो गया।

“हैलो बार्बी !” फौरन ही दूसरी तरफ से जैक क्रेमर की आवाज आयी- “यह रेडियो बोर्ड पर बार-बार धमाके की आवाज कैसे नोट की जा रही है ? तुम ठीक तो हो न बार्बी ?”

“यहाँ कुछ भी नहीं बचा सर !” बार्बी ने आर्तनाद किया- “मारकोस मारा जा चुका है। हमारे तमाम साथी मारे जा चुके हैं। कमाण्डर करण सक्सेना ने जंगल में भारी तबाही बरपा कर रखी है। मैं भी इस वक्त काफी जख्मी हूँ ।”

“माई गॉड।” जैक क्रेमर की सख्त आवाज- “ली मारकोस भी मारा गया।”

“यस सर !”

“तुम्हारी अब क्या पोजिशन है ?”

“मैं फिलहाल यहाँ बिल्कुल अकेली हूँ और मुझे लग रहा है, कमाण्डर अब बस किसी भी क्षण मेरे सामने आने वाला है।”

“तुम्हारे पास कोई हथियार है ?”

“हाँ, एक राइफल मेरे पास है।”

“वैरी गुड ! अगर कमाण्डर करण सक्सेना तुम्हारे सामने आये, तो वह बचना नहीं चाहिये। उसे पहली गोली से ही शूट करना।”

"ऐसा ही होगा सर, वो बस एक बार मेरे सामने आ जाये।"

"चिन्ता की क्या बात है बेबी!" तभी कोई जोर से हंसा- "कमाण्डर करण सक्सेना तुम्हारे सामने खड़ा है।"

बार्बी ने झटके के साथ गर्दन ऊपर उठाई।

उससे थोड़ा ही फासले पर सचमुच कमाण्डर करण सक्सेना खड़ा था।

उसके हाथ में अपनी पसंदीदा कोल्ट रिवॉल्वर थी। बार्बी के गर्दन ऊपर उठाते ही उसने रिवॉल्वर अपनी अंगुलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घुमाई।

धांय-धांय!

लेकिन बार्बी ने बिना कोई क्षण गंवाये असाल्ट राइफल का ट्रेगर दबा दिया।

कमाण्डर बिल्कुल किसी तेदुंए की तरह ऊपर उछला, गोलियां उसके नीचे से गुजर गयीं।

फौरन ही उसने भी अपनी रिवॉल्वर का ट्रेगर दबाया।

धांय!

गोली सीधे बार्बी की असाल्ट राइफल में जाकर लगी।

चीखी बार्बी!

राइफल उसके हाथ से उछलकर दूर जा गिरी।

परन्तु अगले ही क्षण बार्बी एकदम जबरदस्त एक्शन की मुद्रा में आ गयी थी।

वह मुंह से चीत्कार निकालते हुए उठी और कमाण्डर के सामने टाइगर क्लान के एक्शन में खड़ी हो गयी।

कमाण्डर मुस्कराया।

रिवॉल्वर एक बार फिर उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी।

"तुम्हारी केस फाइल भी मैंने काफी अच्छी तरह पढ़ी है बार्बी।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैं जानता हूँ, तुम मार्शल आर्ट की जबरदस्त योद्धा हो और तुमने जूडो के अंदर बारहवां दन, ताइक्वांडो में आठवां, कराटे में दसवां दन और बर्मी बॉक्सिंग सवाटे के अंदर सातवां दन प्राप्त कर रखा है। चिन्ता मत करो बार्बी, मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा। मैं तुम्हें भी उसी हथियार से मारूंगा, जिसमें तुम्हें महारथ हासिल है।"

कमाण्डर ने रिवॉल्वर वापस अपनी जेब में रख ली।

फिर उसने बार्बी और अपने चारों तरफ एक बहुत बड़ा 'ऐरीना' बनाया।

"अब हम दोनों के बीच इस 'ऐरिना' के अंदर फाइट होगी। देखता हूँ, तुमने भी मार्शल आर्ट के कौन-कौन से गुर सीख रखे हैं।"

कमाण्डर करण सक्सेना के मुंह से अभी वो शब्द निकले ही थे, तभी बार्बी ने कुंगफू के स्नैक हैंड का जबरदस्त प्रहार कमाण्डर के चेहरे पर कर दिया।

चीख निकल गयी कमाण्डर करण सक्सेना की।

प्रहार वाकई बहुत जबरदस्त था।

वह संभलता, उससे पहले ही बार्बी ने कराटे के एक और एक्शन हिजागिरी का प्रयोग किया।

"मूर्ख आदमी, अभी तो तुम्हें मार्शल आर्ट का पहला ही सिद्धांत याद नहीं है।" बार्बी जहरीली नागिन की तरह फुंफकारी- "दुश्मन को कभी मौका मत दो।"

फिर बार्बी ने बॉक्सिंग का लैफ्ट पंच उसके पेट में जड़ा तथा फिर जूडो का थ्री एक्शन दिखाने के लिए उसकी तरफ झपटी।

लेकिन उसी क्षण चूक गयी।

कमाण्डर ने तभी कावासिकीगिरी का प्रयोग कर दिया था।

कावासिकीगिरी- यह कराटे का एक खास एक्शन है, इसमें दुश्मन को पहले इस तरह धोखा दिया जाता है, जैसे हमला होने वाला है। परन्तु हमला फौरन होने के बजाय रूककर होता है।

बार्बी जैसी यौद्धा भी एक क्षण के लिए उस 'चाल' में फंस गयी।

कमाण्डर ने जैसे ही कावासिकीगिरी का एक्शन दिखाया, बार्बी ने फौरन उस हमले को रोकने के लिए हाथ से ब्लॉक लगाना चाहा।

परन्तु हमला हुआ ही नहीं था।

अगर उसी क्षण हमला हो जाता, तो बिना शक बार्बी उस हमले को ब्लॉक करने में कामयाब हो जाती।

जैसे ही बार्बी का हाथ आगे बढ़ा, फौरन सेकेण्ड के सौवें हिस्से की देरी से कमाण्डर करण सक्सेना की टांग ने एक्शन दिखाया। वह भड़ाक से सीधे बार्बी के मुंह पर पड़ी।

हलक फाड़कर चिल्ला उठी बार्बी !

वह कलाबाजी खाकर नीचे गिरी।

"अभी मुझे नहीं बल्कि तुम्हें मार्शल आर्ट के सिद्धांत सीखने की जरूरत है बार्बी डार्लिंग।"

परन्तु बार्बी गजब की दुस्साहसी थी।

जख्मी होने के बावजूद वह नीचे गिरते ही एकदम स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति जम्प लेकर वापस खड़ी हो गयी।

दोनों योद्धा पुनः आमने-सामने थे।

आमने सामने आते ही वह दोनों एकदम टाइम क्लान के एक्शन में आ गये।

"तुम आज मेरे हाथों से बचोगे नहीं कमाण्डर करण सक्सेना।" बार्बी फुंफकारी।

"यही शब्द थोड़ी देर पहले ली मारकोस ने भी कहे थे। मगर उसी की समुराई उसके दिल के आर-पार गुजर गयी।"

"मारकोस ने शायद तुम्हें बचने का मौका दे दिया होगा, लेकिन मैं तुम्हें कोई मौका नहीं देने वाली हूँ।"

बार्बी का हाथ तुरंत शुगी के एक्शन में उसकी तरफ झपटा।

परन्तु सावधान था कमाण्डर करण सक्सेना।

उसने तुरंत अपने हाथ से शुगी के उस एक्शन को ब्लॉक कर दिया और उस एक्शन को ब्लॉक करते ही कमाण्डर की राउण्ड किक घूमी।

बार्बी चीखते हुए नीचे गिरी।

लेकिन फौरन ही वो पुनः जम्प लेकर खड़ी हो गयी।

खड़े होते ही उसने कमाण्डर के ऊपर उरेकान का इतना जबरदस्त प्रहार किया कि उसकी आँखों के गिर्द चांद-तारे नाच गये। फिर उसने लोअर कट ओर अपर कट के एक्शन दिखाये।

वह सचमुच बहुत फुर्तीली थी।

बहुत खतरनाक।

मगर तभी कमाण्डर करण सक्सेना ने रेसलिंग की आर्म अण्डर डाइव दिखा दी थी।

जिसे 'कला जंग' भी कहते हैं।

बस एकाएक ही बार्बी के हाथ कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में आ गये थे। उसने तुरंत आर्म अण्डर डाइव का एक्शन दिखाया और अपना दूसरा हाथ बार्बी की दोनों टांगों के बीच में डालकर उसे अपने सिर से ऊपर उठा दिया।

"न... नहीं।"

बार्बी के मुंह से भयप्रद चीख निकली।

"जानती हो बार्बी डार्लिंग, मैं अब क्या करने जा रहा हूँ।" कमाण्डर करण सक्सेना बोला- "मैं अब तुम्हारे उसी दांव से तुम्हें मारने जा रहा हूँ, जिसमें तुम्हें सबसे ज्यादा महारथ हासिल है।"

कमाण्डर ने फौरन बहुत जोर से उसे वहीं रखे एक पत्थर पर पटक मारा।

जैसे ही बार्बी का सिर पत्थर से जाकर टकराया, वह बिल्कुल तरबूज की तरह फट पड़ा।

बार्बी के मुख से एक और बहुत मर्मांतक चीख उबली तथा फिर वहाँ खामोशी छाती चली गयी।

बार्बी के सिर से अब थुल-थुल करके खून बाहर निकल रहा था।

वो मर चुकी थी।

यही वो क्षण था, जब गुफा के अंदर फिट डायनामाइट की छड़ें भी एकाएक बहुत प्रचण्ड धमाके के साथ फटीं।

डायनामाइट फटते ही उस पूरी गुफा की खील-खील होकर धज्जियां बिखरती चली गयीं।

उसमें जितने गार्ड कैद थे, वह सब मारे गये।

□□□

"हमारे तीन योद्धा मारे जा चुके हैं, तीन बहादुर योद्धा !" जैक क्रेमर बुरी तरह भिन्नाया हुआ था- "और उनके साथ जो हथियारबंद गार्ड मारे गये, उनकी तो कोई संख्या ही नहीं है।"

योद्धाओं के हैडक्वार्टर में उस वक्त भूकम्प आया हुआ था।

ली मारकोस और बार्बी के मारे जाने की खबर ने उनके बीच बड़ी जबरदस्त दहशत फैला दी थी।

"वाकई !" अबू निदाल बोला- "कमाण्डर करण सक्सेना हर पल खतरनाक होता जा रहा है।"

"सर !" डायमोक ने भी कहा- "हमें उसे रोकने के लिये फौरन कुछ करना चाहिये।"

"लेकिन सवाल तो यह है।" जैक क्रेमर भिन्ना उठा- "हम क्या कर सकते हैं ? जो कुछ हमारे बस में है, वह हम कर ही रहे हैं।"

"एक आदमी, सिर्फ एक आदमी को हम नहीं खत्म कर पा रहे।"

"जबकि अपने-अपने फील्ड के हम जबरदस्त महारथी हैं और उससे भी बड़ी बात ये है कि हम खुद को बहुत बड़ा सूरमा समझते हैं।"

"हमने यह खामख्याली पाली हुई है कि अगर हमें मौका मिले, तो हम न जाने कौन-से तीर चला लेंगे। न जाने क्या कर गुजरेंगे।"

सबके चेहरों पर फटकार बरसने लगी।

सबकी गर्दन झुक गयीं।

सच बात तो यह है, उस पूरे सिलसिले की वजह से वह खुद बहुत शर्मिन्दा थे।

"हमारे लिये सबसे बड़े डूब मरने की बात तो ये है सर !" रोनी बोला- "कि वो हमारे ही जंगल में घुसकर बाकायदा हमें चैलेन्ज देता हुआ मार रहा है।"

"मेरे तो एक बात समझ नहीं आ रही।" वह शब्द मास्कमैन के थे।

मास्कमैन !

वह हमेशा अपने चेहरे पर एक काला 'मास्क' पहने रहता था।

उस मास्क में-से उसके सिर्फ होंठ और आँखें चमकती थीं।

"तुम्हारे क्या बात समझ नहीं आ रही ?"

"आखिर भारत सरकार ने उसे यहाँ किसलिये भेजा है ? भारत सरकार की हम लोगों से क्या दुश्मनी है ?"

"भारत सरकार की हम लोगों से कोई दुश्मनी नहीं है।"

"फिर ?"

"जरूर बर्मा सरकार ने भारत से मदद मांगी होगी।" जैक क्रेमर बोला- "और उसी मदद के जवाब में कमाण्डर करण सक्सेना यहाँ आया है।"

"अकेला ?"

"अकेला ही आया है। और तुम देख ही रहे हो, वह अकेला ही हम सब पर भारी पड़ रहा है। उस अकेले आदमी ने ही हमारे छक्के छुटाये हुए हैं।"

"सबसे बड़ी बात तो ये है।" मास्टर बोला- "कि कमाण्डर करण सक्सेना की वजह से ही, उस एक आदमी की वजह से ही हमारी नारकाटिक्स डील रूकी हुई है। हमारे लिये इससे बड़ी डूब मरने की बात और क्या होगी कि हम उस एक आदमी से इस कदर घबराये हुए हैं, उससे हमारी इतनी हवा खुश्क है।"

"अब इस तरह की बातें करने से कोई फायदा नहीं है।" डायमोक बोला।

"फिर किस तरह की बात करने से फायदा है ?"

"अब हमें यह सोचना चाहिये।" डायमोक एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "कि आगे क्या करना है। आगे हम लोग ऐसे क्या पत्ते फैलायें, जो हमारी गलती सुधरे और कमाण्डर करण सक्सेना जहन्नुम रसीद हो, जो आज की तारीख में हमारा दुश्मन नम्बर एक बना हुआ है।"

"बात बिल्कुल जायज है।" माइक बोला- "हमें अब जल्द-से-जल्द आगे के बारे में फैसला लेना चाहिये

।”

“एक सलाह तो मैं देता हूँ।” मास्कमैन बोला।

“क्या ?”

“सपोर्ट ग्रुप के फिलहाल हम तीन योद्धा बचे हैं।”

“ठीक।”

“मैं, मास्कमैन ! मेरा भाई, हिटमैन ! और डायमोक ! मैं समझता हूँ सर, हमें इस मर्तबा कमाण्डर के सामने एक बड़ी ताकत के रूप में उतरना चाहिये और उसे एक ही झटके में खत्म कर डालना चाहिये।”

“यानि तुम ये कहना चाहते हो।” जैक क्रेमर बोला- “कि इस बार कमाण्डर करण सक्सेना को मारने के लिये ‘सपोर्ट ग्रुप’ के तुम तीनों योद्धा जाओगे ?”

“बिल्कुल सर ! मैं समझता हूँ, यही बेहतर रहेगा। इतना ही नहीं, इस बार हमारे साथ हथियारबंद गार्डों की संख्या भी काफी ज्यादा होगी।”

जैक क्रेमर ने अपने साथी योद्धाओं की तरफ देखा।

सब चुप थे।

“तुम्हारा इस बारे में क्या ख्याल है ?”

“मास्कमैन ठीक ही कह रहा है।” रोनी बोला- “आगे जैसा आप मुनासिब समझें।”

“किसी ने कुछ और कहना है ?”

“नहीं।” सब बोले।

“किसी ने कैसी भी कोई सलाह देनी हो ?”

“नहीं।”

सबकी गर्दन फिर इंकार में हिलीं।

“ठीक है।” जैक क्रेमर अंतिम फैसला सुनाता हुआ बोला- “तो फिर इस बार यही तीनों कमाण्डर करण सक्सेना को मारने के लिये जायेंगे और इनके साथ गार्डों की संख्या पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा होगी।”

मास्कमैन, हिटमैन और डायमोक !

तीनों !

उन तीनों ने अपनी गर्दन उस फैसले के सम्मान में झुका दी। मास्कमैन एक बर्मी युवक था और हिटमैन का बड़ा भाई था। मास्कमैन बम एक्सपर्ट था।

उसके बारे में कहा जाता था कि दुनिया में ऐसा कोई टाइम-बम नहीं है, जिसको फिट करना या डिस्कनेक्ट करना वह न जानता हो। उसका रिकॉर्ड था कि वह खतरनाक-से-खतरनाक टाइम-बम को डिस्कनेक्ट कर सकता था और पूरी तरह बेकार हो चुके टाइम-बम को ठीक भी कर सकता था।

उसमें नई तरह से जान फूंक सकता था।

दुनिया के कई देशों में मास्कमैन ने बम-विस्फोट किये थे।

इतना ही नहीं, दुनिया का बड़े-से-बड़ा अपराधी उसे अपने यहाँ बम सैट करने के लिये बुलाता था। दुनिया के कई देशों में उसके नाम अपराध दर्ज थे।

एक बार मास्कमैन के साथ घटना भी घटी।

खतरनाक घटना !

वो बर्मा में ही जब एक टाइम-बम को डिस्कनेक्ट कर रहा था, तभी वो बम उसके हाथ में ही फट पड़ा।

जिससे उसका चेहरा बुरी तरह जल गया और उसमें गहरे-गहरे गड्ढे पड़ गये।

यही शुक्र था, जो वह उस ब्लास्ट में मारा न गया।

बहरहाल उस घटना के बाद उसका चेहरा बहुत ज्यादा डरावना हो गया था।

इतना ज्यादा डरावना कि कभी-कभी वो खुद भी अपना चेहरा आइने में देखकर चीख पड़ता था।

बस तभी से उसने अपने चेहरे पर ‘मास्क’ पहनना शुरू कर दिया।

ताकि उसका डरावना चेहरा उस ‘मास्क’ के पीछे छुपा रहे।

इसीलिये उसका नाम भी मास्कमैन पड़ा।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना ने जंगल में आँख खोली।

दिन अब खूब अच्छी तरह निकल आया था। सूर्य की प्रकाश रश्मियां, जो बर्मा के उन घने जंगलों में जमीन तक बड़ी मुश्किल से पहुँच पाती थीं, अब चारों तरफ फैली हुई थीं।

चिड़ियों के चहचहाने का शोर हर तरफ सुनाई दे रहा था।

"लगता है।" कमाण्डर करण सक्सेना अंगड़ाई लेता हुआ बोला- "आज काफी देर तक सोया हूँ।"

उसने अपनी रिस्टवॉच देखी।

दस बज रहे थे।

इस वक्त कमाण्डर करण सक्सेना बरगद के एक बहुत घने पेड़ पर कम्बल बांधे लेटा था। अपने ऊपर हमेशा की तरह उसने एक कैमोफ्लाज किट ढक रखी थी।

"आज थोड़ा व्यायाम करना चाहिये, इससे शरीर में थोड़ी ताज़गी आयेगी।"

कमाण्डर करण सक्सेना ने कैमोफ्लाज किट हटाकर फोल्ड की।

कम्बल खोला।

फिर उन दोनों चीजों को अपने हैवरसेक बैग में रखकर वो पेड़ से नीचे उतर आया।

यूं तो आधी से ज्यादा रात उसकी हंगामे से भरी गुजरी थी। लेकिन बार्बी को मार डालने के बाद वह खतरा कुछ कम अनुभव करने लगा था और उसकी इच्छा होने लगी थी कि अब थोड़ा आराम किया जाये। वैसे भी वो सारा दिन और सारी रात का थका-हारा था।

बस उसने फौरन उस पेड़ पर शरण ले ली, लेटते ही उसे नींद ने आ दबोचा।

आज बर्मा के उन खौफनाक जंगलों में आये हुए उसे दो दिन हो चुके थे।

दो दिन !

वह कुछ कम नहीं होते।

परन्तु कमाण्डर करण सक्सेना को इस बात का संतोष था कि उसके दो दिन जहाँ बहुत हंगामे से भरे गुजरे थे, वहीं वो तीन योद्धाओं को मारने में भी सफल हो गया था। जोकि उसकी एक बड़ी उपलब्धि थी।

पेड़ से नीचे आने के बाद कमाण्डर करण सक्सेना सबसे पहले नित्यकर्मों से निपटा और फिर उसने व्यायाम शुरू कर दिया।

वह देसी व्यायाम कर रहा था।

उस जैसे घने जंगल में वैसे भी देसी व्यायाम ही संभव था। इसके अलावा कमाण्डर यह भी जानता था कि देसी व्यायाम ही शरीर को सही मायनों में सौष्ठव बनाता है, अधिक बल प्रदान करता है। क्योंकि पश्चिमी देशों में व्यायाम करने के लिये मशीनें तो तरह-तरह की इजाद हुई हैं, बहुत-सी मल्टीपरपज मशीनें भी बाजारों में हैं, जो नौजवानों को बड़ी जल्दी अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। उन मशीनों से व्यायाम करने पर शरीर बहुत जल्दी सौष्ठव मालूम होने लगता है, लेकिन वो सौष्ठवपन स्थायी नहीं होता। जैसे ही कोई कुछ दिन तक व्यायाम करना बंद करता है, तो शरीर पहले से भी कहीं ज्यादा लटक जाता है। इस मामले में अपने उन देसी व्यायामों का कोई जवाब नहीं है, जिन्हें प्राचीन काल में पहलवानों से लेकर ऋषि-मुनि तक करते थे। देसी व्यायाम करने से शारीरिक रचना के सौष्ठव आकार लेने में तो थोड़ा समय लगता है, लेकिन वो पूरी तरह स्थायी रूप होता है।

स्थायी भी और ज्यादा सुंदर भी।

कमाण्डर काफी देर तक जंगल में व्यायाम करता रहा।

उसने तरह-तरह के आसन किये और क्रियायें कीं।

सबसे आखिर में उसने शीर्षासन किया, अपना सिर नीचे करके टांगें ऊपर उठा दीं।

शीर्षासन !

वह देसी व्यायामों में उसका सबसे मनपसंद आसन था।

इससे चेहरे का तेज बढ़ता है और दिमाग तन्दरूस्त होता है।

कमाण्डर काफी देर तक शीर्षासन की मुद्रा में ही रहा। फिर वह उछलकर सीधा खड़ा हो गया था। उसके बाद उसने विटामिनयुक्त पाउडर के दूध का सेवन किया और मक्खन लगाकर कुछ स्लाइस्ड खाये।

अब वह खुद को काफी चुस्त अनुभव कर रहा था।

आँखों में भी चमक थी।

कमाण्डर करण सक्सेना कुछ देर शिकारी चीते की तरह जंगल में इधर-उधर देखता रहा।

मगर !

उसे आसपास खतरे का कोई आभास न मिला।

फिलहाल वो सुरक्षित था।

कमाण्डर करण सक्सेना जानता था, अभी सपोर्ट ग्रुप के तीन योद्धा और बचे हैं।

फिर असॉल्ट ग्रुप के छः योद्धा थे।

जो और खतरनाक थे।

और जानलेवा।

बहरहाल जैसे-जैसे वक्त गुजरना था, योद्धाओं से उसका वह मुकाबला कड़ा होता जाना था। उन बारह योद्धाओं ने अपने आपको दो ग्रुपों में बांटा ही इसलिये था। पहले छः योद्धाओं का 'सपोर्ट ग्रुप' इसलिये बनाया हुआ था, क्योंकि फील्ड का ज्यादातर काम वही छः योद्धा देखते थे। दूसरे 'असाल्ट ग्रुप' के छः योद्धा तो तभी फील्ड में उतरते थे, जब उनके फील्ड में उतरने के सिवाय दूसरा कोई चारा न रहे।

"अब जंगल में आगे बढ़ना चाहिये।" कमाण्डर करण सक्सेना होठों-ही-होठों में बुदबुदाया।

उसने हैवरसेक बैग अपनी पीठ पर कस लिया।

उसके बाद उसने आगे का सफर शुरू किया।

□□□

बर्मा के उन घने जंगलों के बीच में बना वो बर्मी आदिवासियों का छोटा सा गांव था, जिसकी आबादी मुश्किल से पांच-छः सौ थी।

वही उन्होंने घास-फूंस के अपने झोंपड़े डाले हुए थे, जिनमें वो रहते थे। जंगली जानवरों से बचने के लिए उन्होंने आदिवासी परम्परा के अनुरूप ही कई सारे इंतजाम कर रखे थे। रात को अगर उस बस्ती में जरा भी शोर होता, तो सब जंगली अपने-अपने भाले लेकर बाहर निकल आते थे।

इस वक्त सपोर्ट ग्रुप के तीनों योद्धा मास्कमैन, हिटमैन और डायमोक-आदिवासियों की उसी बस्ती में थे।

वह तीनों एक बड़ी पुरानी-सी बाबा आदम के जमाने वाली चारपाई पर बैठे थे।

उनके पीछे हथियारबंद गार्डों की एक छोटी-छोटी फौज खड़ी थी, जबकि उनके सामने जमीन पर ही आदिवासी बैठे हुए थे। उनमें आदमी, औरत सब शामिल थे। जिस तरह आदमियों के शरीर पर कपड़े नाममात्र के थे, वही हाल आदिवासी औरतों का था। उनकी छातियां और कुछेक के तो जननांग तक साफ चमक रहे थे।

ऊपर से उनमें 'सैक्स अपील' गजब की थी।

"आप सब लोग जानते ही है।" मास्कमैन उन आदिवासियों की बर्मी जबान में ही बड़ी गरमजोशी के साथ चिल्लाकर बोल रहा था- "कि हमारे इन जंगलों में एक शैतान घुस आया है और उसने यहाँ बड़ी जबरदस्त तबाही बरपा करके रख दी है। जंगल का अमन चैन उसने पूरी तरह उजाड़ डाला है। वह कितना बड़ा शैतान है, इसका अंदाजा इसी एक बात से लगाया जा सकता है कि उसने अकेले ही हमारे तीन साथी यौद्धा मार डाले और दर्जनों की तादाद में गार्डों को शहीद बना दिया, जबकि उसका अभी तक कुछ नहीं बिगड़ा है। वो यहाँ बेखौफ घूम रहा है।"

"दोस्तो !" डायमोक ने भी उन सीधे-सादे जंगलियों की भावनाओं को भड़काया- "हम सब लोगों ने मिलकर उस शैतान को मार डालने के लिए जल्दी कुछ करना होगा। वरना वह दिन दूर नहीं है, जब इस पूरे जंगल पर उस शैतान का कब्जा हो जायेगा तथा वह हम सबको जंगल से निकाल बाहर करेगा। क्या तुम जंगल छोड़ने के लिए तैयार हो ?"

"नहीं-नहीं।" सारे आदिवासी चिल्लाये- "हममें से कोई जंगल नहीं छोड़ेगा। कोई नहीं छोड़ेगा।"

"अगर जंगल छोड़ना नहीं चाहते।" मास्कमैन बोला- "तो जल्दी सबने मिलकर उस शैतान को

मारना होगा। वह जंगल देवता के लिए एक श्राप है, जो हर पल जंगल में अपने पैर फैलाता जा रहा है।"

"लेकिन उस शैतान को मारने के लिए हमें क्या करना होगा ?" तभी उन आदिवासियों का सरदार बोला।

सरदार !

जिसकी आयु कोई पचास-पचपन साल थी। परन्तु कद काठी इस उम्र में भी उसकी बहुत मजबूत थी।

कानों में बड़े-बड़े हाथी दांत के कुण्डल पहने हुए था।

शरीर पर जंगह-जगह गोदने के चिन्ह।

सिर पर जंगली पंखों का मुकुट !

गले में छोटी-छोटी हड्डियों का हार।

कुल मिलाकर वो पहली नजर देखने से ही किसी जंगली कबीले का सरदार मालूम होता था।

"तुम्हें उस शैतान को मारने के लिए सिर्फ हम लोगों का साथ देना होगा।" मास्कमैन बोला- "मधुमक्खियों के छत्ते की तरह पूरे जंगल में फैल जाना होगा। फिर वो तुम्हें जहाँ कहीं भी दिखाई दे, बचना नहीं चाहिये। बोलो, क्या तुम तैयार हो ?"

"हाँ -हाँ ।" सब जोर से गला फाड़कर चिल्लाये- "हम तैयार हैं।"

उन जंगलियों में जो गरम खून वाले आदमी-औरत थे, वह तो फौरन ही दौड़कर अपने-अपने झोपड़ी में से भाले भी निकाल लाये।

फिर वह भाले उछालते हुए जोर-जोर से रणहुंकार करने लगे।

"बहुत अच्छे !" मास्कमैन बोला- "मैं तुम्हारे अंदर ऐसी ही गरमी देखना चाहता था।"

"एक बात और तुम सब लोग अच्छी तरह समझ लो।" इस मर्तबा हिटमैन भभके स्वर में बोला।

"क्या ?"

"आज उसी शैतान की वजह से तुम सबके पेटों पर लात लगी है। उसी के कारण माल रंगून रवाना नहीं हो सका। आज उस शैतान ने सिर्फ तुम्हारी रोजी-रोटी छीनी है, परन्तु अगर जंगल में ऐसे ही खौफ और दहशत का माहौल बना रहा, तो वह एक दिन तुम सबसे तुम्हारी जिंदगी भी छीन लेगा। इसलिए उस शैतान को मारना हम सबका बराबर का दायित्व है। हम सबने पूरे तन-मन से उस शैतान के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना है।"

"ऐसा ही होगा।"

"हम उस शैतान की छाया तक को जंगल से मिटा डालेंगे।"

सारे जंगली जोर-जोर से चिल्लाने लगे।

सबने रणहुंकार भरी।

जल्द ही लगभग सारे जंगली अपने-अपने झोंपड़ों में से भाले निकाल लाये थे।

औरत-मर्द सब खूंखार हो उठे।

हर कोई कमाण्डर के खून का प्यासा नजर आने लगा।

तभी कुछ हथियारबंद गार्डों का उस जंगलियों की बस्ती में आगमन और हुआ। वह गार्ड अपनी-अपनी जीपों में उन लाशों को भरकर लाये थे, जिन्हें कमाण्डर ने पिछले दो दिनों के दौरान जंगल में मार डाला था।

इतनी सारी लाशों को एक साथ देखकर पूरी बस्ती का माहौल गमगीन हो गया।

सबके चेहरों पर दुःख की काली परत पुत गयी।

फिर वह सब उन लाशों के अंतिम क्रियाकर्म में जुट गये।

□□□

कमाण्डर को जंगल में चलते-चलते दोपहर हो चुकी थी।

"लगता है, तमाम लोग कहीं छिपकर बैठ गये हैं, जो जंगल में अभी तक कोई नजर नहीं आया।"

कमाण्डर करण सक्सेना इस समय जंगल वारफेयर (जंगल युद्ध) की उसी पुरानी परम्परा का पालन करता हुआ आगे बढ़ रहा था। कभी वो शेर की तरह दौड़ता, तो कभी चीते की तरह छलांग लगाता था और

कभी बिल्कुल सर्प की तरह झाड़ियों में जोर-जोर से सरसराकर रेंगता। इससे अगर कोई उसकी पद्चापों की आवाज सुन भी लेता, तो इस बात का अंदाजा नहीं लगा पाता कि वहाँ कोई आदमी मौजूद है।

कमाण्डर करण सक्सेना ने अभी तक वो तमाम सावधानियां बरती थीं, जो जंगल वारफेयर के दौरान जरूरी होती हैं।

इसीलिए वो अभी तक जिंदा था।

चलते-चलते एकाएक कमाण्डर करण सक्सेना की छठी इंद्री ने ऐसा आभास दिया, जैसे आगे कहीं खतरा है।

वह तुरंत ठिठककर रूक गया।

फिर वो वहीं जंगल में ध्यान की मुद्रा में बैठ गया और फिर सांस रोककर जंगल में आसपास होने वाली आवाजों को सुनने का प्रयत्न करने लगा।

तरह-तरह की आवाजें उसके कानों में पड़ने लगीं।

जल्द ही उसके कान में पेड़ के पत्तों के जोर से खड़खड़ाने की आवाज भी पड़ी। वह पत्तों के खड़खड़ाने की बड़ी अजीब सी आवाज थी, जो कम से कम पक्षियों के पेड़ पर बैठने की वजह से पैदा नहीं होती।

जरूर दुश्मन पेड़ पर था।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन झाड़ियों में घुस गया।

उसके बाद वो झाड़ियों में अंदर ही अंदर सरसराता हुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

रिवॉल्वर निकलकर उसके हाथ में आ चुकी थी।

बेहद चौकन्नी निगाहें एक-एक पेड़ का बारीकी से अवलोकन कर रही थीं।

जल्द ही कमाण्डर करण सक्सेना को एक काफी घने पेड़ पर तीन जंगली दिखाई पड़ गये, जो थोड़े-थोड़े फासले पर 'मलायका टाइगर क्रेक' छपामारों की स्टाइल में छिपे बैठे थे।

"ओह, तो इन्होंने यहाँ जाल बिछा रखा है।" रिवॉल्वर कमाण्डर करण सक्सेना की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरफ घूमी।

मलायका टाइगर क्रेक, वह छापामारी की विशिष्ट स्टाइल होती है। जिसमें टाइगर बड़ी-बड़ी रस्सियां लेकर पेड़ के घने पत्तों के बीच छिप जाते हैं और फिर जैसे ही उनका दुश्मन पेड़ के नीचे से गुजरता है, वह फौरन रस्सी के बड़े-बड़े फंदे डालकर उसे जकड़ लेते हैं तथा ऊपर खींच लेते हैं।

कमाण्डर करण सक्सेना को उनके हाथ में रस्सी के फंदे भी नजर आये।

एक क्षण कमाण्डर वहीं ठिठका हुआ उन तीनों जंगलियों की पोजीशन चैक करता रहा। फिर उसने बहुत धीरे-धीरे पेड़ की तरफ रेंगना शुरू कर दिया।

जल्द ही वो झाड़ियों में रेंगता हुआ पेड़ के बिल्कुल पीछे जा पहुँचा था।

फिर उसने एक काम और किया।

रिवॉल्वर वापस ओवरकोट की जेब में रख ली तथा अपना स्प्रिंग ब्लेड बारह निकाल लिया।

उसके बाद उसने पेड़ का मोटा तना दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और धीरे-धीरे पेड़ पर चढ़ना शुरू किया।

उस वक्त वो बहुत चौंकन्ना था।

अलर्ट!

जरा-सा खतरा भांपते ही उसने हरकत में आ जाना था।

"यहाँ छिपकर तुमने अपनी-अपनी मौत को दावत दी है, आज तुम तीनों ही जहन्नुम पहुंचे समझो।"

वह तीनों पेड़ की अगली डालियों पर थे, इसलिए तने की तरफ क्या हो रहा है, उन्हें नजर नहीं आ रहा था।

जल्द ही कमाण्डर करण सक्सेना बिल्कुल निःशब्द ढंग से पेड़ पर जा पहुँचा।

फिर उसने एक काम और किया।

उसने अपनी सांसों की ध्वनि को उन तीनों की सांसों में समायोजित करना शुरू कर दिया।

शीघ्र ही वो अपने मकसद में कामयाब हो गया।

अब सांसों की आवाज सुनकर भी यह पता नहीं लगाया जा सकता था कि वहाँ कोई चौथा आदमी है।

फिर कमाण्डर बहुत धीरे-धीरे उस जंगली की तरफ रेंगा, जो उनमें सबसे पीछे था।

पलक झपकते ही वो जंगली की टांगों के पास पहुँच चुका था।
जंगली अभी भी बेखबर था।
उसे मालूम नहीं था, मौत उसके कितना करीब आ चुकी है।
कमाण्डर ने फौरन हरकत दिखाई।
वह चील की तरह जंगली के ऊपर झपटा। जंगली सावधान हो पाता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना की चौड़ी हथेली उसके मुंह पर ढक्कन की तरह जाकर फिट हो गयी।
जंगली ने अपने पैर पटकने की कोशिश की।
लेकिन उसकी वो कोशिश भी सफल न हुई।
कमाण्डर करण सक्सेना ने उसके पैरों को अपने पैरो से कसकर पकड़ लिया।
फिर बिना सेकण्ड गंवाये उसने झटके के साथ स्प्रिंग ब्लेड से जंगली की गर्दन काट डाली।
वो कुछ देर तड़पा।
फिर वहीं ठण्डा पड़ गया।
जब कमाण्डर करण सक्सेना को यह पूरा इत्मीनान हो गया कि जंगली मर चुका है, तब उसने उसके मुंह के ऊपर से हथेली हटा ली।
उसके बाद उसने अपने दूसरे शिकार की तरफ देखा।
वो उस अत्यंत विशाल पेड़ पर बस थोड़ा ही आगे था और बड़ी चौकन्नी आँखों से जंगल में सामने की तरफ देख रहा था।
अलबत्ता उसे यह खबर नहीं थी कि उसके बिल्कुल पीछे क्या हो रहा है।
कमाण्डर करण सक्सेना उसकी सांसों की ध्वनि में अपनी सांस समायोजित करता हुआ धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा।
अगले ही पल उसने बेपनाह फुर्ती का परिचय देते हुए उसकी गर्दन भी बड़ी सफाई के साथ स्प्रिंग ब्लेड से काट डाली।
लेकिन उसी क्षण तीसरे जंगली की निगाह कमाण्डर पर पड़ गयी।
वह जंगली शायद उनका ग्रुप लीडर था और एकदम जिस तरह से उसने कमाण्डर करण सक्सेना को देखा था, उससे कमाण्डर करण सक्सेना भांप गया कि वो 'मलायका टाइगर क्रेक' का महारथी है। उसकी आँखों में गजब की चपलता थी। फिर उसके एक हाथ में जहाँ रस्सी का फंदा था, वहीं दूसरे हाथ में भाला भी था।
"कौन हो तुम ?" उसे देखते ही जंगली के नेत्र दहशत से फटे- "कहीं तुम वही शैतान तो नहीं, जो जंगल में घुस आया है और जिसने हमारे बेशुमार आदमी मार डाले ?"
"हाँ, मैं वही शैतान हूँ।"
जंगली फौरन रस्सी का फंदा उछालता हुआ कमाण्डर करण सक्सेना की तरफ झपट पड़ा।
मगर कमाण्डर जानता था, उन मलायका टाइगर क्रेक छापामारों से किस तरह निपटा जाता है।
जैसे ही जंगली झपटा, फौरन बिजली जैसी अद्वितीय फुर्ती के साथ कमाण्डर करण सक्सेना का स्प्रिंग ब्लेड चला और उसने एक ही झटके में रस्सी के उस फंदे को काट डाला।
फिर स्प्रिंग ब्लेड का पैना फल अपनी जबरदस्त वेलोसिटी के साथ जंगली की गर्दन की तरफ झपटा।
जंगली ने फौरन दूसरी डाल पर कूदकर अपनी जान बचाई।
उसी क्षण जंगली का भाला चला।
कमाण्डर करण सक्सेना के कण्ठ से हृदय विदारक चीख निकल गयी। भाला उसके बायें कंधे में अंदर तक पेवस्त होता चला गया था और उसने उसके मांस को बुरी तरह उधेड़ डाला था।
जंगली प्रशिक्षित छापामारों की तरह दूसरी डाल पर कूद गया और उसने खींचकर कंधे में से भाला बाहर निकाला।
वह भाले को कमाण्डर के ऊपर दोबारा प्रयोग करता, उससे पहले ही कमाण्डर करण सक्सेना ने उछलकर उसके ऊपर स्प्रिंग ब्लेड का वार किया।
इस बार स्प्रिंग ब्लेड सीधा जंगली की खोपड़ी में जा धंसा।
भैंसे की तरह डकरा उठा जंगली !

उसकी खोपड़ी से खून का फव्वारा छूटा।
कमाण्डर करण सक्सेना ने खींचकर उसकी खोपड़ी में से स्प्रिंग ब्लेड बाहर निकाला तथा फिर सीधे उसके दिल में पेवस्त कर दिया।
“इसका भी किस्सा खत्म !”
उस तीसरे जंगली की लाश पेड़ के पत्तों और डालों से टकराती हुई धड़ाम से नीचे जाकर गिरी।
कमाण्डर के कंधे से अब काफी मात्रा में खून बह रहा था।
तभी एकाएक पूरे जंगल में जोर-जोर से नगाड़ा बजने की आवाज गूंजने लगी।
कमाण्डर ने देखा, उस पेड़ के सामने ही एक और जंगली खड़ा था। उसके गले में छोटा सा नगाड़ा था। वह बहुत फटे-फटे दहशतजदा नेत्रों से कमाण्डर करण सक्सेना को ही देख रहा था और अपनी पूरी ताकत से नगाड़ा बजा रहा था।
“लगता है, इसकी भी शामत आ गयी है।”
कमाण्डर ने पेड़ के ऊपर से ही उसकी तरफ छलांग लगा दी।
जंगली और डर गया।
वह बेतहाशा अपनी बस्ती की तरफ भागा। लेकिन भागते-भागते भी वो पूरे जी-जान से नगाड़ा बजाये जा रहा था।
कमाण्डर करण सक्सेना जंगली के पीछे-पीछे दौड़ा।
मगर उन दोनों के बीच का फासला बहुत ज्यादा था।
उसे पकड़ना आसान न था।
कमाण्डर ठिठक गया।
ठिठकते ही स्प्रिंग ब्लेड वापस अपने खांचे में गया और उसके हाथ में कोल्ट रिवॉल्वर नजर आने लगी।
रिवॉल्वर तुरंत उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी तथा ट्रेगर दबा।
धांय !
गोली चलने की वह भीषण आवाज पूरे जंगल को दहलाती चली गयी।
निशाना अचूक था।
बेतहाशा भागते उस जंगली की खोपड़ी इस तरह फटी, जैसे तरबूज फटा हो।
वह चिल्ला तक न सका।
भागते-भागते ही वो लहराकर गिरा और ढेर हो गया। नगाड़े की आवाज गूंजनी फौरन बंद हो गयी।
कमाण्डर करण सक्सेना उस जंगली के नजदीक पहुँचा। उसकी वीभत्स हालत देखकर यह अंदाजा लगाना मुश्किल न था कि वो मर चुका है। लेकिन अंतिम समय तक भी उसके दोनों हाथ नगाड़े पर थे।
कमाण्डर करण सक्सेना के लिए अब एक सेकण्ड भी और वहाँ रूकना खतरनाक था।
जंगल वारफेयर का नियम था, अगर दुश्मन तुम्हारे खिलाफ संदेश प्रसारित कर चुका हो, तो फौरन भागो।
कमाण्डर करण सक्सेना तत्काल वहाँ से भागा और अपनी फुल स्पीड से भागा।
उसके बाद खुद कमाण्डर को भी मालूम नहीं था, वह कंटीली झाड़ियों के अंदर ही अंदर कितनी देर तक भागता रहा।

□□□

पेड़ पर टंगी दोनों लाशें नीचे उतारी जा चुकी थीं।
उस वक्त वहाँ बड़ा संजीदा माहौल था।
भीड़ भी वहाँ अच्छी खासी जमा थी।
जिनमें ‘सपोर्ट ग्रुप’ के तीनों यौद्धा ! कोई पचास की संख्या में हथियारबंद गार्ड ! इसके अलावा नुकीले भाले पकड़े जंगलियों की एक बड़ी फौज ! वह सबके सब नगाड़े की आवाज सुनते ही भागते हुए वहाँ चले आये थे।

"आखिर कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारे चार आदमी और मार डाले।" डायमोक गुस्से से बोल रहा था- "उसका कहर अब हद से ज्यादा बढ़ चुका था।"

"वो शैतान अभी यहीं कहीं होगा।" तभी जंगलियों का सरदार रणहुंकार भरता हुआ चिल्लाया- "हमें उसे फौरन ढूंढना चाहिये।"

"हाँ।" मास्कमैकन भी आवेश में बोला- "सब चारों तरफ फैलकर उसे तलाश करो।"

तुरंत वहाँ जितने भी गार्ड और जंगली जमा थे, वह रणहुंकार भरते हुए चारों दिशाओं में फैल गये।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना को तलाश करने का वह सिलसिला बड़े जोर-शोर के साथ शुरू हो गया।

एक बार वो सिलसिला शुरू हुआ, तो फिर तब तक चला, जब तक जंगल में अंधेरा न घिरने लगा।

जब तक वहाँ शाम न हो गयी।

शाम होते ही वह सब लोग वापस उसी जगह जमा हुए।

"कुछ पता चला ?" हिटमैन बोला।

"नहीं।" जंगलियों के सरदार के चेहरे पर बुरी तरह सस्पेंस के भाव थे- "कुछ पता नहीं चला। न जाने वो शैतान जंगल में कहाँ जा छिपा है।"

तीनों योद्धाओं ने बाकी लोगों की तरफ देखा।

उनके चेहरों पर भी नाकामी पुती थी।

सब हताश थे।

"अब क्या करना है ?" एक जंगली बोला।

"फिलहाल सब आराम करो। दिन निकलने के बाद हम कोई प्रोग्राम बनायेंगे।"

फिर सबसे पहले उन चारों लाशों का क्रियाकर्म किया गया।

उसके बाद सारे जंगली तो आराम करने के लिए वापस अपनी बस्ती में चले गये थे, जबकि दोनों यौद्धाओं और हथियारबंद गार्डों ने वहीं जंगल में अपना डेरा डाला।

□□□
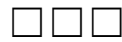
आधी रात का समय था।

एक जीप जंगल में बड़ी तेज स्पीड से दौड़ी जा रही थी।

वह जिधर-जिधर से भी गुजर जाती, वहीं जंगल में चारों तरफ उसकी हैडलाइटों का प्रकाश फैल जाता।

जीप 'मास्टर' चला रहा था।

मास्टर, जो इजराइल का नागरिक था। यहूदी था और जिसका असली नाम जैक दी लेविस था। मास्टर की उम्र कोई पैंतीस साल के आसपास थी और वो हमेशा काउ-ब्वाउ स्टाइल के नौजवानों की तरह अस्त-व्यस्त था। वह यूं तो शेडो वारफेयर (छाया युद्ध) का महारथी था। लेकिन उसकी जिंदगी में एक ऐसी घटना घट गयी थी, जिसने उसे बेहद खूंखार और दरिंदा इंसान बना डाला था। वह इजराइल में ही कभी एक लड़की से बड़ी पाक मौहब्बत करता था, जो उसी की तरह यहूदी थी। सोते-जागते वह बस एक ही सपना देखता, उस लड़की को खुश रखने का सपना। उससे शादी करने का सपना। लेकिन उस लड़की ने उसे धोखा दिया और दूसरे युवक से शादी कर ली।

कहते हैं, तब मास्टर ने अपनी जिदंगी का पहला कत्ल किया। वह हंसिया लेकर दनदनाता हुआ उस लड़की के सुहाग-कक्ष में जा घुसा। उस वक्त दोनों पति-पत्नी निर्वस्त्र थे और अभिसारतः थे। मास्टर ने सबसे पहले तो हंसिंये से उसके पति की गर्दन धड़ से अलग कर डाली। फिर उसने हंसिये से ही लड़की के गुप्तांग फाड़ डाले। उसकी छातियां काट डालीं और उसके बाद उसने इतनी नृशंसतापूर्वक उसके जिस्म की बोटी-बोटी काटी कि कसाई भी इतनी बुरी तरह मांस के टुकड़े नहीं करता है। वह दिन है और आज का दिन है, तब मास्टर के दिल में औरतों के प्रति जो नफरत बैठी थी, वह आज भी कायम थी। मास्टर का कहना था, दुनिया का ऐसा कोई मुल्क नहीं है, जहाँ की औरत के साथ उसने सहवास न किया हो या फिर अपने हंसिये से उसके गुप्तांग को न फाड़ डाला हो। हंसिया उसका प्रिय हथियार था, जिसे वो हमेशा अपनी बेल्ट के साथ रिवॉल्वर वाली जगह बांधकर रखता था।

रात के अंधेरे में मास्टर की जीप जंगलियों की बस्ती के नजदीक पहुँचकर रूकी।

फिर उसमें से मास्टर नीचे उतरा और बड़े दबे-पांव बस्ती की तरफ बढ़ा।

वह बिल्कुल चोरों तरह चल रहा था।

इधर-उधर देखता।

हरेक आहट को भांपता।

उस पूरी बस्ती में जंगलियों के सरदार का झोंपड़ा सबसे ज्यादा बड़ा था। मास्टर उसी झोंपड़े के नजदीक पहुँचकर रूका।

फिर उसने दरवाजा खटखटाया।

"कौन ?" अंदर से बड़ी बारीक आवाज उभरी।

"मैं !"

मास्टर का धीमा स्वर।

फौरन झोंपड़े का दरवाजा खुल गया।

मास्टर जल्दी से अंदर दाखिल हुआ। उसके दाखिल होते ही झोंपड़े का दरवाजा वापस बंद हो गया था।

उसके सामने एक बड़ी सुंदर जंगली औरत खड़ी थी।

जिसका रंग दमकता हुआ था और वहाँ की दूसरी औरतों के मुकाबले काफी साफ-सुथरा था।

उम्र भी ज्यादा नहीं थी।

मुश्किल से पच्चीस साल !

ऊपर से नैन-नक्श तीखे।

आँखों में चमक।

वह सरदार की बीवी थी। उस औरत की सबसे बड़ी खूबी ये थी कि वह सलीकेमंद थी और जंगलियों की तरह अर्द्धनग्न नहीं रहती थी।

अलबत्ता सरदार की और उसकी उम्र में जमीन-आसमान का फर्क था।

वह उसकी बेटी जैसी उम्र की थी।

"आने में बड़ी देर लगा दी।" औरत फुसफुसाये स्वर में बोली।

"हाँ, हैडक्वार्टर में थोड़ा काम अटक गया था।"

"काम-काम।" औरत झुंझलाई- "जब देखो हर समय काम की बात करते हो।"

"मेरी जान जिस मिशन के लिये हम तमाम योद्धा अपना-अपना देश छोड़कर इस जंगल में पड़े हुए हैं, वह मिशन हमारे लिये कहीं ज्यादा जरूरी है।"

"क्या मुझसे भी ज्यादा जरूरी ?" सरदारनी अब बड़ी वेधक निगाहों से मास्टर की आँखों में झांकने लगी।

मास्टर से एकाएक कोई जवाब देते न बना।

"सरदार कहाँ है ?"

"उसे मैंने अफीम का एक काफी बड़ा अंटा देकर सुला दिया। अब कल सुबह तक भी उसे होश आ जाये, तो शुक्र समझना।"

"यानि रास्ता साफ है।"

मास्टर ने फौरन सरदारनी के भरे-भरे जिस्म को अपनी बांहों के दायरे में समेट लिया।

"एक मिनट !" सरदारनी बोली।

"क्या हुआ ?"

"मैं काढ़ा लेकर आती हूँ।"

मास्टर मुस्कराया।

"अभी काढ़े की भी जरूरत है ?"

"तुम नहीं जानते।" सरदारनी के चेहरे पर चित्ताकर्षक भाव पैदा हुए- "काढ़ा पीने के बाद मजा ही कुछ और आता है। एक-एक नस चटकने लगती है। क्या मैं कुछ गलत कह रही हूँ ?"

"मेरे से ज्यादा तो यह बात तुम्हें बेहतर मालूम होगी मेरी जान ! आखिर इस गेम में मुझसे ज्यादा

मजा तो तुम्हीं लूटती हो।"

सरदारनी के चेहरे पर शर्म की लालिमा दौड़ गयी।

फिर वह लम्बे-लम्बे डग रखती हुई झोंपड़े के अंदर वाले हिस्से में चली गयी।

काढ़ा उन जंगलियों का मनपसंद सैक्स टॉनिक था, जिसे वो कई तरह की जड़ी-बूटियों से मिलाकर बनाते थे। इसमें कोई शक नहीं काढ़ा पीने के बाद मास्टर को भी यह अहसास होता था कि उसकी नसों में तनाव आ गया है और उसकी ताकत कुछ बढ़ गयी है।

मास्टर इंतजार करने लगा।

जल्द ही सरदारनी की वापसी हुई।

उसके हाथ में पकी मिट्टी के दो चौड़े प्याले थे, जिनमें काढ़ा भरा हुआ था।

"लो !" सरदारनी ने नजदीक आकर एक प्याला मास्टर की तरफ बढ़ा दिया- "पीओ !"

"और दूसरा प्याला ?"

"दूसरे प्याले का काढ़ा मैं पिऊंगी।"

मास्टर ने प्याला पकड़ लिया।

उसमें से जंगली जड़ी-बूटियों की अजीब-सी गंध आ रही थी। वह एक ही सांस में उस पूरे प्याले को खाली कर गया। उसी प्रकार सरदारनी ने भी काढ़ा पिया।

फिर थोड़ी ही देर बाद वो दोनों वहीं बिछी एक चारपाई पर लेटे थे।

सरदारनी एक ढीला-ढाला लहंगा और तंग चोली पहने हुए थी। लंहगे में से उसके भरे-पूरे नितम्ब बड़े ही जानलेवा अंदाज में मुखर हो रहे थे।

कुछ ऐसा ही हाल उसकी तंग चोली का था।

उसके दोनों उरोज चोली को फाड़कर मानो बाहर निकलने को आतुर थे।

मास्टर ने उसे अपने सीने के साथ सटा लिया।

उसके धधकते होंठ सरदारनी की गर्दन पर जाकर ठहर गये और हाथ धीरे-धीरे उसकी पीठ पर सरसराने लगे।

"लगता है काढ़े का असर हो रहा है।" सरदरानी हंसी।

"क्या तुम्हारे ऊपर नहीं हो रहा ?"

"कुछ-कुछ।"

"सिर्फ कुछ-कुछ ?"

"तुम जब बहुत कुछ करने लगोगे मेरे सैंया !" सरदारनी उससे बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से कसकर चिपट गयी- "तो मेरे ऊपर भी बहुत कुछ होने लगेगा।"

मास्टर मुस्कराया।

अब उसके हाथ पीठ पर सरसराते हुए एक जगह ठहर गये थे। वहीं चोली की गांठ लगी थी।

मास्टर धीरे-धीरे अब उस गांठ को खोलने लगा।

जल्द ही उसकी चोली उतरकर एक तरफ जा गिरी और उसके दूधिया उरोज बिल्कुल नग्न हो गये।

मास्टर ने अब उसे बिल्कुल चित कर दिया, फिर उसके हाथ धीरे-धीरे उसके उरोजों पर सरसराने लगे।

सरदारनी के मुंह से तीव्र सिसकारी छूटी।

उसने दांतों से होंठ कुचलते हुए सख्ती से अपनी आँखें बंद कीं।

"क्या कर रहे हो ?"

"तुम्हें 'बहुत कुछ' का अहसास करा रहा हूँ।"

"तुम सचमुच बहुत बदमाश हो।" सरदारनी ने मास्टर का चेहरा अपने उरोजों के साथ कसकर भींच लिया।

मास्टर की जीभ अब उसके उरोजों पर घूमने लगी थी।

सरदारनी के होठों से पुनः मादक सिसकारी छूटी और अब उसने उसके बाल अपनी मुट्ठी में कसकर जकड़ लिये। थोड़ी ही देर में मास्टर भी कमर से ऊपर बिल्कुल नग्न हो गया।

दोनों की आँखों में वासना के डोरे खिंच गये थे।

वह बेतहाशा एक-दूसरे के चुम्बन लेने लगे।

दीवानावार आलम में।

जैसे जन्म-जन्मांतर से एक-दूसरे के प्रेमी हों।

"वाकई तुम मुझे पागल कर देते हो मास्टर!" उसने मास्टर के गाल का एक कसकर चुम्बन लिया।

"मगर कभी-कभी मैं एक बात सोचता हूँ।" मास्टर के हाथ सरसराते हुए उसके लहंगे तक पहुँच चुके थे।

"क्या ?"

"अगर किसी दिन हमारी इन हरकतों के बारे में सरदार को पता चल गया, तो क्या होगा ?"

"बात भी मत करो उस बूढ़े-खूसट की।"

मास्टर के हाथ अब उसके भारी नितम्बों पर थे और अब वहीं सरसराहट पैदा कर रहे थे।

सरदारनी के मुंह से पुनः सिसकारी छूटी।

"तुमने सचमुच मेरी जिंदगी बिल्कुल बदल डाली है मास्टर, मैं तुमसे बहुत प्यार करने लगी हूँ, बहुत ज्यादा।"

मास्टर ने अब उसका लहंगा भी खोल डाला।

फिर उस लहंगे को उसकी दोनों टागों से नीचे उतार दिया।

वह अब बिल्कुल निर्वस्त्र थी।

उसका एक-एक अंग साफ चमक रहा था।

उसने मास्टर के गले में बड़े प्यार से दोनों बांहे पिरो दीं और फिर उसके गहरे चुम्बन लिये।

वो अब काफी उत्तेजित हो चुकी थी।

फिर वो उसकी पेण्ट की बेल्ट पकड़कर बुरी तरह खींचने लगी।

मास्टर समझ गया, सरदारनी क्या चाहती है।

उसने उसे ज्यादा नहीं तरसाया। जल्द ही उसकी इच्छापूर्ति की और अपनी पेण्ट भी उतार डाली। अब वह दोनों ही निर्वस्त्र थे।

मास्टर काफी देर तक उसके अंगों के साथ खेलता रहा।

अठखेली करता रहा।

कुछ ऐसी ही हरकतें सरदारनी भी कर रही थी।

अब उन दोनों की सासें इस तरह धधक रही थीं, जैसे मिल के बायलर हों।

उनके शरीर 'अंगारा' बन चुके थे।

उसी क्षण सरदारनी ने अपनी दोनों टांगें फैलाकर मास्टर को सुविधा प्रदान की और तभी एक नश्तर उसके अंतर में तेज खलबली मचाता चला गया।

सरदारनी के मुंह से धीमी चीख निकली।

उसकी गर्दन अकड़ गयी।

दांतों में निचला होंठ कस गया और मास्टर के बाल एक बार फिर उसकी मुट्ठी में कसकर जकड़ गये।

अब वह दोनों एक-दूसरे को बुरी तरह बाहों में जकड़े हांफ रहे थे।

उनकी सांसे अव्यवस्थित थीं।

"तुम्हारी मर्दानगी सचमुच कमाल है मास्टर, कोई भी औरत खुशी-खुशी अपना सर्वस्व तुम्हारे ऊपर लुटा सकती है।"

मास्टर मुस्कराया।

"मैं चाहती हूँ, मेरी हर रात तुम्हारी बाहों में गुजरे।"

"चिन्ता मत करो।" मास्टर बोला- "एक बार इस बर्मा पर हम योद्धाओं का कब्जा हो जाने दो, फिर यहाँ की हर चीज हमारी होगी।"

यही वो क्षण था, जब उन्हें झोपड़े के अंदर से हल्की आहट की आवाज सुनाई दी।

"लगता है।" मास्टर हड़बड़ाया- "सरदार की आँख खुली गयी।"

"नहीं।" सरदारनी ने उसे कसकर अपनी बांहों में जकड़ लिया- "उसकी आँख इतनी आसानी से खुलने वाली नहीं है।"

"लेकिन... ।"

तभी एक बिल्ली म्याऊं-म्याऊं करती हुई उनके बराबर में से निकलकर भागी।

वह दोनो मुस्कुराते हुए पुनः एक-दूसरे की बांहों में समा गये।

□□□

मास्कमैन, हिटमैन और डायमोक- वह तीनों योद्धा जंगल में कमाण्डर करण सक्सेना को बुरी तरह तलाश करते घूम रहे थे।

तमाम हथियारबंद गार्ड उनके साथ थे।

जंगली भी साथ थे।

मगर इसके बावजूद जंगल में भटकते-भटकते हताश होने लगे थे।

"मुझे तो लगता है।" हिटमेन बोला- "हम लोग खामखाह जंगल में भटक रहे हैं।" कमाण्डर करण सक्सेना को जरूर मालूम हो गया है कि अब कितने सारे लोग उसके पीछे हैं, इसीलिए मैं समझता हूँ कि वो जंगल छोड़कर भाग खड़ा हुआ है।

"बेवकूफों की तरह बात मत करो।" मास्कमैन गुर्राया।

"इसमें बेवकूफी जैसी क्या बात है भाई !"

"तुम शायद नहीं जानते, कमाण्डर करण सक्सेना जैसा आदमी इतनी आसानी से मैदान छोड़कर भागने वाला नहीं है। फिर इस मिशन के शुरू होने में ही वो जितने आदमियों की लाशें बिछा चुका है, उससे तो उसके हौंसले और भी ज्यादा बढ़े हुए होंगे।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" डायमोक ने भी कुबूल किया- "वाकई कमाण्डर करण सक्सेना भागने वाले लोगों में नहीं है। वो अभी जंगल में ही कहीं है।"

चलते-चलते जब वह लोग थक गये, तो उन्होंने जंगल में ही एक जगह डेरा डाल दिया।

तभी मास्कमैन की रिस्टवॉच में से ब्लिप-ब्लिप की आवाज निकलने लगी। जरूर हैडक्वार्टर से कोई सम्पर्क करना चाहता था।

मास्कमैन ने फौरन ट्रांसमीटर स्विच ऑन किया।

"हैलो मास्कमैन स्पीकिंग।"

"मैं हैडक्वार्टर से जैक क्रेमर बोल रहा हूँ।"

"यस सर !"

"कमाण्डर करण सक्सेना के बारे में क्या रिपोर्ट है ?"

"अभी तक कोई रिपोर्ट नहीं है सर !" मास्कमैन तत्पर भाव से बोला- "पिछले दो दिनों से हम उसे लगातार जंगल में तलाश करते हुए घूम रहे हैं। लेकिन हम निराश नहीं हैं। हमें उम्मीद है कि बहुत जल्द कमाण्डर करण सक्सेना हमसे कहीं-न-कहीं जरूर टकरायेगा और वही क्षण उसकी जिंदगी का आखिरी क्षण होगा।"

"कोई और रिपोर्ट ?"

"पिछले दो दिन से जंगल में भी पूरी तरह अमन शांति है।" मास्कमैन बोला- "कहीं से भी तो खून-खराबे की कोई सूचना नहीं मिली है।"

"यानि जंगल में सिर्फ कमाण्डर करण सक्सेना ही गायब नहीं है बल्कि वो सारे चिन्ह भी गायब है, जो कमाण्डर करण सक्सेना की जंगल में मौजूदगी दर्शाते हैं।"

"यस सर !"

"यह एकाएक गया कहाँ ?"

"मेरे भी कुछ समझ नहीं आ रहा है सर ! परन्तु मुझे लगता है कि यह खामोशी बहुत ज्यादा लम्बे समय तक रहने वाली नहीं है।"

"जैसे ही कमाण्डर के बारे में कोई जानकारी मिले, मुझे तुरंत इन्फॉर्म करना।"

"जरूर सर।"

मास्कमैन ने ट्रांसमीशन स्विच बंद कर दिया।

तभी उसकी निगाह हिटमैन पर पड़ी। हिटमैन उस समय एक जीप का पेट्रोल टैंक चैक कर रहा था। पेट्रोल टेंक चैक करने के बाद वह दो हथियारबंद गार्डों से कहने लगा था कि वो उसके साथ चलें।

"तुम कहाँ जा रहे हो ?" मास्कमैन हैरानीपूर्वक बोला।

"कमाण्डर करण सक्सेना को तलाश करते-करते तो अड़तालीस घण्टे से भी ऊपर हो चुके हैं भाई !" हिटमैन बोला- "अब सोचता हूँ कि थोड़ा मौज-मस्ती का भी प्रोग्राम बनाया जाये।"

"कैसी मौज मस्ती ?"

"मैं जंगल में से हिरन मारकर लाता हूँ, फिर उसे भूनकर खायेंगे।"

"तुम पागल हो गये हो।" मास्कमैन गुर्राया- "जंगल में कमाण्डर करण सक्सेना जैसा हमारा खतरनाक दुश्मन मौजूद है और तुम्हें शिकार की सूझ रही है।"

"यह सिर्फ आप ही कह रहे हैं भाई, कमाण्डर जंगल में मौजूद है, मुझे तो अभी भी इस बात पर यकीन नहीं है और फिर वैसे भी हिरन का शिकार करने के लिए कोई दस-बीस मील दूर थोड़े ही जाऊंगा। बस यहीं आसपास हूँ।"

दो हथियारबंद गार्ड तब तक जीप में बैठ चुके थे। हिटमैन ने भी जीप की ड्राइविंग सीट पर बैठकर फौरन जीप स्टार्ट कर दी।

"लेकिन...।"

उसने जीप स्टार्ट करके उसे फुल स्पीड से दौड़ा दी।

"जल्दी ही वापस आना।" मास्क मैन गला फाड़कर चिल्लाया।

"हद से हद एक घण्टे में वापस आता हूँ।"

जीप तूफानी गति से दौड़ती हुई चली गयी। जल्द ही वो नजरों से ओंझल हो चुकी थी।

□□□

कमाण्डर पिछले दो दिन से एक गुफा में बंद था।

दरअसल भाला लगने से उसके बाये कंधे में जो जख्म हुआ था, वह जख्म कुछ ज्यादा खतरनाक हो गया था। उसके बायें हाथ ने बिल्कुल काम करना बंद कर दिया था और वह उसे जरा भी हिलाता था, तो उसमें से दर्द की भीषण लहरें उठती थीं। हालांकि कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन ही फर्स्ट एड किट निकालकर कंधे की अच्छी तरह मरहम पट्टी की थी और चार-चार घण्टे के अंतराल से तीन ऐसे इंजेक्शन भी लिये थे, जिससे कंधे में जहर न फैलने पाये। परन्तु फिर भी कमाण्डर को डर था कि कहीं जहर फैल न गया हो।

मिशन के बीच में ही कंधे की उस दशा ने उसे भारी चिंता में डाल दिया था।

बहरहाल शुक्र था कि वो केस बहुत ज्यादा न बिगड़ा।

आज दो दिन बाद वह कंधे के दर्द में काफी सकून महसूस कर रहा था। जहाँ जख्म भरने लगा था, वहीं बायें हाथ को हिलाने में भी अब उसे ज्यादा दुश्वारी नहीं हो रही थी।

कमाण्डर गुफा से बाहर निकला।

दो दिन बाद उसने दोबारा बर्मा के उन खौफनाक जंगलों को देखा।

दिन का उजाला वहाँ हर तरफ बिखरा था।

अभी उसने नौ यौद्धाओं को और जहन्नुम पहुँचाना था।

नौ खतरनाक यौद्धा।

इसके अलावा उन नौ यौद्धाओं को जहन्नुम पहुँचाने के लिए उसने सीढ़ी दर सीढ़ी कितनी लाशों के ऊपर से और गुजरना था। उनका तो कुछ हिसाब ही न था। उसने खून की एक बड़ी होली वहाँ खेलनी थी और उस होली को खेलने के लिए सबसे ज्यादा जरूरी उसका चुस्त रहना था, जो फिलहाल वो नहीं था।

कमाण्डर ने गुफा से बाहर आकर अपने कंधे को आहिस्ता से इधर-उधर हिलाया। उसके बाद हल्का-फुल्का व्यायाम भी किया।

जिससे उसके शरीर में थोड़ी स्फूर्ति आयी।

फिर उसने बैग में-से आइना निकालकर अपना चेहरा देखा। वह खुद भी अब काफी हद तक जंगलियों

जैसा दिखाई पड़ने लगा था। दाढ़ी बहुत बढ़ गयी थी। सिर के बाल रूखे हो गये थे। त्वचा पर भी कहालत बरस रही थी। इसके अलावा सारे कपड़े धूल-मिट्टी में अटे हुए थे। ओवरकोट तो कंधे के पास से काफी सारा फट भी गया था, जिसमें उसने यूं ही तीन-चार टांके लगा लिये।

उसे जंगल वारफेयर का एक और सिद्धांत याद आया, जिसे बीते युग के यौद्धाओं ने अपने अनुभव के आधार पर निम्न रूप में लिखा था- जंगल की एक खासियत है, वह चीजों को अपने अनुरूप ढालता है। यही कारण है कि एक अच्छा-खासा आदमी भी कुछ दिन जंगल में रहने के बाद जंगलियों जैसा दिखाई पड़ने लगता है। परंतु जंगल वारफेयर का असली योद्धा वो है, जो जंगल में रहने के बाद भी उस वातावरण की छाप से खुद को दूर रखे।"

कमाण्डर ने फौरन अपने कपड़ों के ऊपर से धूल साफ करनी शुरू कर दी।

फिर उसने स्प्रिंग ब्लेड निकाल लिया और धीरे-धीरे उसकी बहुत पैनी धार से अपनी दाढ़ी साफ करने लगा।

□□□
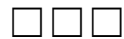
हिटमैन की जीप अब बड़ी तेजी से एक हिरन के पीछे दौड़ रही थी। लेकिन हिरन भी बहुत फुर्तीला था, वह उसके निशाने पर आकर नहीं दे रहा था।

"साहब, मैं कहता हूँ कि आज यह मरने वाला नहीं है।"

"कैसे मरेगा साला।" हिटमैन झल्लाया- "मैं भी देखता हूँ, आज यह कहाँ तक दौड़ता है।"

"लेकिन।"

"तुम चुप बैठे रहो, मेरा ध्यान मत बंटाओ।"

गार्ड ने अपने होंठ सी लिये।

हिटमैन अंधाधुंध उस जीप को दौड़ाये लिए जा रहा था।

हिरन को मारने का उसके ऊपर जुनुन सवार था। बिल्कुल पागलों जैसा जुनून।

जीप उस हिरन के पीछे दौड़ती-दौड़ती और काफी दूर निकल गयी।

"साहब !" हिटमैन के बराबर में बैठा दूसरा गार्ड कुछ आतंकित होकर बोला-"अब हमें वापस लौटना चाहिये।"

"क्यों, क्या आफत आ गयी हैं, जो वापस लौटना चाहिये।"

"हम जंगल में काफी दूर तक आ गये हैं। अगर हम यहाँ से वापस अपने साथियों के पास पहुँचना चाहे, तो तब भी हमें एक घण्टा लग जायेगा।"

"हुंह, एक घण्टा।" हिटमैन बोला- "लगता है, कमाण्डर करण सक्सेना के डर से तुम्हारी पतलून गीली हो रही है। चिंता न करो भाई !"

"ए... ऐसी कोई बात नहीं है।" गार्ड कुछ सकपकाकर बोला।

"मैं जानता हूँ, क्या बात है। और मुझे भी ये मालूम है कि तुम कितने बड़े जवां मर्द हो।"

तभी जीप के आगे-आगे दौड़ रहा हिरन कुछ ऐसी जंगली झाड़ियों में जा घुसा, जहाँ जीप चलनी नामुमकिन थी। हिटमैन ने जल्दी से सांस रोक दी और राइफल लेकर जीप से नीचे कूदा।

"जल्दी से मेरे साथ आओ।" हिटमैन चिल्लाया- "लगता है, इसके मरने का वक्त आ गया है। इन झाड़ियों में यह ज्यादा तेजी से नहीं दौड़ पायेगा।"

दोनों गार्ड अपनी-अपनी राइफल लेकर हिटमैन के पीछे-पीछे ही उन झाड़ियों की तरफ दौड़ पड़े।

तभी हिटमैन ने अपनी राइफल सीधी करके गोली चलायी।

उसी क्षण हिरन झाड़ियों में दायीं तरफ कूद गया, वह बस मरने से बाल-बाल बचा।

"मैं भी देखता हूँ, यह कमबख्त मुझे आज कितना दौड़ाता है।"

"लेकिन...।" उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे दोनों गार्डों ने कुछ कहना चाहा।

"तुम दोनों चुप रहो।"

उनके मुंह पर फिर ताला पड़ गया।

हिटमैन अपनी पूरी ताकत से हिरन के पीछे अंधाधुंध दौड़ रहा था।

हिटमैन एक जबरदस्त निशानेबाज था।

इस दुनिया में उससे ज्यादा खतरनाक निशानेबाज दूसरा कोई नहीं था। वह 'शब्दभेदी' गोली चलाने में माहिर था। वह आँखों पर काली पट्टी बांधकर भी ऐसे अदभुत निशाने लगा लिया करता था कि देखने वाला भौंचक्का रह जाता। उसने कई बार अपनी निशानेबाजी के जौहर दिखाये थे, वह अपनी आँखों पर पट्टी बांध लेता और फिर उसके सामने तांबे या चांदी के सिक्के उछाले जाते। सिक्का गिरने पर पिट् की जो हल्की सी ध्वनि होती है या फिर सिक्का उछालते समय उंगलियों से चुटकी बजाने की जो आवाज होती है, उसी आवाज से वह निशाना लगा लेता था और सिक्के को भेद डालता था। 'शब्दभेदी' गोली चलाने में उसका मुकाबला करने वाला कोई नहीं था।

ज+`

+- की तारीख में बर्मा पुलिस की फाइलों के अंदर उसके नाम दर्जनों हत्याओं के मामले दर्ज थे। वह सारी हत्यायें उसने सिर्फ अपनी निशानेबाजी का प्रदर्शन करने के लिए खेल-खेल में की थीं।

□□□

हिटमैन एकाएक झाड़ियों में दौड़ता-दौड़ता अपनी जगह थमककर रूक गया।

उसके आगे भाग रहा चितकबरा हिरन अब नजर आना बंद हो गया था।

"रुको-रुको !" हिटमैन ने फौरन अपने हाथ दायें-बायें फैलाकर गार्डों को रूकने का इशारा किया-"आगे मत बढ़ो।"

गार्ड फौरन अपनी-अपनी जगह थमककर खड़े हो गये।

"क्या हुआ ?"

"लगता है, हिरन जरूर यहीं कहीं झाड़ियों में छिपकर बैठ गया है।" हिटमैन की बेहद सस्पैंसफुल आवाज।

"अब क्या करोगे ?"

"अब तो उसकी मौत आ गयी समझो। वह नहीं जानता कि उसके पीछे जो शिकारी है, वह 'शब्दभेदी' गोली चलाने में माहिर है। अब वो हिरन झाड़ियों में जरा भी हिलेगा, जरा भी हरकत करेगा, तो फौरन गोली धांय से उसके शरीर में जाकर लगेगी।"

हिटमैन ने वहीं खड़े-खड़े अपनी राइफल सामने झाड़ियों की तरफ तान दी।

फिर वो बहुत स्तब्ध भाव से किसी आहट को सुनने की कोशिश करने लगा।

दोनों गार्ड भी उसके इधर-उधर बड़ी चौकसी के साथ खड़े थे और उनकी राइफलें भी तनी थीं।

"तुममें से कोई गोली नहीं चलायेगा।" हिटमैन फुसफुसाया।

"ठीक है।" वह दोनों भी आहिस्ता से बोले।

काफी देर तक हिटमैन को झाड़ियों में-से किसी आहट की आवाज न सुनायी दी।

"साहब, कहीं यह आपका वहम तो नहीं है।" गार्ड पुनः धीमी आवाज में बोला-"कि हिरन झाड़ियों मे छिप गया है। ऐसा भी तो सकता है कि वह दूर निकल गया हो ?"

"नहीं, वो झाड़ियों में ही है।"

यही वो क्षण था, जब हिटमैन को झाड़ियों में हल्की आहट की आवाज सुनाई दी।

हिटमेन ने तुरंत फायर कर दिया। गोली चलने की बड़ी तेज आवाज जंगल में गूंजी और उसी के साथ हिरण की चीत्कार भी गूंज उठी। वह झाड़ियों में से उठकर भागा, लेकिन शीघ्र ही वह लड़खड़ाकर वापस गिर गया।

"किस्सा खत्म !" हिटमैन ने राइफल नीचे झुका ली।

उसके इधर-उधर खड़े दोनों गार्ड हिटमैन के निशाने से काफी प्रभावित नजर आ रहे थे।

"मैं दावे से कह सकता हूँ।" हिटमैन वहीं खड़े-खड़े बोला- "गोली ठीक हिरन की गर्दन में दायीं तरफ जाकर लगी है। चालीस डिग्री अंश पर जाकर देखो।"

दोनों गार्ड लपककर हिरन की लाश के करीब पहुंचे और उन्होंने उसकी गर्दन को देखा। फौरन उनके नेत्र फैल गये।

"क्या हुआ ?"

"ग... गोली सचमुच गर्दन में लगी है साहब।"

"चालीस डिग्री अंश पर।"

"हाँ।"

हिटमैन मुस्कुराता हुआ हिरन की तरफ बढ़ा।

किसी को मारकर उसे बिल्कुल वही खुशी मिलती थी, जैसे कोई शैतान बच्चा किसी दूसरे के खिलौने को तोड़कर खुश होता है।

"चलो, अब इसे जल्दी से उठाकर जीप तक लेकर चलो।"

दोनों गार्ड हिरन की लाश को उठाने के लिए जैसे ही नीचे झुके, तभी उनके कानों में किसी के उसी तरफ दौड़कर आने की आवाज सुनाई पड़ी।

"लगता है, कोई आ रहा है।"

तीनों फौरन झाड़ियों में छुप गये।

जरूर किसी ने गोली चलने की आवाज सुन ली थी और अब उस आवाज को सुनकर वह उस तरफ दौड़ा चला आ रहा था।

वह ऐसी आवाज थी, जैसे कोई 'चीता' दौड़ रहा हो। परन्तु हिटमैन को न जाने क्यों ऐसा लगा, जैसे वह कोई आदमी है।

"मुझे तो यह किसी जानवर के दौड़ने की आवाज मालूम होती है।"

"जो भी है।" हिटमैन बोला- "अभी नजर आ जायेगा।"

फौरन ही रहस्य की धुंध छंट गयी। जंगल के सामने की तरफ से काला लम्बा ओवरकोट और काला गोल क्लेंसी हैट पहने एक आदमी बिल्कुल चीते की तरह ही दौड़ता हुआ चला आ रहा था।

"माई गॉड।" गार्डों के मुँह से सिसकारी छूटी- "यह तो शायद कमाण्डर करण सक्सेना है।"

"हाँ।" हिटमैन के हाथ भी फौरन राइफल पर कस गये- "यह कमाण्डर ही है।"

"ह... हमें जिस बात का खतरा था, वही हो गया। अ... अब क्या होगा ?"

गार्डों के पसीने छूटे।

कमाण्डर करण सक्सेना को देखते ही वह एकाएक जुडी के मरीज की तरह थर-थर कांपने लगे थे।

"घबराओ मत !" हिटमैन पूरी हिम्मत के साथ बोला- "लगता है, इसका शिकार भी आज मेरे हाथों होना लिखा है। अब इसे मरने से कोई नहीं बचा सकता।"

"लेकिन...।"

"तुम लोगों ने मेरा एक निशाना अभी देखा है, अब दूसरा निशाना देखो। एक ही गोली इसकी खोपड़ी को अण्डे के छिलके की तरह चट् से फोड़ डालेगी।"

फिर हिटमैन वहीं झाड़ियों में लेटा-लेटा कमाण्डर को राइफल के निशाने पर लेने की कौशिश करने लगा।

कमाण्डर के लिए सबसे बड़ी संकट की बात ये थी कि उस वक्त उसे खुद मालूम नहीं था कि कोई उसे निशाने पर लेने की कोशिश कर रहा है।

जैसे ही कमाण्डर करण सक्सेना थोड़ा करीब आया, हिटमैन ने फौरन ट्रेगर दबा दिया।

यही वो क्षण था, जब कमाण्डर करण सक्सेना का पैर एकाएक किसी पत्थर से टकराया और वो लड़खड़ाकर गिरा। गोली फौरन सनसनाती हुई उसके सिर के ऊपर से गुजर गयी।

"ओह शिट !" हिटमैन झल्ला उठा- "सचमुच यह आदमी किस्मत का तेज है।"

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन वहीं झाड़ियों में छिप गया।

□□□

वो खतरा भांप चुका था।

कमाण्डर को यह समझते देर न लगी कि आज गुफा से बाहर निकलते ही उसकी फिर किसी योद्धा से मुठभेड़ हो गयी है।

यानि इन दो दिनों के दौरान योद्धा चैन से नहीं बैठे थे, वह अभी भी उसकी तलाश में जंगल की खाक छान रहे थे।

कमाण्डर ने अपने जख्मी कंधे को हल्का सा जर्क दिया और खुद को मुकाबले के लिए तैयार करने लगा।

लाइट मशीनगन फौरन उसके हाथ में आ चुकी थी।

"दुश्मन कोई अगली चाल चले, उससे पहले ही मुझे अपना वार करना चाहिये।"

कमाण्डर घुटनों के बल थोड़ा ऊपर को हुआ तथा फिर उसने सामने की तरफ मशीनगन से धुआंधार गोलियां चला दीं।

गोलियां चलाते ही वह पलट गया और झाड़ियों के अंदर ही अंदर तीर की तरह भागा।

फौरन सामने की तरफ से भी गोलियों की बाढ़ ठीक उस जगह झपटी, जहाँ कमाण्डर थोड़ी देर पहले मौजूद था।

वहीं एक काफी बड़ी चट्टान थी।

कमाण्डर झाड़ियों मे धीरे-धीरे रेंगता हुआ अब उस चट्टान के पीछे पहुँच चुका था।

उसने सबसे पहले यह पता लगाना था कि दुश्मनों की संख्या कितनी है।

वो कुछ देर सोचता रहा।

फिर उसने धीरे-धीरे उस चट्टान पर चढ़ना शुरू किया।

जल्द ही कमाण्डर उस चट्टान के ऊपर पहुँच चुका था। अब अगर वो सिर्फ अपना सिर ही थोड़ा ऊपर उठाता, तो तुरंत चट्टान के दूसरी तरफ का नजारा उसे दिखाई देने लगता।

परन्तु सिर ऊपर उठाने में भी खतरा था।

अगर उसके सिर उठाते ही दुश्मन की निगाह उस पर पड़ गयी, तो दुश्मन ने फौरन उसकी खोपड़ी में सुराख कर देना था।

लेकिन खतरा उठाये बिना बात नहीं बनने वाली थी।

कमाण्डर ने खतरा उठाया।

उसने बहुत धीरे-धीरे पहले अपनी लाइट मशीनगन की नाल चट्टान से ऊपर की तथा फिर अपना सिर भी चट्टान से ऊपर किया। फौरन उसे जंगल में सामने की तरफ का हिस्सा नजर आने लगा।

वह चूंकि ऊंचाई पर था, इसलिये सामने झाड़ियों में छिपे दुश्मन उसे साफ़ नजर आये।

वह तीन थे।

दो तो उसे बिल्कुल साफ चमके।

जबकि तीसरे की सिर्फ टांगे दिखाई दे रही थीं, अलबत्ता उनमें से किसी की निगाह कमाण्डर पर न पड़ी।

कमाण्डर ने जंगल में और दूर-दूर तक देखा, उन तीनों के अलावा उसे वहाँ कोई नजर न आया।

कमाण्डर ने फिर अपने जख्मी कंधे को हल्का सा जर्क दिया और एक हथियारबंद गार्ड की खोपड़ी का वहीं से निशाना साधकर गोली चला दी।

गार्ड चकरा उठा।

गोली ठीक उसकी खोपड़ी में जाकर लगी थी, वो वहीं ढेर हो गया। फौरन बाकी दोनों दुश्मन बदहवासों की तरह झाड़ियों में-से उठकर भागे।

अब तीसरा आदमी भी कमाण्डर करण सक्सेना को साफ चमका। वो उसे देखते ही पहचान गया।

वो हिटमैन था।

अचूक निशानेबाज।

कमाण्डर ने फौरन उन दोनों के ऊपर गोलियां चलायीं।

हिटमैन के दूसरे साथी की चीख भी गूंज उठी। वो भी वहीं झाड़ियों में लहराकर गिरा।

तभी भागते-भागते हिटमेन रूका। पलटा। फिर उसने चट्टान की तरफ जवाबी फायरिंग कर दी।

कमाण्डर ने अपनी गर्दन नीचे कर ली।

एक साथ ढेर सारी गोलियां चट्टान के उसी हिस्से पर आकर लगीं, जहाँ थोड़ी देर पहले कमाण्डर की गर्दन थी।

हिटमैन ने अंधाधुंध गोलियां चलायी थीं।
फिर कमाण्डर के कान में 'पिट्' की आवाज पड़ी।
वह चौंकन्ना हो उठा।
जरूर हिटमैन की राइफल में गोलियां खत्म हो गयी थीं।
कमाण्डर करण सक्सेना ने फौरन ही चट्टान पर दूसरी तरफ जाकर अपनी गर्दन ऊपर की।
मगर हिटमैन अब उसे सामने कहीं न चमका।
जरूर वो कहीं छिप गया था।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना आहिस्ता-आहिस्ता चलता हुआ चट्टान से नीचे उतर गया।
वो सावधान था।
वो जानता था, अब तक हिटमैन ने दोबारा अपनी राइफल को लोड कर लिया होगा। ऐसा नहीं हो सकता था कि उस जैसा अचूक निशानेबाज गोलियों की सिर्फ एक ही मैगजीन अपने साथ लेकर चले।
दुनिया के एक बेहद खतरनाक निशानेबाज से अब उसका मुकाबला होने वाला था।
कमाण्डर वापस झाड़ियों में छिप गया और फिर बहुत धीरे-धीरे सरसराता हुआ चट्टान के पीछे से निकलकर सामने की तरफ बढ़ा।
अभी कमाण्डर ने थोड़ा ही फासला तय किया होगा, तभी एकाएक उसने अपने पीछे सरसराहट सी अनुभव की।
उसने आहिस्ता से गर्दन घुमाकर देखा।
अगले पल उसके शरीर में खौफ की तेज लहर दौड़ गयी।
उसके पीछे हिटमैन मौजूद था, जो बस कुछ ही फासले पर था। वह न जाने कब उसके पीछे पहुँच गया था।
कमाण्डर एकदम फिरकनी की तरह उसकी तरफ घूम गया और जम्प लेकर खड़ा हुआ।
हिटमैन भी फुर्ती के साथ सीधा खड़ा हो गया।
दो यौद्धा!
दो बेहद खतरनाक योद्धा अब आमने-सामने थे।
"तुम अब मेरे हाथों से बचोगे नहीं कमाण्डर करण सक्सेना।" हिटमैन काले नाग की तरह फुंफकारा- "एक जंगली जानवर का शिकार मैं कर चुका हूँ, जबकि दूसरा शिकार मैंने अब तुम्हारा करना है।"
"देखते हैं, कौन किसका शिकार करता है।"
उसी पल हिटमैन ने अपनी राइफल का ट्रेगर दबा दिया।
मगर कमाण्डर अपनी जगह से एक इंच भी न हिला।
न ही उसने अपनी स्टेनगन का ट्रेगर दबाया।
वो जानता था, ऐसे प्रशिक्षित कमाण्डोज अपनी गन लोड करने के बाद पहला फायर हमेशा खाली करते हैं, ताकि दुश्मन इस धोखे में रहे कि उसकी गन में गोलियां नहीं हैं।
वही हुआ!
हिटमैन के ट्रेगर की हल्की 'पिट' की ध्वनि गूंजी।
परन्तु वो फौरन ही अपनी राइफल का दोबारा ट्रेगर दबाने में कामयाब हो पाता, उससे पहले ही कमाण्डर भी लाइट मशीनगन का ट्रेगर दबा चुका था।
हिटमैन की मर्मभेदी चीख गूंज उठी।
उसके नेत्र घोर आश्चर्य तथा अचम्भे से फटे के फटे रह गये। गोली ठीक उसके माथे के बीचों-बीच वहाँ जाकर लगी, जहाँ औरतें बिंदी लगाया करती हैं। पहले हिटमैन की राइफल उसके हाथ से छूटी, फिर वो खुद भी आँखें फाड़े-फाड़े नीचे गिरकर ढेर हो गया।
"फैसला हो चुका है हिटमैन।" कमाण्डर करण सक्सेना गुर्राकर बोला- "हममें से कौन असली शिकारी था और कौन शिकार! दरअसल जो चाल तुम कमाण्डर करण सक्सेना के खिलाफ चलने वाले थे, कमाण्डर

ऐसी ही चालों के बीच पलकर बड़ा हुआ है। गुड बाय एण्ड गुड लक।"

फिर कमाण्डर ने उन तीनों के हथियारों को नष्ट किया।

उनके दिल में स्प्रिंग ब्लेड पेवस्त किये और उसके बाद 'चीता चाल' में दौड़ता हुआ वापस झाड़ियों की तरफ बढ़ गया।

□□□

जंगल में गोलियां चलने की वह आवाज मास्कमैन और डायमोक के कानों तक भी पहुंची।

"यह कैसी आवाजें हैं ?"

"लगता है ?" डायमोक बोला- "तुम्हारे भाई ने किसी हिरन को खोज निकाला है और अब उसी के ऊपर यह सब गोलियां बरसायी जा रही हैं।"

"नहीं।" मास्कमैन बड़बड़ाया- "किसी एक हिरन के ऊपर इस कदर धुआंधार फायरिंग नहीं हो सकती। जरूर कुछ और चक्कर है।"

"कैसा चक्कर ?"

"क...कहीं कमाण्डर तो हिटमैन से नहीं टकरा गया है ?"

"न... नहीं।"

सब डर गये।

उस आशंका ने सबको भयभीत कर दिया।

"अगर ऐसा है दोस्त !" डायमोक शुष्क स्वर में बोला- "तो यह सचमुच बहुत खतरनाक बात है।"

"मुझे लगता है, जरूर यही बात है। हमें फौरन उसी तरफ चलना चाहिये, जिधर हिटमैन जीप लेकर गया है।"

"चलो, तो फिर जल्दी चलो।"

दोनों योद्धाओं के आदेश की देर थी, तुरंत गार्डों का वह पूरा काफिला उसी दिशा में बढ़ गया, जिधर हिटमैन गया था।

थोड़ी ही देर में वह सब उस जगह पहुँच गये, जहाँ हिटमैन और दोनों गार्डों की लाशें पड़ी थीं।

"ओह माई गॉड।" डायमोक के मुंह से तेज सिसकारी छूट गयी- "कमाण्डर करण सक्सेना ने इन्हें भी मार डाला।"

तमाम हथियारबंद गार्ड सकते में रह गये।

भौचक्के !

अपने भाई की खून से लथपथ लाश देखकर मास्कमैन की आँखों में भी आंसू आ गये। वह फौरन उसकी लाश से जा चिपका, उस क्षण यही शुक्र था, जो वह बच्चों की तरह रोने नहीं लगा।

उन दोनों भाइयों में बेहद प्यार था।

हालांकि दोनों खतरनाक अपराधी थे, लेकिन दोनों ही एक-दूसरे के ऊपर जान छिड़कते थे।

एक-दूसरे के सुख-दुख में सहभागी थे।

"कहता था, आप मेरी चिंता न करो भाई।" मास्कमैन फफकते हुए बोला- "मुझे कुछ नहीं होगा। लेकिन उसकी जरा सी जिद उसे ले डूबी, कमाण्डर करण सक्सेना ने मेरे भाई को मार डाला।"

"अब हौसला रखो दोस्त।" डायमोक ने उसकी पीठ थपथपाई।

लेकिन मास्कमैन रोता रहा।

उसकी आँखों से झर-झर आँसू निकलकर उसके रबड़ के काले मास्क पर बहते रहे।

"जो होना था, वह अब हो चुका है दोस्त।"

"नहीं।" मास्कमैन गुर्रा उठा- "नहीं, अभी सब कुछ नहीं हुआ है दोस्त ! अभी इस जंगल में एक लाश और गिरेगी, कमाण्डर करण सक्सेना की लाश ! मैं अब उस हरामजादे को किसी हालत में नहीं बख्शूंगा।"

उसकी आवाज उस क्षण गुस्से में बुरी तरह भभकी हुई थी।

"अभी वो हरामजादा जंगल में यहीं कहीं आसपास होगा।" मास्कमैन पुनः भभके स्वर में बोला- "हमें उसे फौरन ढूंढना चाहिये बल्कि फौरन से भी पेश्तर।"

"हाँ, हम उसे अभी ढूंढते हैं।" डायमोक बोला- "परन्तु उससे पहल हमें एक और ज्यादा जरूरी काम करना है।"

"क्या ?"

"हमें पहले इन प्रियजनों का अंतिम संस्कार करना है, वरना यहाँ थोड़ी बहुत देर में गिद्ध मंडराने लगेंगे। चलो, खड़े हो जाओ।"

मास्कमैन धीरे-धीरे अपने आँसू साफ करता हुआ लाश के पास से खड़ा हो गया।

माहौल बहुत गमज़दा हो गया था।

□□□

अंतिम संस्कार के बाद वो पूरा काफिला कमाण्डर करण सक्सेना को ढूंढने के लिए फिर आगे बढ़ा।

उस क्षण मास्कमैन इतना ज्यादा गुस्से में था कि अगर कमाण्डर उसके सामने आ जाता, तो वह उसकी बोटी-बोटी छितरा डालता।

लेकिन काश उन दोनों योद्धाओं को मालूम होता कि जिस कमाण्डर करण सक्सेना को वह बर्मा के उन खौफनाक जंगलों में ढूंढते फिर रहे हैं, वो कमाण्डर उन लोगों के पास वहीं झाड़ियों में छिपा था और उस वक्त उन सबकी एक-एक हरकत पर पैनी निगाह रखे हुए था। उनकी तमाम बातें कमाण्डर ने अपने कानों से सुनी थीं और उनके सारे कार्यकलाप अपनी आँखों से देखें।

इतना ही नहीं उसने उन योद्धाओं को भी साफ पहचाना।

मास्कमैन !

एक आला दर्जे का बम एक्सपर्ट।

दूसरा डायमोक।

स्पेन का एक जबरदस्त बुलफाइटर ! कमाण्डर ने मिशन पर रवाना होने से पहले डायमोक की भी पूरी फाइल पढ़ी थी। स्पेन देश जो अपनी बुलफाइटिंग (साण्डों की लड़ाई) के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, डायमोक उसी स्पेन का एक जबरदस्त बुलफाइटर था। बचपन से ही डायमोक बहुत खतरनाक था। उसके मसल्लस काफी मजबूत थे, जब डायमोक सिर्फ पांच साल का था, तभी वह अपने से कहीं ज्यादा बड़े बच्चों को बुरी तरह धुन डालता था। इंसानी खून बहते देखने में उसे खूब मजा आता था। बचपन से ही उसका वह लड़ाका स्वभाव उसे बुलफाइटिंग के धंधे में ले आया, जहाँ अच्छा खासा पैसा था। डायमोक रिंग के अंदर खतरनाक साण्डों के सामने तलवार लेकर इस तरह खड़ा हो जाता था, जैसे मौत का उसे कोई खौफ न हो। रिंग के चारों तरफ खड़े दर्शक गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते रहते, शोर मचाते रहते। और डायमोक मौत का फरिश्ता बना खूंखार साण्ड की अपनी तलवार से धज्जियां बिखेर डालता।

बाद में डायमोक स्पने के ही एक आतंकवादी संगठन में शामिल हो गया। वहाँ भी उसने बुलफाइटरों वाली तलवार से ही अनेक आदमियों को कत्ल कर डाला।

डायमोक आज भी वही तलवार अपने पास रखता था।

बहरहाल अंतिम संस्कार करने के बाद वह सब लोग आगे बढ़े, तो कमाण्डर करण सक्सेना ने भी झाड़ियों में सरसराते हुए उनका पीछा करना शुरू कर दिया।

अब उल्टा काम हो रहा था।

वह पीछे था, योद्धा आगे !

कमाण्डर बस किसी मुनासिब मौके की इंतजार में था कि कब उसको जिबह किया जाये। हालांकि उन सबसे एक साथ निपटना कोई आसान काम न था। उसके लिए कमाण्डर को कोई ऐसी युक्ति सोचनी थी, जो वह अकेला ही उन सब पर भारी पड़ता।

जंगल में चलते-चलते उन्हें फिर रात होने लगी।

"कमाल है।" डायमोक थके-हारे और बहुत हैरानीपूर्वक अंदाज में बोला- "यह कमाण्डर करण सक्सेना कत्लोगारत करने के बाद एकाएक कहाँ गायब हो जाता है।"

"समझ में नहीं आता।" एक गार्ड बोला- "क्या चक्कर है।"

"मुझे तो लगता है साहब, वह कोई छलावा वगैरा है।" वो एक अन्य गार्ड की आवाज थी- "या फिर

कोई ऐसा आदमी है, जिसके ऊपर जिन्न वगैरा का साया है।"

"बेकार की बात मत करो।" डायमोक गुर्रा उठा- "यह मजाक का वक्त नहीं है।"

"मैं मजाक कहाँ कर रहा हूँ साहब, मैं तो सच्चाई बयान कर रहा हूँ। जरा सोचो, अगर वो आदमी सचमुच में ही छलावा नहीं है, तो फिर जंगल में एकाएक किधर गायब हो जाता है।"

"अब अपनी चोंच बंद रखो।"

गार्ड खामोश हो गया।

कमाण्डर उस वक्त उन सबसे मुश्किल से पांच गज के फासले पर था और दम साधे झाड़ियों में छिपा था।

तब तक जंगल में अंधेरा बहुत घिर चुका था और अब आगे बढ़ने में भी उन्हें काफी मुश्किल पेश आ रही थी।

"अब क्या करना है?" एक गार्ड बोला- "क्या रात भर इसी तरह जंगल में भटकते रहेंगे?"

"नहीं, मैं समझता हूँ कि अब हमें यहाँ आराम करना चाहिये।" डायमोक बोला।

"मुझे तो भूख भी लग रही है साहब।"

"कोई बात नहीं, भूख का इंतजाम भी अभी करते हैं।"

जीप में ही खाने का काफी सारा सामान था।

डायमोक के कहने पर दो गार्डों ने खाने का वह सामान निकाल लिया।

फिर उन सबने वहीं जंगल में बैठकर खाना खाया।

परन्तु मास्कमैन भूखा रहा। आखिर उनका जान से भी ज्यादा प्यारा भाई मारा गया था।

मास्कमैन ने कुछ न खाया, तो डायमोक ने भी कुछ न खाया।

उसके बाद उन्होंने वहीं जंगल के अंदर रात गुजारने की तैयारी शुरू कर दी।

□□□
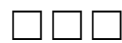
कमाण्डर करण सक्सेना अभी झाड़ियों में छिपा बैठा था।

रात्रि का दूसरा पहर शुरू हो चुका था।

अब उसके सामने दो तम्बू गड़े हुए थे। एक काफी बड़ा तम्बू था, जिसमें सारे हथियारबंद गार्ड जाकर सो गये थे। जबकि उससे थोड़ा फासले पर एक छोटा सा तम्बू गाड़ा गया था, जिसमें दोनों योद्धा जाकर सोये।

दो गार्ड उन तम्बुओं के बाहर पहरे पर थे, जो अपने साथियों की रखवाली कर रहे थे।

कमाण्डर का दिमाग काफी तेजी से चलने लगा और वह कोई ऐसी युक्ति सोचने लगा, जिससे उन सबसे एक साथ निपटा जाये।

जल्द ही उसके दिमाग में ऐसी एक युक्ति आ गयी।

वह थोड़ी रात और गुजरने का इंतजार करने लगा, ताकि यह बात कन्फर्म हो जाये कि वह सब लोग सो चुके हैं।

तभी उसे अपने पीछे हल्की सरसराहट सी अनुभव हुई।

कमाण्डर एकदम झटके से पलटा।

उसके पीछे एक हरा सांप था, जो बड़ी तेजी से झाड़ियों में सरसराता हुआ उसी की तरफ आ रहा था।

कमाण्डर ने झपटकर अपना स्प्रिंग ब्लेड निकाल लिया।

उसी क्षण सांप भी कमाण्डर के ऊपर झपटा।

कमाण्डर ने फौरन सांप को मुंह के पास से पकड़ लिया और इससे पहले कि सांप कुछ हरकत दिखा पाता, उसने सांप के दो टुकड़े कर दिये तथा उसे दूर उछाल दिया।

कुछ देर सांप झाड़ियों में पड़ा छटपटाता रहा और फिर ठण्डा पड़ गया।

कमाण्डर ने फिर सामने तम्बूओं की तरफ देखा।

वहाँ पहले जैसा ही सन्नाटा था।

घोर सन्नाटा!

दोनो गार्ड राइफल संभाले खामोशी से इधर-उधर टहल रहे थे।

वक्त पहले की तरह ही गुजरने लगा।

रात के दो बज गये।

कमाण्डर को पूरी उम्मीद थी कि तम्बुओं में मौजूद लोग अब गहरी नींद सो चुके होंगे। वैसे भी वो सारा दिन के थके-हारे थे।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने मुंह से जंगली गुरिल्ले जैसी आवाज निकाली।

चक ! चक ! ! चक ! ! !

किर ! किर ! ! किर ! ! !

पहरा देते गार्ड चौंके।

"यह कैसी आवाजें हैं ?" एक गार्ड बड़े स्तब्ध भाव से बोला- "किसी जंगली गुरिल्ले की आवाज मालूम होती है।"

"जंगली गुरिल्ला।"

"हाँ, वही ऐसी आवाज निकालता है।"

दोनों गार्ड अब और ज्यादा स्तब्ध होकर उन आवाजों को सुनने की कोशिश करने लगे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने फिर अपने मुंह से जंगली गुरिल्ले की चक-चक जैसी आवाज निकाली। इस तरह की आवाज जंगली गुरिल्ला अपनी छाती पीटते हुए निकालता है।

दोनों गार्डों के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

"उस्ताद, यह तो सचमुच में ही जंगली गुरिल्ला है।" दूसरा गार्ड भी शुष्क स्वर में बोला- "कहीं यह तम्बूओं में गहरी नींद सोते हमारे साथियों पर हमला न बोल दे, उससे पहले ही हमें कुछ करना चाहिये।"

"लेकिन यह जंगली गुरिल्ला है किधर ?"

"चक-चक की आवाज तो उस तरफ से आ रही है।" एक गार्ड ने सामने वाली झाड़ियों की तरफ इशारा किया।

"नहीं, उस तरफ से आ रही है।" एक गार्ड ने सामने वाली झाड़ियों की तरफ इशारा किया।

"नही, उस तरफ से आ रही है।" दूसरे गार्ड ने एक अन्य दिशा की तरफ अंगुली उठाई।

"ठीक है। तुम उस तरफ जाकर देखो, मैं दूसरी तरफ देखता हूँ और गुरिल्ले से थोड़ा सावधान रहना, वह एकदम से हमला बोलता है।"

"बेफिक्र रहो।"

दोनो गार्ड अलग-अलग दिशा में झाड़ियों की तरफ बढ़े।

एक गार्ड बिल्कुल कमाण्डर की तरफ दबे पांव चला आ रहा था।

कमाण्डर करण सक्सेना चौंकन्ना हो उठा।

गार्ड जैसे ही झाड़ियों के करीब आया और उसने आँखें फाड़-फाड़कर अंधेरे में झाड़ियों के अंदर झांकना शुरू किया, कमाण्डर फौरन चीते की तरह गार्ड के ऊपर झपट पड़ा।

गार्ड ने चिल्लाने के लिए मुंह खोला, लेकिन उससे पहले ही उसकी हथेली कुकर के ढक्कन की तरह गार्ड के मुंह पर जाकर जकड़ चुकी थी। फिर कमाण्डर के हाथ में स्प्रिंग ब्लेड नमुदार हुआ और उसने झटके के साथ गार्ड की गर्दन काट डाली।

गार्ड थोड़ी ही देर में छटपटाकर शांत हो गया।

फिर कमाण्डर करण सक्सेना ने दूसरे गार्ड की तरफ देखा।

वह उस समय उससे काफी फासले पर था और घनी झाड़ियों के अंदर कुछ झांक-झांककर देख रहा था। शायद वो जंगली गुरिल्ले की तलाश में था।

कमाण्डर करण सक्सेना फौरन झाड़ियों के अंदर-ही-अंदर सर्प की तरह सरसराता हुआ तेजी से उसकी तरफ बढ़ा।

"कौन है ?" झाड़ियों में हल्की सरसराहट की आवाज सुनकर गार्ड चौंका- "कौन है उधर ?"

कमाण्डर तुरंत उसके ऊपर भी चीते की तरह झपट पड़ा और इससे पहले कि गार्ड संभल पाता, उसकी गर्दन कटी हुई झाड़ियों में पड़ी थी।

कमाण्डर अब झाड़ियों से बाहर निकल आया।

उसके बाद वो बेहद दबे पांव उस बड़े तम्बू की तरफ बढ़ा, जिसमें तमाम हथियारबंद गार्ड मौजूद थे।

कमाण्डर करण सक्सेना ने धीरे से तम्बू के अंदर झांककर देखा, वहाँ मौजूद तमाम गार्ड गहरी नींद में सो रहे थे। कमाण्डर ने अब अपने हैवरसेक बैग में से क्लोरोफार्म की एक काफी बड़ी शीशी निकाली और फिर उस क्लोरोफार्म को धीरे-धीरे उन सब गार्डों की नाक के पास स्प्रे करना शुरू कर दिया।

जल्द ही वह सब नींद में ही बेहोश हो गये।

उसके बाद कमाण्डर करण सक्सेना ने अपने स्प्रिंग ब्लेड से उन सबकी गर्दनें काटनी शुरू कर दीं।

सारा काम वो बड़े इत्मीनान से कर रहा था।

सकून के साथ।

वह पचास के करीब हथियारबंद गार्ड थे, जल्द ही कमाण्डर ने उन सबको गहरी नींद सुला दिया।

तभी घटना घटी।

जैसे ही वो अंतिम गार्ड की गर्दन काटने के लिए उसके नजदीक पहुँचा, तभी न जाने कैसे उस गार्ड की आँख खुल गयी और अपने आसपास का मंजर देखकर उसके नेत्र दहशत से उबल पड़े।

“बचाओ-बचाओ।” वह एकाएक गला फाड़कर चिल्लाता हुआ तम्बू से बाहर की तरफ झपटा- “बचाओ।”

कमाण्डर तीर की तरह उसके पीछे दौड़ा।

परन्तु तब तक गार्ड उस तम्बू से बाहर निकल चुका था और अब तूफानी गति से उस छोटे तम्बू की तरफ भागा जा रहा था, जिसमें मास्कमैन और डायमोक सोये हुए थे।

ज्यादा वक्त नहीं था।

जल्दी कुछ करना था।

तुरंत कमाण्डर के दिमाग की मांस-पेशियों ने हरकत दिखा दी और पलक झपकते ही उसके क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसी कोल्ट रिवॉल्वर निकलकर कमाण्डर के हाथ में आ गयी।

रिवॉल्वर हाथ में आते ही उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और ट्रेगर दबा।

बेतहाशा भागता हुआ गार्ड और भी ज्यादा जोर से गला फाड़कर चीख उठा।

गोली ठीक उसकी पीठ में जाकर लगी।

वह लहराता हुआ गिरा और तम्बू के पास ही ढेर हो गया।

कमाण्डर दौड़ता हुआ वापस झाड़ियों में जा छिपा और सांस रोककर अब आगामी हलचल की प्रतीक्षा करने लगा।

वो जानता था, गार्ड के बुरी तरह चीखने और गोली चलने की उस आवाज ने दोनों योद्धाओं को जरूर उठा दिया होगा। वही हुआ, कुछ सैकण्ड भी न गुजरे कि तभी मास्कमैन और डायमोक बहुत घबराई हुई सी स्थिति में अपने-अपने तम्बू से बाहर निकले।

“कोई गोली चलने जैसी आवाज थी।” मास्कमैन बोला।

“कोई चीखा भी था।”

तभी उन दोनों की नजर गार्ड की लाश पर पड़ी।

“माई गॉड !” डायमोक के मुंह से तेज सिसकारी छूटी- “यह तो किसी ने हमारे आदमी को मार डाला।”

“यह दूसरा गार्ड कहाँ है?”

“मालूम नहीं कहाँ है।” डायमोक की गर्दन इधर-उधर घूमी- “हमें तम्बू के अंदर चलकर देखना चाहिये, कहीं वहाँ तो कुछ गड़बड़ नहीं हो गयी।”

दोनों योद्धा तेजी से बड़े तम्बू की तरफ बढ़े और उसके अंदर घुसते ही उन दोनों के नेत्र दहशत से फटे के फटे रह गये।

मास्कमैन ने झटके के साथ राइफल अपने हाथ में ले ली।

जबकि डायमोक के हाथ में अपनी बुलफाइटरों वाली तलवार नजर आने लगी थी।

उन दोनों के सामने लाशों का ढेर लगा था।

“जरूर कमाण्डर यहीं कहीं आसपास है।” मास्कमैन गुर्राया- “उसे फौरन तलाश करना होगा, फौरन !”

दोनों यौद्धा दौड़ते हुए तम्बू से बाहर निकल आये।
उनके हथियार तने हुए थे, तम्बू से बाहर आते ही उन्होंने एक-दूसरे से कोई पचास गज का फासला बना लिया।
वह 'शेडो वारफेयर' (छाया युद्ध) की पोजिशन थी।
जिसमें यौद्धा एक-दूसरे से काफी फासला बनाकर बेहद ख़ास स्टाइल में अपने दुश्मन को तलाश करते हैं।
फासला वह इसलिए बनाते हैं, ताकि अगर दुश्मन अटेक की पोजिशन में आये, तो वह किसी एक यौद्धा पर ही आक्रमण कर सके।
दोनों योद्धाओं के बीच फिर वो फासला धीरे-धीरे बढ़ने लगता है और सौ मीटर तक पहुँच जाता है, उसके बाद वो एक निश्चित प्वाइंट पर पहुँचकर आपस में मिलते हैं तथा वहाँ तक घटी तमाम घटनाओं की जानकारी एक-दूसरे को देते हैं, उसके बाद पीछे चल रहा योद्धा आगे चला जाता है और आगे चल रहा योद्धा पीछे चलता है। इस तरह वो शैडो वारफेयर की सेकण्ड पोजिशन होती है। फिर वो इसी प्रकार क्रम अनुसार आगे-पीछे चलते हुए जंगल को छानते हैं और दुश्मन को तलाश करते हैं।
कमाण्डर झाड़ियों के अंदर-ही-अंदर निःशब्द अंदाज में चलता हुआ आगे बढ़ने लगा।
वो जानता था, अगर वो वहीं झाड़ियों में छिपा रहा, तो अभी उन योद्धाओं की निगाह में आ जायेगा।
डायमोक फिलहाल आगे चल रहा था।
उसके हाथ में तलवार थी।
कमाण्डर ने अनुमान लगाया- जिस स्पीड से डायमोक चल रहा है, अगर वो उसी स्पीड से चलता रहा, तो बहुत जल्द मास्कमैन और डायमोक के बीच एक बड़ा फासला हो जायेगा।
वही हुआ।
पन्द्रह मिनट के अंदर उन दोनों योद्धाओं के बीच एक बड़ा फासला हो गया।
कमाण्डर के लिए वही एक गोल्डन चांस था।
वह फौरन झाड़ियों के अंदर से निकलकर डायमोक के सामने आ खड़ा हुआ।
"त... तुम !" डायमोक उसे देखकर बुरी तरह चिहुंका।
"क्यों, मुझे देखकर हैरानी हो रही है ?"
"नहीं, कोई हैरानी नहीं हो रही।" डायमोक बोला- "बल्कि खुशी हो रही है कि अब तुम्हारा मेरे से मुकाबला होने वाला है। वैसे भी मेरी तलवार की प्यास बहुत दिनों से किसी के खून से नहीं बुझी।"
कमाण्डर ने फौरन अपना स्प्रिंग ब्लेड बाहर निकाल लिया।
वह गोली चलाकर पीछे-पीछे आ रहे मास्कमैन को सचेत नहीं करना चाहता था।
तभी डायमोक नीचे को झुका और उसकी तलवार बड़ी तेजी के साथ उरेकान की मुद्रा में कमाण्डर की तरफ झपटी।
मगर कमाण्डर उससे कहीं ज्यादा अलर्ट था।
वह फौरन रेत के ढेर की तरह नीचे गिर गया। डायमोक की तलवार सर्राटे के साथ उसके सिर के ऊपर से गुजरी।
कमाण्डर ने तुरंत कराटे की हिजागिरी का एक्शन दिखाया।
उसका घुटना अपने पूरे वेग के साथ डायमोक के गुप्तांग पर पड़ा।
चीख उठा डायमोक।
वह संभल पाता, उससे पहले ही कमाण्डर ने राउण्ड किक जड़ी।
डायमोक चीखता हुआ नीचे गिरा।
मगर नीचे गिरते ही वो फिर जम्प लेकर खड़ा हो गया था। एक बार फिर उसकी तलवार बुलफाइटिंग के एक बड़े सधे हुए अंदाज में घूमी और कमाण्डर की तरफ झपटी।
कमाण्डर ने फौरन अपना स्प्रिंग ब्लेड उसके सीने की तरफ खींच मारा।
"न... नहीं।" जोर से चीखा डायमोक।
उसकी उठी हुई तलवार उठी रह गयी।
फिर वह दोनों हाथों के बीच में-से निकलकर टन्न की आवाज करती हुई नीचे गिरी।

कमाण्डर ने तुरंत झपटकर उसकी बुलफाइटरों वाली तलवार उठा ली और इससे पहले कि डायमोक अपने बचाव के लिए कुछ कर पाता, उसने वो तलवार डायमोक के दिल में घुसा दी।

"सचमुच तुम्हारी तलवार की प्यास बहुत दिन से नहीं बुझी थी डायमोक।" कमाण्डर फुंफकार कर बोला- "लेकिन आज उसकी वो इच्छा भी पूरी हो गयी। अलविदा मेरे दोस्त।"

डायमोक की आँखें फटी की फटी रह गयीं।

वो धड़ाम से नीचे जा गिरा।

फिर कमाण्डर ने पीछे आ रहे मास्कमैन की स्पीड को केलकुलेट किया। वह मुश्किल से दो मिनट बाद ही वहाँ पहुँचने वाला था।

कमाण्डर ने आनन-फानन कुछ काम किये।

सबसे पहले उसने डायमोक के सीने में धंसा अपना स्प्रिंग ब्लेड निकालकर वापस खांचे में फिट किया और फिर अपने हैवरसेक बैग में-से आरडीएक्स (अत्यंत विध्वंसक पदार्थ) का एक गोला निकाला।

आरडीएक्स के गोले में-से उसने थोड़ा सा आरडीएक्स तोड़ा, उसे जांघ पर रखकर गोलाई में बेला और फिर उसे एक कागज में फोल्ड कर दिया।

उसके बाद कमाण्डर ने एक डिटोनेटर पैंसिल निकाली।

उस डिटोनेटर पेंसिल की यह खासियत थी कि उसमें दो सेकण्ड से लेकर चौबीस घंटे तक का टाइम फिक्स किया जा सकता था। कमाण्डर ने उसमें तीन मिनट बाद का टाइम फिक्स किया और फिर वह डिटोनेटर पैंसिल उस आरडीएक्स के अंदर लगा दी।

अब बेहद खतरनाक टाइम बम तैयार था।

"मैंने सुना है मास्कमैन।" कमाण्डर बोला- "कि तुम टाइम-बम के बड़े जबरदस्त विशेषज्ञ थे। टाइम-बम बनाने से लेकर उन्हें डिस्कनेक्ट करने तक में तुम्हें महारथ हासिल है। अब देखना है, तुम्हारी विशेषज्ञता तुम्हारे कितने काम आती है।"

कमाण्डर ने आरडीएक्स का वह टाइम बम डायमोक की लाश के नीचे छुपा दिया और फिर वो द्रुतगति के साथ वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

□□□
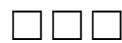
ठीक दो मिनट बाद मास्कमैन वहाँ पहुँचा।

डायमोक की लाश देखते ही उसकी आँखों में दहशत के भाव तैर गये।

वो डर गया।

फिर वह अपनी राइफल संभाले बड़ी तेजी के साथ इधर-उधर घुमा, लेकिन कमाण्डर उसे कहीं नजर नहीं आया।

उसने झाड़ियों में देखा।

आसपास के पेड़ों पर देखा।

कमाण्डर का कहीं कुछ पता न था।

तब मास्कमैन वापस डायमोक की लाश के करीब पहुँचा और उसने लाश को इधर-उधर पलटकर देखा।

"यह क्या !" तुरन्त उसकी आँखें दहशत के कारण फटी-की-फटी रह गयीं- "बम !"

मास्कमैन ने झपटकर आरडीएक्स बम उठा लिया।

उसने टाइम देखा।

बम बस फटने वाला था।

मास्कमैन ने बेपनाह फुर्ती के साथ डिटोनेटर पैंसिल, आरडीएक्स के अंदर से निकाल देनी चाही।

मगर !

उसी क्षण भीषण धमाके के साथ बम फट पड़ा।

मास्कमैन के मुंह से वीभत्स चीख निकल गयी। वह दहाड़ता हुआ किसी हल्के खिलौने की तरह हवा में उछला और दूर झाड़ियों में जाकर गिरा।

उसका एक हाथ पूरा-का-पूरा उड़ गया।

जिस्म खून में लथपथ हो गया।

मास्कमैन ने वहीं झाड़ियों में पड़े-पड़े अपनी जेब से एक बहुत छोटा पोर्टेबल टेपरिकॉडर जैसा यंत्र निकाला।

फिर उस पोर्टेबल टेपरिकॉडर को खोला और कुछ बटन दबाकर हैडक्वार्टर से उसका सम्पर्क स्थापित किया।

उसके बाद वो जल्दी-जल्दी उस टेपरिकॉर्डर पर कुछ टाइप करने लगा।

"जैक क्रेमर साहब, जल्दी कुछ कीजिये। सपोर्ट ग्रुप के तमाम छः योद्धा मारे जा चुके हैं। मेरी भी सिर्फ कुछ ही सांसे बची हैं और उन्ही उखड़ती सांसों के बीच मैं आपको अपना यह आखिर संदेश भेज रहा हूँ। कमाण्डर करण सक्सेना का अभी तक हम कुछ नहीं बिगाड़ सके हैं। वह न सिर्फ जिंदा है बल्कि पूरे जंगल में किसी शेर की तरह घूम रहा है। जंगल उसे न सिर्फ छिपने के लिये जगह मुहैया करा रहा है, बल्कि यहाँ उसे कैसी भी कोई मुश्किल पेश नहीं आ रही है। अगर जल्द ही कमाण्डर करण सक्सेना का कुछ इंतजाम न किया गया, तो वह दिन दूर नहीं है, जब कमाण्डर करण सक्सेना बाकी बचे हुए छः योद्धाओं को भी खत्म कर डालेगा।"

आपका मास्कमैन !

उस समय मास्कमैन उस टेपरिकॉर्डर जैसे यंत्र पर जो कुछ टाइप कर रहा था, वह फौरन दूसरी तरफ फैक्स मशीन के जरिये हैडक्वार्टर में निकल रहा था।

हैडक्वार्टर में वो संदेश भेजते ही मास्कमैन भी वहीं झाड़ियों में ढेर हो गया।

वो मर गया।

तभी कमाण्डर वापस दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा और उसने मास्कमैन की हार्टबीट चैक की। उसकी नब्ज टटोली। यह देखकर उसे राहत मिली कि अब उसमें जीवन का कोई चिन्ह शेष नहीं था।

फिर कमाण्डर ने टेपरिकॉर्डर पर टाइप किये गये उस अंतिम संदेश को पढ़ा, जिसे मास्कमैन ने हैडक्वार्टर में भेजा था।

संदेश पढ़कर उसके होंठों पर मुस्कान तैर गयी।

उसके बाद कमाण्डर ने मास्कमैन की राइफल तोड़ी। डायमोक के दिल में अपना स्प्रिंग ब्लेड पेवस्त किया और फिर जंगल में आगे बढ़ा।

□□□

दिन निकल आया।

सूर्य की प्रकाश-रश्मियां जंगल में पुनः चारों तरफ फैल गयी। चलते-चलते कमाण्डर करण सक्सेना अब काफी थकान महसूस करने लगा था।

रात वो एक पल के लिये भी नहीं सोया था।

वो जानता था, छः योद्धा मारे जा चुके हैं।

लेकिन !

अभी छः योद्धा जीवित हैं।

और वो बचे हुए छः योद्धा पहले छः योद्धाओं से कहीं ज्यादा खतरनाक थे। उनसे मुकाबला करना कोई आसान काम न था।

कमाण्डर ने इरावती नदी के किनारे पहुँचकर स्नान किया, जिससे उसके शरीर में ताजगी की लहर दौड़ी।

उसके बाद उसने मिल्क पाउडर का भी सेवन किया।

पिछले कुछ दिनों से चूंकि उसका कोई भी काम नियमित रूप से नहीं हो रहा था, इसलिये वो अपने शरीर में कुछ कमजोरी महसूस करने लगा था और थकान भी उसे काफी जल्दी हो जाती थी।

तभी कमाण्डर की निगाह एक गुफा पर पड़ी।

वह बड़ी अजीबोगरीब-सी गुफा थी और उस गुफा को देखकर ऐसा लगता था, जैसे कुछ महीने पहले

ही किसी ने उस गुफा का निर्माण किया है।

गुफा बहुत साफ-सुथरी बनी हुई नजर आ रही थी और ऐसा बिल्कुल नहीं लगता था, जैसे उस गुफा में कोई जंगली जानवर रहता है।

कमाण्डर गुफा के अंदर दाखिल हुआ।

उसमें सचमुच कोई जानवर नहीं था। इतना ही नहीं, गुफा भी अंदर से काफी अंधेरी थी और लम्बी थी।

कमाण्डर करण सक्सेना गुफा में आगे बढ़ता चला गया।

गुफा के बिल्कुल अंतिम छोर पर जाकर उसके नेत्र और फटे।

वहाँ कुछ संकरी-सी सीढ़ियां बनी हुई थीं, जो नीचे कहीं चली गयी थीं।

कमाण्डर उन सीढ़ियों पर उतरता चला गया।

थोड़ी ही देर बाद वो एक काफी लम्बी सुरंग में खड़ा था।

उस सुरंग को देखकर कमाण्डर करण सक्सेना की हैरानी और बढ़ी। सुरंग में जगह-जगह कुछ कमरे भी बने हुए थे।

कमाण्डर ने रिवॉल्वर निकालकर सावधानीपूर्वक अपने हाथ में ले ली।

उसके बाद वो तेज-तेज कदमों से एक कमरे की तरफ बढ़ा।

कमरे का बाहर से ताला खोल डाला।

ताला खोलकर वह कमरे के अंदर घुसा।

उस पूरे कमरे में लकड़ी की बड़ी-बड़ी पेटियां रखी हुई थीं। कमाण्डर ने एक पेटी का फट्टा हटाकर देखा, तो उसमें हशीश भरी थी।

दूसरी पेटी का फट्टा हटाकर देखा, उसमें स्मैक थी।

कुल मिलाकर वह नशीले पदार्थों का गोदाम था।

कमाण्डर ने अब अपने हैवरसेक बैग में से एक टाइम-बम निकाला और लकड़ी की उन पेटियों के बीच में फिट कर दिया।

फिर वो उसे कमरे से निकालकर बड़ी तेजी के साथ सुरंग में आगे की तरफ भागा।

काफी आगे एक कमरा और बना हुआ था।

कमाण्डर बेतहाशा दौड़ता हुआ जैसे ही उस दूसरे कमरे तक पहुँचा, तभी पिछले कमरे में बहुत धमाकाखेज आवाज के साथ टाइम-बम फटा।

बम बहुत शक्तिशाली था। उसके फटने से न सिर्फ उस पूरे कमरे की धज्जियां बिखर गयीं बल्कि उन सीढ़ियों के भी परखच्चे उड़ गये, जो ऊपर से नीचे तक आने का रास्ता था। सुरंग का वह हिस्सा लगभग पूरी तरह ध्वस्त हो गया।

कमाण्डर ने परवाह न की।

उसने तांबे के तार से ही दूसरे कमरे का ताला खोला और फिर उसके अंदर दाखिल हुआ।

वहाँ भी ढेरों पेटियां थीं।

नशीले पदार्थों का बड़ा स्टाक था।

सचमुच उन योद्धाओं ने नारिकाटिक्स का अच्छा खासा साम्राज्य वहाँ जंगल में फैला रखा था।

कमाण्डर ने उस कमरे के अंदर भी एक टाइम बम रखा और वहाँ से भी भागा। उसके बाद वो सुरंग में भागता रहा और जगह-जगह टाइम बम रखता रहा।

सुरंग में भीषण धमाके गूंजते रहे।

सुरंग तबाह होती रही।

भागते-भागते कमाण्डर एकाएक ठिठका।

उसे सुरंग में सामने की तरफ से अब कुछ आदमियों के दौड़ने की आवाज सुनायी दे रही थीं, जो बड़ी तेजी से दौड़ते हुए उसी तरफ आ रहे थे।

□□□

कमाण्डर रिवॉल्वर हाथ में लेकर वहीं सुरंग के एक कोने में छिप गया और दौड़ते हुए कदमों की आवाज ध्यान से सुनने लगा।

वह कई आदमियों के दौड़ने की आवाज थी, जो धमाके सुनकर उसी तरफ भागे चले जा रहे थे।

कमाण्डर ने अपनी रिवॉल्वर का चैम्बर खोलकर देखा।

उसमें सिर्फ तीन गोलियां थीं।

कमाण्डर ने चैम्बर वापस बंद कर दिया।

भागते हुए कदमों की आवाज अब काफी नजदीक आ चुकी थी। जैसे ही वह दोनों मोड़ के करीब पहुंचे, कमाण्डर फौरन चीते की तरह जम्प लेकर उन दोनों के सामने खड़ा हो गया।

उन दोनों के हाथ में भी राइफलें थीं, मगर उस वक्त दोनों राइफलों के मुंह छत की तरफ थे।

"क... कौन हो तुम ?" कमाण्डर को देखते ही वो हड़बड़ाये।

"फिलहाल तुम मुझे अपनी मौत समझो।"

रिवॉल्वर फौरन कमाण्डर की उंगली के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और ट्रेगर दबा।

उनमें से एक गार्ड तो तभी चीखता हुआ वहीं ढेर हो गया।

जबकि दूसरे गार्ड ने फौरन अपनी राइफल की नाल कमाण्डर की तरफताननी चाही, परन्तु उससे पहले ही एक फ्लाइंग किक उसके चेहरे पर पड़ी।

गार्ड के हाथ से राइफल छूट गयी।

वो दहाड़ता हुआ पीछे सुरंग की दीवार से जाकर टकराया।

कमाण्डर करण सक्सेना ने झपटकर उसका गिरेहबान पकड़ लिया और रिवॉल्वर की नाल उसके गले की घण्टी पर रख दी।

गार्ड ने जोर से थूक सटकी।

खौफ के मारे उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।

"क... क्या चाहते हो तुम ?"

"सिर्फ मेरे एक सवाल का जवाब दो ?"

"पूछो।"

"यह सुरंग कहाँ जाकर खत्म होती है ?"

गार्ड ने फौरन सख्ती से अपने होंठ भींच लिये।

तुरंत कमाण्डर का एक प्रचण्ड प्रहार उसके पेट में पड़ा। गार्ड के मुंह से इस तरह हवा निकली, जैसे किसी गुब्बारे में से निकली हो।

तभी कमाण्डर करण सक्सेना ने रिवॉल्वर की बैरल को जोर से खींचकर उसकी कनपटी पर मारा।

गार्ड के मुंह से तेज सिसकारी छूटी। उसकी कनपटी से खून बहने लगा।

"जल्दी बताओ।" रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और दोबारा उसके गले की घण्टी पर जा टिकी- "यह सुरंग किस जगह पहुँचकर खत्म होती है ?"

"ह... हैडक्वार्टर !"

"क्या हैडक्वार्टर ?"

"य... यह हमारे हैडक्वार्टर पहुँचकर खत्म होती है।"

कमाण्डर ने रिवॉल्वर का ट्रेगर दबा दिया।

गार्ड की खोपड़ी इस तरह फटी, जैसे उसके अंदर रखा कोई बम फटा हो।

उसकी खोपड़ी में से ढेर सारा खून निकलकर दीवार पर फैल गया।

फिर कमाण्डर ने उन गार्डों की राइफलें बेकार कीं। उनकी गोलियां अपने हैवरसेक बैग में भरीं और उसके बाद वह मौत का कालदूत बना सुरंग में आगे की तरफ बढ़ा।

पहले की तरह ही कमाण्डर उसके पीछे टाइम-बम फिट करता जा रहा था।

सुरंग की धज्जियां उड़ाता जा रहा था।

बर्मा के खौफनाक जंगलों में उन बारह योद्धाओं ने कोई इतनी बड़ी सुरंग भी बनायी हुई है, इस बात की जानकारी कमाण्डर को पहले से नहीं थी।

अलबत्ता उस सुरंग को देखकर वो प्रभावित जरूर हुआ।

वाकई यह उसी सुरंग का कमाल था, जो यह योद्धा उस पूरे जंगल को अपनी मुटठी में कैद किए हुए थे।

जो वहाँ उनका एकमात्र राज चल रहा था।

□□□

'सपोर्ट ग्रुप' के सभी छः यौद्धाओं के मारे जाने की खबर जैसे ही हैडक्वार्टर पहुंची, वहाँ हड़कम्प मच गया।

जैक क्रेमर, हवाम, मास्टर, अब निदाल, माइक और रोनी- तुरंत उन बाकी बचे हुए छः योद्धाओं की एक एमरजेंसी मीटिंग हुई।

"यह मास्कमैन का वो आखिरी संदेश है।" जैक क्रेमर एक कागज को उन योद्धाओं के सामने लहराते हुए कहा रहा था- "जिसे उसने मरने से पहले फैक्स मशीन पर हमारे लिए भेजा है। हमारे 'सपोर्ट ग्रुप' के सभी छः यौद्धा मारे जा चुके हैं, अब सिर्फ हम बचे हैं और इससे भी बड़े अफसोस की बात यह है कि हमारी ज्यादातर फौजों को भी कमाण्डर करण सक्सेना ने ठिकाने लगा दिया है।"

"वाकई उस एक आदमी का आतंक हर पल बढ़ता जा रहा है।" अबू निदाल बोला- "उसने जहाँ जंगल में इतनी तबाही बरपा करके रख दी है, वहीं हम अभी तक उसका कुछ नहीं बिगाड़ सके।"

"सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो ये है सर !" मास्टर बोला- "कि बर्मा के इन खौफनाक जंगलों में आने के दो दिन के अंदर ही जहाँ किसी आदमी के होश ठिकाने लग जाते हैं, वहीं कमाण्डर करण सक्सेना को अभी तक कुछ नहीं हुआ है। जंगल उसे पूरी तरह रास आ चुका है।"

"फिलहाल हमें यह सोचना चाहिये।" माइक ने कहा- "कि कमाण्डर करण सक्सेना को मार डालने के लिए अब हमारा अगला कदम क्या हो ?"

"यही तो समझ नहीं आ रहा।" जैक क्रेमर बोला।

"सचमुच बड़ा मुश्किल सवाल है।" हवाम ने भी कबूल किया- "क्योंकि कमाण्डर करण सक्सेना को मारने के लिए जितने भी प्रयास हो सकते थे, वो हम पहले ही करके देख चुके हैं।"

कई घण्टे तक उन योद्धाओं के बीच वो मीटिंग चलती रही।

वो सोच विचार करते रहे।

मगर फिर भी कमाण्डर को मार डालने के किसी आखिरी फैसले पर नहीं पहुँच सके।

तभी उन्हें बाहर हैडक्वार्टर में तेज शोर-शराबे की आवाज सुनायी दी।

वह ऐसी आवाज थी, जैसे भगदड़ मच रही हो।

जैसे लोग चिल्ला रहे हों।

"यह कैसी आवाज हैं ?" योद्धा चौंका।

"लगता है, हैडक्वार्टर में कुछ गड़बड़ हो गयी है।"?

"मैं जाकर देखता हूँ।" रोनी झटके के साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ।

उसी क्षण भड़ाक की तेज आवाज के साथ कमरे का दरवाजा खुला और दो गार्ड दनदनाते हुए अंदर घुसे चले आये।

उन दोनों के चेहरे पीले जर्द थे।

पूरा शरीर पसीनों में लथपथ।

"क्या हुआ ?" जैक क्रेमर ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

"बहुत भयानक गड़बड़ हो गयी है सर ! कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारी सारी सुरंग तबाह कर डाली है।"

"क्या कह रहे हो ?"

तमाम यौद्धा झटके के साथ इस तरह अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर खड़े हुए, जैसे वह जलते हुए गरम तवे में परिवर्तित हो गयी हों।

"इतना ही नहीं सर !" दूसरे गार्ड ने और भी ज्यादा भीषण विस्फोट किया- "कमाण्डर करण सक्सेना सुरंग के रास्ते से ही अब हमारे हैडक्वार्टर में भी घुस आया है। लेकिन हमें फिलहाल यह मालूम नहीं है कि

वो यहाँ किस जगह मौजूद है।"

"कमाण्डर करण सक्सेना हैडक्वार्टर में है?"

"यस सर!"

तमाम यौद्धाओं के बीच दहशत फैल गयी।

जैक क्रेमर शीघ्रतापूर्वक मेज के पीछे से निकलकर बाहर आ गया।

"अगर कमाण्डर करण सक्सेना इस समय हैडक्वार्टर में है, तो यह हमारे लिए एक गोल्डन चांस है।" वह जल्दी से बोला- "हम उसें यहीं खत्म कर सकते हैं। उसे जल्दी ढूंढो-जल्दी।"

"सचमुच वो यहाँ से बचकर नहीं निकलना चाहिये।" अबू निदाल भी चिल्लाया- "अगर वो यहाँ से बचकर भाग गया, तो यह हमारी एक बड़ी हार होगी।

तमाम यौद्धा कमरे से निकलकर तेजी से बाहर की तरफ दौड़े।

हैडक्वार्टर में हड़कम्प मचा हुआ था।

हर कोई कमाण्डर को खोज रहा था।

□□□
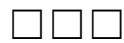
और वह कमाण्डर करण सक्सेना, जिसके नाम ने पूरे हैडक्वार्टर में भूकम्प मचा दिया था, जिसकी वजह से तमाम योद्धाओं और गार्डो का सुख चैन तक उजड़ चुका था।

वो बड़ी ही खामोशी के साथ चोरी-छिपे वहाँ पहुँचा था। उसने अपना हैवरसेक बैग खोलकर देखा, उसमें से बमों को जखीरा लगभग पूरी तरह समाप्त हो चुका था।

कमाण्डर ने वहीं बने ऐमीनेशन रूम में से कुछ हैंडग्रेनेड बम, कुछ टाइम बम और कुछ डायनामाइट की छड़े उठाकर अपने हैवरसेक बैग में भर लीं।

अब वो दोबारा हमले के लिए तैयार था।

फिर उसने बड़ी ही खामोशी के साथ ऐमीनेशन रूम का दरवाजा खोला और उसमें से थोड़ी झिरी पैदा करके बाहर गलियारे में झांका।

वहाँ उस वक्त खामोशी थी।

सन्नाटा।

कमाण्डर अपनी कोल्ट रिवॉल्वर हाथ में कसकर पकड़े बाहर गलियारे में आ गया।

लाइट मशीनगन उसके कंधे पर टंगी हुई थी।

हैवरसेक बैग पीठ पर था।

वह पूरी तरह एक खूंखार यौद्धा नजर आ रहा था।

कमाण्डर उस वक्त हैडक्वार्टर के पहले माले पर था। उस हैडक्वार्टर के दो ही फ्लोर बने हुए थे।

ग्राउण्ड फ्लोर!

फर्स्ट फ्लोर!

कमाण्डर करण सक्सेना रेलिंग के नजदीक पहुँचा, वहाँ चारों तरफ हड़कम्प मचा था और तमाम हथियार बंद गार्ड उसी को खोजते हुए इधर-से-उधर भागे-भागे फिर रहे थे। अभी तक उनमें से किसी को यह ख्याल भी नहीं आया था कि कमाण्डर करण सक्सेना हैडक्वार्टर के पहले माले पर भी हो सकता है।

किसी को उसकी वहाँ उपस्थिति का आभास मिलता, उससे पहले ही कमाण्डर ने कुछ कर गुजरना था।

वह गलियारे में दूर-दूर तक बम फैला चुका था।

तभी उसने जोर-जोर से कुछ कदमों की आवाज़ सुनी।

कुछ गार्ड सीढ़ियों पर दौड़ते हुए ऊपर आ रहे थे।

कमाण्डर ने कोल्ट रिवॉल्वर वापस अपने ओवरकोट की जेब में रख ली और लाइट मशीनगन कंधे से उतरकर उसके हाथ में आ गयी।

वो वहीं सीढ़ियों के पास छिपकर बैठ गया।

उन गार्डों की संख्या कोई सात-आठ थी, जो ऊपर भागे चले आ रहे थे।

सबके हाथ में राइफलें थीं।

जैसे ही वह सब ऊपर आये, कमाण्डर करण सक्सेना एकदम जम्प लेकर उन सबके सामने जा खड़ा हुआ।

लाइट मशीनगन उन सबकी तरफ तन गयी।

"क... कमाण्डर करण सक्सेना !" कइयों के मुँह से एक साथ तीव्र सिसकारी छूटी।

दहशत से उन सबके शरीर कंपकंपाये।

"खबरदार !" कमाण्डर गरजा- "खबरदार, अपनी-अपनी राइफल नीचे फैंक दो-वरना अभी तुम सबकी खोपड़ी में झरोखे बन जायेंगे।

सबने एक-दूसरे की तरफ देखा।

फिर राइफलें उनके हाथ से फिसलकर नीचे जा गिरीं।

उसी क्षण कमाण्डर ने अपनी लाइट मशीनगन का मुंह खोल दिया और बर्स्ट फायर कर डाले।

रेट-रेट-रेट !

गार्डों की लाशें बिछती चली गयीं।

तभी जोर-जोर से टाइम-बम भी फटने लगे।

"कमाण्डर ऊपर है।" उसी क्षण कमाण्डर के कानों में किसी योद्धा की आवाज पड़ी- "ऊपर, जल्दी से अब ऊपर की तरफ दौड़ो।"

कमाण्डर ने अब अपने बैग में से डायनामाइट की कुछ छड़ें निकाली और उनके फलीते में आग लगाकर छड़ों को सीढ़ियों की तरफ उछाल दिया।

उसके बाद वो खुद सरपट भागता हुआ वहीं बने एक टॉयलेट में जा छिपा।

तभी उसे डायनामाइट फटने की प्रचण्ड आवाज सुनाई दी।

उसी के साथ कुछ गार्डों की वीभत्स चीखें भी गूंजीं।

कमाण्डर करण सक्सेना टॉयलेट से बाहर निकल आया और उसने सीढ़ियों की तरफ देखा।

ऊपर आने वाली सीढ़ियां पूरी तरह तबाह हो चुकी थीं।

इसके अलावा सीढ़ियों के मलबे में ढेर सारी लाशें भी नजर आ रही थीं।

कुछ ऐसी ही स्थिति हैडक्वार्टर के पहले माले की थी।

उसका आधे से ज्यादा भाग बम फटने की वजह से खण्डहर बन चुका था।

कुछ गार्ड दौड़ते हुए नीचे सीढ़ियों के सामने आये।

कमाण्डर ने फौरन एक हैण्डग्रेनेड बम निकाला और दांतों से उसकी पिन खींचकर गार्डों की तरफ उछाला।

गार्ड चीखते हुए इधर-उधर भागे।

फिर भी कुछ उस बम की चपेट में आ ही गये।

उसके बाद कमाण्डर उन सीढ़ियों के सामने रूका नहीं। वो पहले माले के गलियारे में ही उस तरफ दौड़ा, जो गलियारा अभी सुरक्षित था।

वो भागता रहा।

बेतहाशा भागता रहा।

लाइट मशीनगन उसके हाथ में थी।

□□□

सभी छः योद्धा रेडियो-रूम में जमा थे, उनके बीच खलबली मची हुई थी।

"कमाण्डर करण सक्सेना हमारे काबू में नहीं आ रहा है।" रोनी बेहद बैचेनीपूर्वक बोला- "वह हमारा आधे से ज्यादा हैडक्वार्टर तबाह कर चुका है।"

"वाकई !" हवाम भी बोला- "कमाण्डर की तबाही को रोकने के लिये हमें जल्दी कुछ करना होगा।"

"लेकिन हम करें क्या ?"

जैक क्रेमर जैसे योद्धा की आवाज में ही जबदरस्त उलझन का पुट था।

"यही तो समझ नहीं आ रहा। वह साक्षात् मौत का फरिश्ता बन चुका है।"
सब बहुत बेचैन थे।
बाहर से बम फटने की आवाजें निरंतर उनके कानों में पड़ रही थीं।
जैक क्रेमर उनमें सबसे ज्यादा परेशान था।
"लगता है, पूरे बर्मा पर कब्जा करने का हमने जो सपना देखा था, वो इस एक आदमी की वजह से ही धूल में मिलकर रहेगा।"
"नहीं।" अबू निदाल गुर्रा उठा- "हम इतनी आसानी से अपने सपने को धूल में नहीं मिलने देंगे सर !"
"लेकिन हम कर क्या सकते हैं।" जैक क्रेमर झुंझलाकर बोला- "वो हमारे हैडक्वार्टर में घुसा हुआ है और तब भी हम उसका कुछ बिगाड़ने में नाकाम हैं।"
"मैं तो कहता हूँ सर !" माइक बोला- "हमें फिलहाल बातों में वक्त बर्बाद करने की बजाय बाहर जाकर कमाण्डर करण सक्सेना का मुकाबला करना चाहिये।"
सब योद्धा फिर अपने-अपने हथियार लेकर बुलंद हौसलों के साथ रेडियो-रूम से बाहर निकले।

□□□
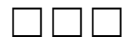
कमाण्डर अभी भी पहले माले के उसी गलियारे में दौड़ा जा रहा था, जो फिलहाल कुछ सुरक्षित था।
मगर जल्द ही वो सुरक्षित रहने वाला नहीं था।
कमाण्डर करण सक्सेना ने वहाँ भी जगह-जगह टाइम-बम जो फिट कर दिये थे।
वो पिछली तरफ की रेलिंग के नजदीक पहुँचकर ठिठका।
उसने नीचे झांका, नीचे भी एक गलियारा था। मगर फिलहाल वो पूरी तरह सुनसान था।
जितनी भी अफरा-तफरी मची थी, सब हैडक्वार्टर के अगले हिस्से में मची थी।
कमाण्डर करण सक्सेना की निगाहें इधर-उधर दौड़ीं।
जल्द ही उसे एक काफी बड़ी रस्सी पड़ी नजर आ गयी। कमाण्डर करण सक्सेना ने दौड़कर रस्सी उठा ली।
उसने रस्सी खींचकर देखी।
वो मजबूत थी।
कमाण्डर ने रस्सी का एक सिरा रेलिंग के पाइप के साथ कसकर बांधा और दूसरा सिरा नीचे गलियारे में लटका दिया।
फिर वो रस्सी पर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा।
जल्द ही उसने धम्म से नीचे गलियारे में छलांग लगायी। नीचे कूदते ही वो एकदम स्प्रिंग लगे खिलौने की भांति सीधा खड़ा हो गया और फिर रस्सी उसने वापस ऊपर रेलिंग की तरफ उछाल दी। उसके बाद वो दौड़ता हुआ नजदीक के ही एक कमरे में जा छिपा।
सामने से पांच-छः गार्ड अपने ऐमीनेशन ब्लैक बूट बजाते हुए तेज-तेज कदमों से उसी तरफ चले आ रहे थे।
कमाण्डर करण सक्सेना दरवाजे के दोनों पटों से पीठ लगाये स्तब्ध मुद्रा में खड़ा रहा।
जल्द ही वह गार्ड कमरे के सामने से गुजर गये।
कमाण्डर ने एक बेहद शक्तिशाली टाइम-बम उस कमरे के अंदर फिट किया और दरवाजे की झिरी में-से बाहर झांका।
गलियारा सुनसान था।
कमाण्डर बाहर निकल आया और उसके बाद गलियारे में जगह-जगह टाइम-बम फिट करता हुआ आगे की तरफ दौड़ा।
तभी उसने फिर कुछ गार्डों के उस तरफ आने का स्वर सुना।
कमाण्डर फौरन एक गोल स्तम्भ के पीछे छुप गया।
गार्ड अब काफी करीब आ चुके थे। कमाण्डर करण सक्सेना ने देखा, वह तीन गार्ड थे।
"यहाँ तो कोई नहीं है।" उसी क्षण एक गार्ड की आवाज कमाण्डर के कानों में पड़ी।

"किसी के तेज़ दौड़कर आने की आवाज तो इसी तरफ से आ रही थी।"

"मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है।" वह एक अन्य गार्ड की आवाज थी- "जरूर कमाण्डर यहीं-कहीं छिपा है, हमें उसे तलाश करना चाहिये।"

"ठीक है, देखते हैं।"

गार्ड जो गलियारे के बीच में ही ठिठकर खड़े हो गये थे, वह अपने ऐमीनेशन ब्लैक बूट बजाते हुए फिर आगे की तरफ बढ़े।

कमाण्डर ने अपनी लाइट मशीनगन संभाल ली।

जैसे ही वह गार्ड उस गोल स्तम्भ के करीब आये, कमाण्डर एकदम किसी प्रेत की तरह उन तीनों के सामने जा खड़ा हुआ और वह कुछ समझ पाते, उससे पहले ही गोलियां चीखती हुई उनके जिस्म के भिन्न-भिन्न हिस्सों में जा धंसी।

कमाण्डर फिर आगे की तरफ भागा।

जगह-जगह टाइम-बम वो अभी भी फिट करता जा रहा था। इस बीच पीछे फिट किये गये टाइम-बमों में जोर-जोर से धमाके होने लगे।

हैडक्वार्टर अब ताश के पत्तों की तरह ढहता हुआ नजर आया।

सभी छः योद्धा जो कमाण्डर करण सक्सेना की तलाश में उसी तरफ दौड़े चले आ रहे थे, धमाकों की आवाज सुनकर ठिठक गये।

"मेरी एक सलाह है।" रोनी बोला।

"क्या ?"

"कमाण्डर इस समय बहुत आक्रामक मूड में है। अगर ऐसी परिस्थिति में हमारी उससे मुठभेड़ हुई, तो इसमें कोई शक नहीं कि हममें से एक-दो योद्धा और कम हो जायेंगे और फिर भी यह गारण्टी नहीं है कि कमाण्डर करण सक्सेना मारा ही जाये।"

"तुम कहना क्या चाहते हो रोनी ?" हवाम गुर्राया।

"मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ मिस्टर हवाम !" रोनी बोला- "कि फिलहाल हम लोगों को यहाँ से भागकर अपनी जान बचानी चाहिये और उसके बाद हमें ठण्डे और शान्त दिमाग से कोई योजना बनाकर कमाण्डर पर हमला करना होगा।"

"यानि हम यहाँ से पीठ दिखाकर भाग खड़े हों ?" अबू निदाल की त्यौरियों पर बल पड़े- "हम कायर बन जायें ?"

"सवाल कायर बनने का नहीं है अबू निदाल ! सवाल ये है कि इस वक्त परिस्थितियां हमें किस बात की इजाजत दे रही हैं। जिस बात की परिस्थितियां इजाजत दें, वही काम करने में बुद्धिमानी है।"

"रोनी बिल्कुल ठीक कह रहा है।" जैक क्रेमर ने भी रोनी की बात का समर्थन किया- "फिलहाल हैडक्वार्टर छोड़कर भागने में ही हमारी भलाई है। वैसे भी यहाँ खण्डहरों के सिवाय अब कुछ शेष नहीं बचा है। हमारी वर्षों की मेहनत तबाह हो चुकी है। जल्दी भागो !"

जैक क्रेमर के आदेश की देर थी, फौरन तमाम योद्धा कमाण्डर करण सक्सेना को ढूंढ निकालने की बात भूलकर हैडक्वार्टर के पिछले हिस्से की तरफ भागे।

वहाँ एक छोटा-सा हैलीपेड बना हुआ था और वहीं एक गहरे नीले रंग का हैलीकॉप्टर खड़ा था।

सबसे पहले माइक दौड़कर हलीकॉप्टर में चढ़ा।

फिर हवाम, फिर जैक क्रेमर , मास्टर, अबू निदाल और उसके बाद रोनी।

माइक तब तक पायलेट सीट पर बैठकर हैलीकॉप्टर स्टार्ट कर चुका था।

जैसे ही रोनी ने झटके से दरवाजा बंद किया, तभी हैलीकॉप्टर की पंखुड़ियां जोर-जोर से घूमने लगीं।

हैलीकॉप्टर स्टार्ट होने की आवाज कमाण्डर ने भी सुनी। वह दौड़ता हुआ जब तक पिछले हिस्से में पहुँचा, तब तक हैलीकॉप्टर उड़ान भर चुका था और वह भयानक गर्जना करता हुआ दूर आकाश में उड़ा जा रहा था।

कमाण्डर ने मशीनगन से हैलीकॉप्टर की तरफ धुआंधार फायरिंग की।

लेकिन सब बेकार !

हैलीकॉप्टर फायरिंग रेंज से बाहर निकल चुका था।

शीघ्र ही वो कमाण्डर की नजरों से ओझल हो गया।
"शिट !" कमाण्डर ने जोर से अपनी जांघ पर घूंसा मारा- "आखिरकार सब बचकर भाग निकले, सब।"
कमाण्डर के चेहरे पर हताशा घिरने लगी।
पीछे हैडक्वार्टर में बमों के धमाके अभी भी हो रहे थे।
लेकिन कमाण्डर पूरी तरह निराश नहीं था। वो जानता था, असॉल्ट ग्रुप के वह सभी छः योद्धा जंगल छोड़कर भागने वाले नहीं हैं।
क्योंकि अगर उन्होंने उस जंगल से बाहर निकलने की जरा भी कोशिश की, तो उसी क्षण चारों तरफ फैली बर्मा की फौज ने उन्हें मार डालना था।
यानि अभी कमाण्डर की जंगल में उन योद्धाओं से मुठभेड़ होनी बाकी थी।

□□□
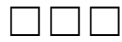
शाम धीरे-धीरे घिरने लगी।
जंगल में डूबता हुआ सूरज बिल्कुल आग के गोले जैसा नजर आ रहा था, जिसकी घनघोर लालिमा न सिर्फ सारे आकाश में बल्कि पूरे जंगल में चारों तरफ फैली हुई थी।
डूबता हुआ सूरज आज खून की बारिश करता महसूस हो रहा था।
वह जंगलियों की बस्ती थी।
शाम घिरते ही जंगलियों की उस बस्ती में भी सन्नाटा फैल गया।
नीले रंग का हैलीकॉप्टर उस बस्ती के बीचों-बीच खड़ा था। इसके अलावा 'असॉल्ट ग्रुप' के सभी छः योद्धा जंगली सरदार के झोंपड़े में मौजूद थे। वह सब सींकों की एक चटाई पर गोल दायरा बनाये बैठे थे और आपस में यह मंत्रणा कर रहे थे कि कमाण्डर से अब किस प्रकार निपटा जाये।
उन्हीं के बीच सरदार और सरदारनी भी बैठे थे।
"मैं समझता हूँ।" जैक क्रेमर काफी सोचने विचारने के बाद बोला- "कमाण्डर को मार डालने का अब बस हमारे पास एक ही तरीका है।"
"क्या ?"
"हम थोड़ा सब्र से काम लें, इस मामले में कोई जल्दबाजी न करें।"
"क्या मतलब ?" हवाम चौंका- "मैं कुछ समझा नहीं सर !"
"बिल्कुल साफ बात है।" उनमें सबसे ज्यादा बूढ़े जैक क्रेमर ने अपने सफेद बालों को पीछे झटका दिया- "अगर सिर्फ ताकत के बलबूते पर कमाण्डर को मार डालना मुमकिन होता, तो हमारे सपोर्ट ग्रुप के पहले छः योद्धाओं ने ही उसे कब का मार डाला होता।"
"यानि ताकत से उसे मिटाना संभव नहीं है।"
"बिल्कुल भी नहीं।"
"फिर हम क्या करें ?" इस बार अबू निदाल बोला।
"हमें ताकत के साथ-साथ अब अक्ल का भी भरपूर इस्तेमाल करना होगा दोस्तों, तभी हम इस जंग में कामयाबी हासिल कर सकते हैं। तभी हमें फतेह हासिल हो सकती है। हथियारों को हम बहुत इस्तेमाल करके देख चुके हैं, हमें अब अक्ल को अपना शस्त्र बनाना होगा।"
"अक्ल मुख्य शस्त्र कैसे बनेगी ?" मास्टर बोला।
"उसका भी एक तरीका है।"
"क्या ?"
सभी योद्धा गौर से जैक क्रेमर की बात सुनने लगे।
सरदार और सरदारनी भी स्तब्ध मुद्रा में बैठे थे।
"हमें अब आगामी पांच-छः दिन तक कमाण्डर के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लेना है।" जैक क्रेमर ने अपनी योजना के पत्ते उन सबके सामने फैलाये- "अब हम पांच-छः दिन तक इसी बस्ती में रहेंगे और बिल्कुल खामोशी के साथ रहेंगें, इससे हमें यह फायदा होगा कि कमाण्डर जंगल में अकेला भटकता रहेगा।

उसके पास खाने-पीने की जो सामग्री होगी, वो खत्म होने लगेगी और जब उसकी ताकत घटकर आधी से भी कम रह जायेगी, तब हम सब योद्धा एक साथ मिलकर उस पर हमला बोलेंगे। और तब मैं समझता हूँ, उस कमजोर कमाण्डर करण सक्सेना को मार डालना हमारे लिए काफी आसान काम होगा।"

तमाम योद्धाओं की आँखों में एक साथ कई-कई सौ वाट के बल्ब जल उठे।

सबकी आँखों में चमक कौंधी।

"मेरी योजना आप लोगों को कैसी लगी ?" जैक क्रेमर बोला।

"योजना तो वाकई आपकी बहुत अच्छी है सर।" रोनी सहित तमाम यौद्धाओं ने कबूल किया- "यानि अब आगामी पांच छः दिन तक हमने कमाण्डर करण सक्सेना के खिलाफ कुछ नहीं करना है, हमने सिर्फ इस बस्ती में रहकर आराम करना है।"

"बिल्कुल !"

"और अगर मान लो।" माइक बोला- "इन पांच छः दिन तक जंगल में भटकने से भी कमाण्डर करण सक्सेना के हौंसले पस्त न हुए, तब हम क्या करेंगे ?"

"सबसे पहले तो मैं समझता हूँ कि ऐसा होगा नहीं।" जैक क्रेमर बोला- "और अगर इत्तेफाक से ऐसा हुआ, तो तब की तब सोचेंगे। पहले से पहले ही अंदाजे लगाकर दिमाग खराब करने से कोई फायदा नहीं।"

"बिल्कुल ठीक बात है।" सरदार भी बोला- "फिलहाल तो आप लोगों को सिर्फ आराम करने के बारे में सोचना चाहिये।"

सबके चेहरों पर संतोष झलकने लगा।

"यह बताइये !" इस मर्तबा सरदारनी बोली- "मैं आप लोगों के लिए खाना क्या बनाऊँ ?"

"जो खाना भी तुम प्यार से बना लोगी।" मास्टर ने सरदारनी की शरबती आँखों में झांका- "वही हम सबको पसंद आ जायेगा। क्यों दोस्तों, मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा ?"

"तुम कभी कुछ गलत कहते हो।"

सब हंसे।

सरदारन के गाल लाज के कारण सुर्ख सेब की तरह हो गये।

वो वहाँ से उठकर चली गयी।

□□□

रात का समय था।

तमाम योद्धा झोंपड़े के अंदर वाले हिस्से में लेटे हुए थे और अब सोने की तैयारी कर रहे थे।

मगर !

मास्टर की आँखों में नींद नहीं थी।

उसकी आँखों के गिर्द बार-बार सरदारनी का चेहरा चक्कर काट रहा था।

उसकी बेहद मजबूत भुजाये उसे अपने अंदर समेट लेने के लिए आतुर थीं।

मास्टर उस वक्त जितना सरदारनी के बारे में सोच रहा था, उतनी ही उसकी सांसे भभकती जा रही थीं।

वाकई वो एक लाजवाब औरत थी।

कहीं से शोला, कहीं से शबनम।

पूरा जिस्म मानों किसी पारे से बना हुआ।

उस वक्त वो सरदार के साथ झोंपड़ी के बाहर वाले हिस्से में लेटी हुई थी। मास्टर की निगाहें बार-बार उस पर्दे पर जाकर टिक जातीं, जो पर्दा उस झोंपड़ी को दो हिस्सों में बांटने का काम कर रहा था।

सरदारनी के जिस्म की महक उसकी सांसों में समाती जा रही थी।

वो उसके साथ सहवास के लिए छटपटाने लगा।

तभी उसने पर्दे के पीछे कुछ आहट सुनी। मास्टर चौंका, उसी क्षण पर्दा एक तरफ सरकाकर सरदार वहाँ आ पहुँचा।

"शायद इस वातावरण में आप लोगों को नींद नहीं आ रही है ?" सरदार बोला।

"ऐसी कोई बात नहीं।" हवाम बोला- "हमें थोड़ा देर से ही सोने की आदत है, लेकिन तुम्हारा कैसे आना हुआ?"

"दरअसल अभी-अभी बस्ती में एक बूढ़े आदमी की मौत हो गयी है।" सरदार ने बताया- "वह दमे का मरीज था। मुझे एकाएक वहाँ जाना पड़ रहा है, अब शायद सुबह तक ही मेरी वापसी होगी।"

"ओह!"

"मैंने सोचा जाने से पहले इस बारे में आप लोगों को भी सूचित कर दूं।"

"ठीक किया।"

"अच्छा, अब मैं चलता हूँ।"

"ओके।"

सरदार चला गया।

सरदार के जाते ही मास्टर के दिल की रफ्तार और तेज हो गयी।

यह ख्याल ही उसकी सांसों को भभकाने लगा कि अब सरदारनी झोंपड़ी के बाहर वाले हिस्से में अकेली थी।

बिल्कुल तन्हा।

मास्टर काफी देर तक अपनी भावनाओं पर काबू किये वहीं शांत लेटा रहा। जब उसके तमाम साथी योद्धा गहरी नींद में डूब गये और उनके खर्राटे वहाँ गूंजने लगे, तब मास्टर बहुत आहिस्ता से अपना स्थान छोड़कर उठा।

उसने एक नजर फिर अपने साथियों पर डाली।

उनमें से कोई नहीं जाग रहा था।

मास्टर दबे पांव चलता हुआ पर्दा हटाकर झोंपड़ी के बाहर वाले हिस्से में पहुँचा।

अगले ही पल वो बुरी तरह चौंका।

हैरान!

सरदानी अपने बिस्तर पर नहीं थी।

झोंपड़ी का पूरा हिस्सा खाली पड़ा था।

□□□
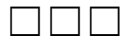
मास्टर के दिमाग में तेज चिंगारियां छूटी।

कहाँ गयी सरदारनी?

कहीं सरदार के साथ ही वो बूढ़े आदमी की मौत में तो नहीं चली गयी?

नहीं-नहीं।

सरदार तो अकेला जाने के लिए कह रहा था।

मास्टर अब सरदारनी को तलाश करता हुआ झोंपड़ी के बाहर निकला।

बस्ती में पहले की तरह ही सन्नाटा था।

जरूर बूढ़े आदमी की मौत बस्ती में दूर कहीं हुई थी।

मास्टर कुछ आगे बढ़ा।

नजदीक में ही एक और छोटी सी झोपड़ी थी। फिलहाल उस झोंपड़ी के अंदर रोशनी हो रही थी, जैसे किसी ने मशाल जलाई हुई हो। इसके अलावा उसमें से किसी के हंसने की आवाज भी आ रही थी।

न जाने क्यों मास्टर को हंसी की वह आवाज जानी पहचानी सी लगी।

वह दौड़कर झोंपड़ी के नजदीक पहुँचा और उसने अंदर झांका।

अगले ही पल उसने अंदर का जो नजारा देखा, उसे देखकर उसके नेत्र फटे के फटे रह गये।

सरदारनी झोंपड़ी में थी और एक जंगली युवक के साथ सैक्स का तूफानी खेल खेल रही थी।

दोनों उस समय निर्वस्त्र थे।

शरीर पर कपड़े का एक रेशा तक नहीं।

मास्टर के देखते ही देखते उस जंगली युवक ने सरदारनी को अपनी दोनो बाहों में समेटकर किसी

हल्की-फुल्की गुड़िया की तरह उठा लिया और फिर उसे बड़ी बेदर्दी के साथ वापस नीचे पटक मारा।

सरदानी खिलखिलाकर हंसी।

तभी उस जंगली युवक ने उसके दोनों भारी-भरकम उरोजों को अपनी हथेलियों में कसकर भींचा, कसकर झिंझोड़ा।

सरदारनी फिर हंसी।

उसके दोनों उरोज पत्थर की तरह सख्त हो गये।

उनमें तनाव आ गया।

भूरे रंग के निप्पल अब और ज्यादा कठोर चुके थे।

"तुम सचमुच पूरी तरह जंगली हो।" सरदारनी ने मुस्कुराते हुए उस जंगली के मैले-कुचैले बाल बुरी तरह झिंझोड़े।

"वो तो मैं हूँ ही।" युवक भी हंसा- "पूरी तरह जंगली।"

"मगर तुम्हारा यह जंगलीपन मुझे पसंद है।" सरदारनी ने उसके गाल और सीने पर चुम्बन अंकित किया।

वह उसके ऊपर अपना बेपनाह प्यार लुटा रही थी। दोनों एक-दूसरे की बाहों में खेल रहे थे।

आनन्द ले रहे थे।

और !

उस बदजात औरत के उस खेल को देखकर मास्टर की खोपड़ी सुलगने लगी।

उसका पारा हाई होने लगा।

मास्टर को फौरन अपनी उस यहूदी प्रेमिका की याद ताजा हो आयी, जिसने उसे धोखा दिया था और किसी दूसरे युवक से शादी कर ली थी। वह सरदानी भी उसी की तरह बदजात थी।

यारमार।

मर्दखोर !

जिन्हें हमेशा अपने जिस्म की कामाग्नि शांत करने के लिए नये-नये मर्द चाहिये होते हैं।

जंगली युवक ने अब सरदारनी को बिल्कुल चित कर दिया और उसके ऊपर छाता चला गया।

उन दोनों के होंठ आपस में टकराये।

फिर उसके हाथ सरदारनी के चिकने एवं कठोर नितम्बों के उठान और ढलाव पर आवारगी करने लगे।

सरदानी के होठों से सिसकारियां छूटने लगी।

नाक से भभकारे निकले।

तभी उस जंगली युवक का हाथ सरसराता हुआ उसकी दोनों जांघों के बीच में पहुँच गया और वहाँ पहुँचते ही उसकी एक उंगुली ने बड़ी वहशियाना हरकत की।

सरदारनी के मुंह से चीख निकली।

उसने अपने दोनों जांघे कसकर भींची।

"क्या कर रहे हो ?" सरदारनी कुलबुलाई।

"क्यों ?" जंगली युवक ने प्यार से उसकी नाभि पर होंठ रखे- "क्या मेरा यह जंगलीपन पसंद नहीं।"

"तुम सचमुच मुझे पागल कर देते हो।" सरदानी ने बिल्कुल बच्चों की तरह उतावलापन दिखाते हुए अपने उरोज जोर-जोर से उसके चेहरे पर रगड़े।

जंगली युवक ने अब उसकी दोनों जांघें कसकर पकड़ ली और उन्हें खोल डाला।

दोनों जांघों के बीच में अब काफी फासला हो गया।

वह धीरे-धीरे 'अंत' की तरफ बढ़ रहे थे। सरदारनी की उंगलियां भी जंगली युवक के भिन्न-भिन्न अंगों पर सरसराने लगी थीं।

वह उसके बेतहाशा चुम्बन ले रही थी।

जंगली युवक के शरीर का ऐसा कोई 'अंग' नहीं बचा, जहाँ उसने अपने प्यार की मोहर न लगायी हो।

"सैक्स का जो बेपनाह सुख मुझे तुमसे हासिल हुआ है दोस्त, उस सुख से मैं पहले पूरी तरह अछूती थी।"

साली !

हर्राफा !

छिनाल !

मास्टर ने उस वक्त बड़ी मुश्किल से अपनी भावनाओं पर काबू किया।

वो उस जंगली युवक से ऐन वही बात बोल रही थी, जो उससे कहती थी।

तभी उसने अपने दोनों टांगें पूरी तरह चालीस डिग्री के कोण पर फैला दीं और उसी क्षण वह जंगली युवक भी उसके ऊपर सवार हो गया।

जब उससे आगे का नजारा देखना मास्टर के बसका न रहा, तो वह पीछे हट गया।

□□□

मास्टर वापस सरदार के झोंपड़े में पहुँचा और वहीं बिस्तर पर जाकर गिरा, जो सरदारनी का बिस्तर था।

कितनी ही देर वो आँख बंद किये बुरी तरह हांफता रहा।

उसकी कनपटी धधक रही थी। गर्दन की नसें तन गयी थी। दिमाग में लहू ऐसे खोल रहा था, जैसे किसी ने उसे गैस की भट्टी पर पकने के लिए रख दिया हो, मुट्ठी जकड़ गयी थीं। गुस्से से उसका बुरा हाल था।

मास्टर कितनी ही देर उसी पोजिशन में पकड़ा हांफता रहा।

तभी हल्की आहट की आवाज सुनकर मास्टर की आँख खुली।

उसने सामने देखा।

सरदारनी अभी-अभी झोंपड़े का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुई थी।

मास्टर को वहाँ देखकर वो धीरे से चौंकी। जबकि मास्टर अपलक उसके रूप का नजारा करता रहा।

कितनी खूबसूरत थी हरामजादी।

जिस्म का एक-एक पुर्जा सांचे में ढला हुआ।

पता नहीं भगवान चरित्रहीन औरतों को ही इतना खूबसूरत क्यों बनाता है ?

या फिर एक दूसरी बात भी मुमकिन है।

यह भी हो सकता है कि खूबसूरत औरतें ही चरित्रहीन होती हैं।

आखिर उसी खूबसूरती में ही तो वो मखनातीसी (चुम्बकीय) आकर्षण होता है, जिसके बलबूते पर वो अपने जिस्म की बड़ी दिलकश नुमायश करती हैं। जिसके बलबूते पर वो अपने आगे-पीछे अंधे-काने भिखारियों का मेला लगाये रखती हैं। जिसके पास कुछ होता ही नहीं, वो नुमायश क्या लगायेगा ? बांटेगा क्या ?

"इस तरह घूरकर क्यों देख रहे हो ?" सरदारनी मुस्कुराते हुए बोली- "क्या आज आँखों हीं आँखों में हजम करने का इरादा है।"

"हाँ।" मास्टर बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया- "आज तुम्हें हजम करने का इरादा है।"

"फिर तो आज तुम्हारी यह तमन्ना पूरी होने वाली नहीं है।"

"क्यों ?"

"क्योंकि इस वक्त मैं पूरी तरह थकी हुई हूँ।" वो इठलाते हुए बोली- "फिलहाल तो मेरी बस एक ही तमन्ना हो रही है। मैं धड़ाम से बिस्तर पर जाकर गिरूं और सो जाऊं।"

"इस समय कहाँ से आ रही हो ?"

"तुम्हें पता नहीं, बस्ती में एक बूढ़े आदमी की मौत हो गयी है। उसी को जरा देखने गयी थी।"

झूठ भी कितना सफाई से बोल रही थी साली !

अगर मास्टर ने उस छिनाल औरत की स्याह-सफेद करतूते खुद अपनी आँखों से न देखी होतीं, तो क्या वह उसकी बात पर यकीन न कर लेता ?

"अब तुम जाओ यहाँ से।" वह धम्म से अपने बिस्तर पर जाकर ढेर हो गयी- "और मुझे सोने दो।"

"सोओगी तो तुम जरूर, लेकिन उससे पहले एक काम करोगी।"

"क्या ?"
सरदारनी ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।
"अपने जिस्म से यह तमाम कपड़े उतारोगी।"
"कैसी बात कर रहे हो, कपड़े उतारकर भी कहीं कोई सोता है ?"
"जंगली सोते हैं।"
"मैं दूसरे जंगलियों जैसी नहीं हूँ।" सरदारनी बोली।
"आज तुम भी वैसी ही बनोगी।"
"लेकिन...।"
"बहस में वक्त बर्बाद मत करो।" मास्टर थोड़ी सख्त जबान में बोला- "जो मैं कह रहा हूँ, करो।"
"आज तुम्हारे इरादे कुछ नेक नजर नहीं आते।" सरदारनी दिलकश अंदाज में ही मुस्कुराई।
"ठीक कहा तुमने।"
"अरे बाबा, मैंने कहा न, आज मैं बहुत थकी हुई हूँ।"
"मैं आज तुम्हारी सारी थकान दूर कर दूंगा।"
"कमाल है ! अगर मेरे कपड़े उतारते ही सरदार लौट आया तो ?"
"वो नहीं लौटेगा।" मास्टर पहले जैसे ही जिद्दी लहजे में बोला- "वो कहकर गया है, सुबह तक उसकी वापसी होगी।"
"यानि तुम आज मानने वाले नहीं हो ?"
"नहीं।"
"ठीक है बाबा।" सरदारनी ने हथियार डाले- "तो लो, तुम भी अपने दिल की हसरत पूरी करो।"
फिर सरदारनी ने एक-एक करके अपने जिस्म से कपड़े उतारने शुरू किये।
जल्द ही वो बिल्कुल निर्वस्त्र हो गयी।
उसकी कंचन सी काया से कपड़े जुदा हुए, तो वह और भी ज्यादा हुस्न की मल्लिका नजर आने लगी।
अब उसके रूप-लावण्य की वो पूरी खुली दुकान मास्टर के सामने थी, जिसके बल पर वो सारा खेल, खेलती थी। जिसकी वजह से मर्द उसके सामने घुटनों-घुटनों तक लार टपकाते थे।
मास्टर ने फौरन अपनी कमर के साथ बंधा 'हंसिया' खींचकर बाहर निकाल लिया।
"इस हंसिये से क्या करोगे ?" वो शरारती ढंग से हंसी- "क्या अब तुम्हारे पास कुछ करने के लिए हंसिया ही बचा है ?"
फौरन वो हंसिया बड़ी द्रुतगति के साथ चला।
सरदारनी की वीभत्स चीख निकल गयी।

□□□

चीख इतनी करुणादायी और कर्कश थी कि उस चीख की आवाज ने गहरी नींद सोते योद्धाओं को भी जगा डाला और वह दौड़ते हुए जल्दी बाहर आये। बाहर का दृश्य बड़ा दहशतनाक था।
मास्टर उस समय बिल्कुल दरिंदा नजर आ रहा था।
उसने हंसिये से सरदारनी के गुप्तांग को बुरी तरह फाड़ डाला था। छातियां उधेड़ डाली थीं और अब वो हंसिये की पैनी धार से उसके बेजान निप्पल खरोंच रहा था। सरदारनी का पूरा शरीर खून में लिथड़ा हुआ था और वो मर चुकी थी।
"य... यह तुमने क्या किया ?" जैक क्रेमर ने चीखते हुए मास्टर को बुरी तरह झिझोंड़ा- "सरदारनी को क्यों मार डाला ?"
"इस जैसी त्रिया चरित्र औरत का यहीं अंजाम होना था, मैंने इसके साथ न्याय किया है।"
"यह आदमी पागल है।" रोनी के शरीर में झुरझुरी दौड़ी- "यह आज तक इसी तरह कई औरतों को जहन्नुम पहुँचा चुका है।"
"या मेरे खुदा !" अब निदाल ने भयभीत होकर दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ा- "अब हम सरदार को क्या जवाब देंगे ? इस आदमी ने अपने जरा से गुस्से की बदौलत कितना बड़ा बवाल पैदा कर दिया है।

अगर सरदार को इसकी हरकतों के बारे में पता चल गया, तो कमाण्डर करण सक्सेना के साथ-साथ बर्मा की पूरी जंगली कौम हमारी दुश्मन हो जायेगी।"

"मेरे बाप !" हवाम बोला- "इतना बड़ा काम करने से पहले थोड़ा अकल का तो इस्तेमाल कर लेता। पहले ही क्या हमारे ऊपर कुछ कम बड़ी आफत टूटी हुई है।"

"मैं एक योद्धा हूँ ।" मास्टर फुंफकारा- "और मैं वही करता हूँ, जो मेरा दिल इजाजत देता है।"

फिर मास्टर ने अपने खून से सने हंसिये को मृत सरदानी के नितम्बों से रगड़कर साफ किया और उसके बाद टहलता हुआ झोंपड़ी के अंदर वाले हिस्से में चला गया।

उसकी हरकतें ऐसी थीं, जैसे कुछ हुआ ही न हो। योद्धाओं की निगाह दोबारा सरदारनी की लाश पर जाकर ठहर गयी।

लाश उस समय भयानक नजर आ रही थी। क्योंकि मास्टर ने उसके ऊपर एकाएक आक्रमण किया था, इसलिए उसकी आखें दहशत के कारण फटी की फटी रह गयी थीं। मुंह जो चीखने के लिए खुला, तो वह अंत तक खुला हुआ था।

"सचमुच सरदारनी को मारकर मास्टर ने बहुत भयानक गड़बड़ कर दी है।" माइक बोला।

"अब यह सोचो-फिलहाल हम लोग क्या करें ।" जैक क्रेमर ने आंदोलित मुद्रा में कहा- "अगर ऐसी परिस्थिति में सरदार लौट आया, तो हमारे ऊपर कहर टूटने में फिर कोई ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।"

"मैं एक तरीका बताता हूँ ।" रोनी ने थोड़े उत्साहपूर्वक कहा।

"क्या ?"

"इससे पहले कि सरदार वापस लौटे, हमें इस लाश को कहीं ठिकाने लगा देना चाहिये।"

सब योद्धाओं की आँखें एक-दूसरे से टकराई।

उनकी आँखों में हल्की उम्मीद की किरण रोशन हुई। रोनी के प्रस्ताव में जान थी।

"आप लोग मानें या न मानें ।" रोनी बोला- "लेकिन फिलहाल अपने बचाव का हमारे पास यही एक मुनासिब तरीका है।"

"मगर जब सरदार अपनी बीवी के बारें में पूछेगा।" हवाम बोला- "तब हम उसे क्या जवाब देंगे ?"

"तब की तब सोंचेगे ।" रोनी ने कहा- "फिलहाल मास्टर की बेवकूफी के कारण खतरे की जो तलवार हमारे सिर पर आकर लटक गयी हैं, हमें उससे तो छुटकारा मिलेगा। वरना सोचो इस जंगल के अंदर कमाण्डर और तमाम जंगली लोग हमारे दुश्मन होंगे, जबकि जंगल के बाहर बर्मा की पूरी फौज हमारे मुकाबले पर होगी। फिर ऐसे माहौल में हम लोगों के ज्यादा देर तक जिंदा रहने की संभावना नहीं है।"

सब यौद्धाओं के शरीर में सिहरन दौड़ी।

वाकई !

मास्टर ने सरदारनी की हत्या करके एक बड़ा फसाद पैदा कर दिया था।

"लेकिन हम लाश को किस जगह ठिकाने लगायेंगे ?" जैक क्रेमर ने पूछा।

"वह कौन-सा मुश्किल काम है। इस झोंपड़ी के पीछे ही सन्नाटे भरा इलाका है, हम वहीं गड्ढा खोदकर लाश ठिकाने लगा सकते हैं।"

सब यौद्धाओं ने फिर एक-दूसरे की तरफ देखा।

"मैं समझता हूँ ।" अबू निदाल धैर्यपूर्वक बोला- "रोनी बिल्कुल ठीक कह रहा है। फिलहाल लाश को ठिकाने लगाने के सिवाय हमारे सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसके अलावा मैं एक बात और भी कहना चाहूँगा।"

"क्या ?"

"जब हमने लाश को ठिकाने लगाना ही है, तो हमें सोचने-विचारने में भी ज्यादा वक्त बर्बाद नही करना चाहिये। यह काम जितनी जल्दी निपटे, उतना बेहतर होगा।"

"सबसे पहले तो लाश ही यहाँ से हटाओ।"

"चलो, लाश मैं हटाता हूँ ।" रोनी शीघ्रतापूर्वक लाश की तरफ बढ़कर बोला-"कोई जरा हाथ लगाने में मेरी मदद करो।"

"मैं मदद करता हूँ ।" माइक भी लाश उठाने के लिए रोनी की तरफ बढ़ा।

इस बीच जैक क्रेमर जल्दी-जल्दी वहीं पड़े सरदारनी के कपड़े उठाने लगा।

"उसकी कोई भी निशानी यहाँ छूटनी नहीं चाहिये।"
"ऐसा ही होगा।" रोनी बोला।
"और गहरा गड्ढा खोदने के लिए हम फावड़ा कहाँ से लायेंगे ?"
"वह कोई प्रॉब्लम नहीं है।" हवाम ने कहा- "फावड़ा मैंने थोड़ी देर पहले अंदर ही देखा था, मैं अभी उसे उठाकर लाता हूँ।"
हवाम फावड़ा लाने के लिए झोपड़ी के अंदर की तरफ बढ़ा।
एकाएक वहाँ सब सक्रिय हो उठे थे।
"और उस मास्टर के बच्चे को भी बाहर निकालकर ले आना।" जैक क्रेमर कुत्सित मुद्रा में बोला- "हमारी जान को झंझट तो उसने पैदा कर ही दिया है, अब कम से कम उस झंझट को निपटाने में तो हमारी कुछ हैल्प करे।"
"मुझे बाहर लाने की कोई जरूर नहीं है।" तभी मास्टर पर्दा हटाकर वहाँ आया- "मैं खुद आपकी मदद के लिए हाजिर हूँ।"
उस समय मास्टर काफी सहज दिखाई दे रहा था।
"बहुत-बहुत मेहरबानी जनाब ?" अबू निदाल व्यंग्यपूर्वक बोला- "आपकी इस मदद को हम जिंदगी में कभी नहीं भूलेंगे।"
"तुम शायद मेरा मजाक उड़ा रहे हो।" मास्टर की त्यौरियों पर बल पड़े।
"नहीं, मेरी इतनी हिम्मत कहाँ ! मैं तो आपकी तारीफ कर रहा हूँ जनाब।"
"अब बहस में वक्त बर्बाद मत करो।" जैक क्रेमर गुर्रा उठा- "और जल्दी-जल्दी हाथ चलाओ।"
तभी हवाम भी दौड़कर अंदर से फावड़ा निकाल लाया।

□□□
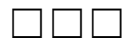
एक घण्टा गुजर गया।
सभी छः योद्धा इस समय झोंपड़े के उसी अंदर वाले हिस्से में लेटे थे, जहाँ उनके पहले ही बिस्तर कर दिये गये थे। इस समय वहाँ का माहौल बड़ा सस्पैंसफुल था।
पिन ड्रॉप साइलेंस जैसी स्थिति !
सरदारनी की लाश वो सब मिलकर ठिकाने लगा चुके थे। झोंपड़े के पीछे ही उन्होंने एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा था और उसी गड्ढे में उन्होंने लाश को दबा दिया। उसी गड्ढे में सरदारनी के कपड़े वगैरा सब दफना दिये गये। इसके अलावा झोंपड़े में-से सारा खून भी अच्छी तरह साफ कर दिया गया था। फिलहाल झोंपड़े के अंदर ऐसा कोई चिन्ह शेष नहीं बचा था, जिससे साबित होता कि वहाँ थोड़ी देर पहले ही कोई मरा है।
धीरे-धीरे दो घण्टे का समय और गुजर गया।
यही वो क्षण था, जब झोंपड़े का बाहर वाला दरवाजा खुलने की आवाज हुई।
"लगता है, सरदार क्रियाकर्म में भाग लेकर वापस आ गया।"
रोनी तेजी से फुसफुसाकर बोला।
फिर भारी-भरकम कदमों की आवाज।
"सरदार ही है।" अबू निदाल ने भी उसके 'सरदार' होने की पुष्टि की।
"सब अपनी-अपनी आँखें बंद कर लो।" जैक क्रेमर शीघ्रतापूर्वक बोला- "सरदार को इस बात का जरा भी शक नहीं होना चाहिये कि हम लोग जाग रहे हैं।"
सबने आदेश का पालन किया।
पलक झपकते ही उन सबकी आँखें बंद हो गयीं और ऐसा प्रतीत होने लगा, जैसे वह सचमुच गहरी नींद में हों।
बाहर से अब सरदार के चलने की आवाजें आ रही थीं। फिर दोबारा दरवाजा खुलने की आवाज। शायद वो बड़ी बेकरारी से सरदारनी को तलाश कर रहा था।
"क्रेमर साहब !" फिर वो जोर-जोर से चीखता हुआ उसी तरफ बढ़ा- "क्रेमर साहब !"
वो अंदर आ गया।

“क्रेमर साहब !”
“क... क्या हो गया ?” जैक क्रेमर ने थोड़ा हड़बड़ाकर आँखें खोलीं और वह उठा।
“ग्रेन्डी कहाँ गयी ?”
“ग्रेन्डी !”
“मेरी बीवी।”
“ओह !”
तो ‘ग्रेन्डी’ उस सरदारनी का नाम था।
“क्या ग्रेन्डी तुम्हारे साथ बूढ़े के अंतिम संस्कार में भाग लेने नहीं गयी थी ?” जैक क्रेमर बोला।
“नहीं, मैं तो उसे यहीं छोड़कर गया था। रात के समय अगर कोई जरूरी काम आ जाता है, तो वो कभी भी मेरे साथ बाहर नहीं जाती।”
“फिर तो वो बाहर झोंपड़े में ही कहीं होगी।”
“बाहर ही तो नहीं है क्रेमर साहब !”
उसी क्षण बाकी योद्धाओं ने भी अपनी आँखें मलते हुए इस तरह उठने का उपक्रम किया, जैसे उनकी बातचीत से उनकी नींद में भी विघ्न पड़ गया हो।
“क्या हो गया ?” हवाम थोड़ा कुपित भाव से बोला।
“ग्रेन्डी गायब है।”
“ग्रेन्डी, कौन ग्रेन्डी ?” रोनी चिहुंका।
“अरे सरदारनी, और कौन !”
बाकी योद्धओं के चेहरे पर भी हैरानी के भाव तैर गये।
वह सब लाजवाब अभिनय कर रहे थे।
“वो भला कहाँ गायब हो सकती हैं।” अबू निदाल बोला- “जरूर बस्ती में यहीं कहीं चली गयी होंगी। यह भी मुमकिन है, वह उसी बूढ़े के घर चली गयी हों, जिसकी मौत हुई है।”
“हाँ !” जैक क्रेमर की गर्दन भी स्वीकृति में हिली- “यह संभव है। वरना भला ग्रेन्डी और कहाँ जा सकती है ?”
“लेकिन उसी बूढ़े के घर से तो मैं आ रहा हूँ।”
“शायद ऐसा हुआ हो !” मास्टर ने एक नई संभावना व्यक्त की- “तुम उधर से आये हो और वो इधर से गयी हो।”
सरदार को बात कुछ जम नहीं रही थी।
पहले तो कभी ग्रेन्डी इतनी रात को झोंपड़ी से गायब नहीं हुई थी।
यह इस तरह का पहला वाकया था।
और वो वाकया उसके दिल में दहशत पैदा कर रहा था। सरदार को लग रहा था, जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ है।
“ठीक है।” सरदार परास्त लहजे में बोला- “मैं ग्रेन्डी को उस बूढ़े के घर भी देखकर आता हूँ।”
“मैं भी तुम्हारे साथ चलूं ?” मास्टर फौरन अपनी जगह से उठकर बोला। फिर वो हंसिये को अपनी कमर के साथ बांधने लगा।
“नहीं, तुम्हारी जरूरत नहीं हैं।”
“फिर भी मैं चलता हूँ, शायद तुम्हारी कुछ मदद हो जाये।”
“जैसी तुम्हारी इच्छा।”
मास्टर, सरदार के साथ ग्रेन्डी को ढूंढने के लिये झोंपड़े से बाहर निकल गया।
“देखो तो साले को !” जैक क्रेमर, मास्टर के जाते ही फुंफकारा- “सरदार के सामने कैसा भला बनके दिखा रहा है। ग्रेन्डी को ढूंढने गया है, जैसे अभी सच में ही उसे ढूंढकर लायेगा।”
“मैं तो एक दूसरी बात सोच रहा हूँ ।” माइक ने कहा।
“क्या ?”
“सरदारनी की मौत की यह बात आखिर कब तक छुपेगी ?”
“देखो, कब तक छुपती है। जब नहीं छुपेगी, तब कोई दूसरा रास्ता खोजेंगे।”

□□□

सरदार और मास्टर, वह दोनों पूरी बस्ती छानकर कोई डेढ घण्टे में वापस लौट आये।

तब तक दिन का उजाला धीरे-धीरे चारों तरफ फैलने लगा था। इसके अलावा तब तक यह बात भी पूरी बस्ती में फैल चुकी थी कि ग्रेन्डी गायब है। सरदारनी के गायब होने की उस खबर ने तमाम जंगलियों को घोर आश्चर्य में डाल दिया। वह सब धीरे-धीरे अब सरदार के झोंपड़े के बाहर जमा होने लगे।

उन जंगलियों में वह युवक भी शामिल था, जिसने रात ग्रेन्डी के साथ फ्रीस्टाइल कुश्ती लड़ी थी।

वह उस समय कुछ ज्यादा भयभीत था।

"ग्रेन्डी के बारे में कुछ मालूम हुआ ?" उन दोनों के लौटते ही जैक क्रेमर ने पूछा।

"नहीं, हम सारी बस्ती छान चुके हैं।" सरदार का शुष्क स्वर- "लेकिन उसका कहीं कुछ पता नहीं।"

सरदार उस वक्त बहुत ज्यादा परेशान नजर आ रहा था।

"फिर कहाँ गयी ग्रेन्डी ?"

"कुछ समझ नहीं आ रहा, वो कहाँ गयी। मैं तो जितना सोच रहा हूँ, उतनी ही मेरी परेशानी बढ़ रही है।"

"सरदार !" तभी झोंपड़े के बाहर खड़े कुछ जंगली नौजवान बोले- "हमारा ख्याल है, हमें सरदानी को जंगल में भी ढूंढने जाना चाहिये।"

"जंगल में क्यों ?"

"शायद वो रात किसी काम से जंगल में चली गयी हों और वहीं किसी जंगली जानवर ने उनके ऊपर हमला कर दिया हो।"

"लेकिन सवाल तो ये है मेरे भाई !" सरदार अवसादपूर्ण लहजे में बोला- "ग्रेन्डी भला रात के समय बस्ती छोड़कर जंगल में जायेगी क्यों ?"

"फिर जंगली नौजवानों का एक बड़ा ग्रुप ग्रेन्डी को ढूंढने के लिये जंगल में भी चला गया।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना जंगल में 'चीता चाल' से दौड़ता-दौड़ता जब थक गया, तो वह एक पेड़ के नीचे इत्मीनान से बैठ गया।

उसके बाद उसने 'मिल्क पाउडर' को थोड़े से पानी में घोलकर पिया और कुछ सूखे मेवे खाये।

कमाण्डर करण सक्सेना की चिन्तायें अब बढ़ने लगी थीं।

उसे महसूस हो रहा था कि शीघ्र ही विपदाओं का पहाड़ उसके ऊपर टूटने वाला है।

सबसे ज्यादा फिक्र उसे खाद्य सामग्री को लेकर थी, जो धीरे-धीरे खत्म होती जा रही थी। इसीलिये वो उसका कम प्रयोग कर रहा था। परन्तु फिर भी पेट की अग्नि शान्त करने के लिये उसका कुछ-न-कुछ सेवन करते रहना तो जरूरी था।

इसीलिये कमाण्डर करण सक्सेना के शरीर में अब कुछ कमजोरी भी आने लगी थी।

पूरा दिन उसे योद्धाओं को तलाशते-तलाशते हो गया कि वह हैडक्वार्टर से फरार होने के बाद जंगल में किस जगह जाकर छिपे हैं।

मगर योद्धाओं का उसे कहीं कुछ पता न चला।

कमाण्डर करण सक्सेना ने वहीं बैठे-बैठे जंगल का पूरा नक्शा खोलकर अपने सामने फैला लिया और फिर उन छोटी-छोटी बस्तियों को तलाशने लगा, जो जंगल के बीच में बनी हुई थीं और जहाँ बर्मा के जंगली लोग रहते थे।

"योद्धा इन्ही में से किसी एक बस्ती में होने चाहियें।" कमाण्डर होंठो-ही-होंठों में बुदबुदाया।

उसकी आँखें नक्शे पर दौड़ती रहीं।

जल्द ही उसे जंगल में ऐसी कोई दस बस्ती नजर आ गयीं, जहाँ जंगली लोग रहते थे।

"दस बस्ती। इनमें अलग-अलग जाकर योद्धाओं को तलाश करना भी कोई आसान काम न होगा।" कमाण्डर ने सोचा- "क्योंकि सारी बस्ती एक-दूसरे से काफी-काफी फासले पर बनी हुई हैं।"

"फिर क्या किया जाये ?"

कमाण्डर के दिमाग में उलझनें बढ़ रही थीं।

वह उन योद्धाओं को जितना जल्द-से-जल्द खत्म कर देना चाहता था, उतना ही उसके और योद्धाओं के बीच फासला बढ़ रहा था। कमाण्डर ने नक्शा फोल्ड करके वापस अपने हैवरसेक बैग में रख लिया।

कुछ क्षण वो वहीं बैठा-बैठा अपनी आगामी योजनाओं पर विचार करता रहा और उसके बाद उसने नजदीक की ही एक बस्ती की तरफ दौड़ना शुरू किया।

उसके पास पीने का पानी बिल्कुल खत्म हो चुका था। इसलिये दौड़ते हुए उसकी निगाहें पानी को भी तलाश रही थीं, जहाँ से वो अपनी कैनें भर सके।

कमाण्डर दौड़ता रहा।

दौड़ता रहा।

दिमाग में नये-नये विचार जन्म लेते रहे।

वो अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे एक झरना दिखाई पड़ा, जो पहाड़ की एक ऊंची अट्टालिका से होकर नीचे गिर रहा था। उस झरने का पानी काफी स्वच्छ और निर्मल था।

कमाण्डर फौरन उस झरने के करीब पहुँचा और उसने अपने हैवरसेक बैग में से निकालकर दो कैनें भरीं।

फिर उसने थोड़ा पानी पिया भी।

पानी पीते हुए कमाण्डर करण सक्सेना को मिलिट्री का एक नियम याद आया। अगर रणभूमि में कोई सैनिक अपनी लापरवाही से पानी की बोतल नहीं भरता है, तो वह चाहे कितना ही अच्छा सैनिक क्यों न हो, उसे कोर्ट मार्शल करके मिलट्री से निकाल दिया जाता है। उसके बारे में कहा जाता है, जो सोल्जर अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी जरूरत का ध्यान नहीं रख सकता, वह अपने देश का ध्यान क्या रखेगा।

बात वाकई ठीक थी।

पानी जिंदगी की सबसे बड़ी जरूरत थी।

पानी पीने के बाद कमाण्डर ने अपना आगे का सफर दोबारा शुरू किया।

□□□

पांच दिन और गुजर गये।

वह पांच दिन कमाण्डर के ऊपर हद से ज्यादा भारी गुज़रे।

तीसरे दिन ही उसकी खाद्य सामग्री पूरी तरह समाप्त हो चुकी थी। सूखे मेवे से लेकर मिल्क पाउडर तक उसके पास कुछ नहीं बचा। आगामी दो दिन उसने सिर्फ एक खरगोश को खाकर गुजारे, जिसे उसने जंगल में से पकड़ लिया था और सूखी लकड़ियों पर उसका मांस भूनकर खाया।

उस मासूम जानवर को मारते हुए उसके हाथ कांपे।

मगर मजबूरी थी। इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता न था।

इन पांच दिनों में वो बहुत चोरी छिपे जंगल की चार बस्तियों को भी देख चुका था, परंतु असाल्ट ग्रुप के योद्धा उसे वहाँ कहीं नजर न आये।

उधर !

वह योद्धा जिस बस्ती में ठहरे हुए थे, पांच दिन वहाँ भी बड़ी सनसनीखेज स्थिति में गुजरे।

जबसे ग्रेंडी गायब हुई थी, तबसे जंगलियों का सरदार तो लगभग बिल्कुल ही पागल हो गया था।

वह अक्सर रात को भी सोते-सोते चीखकर उठ जाता और फिर 'ग्रेंडी' को जोर-जोर से आवाज देता हुआ उसे ढूंढने निकल जाता। वह जंगल में दूर-दूर तक निकल जाता।

एक बार तो वह रात के समय ग्रेंडी को ढूंढता-ढूंढता एक जंगली गुरिल्ले की मांद में ही जा घुसा, जहाँ गुरिल्ले ने उसके ऊपर हमला बोल दिया।

उस रात सरदार बस मरने से बाल-बाल बचा।

ग्रेन्डी के बाद उन योद्धाओं को भी भोजन की किल्लत का सामना करना पड़ा था।

यूं तो कई जंगली औरतें उनके लिए भोजन पकाने को तैयार थीं, लेकिन उनका पकाया भोजन योद्धाओं को पसंद न था। तब हवाम ने वो जिम्मेदारी संभाली।

हवाम !
जो एक चीनी था।
वैसे भी चीनी भोजन पकाने में माहिर होते हैं।
अलबत्ता उनके कपड़े वगैरा अभी भी जंगली औरतें धोती थीं।

□□□

पूरी बस्ती में रात की गहरी निस्तब्धता फैली थी।
कोई एक बजे का समय था।
अपने-अपने झोंपड़े में जहाँ तमाम जंगली गहरी नींद सोये हुए थे, वहीं 'असाल्ट ग्रुप' के सभी छः यौद्धाओं की आँखों में उस वक्त नींद नहीं थीं। वह सरदार के झोंपड़े मे सिर-से-सिर जोड़े बैठे थे।
सरदार झोंपड़े में नहीं था।
वह मुश्किल से आधा घण्टा पहले ही 'ग्रेन्डी-ग्रेन्डी' करके चीखता हुआ उठा था और फिर उसी प्रकार उसे आवाज देता हुआ झोंपड़े से बाहर निकल गया।
"इस बेचारे सरदार के साथ सचमुच बहुत बुरा हुआ है।" अबू निदाल थोड़ा अफसोसनाक लहजे में बोला।
"कुछ भी बुरा नहीं हुआ।" मास्टर झल्लाया- "सब अपनी-अपनी किस्मत की बात है।"
"लेकिन तुम शायद भूल रहे हो।" रोनी बोला- "कि इसकी ऐसी बुरी किस्मत खुद तुमने लिखी है। अगर तुम सरदारनी को न मारते, तो आज यह इस पागलों जैसी हालत में न पहुँचता।"
"और यह क्यों नहीं कहते कि मैंने ऐसी चरित्रहीन औरत से पीछा छुटाकर इसका भला किया है।"
"अब इन सब बातों को छोड़ो।" जैक क्रेमर उन सबसे ही थोड़ी सख्त जबान में बोला- "जो हादसा घट चुका है, अब उस पर जिरह करने से कोई फायदा नहीं है। इससे हम लोगों के बीच बेमतलब तल्खाहट ही और बढ़ेगी। माइक !" फिर जैक क्रेमर ने गुमसुम से बैठे माइक की तरफ देखा- "तुम शाम के वक्त कह रहे थे कि तुम्हें कुछ जरूरी बात करनी है।"
"यस सर !" माइक थोड़ा सचेत होता हुआ बोला- "मुझे सचमुच कुछ जरूरी बात करनी है। मगर मैं अपनी बात तो तब कहूँ, जब यह लोग पहले आपस में झगड़ना बंद करें।"
"इन्होंने झगड़ना बंद कर दिया। तुम जो कहना चाहते हो, कहो।"
"सर !" माइक बोला- "हम लोगों को इस बस्ती में रहते हुए आज पांच दिन गुजर चुके हैं, पांच दिन ! मैं समझता हूँ, जंगल में भटकते-भटकते कमाण्डर करण सक्सेना की फिलहाल काफी बुरी हालत हो चुकी होगी और वो समय आ गया है, जब हमें कमाण्डर के ऊपर हमला करना चाहिये। अब यहाँ ज्यादा समय गुजारने से कोई फायदा नहीं है।"
"वाकई सर !" हवाम जो अभी तक चुप बैठा था, वह भी बोला- "हमें सचमुच अब कमाण्डर करण सक्सेना पर हमला कर देना चाहिये।"
जैक क्रेमर ने जैसे ही कुछ कहने के लिए मुंह खोला, तभी झोपड़े में बाहर हल्की आहट की आवाज सुनकर वो चौंका।
"य... यह कौन है ?" जैक क्रेमर फुसफुसाया।
"लगता है, सरदार वापस आ गया है।"
"लेकिन सरदार इतनी जल्दी वापस कैसे आ सकता है ?" जैक क्रेमर बोला।
"मैं देखता हूँ।"
अबू निदाल जल्दी से अपनी जगह छोड़कर खड़ा हुआ और बाहर की तरफ बढ़ा।
पर्दे तक जाकर ही वो वापस लौट आया। उसके चेहरे पर रहस्यमयी भाव फैले हुए थे।
"क्या हुआ ?"
"सरदार ही है।" वो बहुत धीमी आवाज में फुसफुसाया- "फावड़ा लेकर वापस जा रहा है।"
"हाँ।"
सब यौद्धाओं की निगाहें एक-दूसरे से टकराई।

"लेकिन इतनी रात को फावड़े से वो क्या करेगा ?" रोनी स्तब्ध भाव से बोला।
"चलो !" जैक क्रेमर तुरंत अपने स्थान से खड़ा हुआ- "सब उसका पीछा करते हैं।"
फौरन सारे योद्धा खड़े हो गये और बाहर की तरफ बढ़े।
सरदार झोंपड़े से निकल चुका था और अब पीछे जंगल की तरफ बढ़ रहा था।
"यह कहाँ जा रहा है सर ?"
"खामोशी से देखते रहो।"
सरदार फावड़ा हाथ में झुलाता हुआ झोंपड़े के बिल्कुल पीछे पहुँच गया और वहाँ जाकर एक जगह खुदाई करने लगा।
"अरे !" अबू निदाल के नेत्र दहशत से बुरी तरह फटे- "यह तो बिल्कुल उसी जगह खुदाई कर रहा है, जहाँ हमने सरदारनी की लाश को दफन किया था।"
"हाँ।"
सब यौद्धाओं के शरीर में झुरझुरी दौड़ी।
"हमें इसे रोकना चाहिये।" मास्टर ने झटके के साथ अपना 'हंसिया' कमर से अलग किया।
"नहीं।" जैक क्रेमर ने उसका हाथ वहीं पकड़ा- "अब उसे रोकने से कोई फायदा नहीं।"
"लेकिन...।"
"उसे शक हो चुका है। जरूर गड्ढा भरने में हमसे कोई चूक हुई है या फिर मिट्टी हमने ढंग से नहीं भरी। अगर ऐसे में हम उसे रोकेंगे, तो उसका शक और भी बढ़ेगा।"
"फिर हम क्या करें ?"
योद्धाओं की आतंकित निगाहें पुनः एक-दूसरे से टकराईं।
"शांति से देखते रहें, वो कहाँ तक खुदाई करता है।"
"मैं अभी आया।" एकाएक अब निदाल व्यग्रतापूर्वक बोला।
"तुम कहाँ जा रहे हो।"
"बस आया।"
अबू निदाल वापस झोंपड़े की तरफ दौड़ पड़ा।
कोई कुछ नहीं समझ सका। वो क्या करने गया है।
सरदार काफी जल्दी-जल्दी फावड़ा चला रहा था। हालांकि उन्होंने लाश को बहुत नीचे दफन किया था। परन्तु सरदार ने गड्ढे को वहीं तक खोद डाला और सरदारनी की बिल्कुल निर्वस्त्र लाश को उसमें से खींचकर बाहर निकाल लिया।
सरदारनी की लाश देखते ही उसके सब्र का बांध टूट गया और वो उससे लिपटकर बहुत जोर-जोर से हिड़कियों के साथ रोने लगा।
उसी क्षण उसने कुछ कदमों की आवाजें सुनी, जो उसके करीब आ रही थीं।
सरदार ने रोते हुए ही अपनी गर्दन ऊपर उठाई। वह सभी छ योद्धा थे, जो उसके चारों तरफ आकर खड़े हो गये। अबू निदाल भी उनमें शामिल था। वह दरअसल झोंपड़े में-से अपनी 'स्नाइगर राइफल' लेने गया था।
अबू निदाल एक पाकिस्तानी अपराधी था और बहुत खतरनाक निशानेबाज था। ज्यादातर वो अपनी 'स्नाइपर' राइफल से ही गोली चलाना पसंद करता था और वो आदमी की गर्दन के एक ऐसे खास प्वाइंट पर गोली मारता था कि उसकी गर्दन धड़ से कटकर हवा में ऊपर उछल जाती।
"क्रेमर साहब।" यौद्धाओं को देखते ही सरदार की रूलाई और भी ज्यादा फूट पड़ी- "किसी ने मेरी ग्रेन्डी को मार डाला। यह देखिए, किसी ने मेरी प्यारी ग्रेन्डी का क्या हश्र किया है।"
सरदार जोर-जोर से हिड़कियों के साथ रो रहा था।
उसकी रूलाई की आवाजें तेज होने लगी।
मगर यौद्धा चुप थे।
खामोश !
"अ... आप लोग कुछ बोलते क्यों नहीं ?" सरदार ने एकाएक शक भरी निगाहों से उन सबकी तरफ देखा- "अ... आप खामोश क्यों हैं ?"

फिर चुप्पी।

"ल...लगता है।" सरदार ने अब लाश को अपनी गोद में-से नीचे रख दिया- "लगता है, मेरी ग्रेन्डी का यह हश्र आपमें से ही किसी यौद्धा ने किया है।"

"हाँ, सरदार !" जैक क्रेमर दो कदम आगे बढ़ा- "मुझे अफसोस है कि यह सब हमारी वजह से हुआ है।"

"साले हरामजादे।"

सरदार एकदम झटके के साथ खड़ा हो गया और फावड़ा लेकर बड़े खूनी अंदाज में जैक क्रेमर की तरफ झपटा।

मगर वो जैक क्रेमर के करीब भी पहुँच पाता, उससे पहले ही अबू निदाल ने अपनी 'स्नाइपर' राइफल उसकी तरफ तान दी और ट्रेगर दबा दिया।

सरदार की करूणादायी चीख निकल गयी।

स्नाइपर राइफल की गोली उसकी गर्दन के ठीक 'खास प्वाइंट' पर जाकर लगी।

गोली लगी और फिर गर्दन में अंदर-ही-अंदर घूमती चली गयी।

आश्चर्य !

सरदार की गर्दन सचमुच धड़ से अलग होकर हवा में उछलती हुई नजर आयी, फिर वो गड्ढे के पास जाकर गिरी।

फिर उसका धड़ भी गिरा।

"किस्सा खत्म !" जैक क्रेमर ने गहरी सांस छोड़ी- "यह बेचारा भी पिछले पांच दिन से बहुत परेशान था। अब इसे भी सकुन मिल जायेगा।"

"अब तो आप समझ ही गये होंगे।" अबू निदाल अपनी 'स्नाइपर' राइफल नीचे करता हुआ बोला- "कि मैं झोंपड़े में क्या करने गया था।"

"समझ गये।"

सब प्रशंसनीय निगाहों से अबू निदाल की तरफ देखने लगे।

□□□

दिन निकल आया था।

बस्ती की वो सुबह बड़ी दुःख से भरी हुई थी।

सारे जंगली बस्ती में एक ही जगह जमा थे और उनके बीच सरदार का गर्दन कटा शव रखा था। उस समय तमाम जंगलियों की आँखों में आंसू थे।

उनमें ऐसा कोई जंगली न था, जो न रो रहा हो।

"मुझे बड़ा अफसोस है।" जैक क्रेमर उन सबके बीच खड़ा 'बर्मी' जबान में बोल रहा था- "कि रात कमाण्डर करण सक्सेना ने यह सब किया। हमें मालूम ही न हुआ, वो शैतान कब बस्ती के अंदर घुस आया और सरदार को मारकर भाग खड़ा हुआ।"

"अगर हमें उसके आने की जरा भी भनक मिल जाती।" रोनी आक्रोश में भैंसे की तरह डकराया- "तो यकीन मानों, रात ही हमने उस हरामजादे की यहाँ लाश बिछा देनी थी।"

जंगली रोते रहे।

कुछ नौजवान तो लाश से लिपटकर दहाड़े मार-मारकर रो रहे थे।

वो सचमुच अपने सरदार से बेइंतहा प्यार करते थे।

"बल्कि मुझे तो एक बात का और भी शक है।" अबू निदाल बोला- "हो सकता है, सरदारनी को भी उसी शैतान ने गायब किया हो।"

"हाँ, यह भी संभव है।"

"हम उस शैतान को मार डालेंगे।" जंगली चीख उठे- "हम उसे नहीं छोड़ेंगे।"

"हाँ-हाँ। हम उससे अपने सरदार की मौत का बदला लेंगे। उससे अपनी सरदारनी को छुड़ायेंगे।"

वह सब भड़क उठे।

जैक क्रेमर ने उन्हें बड़ी मुश्किल से शांत किया। उसके बाद बड़े ही संजीदा माहौल में सरदार के अंतिम संस्कार की तैयारियां शुरू हुईं।

जब सरदार का अंतिम संस्कार किया गया, तब वह सारे जंगली पुनः बहुत भावुक हो उठे।

पुनः फूट-फूटकर रोने लगे।

□□□
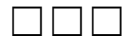
"मेरा ख्याल है, अब हमें और ज्यादा वक्त इस बस्ती के अंदर नहीं ठहरना चाहिये।" जैक क्रेमर अपने सफेद बालों को पीछे झटककर काफी धीमे स्वर में बोला- "अब कमाण्डर करण सक्सेना के ऊपर हमला करने का वक्त आ चुका है।"

वह सारे यौद्धा उस वक्त झोंपड़े में जमा थे।

"एक बात मैं भी कहना चाहूँगा।" रोनी बोला।

"क्या ?"

"इस मर्तबा हम सब लोग एक साथ मिलकर कमाण्डर करण सक्सेना पर हमला करेंगे। इससे पहले दो-दो या तीन-तीन योद्धाओं के ग्रुप में हमला करने की जो गलती हम कर चुके हैं, वह गलती अब दोहराई नहीं जायेगी। इससे खामखाह ताकत कम हो जाती है।"

"बिल्कुल ठीक कहा।" जैक क्रेमर भी बोला- "इस मर्तबा हमें एक साथ ही मिलकर हमला करना होगा, बिल्कुल बंद मुट्ठी की तरह ! हम सभी छः यौद्धा एक साथ रणक्षेत्र में उतरेंगे।"

"छः नहीं।" मास्टर बोला- "पांच।"

"पांच।"

"यस सर ! फिलहाल आपका हमारे साथ जाना ठीक नहीं होगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि अगर मान लो, हम सभी छः यौद्धाओं ने एक साथ हमला किया और इत्तेफाक से हम सभी मारे गये, तो बर्मा पर कब्जा करने और यहाँ की बहुमूल्य खदानों को लूटने का जो सपना हमने देखा है, वह उसी क्षण धूल में मिल जायेगा। परन्तु अगर हममें से एक यौद्धा भी जिन्दा रहा, तो वह दोबारा से ताकत इकटठी करके इस सपने को साकार करेगा और वह हम सब मृत यौद्धाओं के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

सारे यौद्धाओं ने सकपकाकर एक-दूसरे की तरफ देखा।

मास्टर ने हालांकि बहुत ज्यादा कड़वी बात कही थी, लेकिन सच कही थी।

"मास्टर ठीक कह रहा है।" अबू निदाल भी संजीदगी के साथ बोला- "हम पांचों को ही कमाण्डर पर हमला करना चाहिये।"

"आपका इस संबंध में क्या कहना है सर ?" हवाम ने जैक क्रेमर की तरफ देखा।

"मुझे कुछ नहीं कहना। इस सम्बन्ध में तुम लोग ही जो फैसला करोगे, वह मुझे मंजूर होगा।"

"तो फिर हमारा वही फैसला है सर, जो मास्टर ने कहा।" हवाम बोला।

□□□

वह कैक्टस की बेहद घनी और कंटीली झाड़ियां थीं, जिनके पास कमाण्डर मूर्छित अवस्था में पड़ा था।

पिछले अट्ठारह घण्टों से उसने कुछ नहीं खाया था।

पैरों में अब इतनी जान नही बची थी, जो वह जंगल में पहले की तरह ही 'चीता चाल' से दौड़ता रह सके। वह पिछली कई रातों का जागा हुआ था, आँखों में नींद भरी थी।

कंटीली झाड़ियों के पास पड़े-पड़े कमाण्डर को ऐसा लगा, जैसे उसके ऊपर बेहोशी छाती जा रही है।

तभी उसने घर्र-घर्र की आवाज सुनी।

कमाण्डर चौंका।

उसने कमजोरी के कारण बंद होती जा रही अपनी आँखों को जबरदस्ती खोला और ऊपर आकाश की तरफ देखा।

अगले ही पल उसके शरीर में तीव्र सनसनाहट दौड़ गयी।

आकाश में नीले रंग का वही हैलीकॉप्टर मंडरा रहा था, जिसमें बैठकर 'असाल्ट ग्रुप' के यौद्धा हैडक्वार्टर से भागे थे।

"लगता है, वह लोग लौट आये हैं।"

कमाण्डर ने जबरदस्ती अपने शरीर को कैक्टस की उन घनी झाड़ियों के बीच धकेल दिया, ताकि एकाएक किसी की निगाह भी उस पर न पड़ सके।

रिवॉल्वर उसने निकाल ली।

वह एक बार फिर काफी चौंकन्ना दिखाई पड़ने लगा।

हैलीकॉप्टर देर तक घर्र-घर्र करता हुआ जंगल के ऊपर आकाश में मंडराता रहा और फिर कमाण्डर से थोड़ा ही फासले पर एक खुले मैदान में उतर गया।

कमाण्डर गौर से हैलीकॉप्टर को देखने लगा।

उसके देखते ही देखते हैलीकॉप्टर में से एक-एक करके पांच योद्धा नीचे उतरे। कमाण्डर ने उन सभी योद्धाओं को साफ-साफ पहचाना, आखिर उन यौद्धाओं की फाइलें भी वो कई-कई मर्तबा पढ़ चुका था।

मास्टर !

हवाम !

अबू निदान।

माइक।

रोनी।

सब अपने अलग-अलग फन के महारथी थे। सबके नाम पुलिस फाइल में ढेरों अपराध दर्ज थे।

हैलीकॉप्टर से उतरते ही वह सब पांचों गोल दायरा बनाकर खड़े हो गये।

"हमने 'शैडो वारफेयर' (छाया युद्ध) की पोजिशन में चलते हुए उसे ढूंढना है।" अबू निदाल अपने साथियों से बेहद गरमजोशी पूर्वक कह रहा था- "हम पांचों अपना 'मृत्यु का कटोरा' बनाकर आगे बढ़ेंगे। याद रहे, वह अगर जंगल में यहीं-कहीं आसपास मौजूद है, तो आज बचना नहीं चाहिये।"

"ऐसा ही होगा।"

बाकी योद्धाओं की आवाज भी बड़ी गरमजोशी से भरी हुई थी।

उस वक्त वो कमाण्डर को खत्म कर डालने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ नजर आ रहे थे।

"इस हैलीकॉप्टर का क्या करें ?" माइक बोला।

"जहाँ तक मेरा ख़्याल है।" हवाम ने कहा- "हमें हैलीकॉप्टर के इंजन में से 'फ्यूज प्लग' निकालकर अपने पास रख लेना चाहिये।"

"फ्यूज प्लग !" सबकी आँखों में हैरानी के भाव तैरे- "वह क्यों ?"

"ताकि अगर हमारे जाने के बाद कमाण्डर यहाँ आ जाये, तो वह इस हैलीकॉप्टर को लेकर फरार न हो सके।"

"परन्तु इस काम के लिए 'फ्यूज प्लग' निकालने की क्या जरूरत है।" रोनी बोला- "इसके लिए तो हैलीकॉप्टर का इग्नीशन लॉक लगा देना ही काफी रहेगा।"

"नहीं, इग्नीशन लॉक लगा देना ही काफी नहीं हैं। तुम कमाण्डर करण सक्सेना को नहीं जानते, किसी भी लॉक को खोल डालना उसके बायें हाथ का खेल है।"

"ठीक है।" माइक बोला- "तो फिर मैं इंजन में से 'फ्यूज प्लग' निकालता हूँ।"

फिर माइक हैलीकॉप्टर के इंजन पर चढ़ गया।

उसने उसका ढक्कन खोला और पीठ के बल झुककर 'फ्यूज प्लग' खोलने लगा।

उधर नीचे खड़ा हवास अब दूरबीन से जंगल का दूर-दूर तक का नजारा कर रहा था।

हवाम अपने पास हमेशा दो 'लिजर्ड' रिवॉल्वर रखता था।

लिजर्ड !

यह रिवॉल्वर का सबसे लेटेस्ट वर्ज़न है और दुनिया की बेहतरीन रिवॉल्वरों में उसकी गणना होती है। लिजर्ड रिवॉल्वर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि उसकी नाल में से एक लेजर बीम निकलती है, जो लाल रंग का घेरा होता है और जिसे 'मौत का लाल घेरा' भी कहते हैं।

साधारण गैंगस्टर जहाँ सही निशाना लगाने के लिए अपनी 'रिवॉल्वर' के ऊपर लेजर टॉर्च लगा लेते

हैं। लेजर टॉर्च की रोशनी जिस जगह पर जाकर पड़ेगी, गोली उसके ठीक नीचे लगेगी। परन्तु लिजर्ड रिवॉल्वर की खासियत ये थी कि लेजर बीम का 'लाल घेरा' उसकी नाल के अंदर से ही निकलता था और लाल घेरा इंसानी शरीर पर जिस जगह पर जाकर पड़ता, फौरन वहीं धांय से गोली लगती। निशाना चूकने का मतलब ही कोई नहीं था।

इसके अलावा लिजर्ड रिवॉल्वर की एक खासियत और थी, उसकी गोलियां विशेष तरह से डिजाइन की गयी थीं।

उन गोलियों की वेलोसिटी इतनी ज्यादा थी कि वह लोहे की पूरी आर्मर प्लेट को फाड़ती चली जायें। इसके अलावा उस रिवॉल्वर में मौजूद कुछ गोलियां बम का काम भी करती थीं, जो पहले इंसान के शरीर पर जाकर चिपक जातीं तथा फिर लिजर्ड रिवॉल्वर पर ही लगा एक बटन दबाने पर किसी बम की तरह फटतीं। हवाम ने अपनी उन्हीं दो लिजर्ड रिवॉल्वरों की बदौलत चीन में बहुत धन कूटा था। उसने मोटी-मोटी सुपारियां लेकर दर्जनों आदमियों को जहन्नुम पहुँचाया।

आज स्थिति ये थी कि चीन के पुलिस रिकॉर्ड उसके नाम से रंगे हुए थे।

हवाम काफी देर तक दूरबीन से जंगल का नजारा करता रहा।

"क्या अभी तक 'फ्यूज प्लग' नहीं मिला ?" रोनी ने पूछा।

"नहीं, मिल गया है।" माइक ने हैलीकॉप्टर के इंजन पर चढ़े-चढ़े फ्यूज प्लग निकालकर रोनी को दिखाया और फिर इंजन का ढक्कन वापस बंद किया।

फिर वो नीचे कूदा।

"अब कमाण्डर को ढूंढने का काम शुरू किया जाये।"

"बिल्कुल।"

□□□

पांचों खतरनाक योद्धा तुरंत हरकत में आ गये।

वह 'शेडो वारफेयर' की एक बेहद खास पोजीशन में जंगल के अंदर फैल चुके थे और बड़े योजनाबद्ध अंदाज में अब कमाण्डर करण सक्सेना को तलाश कर रहे थे।

माइक के हाथ में उस समय एक 'बजूका' थी।

बजूका, जो एण्टी टैंक गन होती है और जिसकी नाल में से कोई तीन इंच मोटा गोला निकलता है।

माइक इंग्लैंड का एक खतरनाक आतंकवादी था और कभी वहाँ बड़े-बड़े आतंकवादी ग्रुपों के लिए भाड़े पर काम करता था। उसने अपनी उसी 'बजूका' से इंसानों की हत्या करने से लेकर ट्रेन, बस और धार्मिक स्थल तबाह करने जैसे सारे काम किये थे।

उस समय अबू निदाल और माइक दोनों साथ-साथ जंगल में कमाण्डर करण सक्सेना को ढूंढ रहे थे।

अबू निदाल आगे था।

माइक थोड़ा पीछे।

"अगर आज कमाण्डर करण सक्सेना मेरे हाथ लग जाये।" अबू निदाल गुर्राकर बोला- "तो मैंने अपनी स्नाइपर राइफल से उस हरामजादे की गर्दन काट डालनी है।"

"कमाण्डर कोई जंगलियों का सरदार नहीं है अबू निदाल।" माइक मुस्कराकर बोला- "जिसे तुम अपनी एक ही गोली से मार डालोगे।"

"वह एक ही गोली से मरेगा।" अबू निदाल बोला- "बस मेरे हत्थे चढ़ जाये।"

"शायद इसीलिए वो तुम्हारे हत्थे चढ़ने वाला भी नहीं है।"

वह दोनों योद्धा जंगल को अच्छी तरह छानते हुए आगे बढ़ रहे थे।

पेड़-पौधे और घनी झाड़ियां, हर चीज को वह रूक-रूककर देखते।

तभी उन दोनों ने अपनी बायीं तरफ की घनी झाड़ियों में कुछ सरसराहट की आवाज सुनी।

"लगता है, उस तरफ की झाड़ियों में कोई है।" माइक एकाएक थमककर बोला।

यही वो क्षण था, जब झाड़ियों में एक जंगली सुअर ने बड़े खतरनाक ढंग से अबू निदाल के ऊपर छलांग लगायी।

चीख पड़ा अबू निदाल !

जंगली सुअर बड़ा लम्बा-चौड़ा और ताकतवर था।

छलांग लगाते ही वो अबू निदाल को लेकर नीचे गिरा।

अबू निदाल ने झटके के साथ अपनी स्नाइपर राइफल का लाठी की तरह इस्तेमाल करना चाहा, तो जंगली सुअर ने जोर से अपनी एक टांग अबू निदाल के मुंह पर जड़ी और उसके उसी हाथ पर बुक्का मारा, जिसमें उसने स्नाइगर राइफल पकड़ी हुई थी।

दांत गड़ गये।

अबू निदाल बहुत पीड़ादायक ढंग से चिल्लाया।

माइक, जो बड़े दहशतनाक नेत्रों से उस दृश्य को देख रहा था, उसने फौरन अपनी बजूका तानी और लीवर दबा दिया।

भड़ाम !

गोला चलने की ऐसी भीषण आवाज हुई, जैसे वह गोला बजूका की बजाय सीधे किसी बड़ी तोप से ही छोड़ा गया हो।

जंगली सुअर चिल्ला तक न सका।

गोला सीधे उसके पेट में जाकर घुसा और आगे से जंगली सुअर के मुंह को फाड़ता हुआ बाहर निकल गया।

उसके मांस के लोथड़े इधर-उधर बिखर गये।

खून के छींटे उड़े।

बजूका चलने की आवाज सुनकर बाकी तीनों तुरंत भागे-भागे वहाँ आये।

जंगली सुअर की क्षत-विक्षप्त लाश देखकर उनकी आँखों में और खौफ के भाव तेरे।

“यह सब क्या हुआ ?”

“कुछ नहीं।” माइक ने अपनी बजूका की नाल नीचे झुकाई- “जंगली सुअर ने एकाएक अबू निदाल पर हमला कर दिया था, मजबूरी में मुझे बजूका का इस्तेमाल करना पड़ा।”

“ओह !”

“यह ठीक नहीं हुआ।” रोनी विचलित मुद्रा में बोला- “गोला चलने की आवाज जंगल में दूर-दूर तक गूंजी होगी, इससे कमाण्डर करण सक्सेना सावधान हो जायेगा।”

“लेकिन अगर मैं बजूका न चलाता, तो उस जंगली सुअर ने अबू निदाल को मार डालना था।”

सब यौद्धा खामोश रहे। मगर सभी को इस बात का अहसास था कि यह ठीक नहीं हुआ है।

अबू निदाल की उस दायीं कलाई में से खून अभी भी बड़ी मात्रा में निकल रहा था, जहाँ जंगली सुअर ने बुक्का मारा था।

उसकी कमीज की आस्तीन वगैरा सब फट गयी थीं।

रोनी ने फौरन अपनी जेब से फर्स्ट एड का सामान निकाला। उसने एक स्प्रे अबू निदाल के जख्म पर छिड़क दिया, जिससे उसका खून बहना तो फौरन ही रूक गया।

उसके बाद रोनी ने दवाई लगाकर उसके जख्म पर पट्टी वगैरा भी बांध दी।

“अब कैसा महसूस कर रहे हो ?”

“ठीक ही महसूस कर रहा हूँ।” अबू निदाल उठकर खड़ा हुआ।

अलबत्ता जंगली सुअर ने जितने खतरनाक ढंग से उसके ऊपर हमला किया था, उसकी दहशत अभी भी उसके ऊपर हावी थी।

“हमें अब बड़ी सावधानी के साथ आगे बढ़ना है।” मास्टर बोला- “क्योंकि जंगल में जानवरों के साथ-साथ कमाण्डर करण सक्सेना का भी हमला अब हमारे ऊपर हो सकता है। जिसमें किसी की जान भी जा सकती है।”

“अगर बजूका का निशाना सही न लगता।” अबू निदाल बोला- “तो मेरी जान तो अभी चली जाती। मैं तो अभी जन्नतनशीन हो जाता।”

“जन्नतनशीन !” मास्टर हंसा- “या फिर दोज़ख़नशीन !”

अबू निदाल ने बड़ी भस्म कर देने वाली निगाहों से अब मास्टर को घूरा।

सब धीरे-धीरे मुस्करा दिये।
उसके बाद वह पांचों यौद्धा शेडो वारफेयर की एक दूसरी पोजिशन के अंदर आगे बढ़े।
जंगल में वह पांचो जिधर-जिधर से भी गुजर रहे थे, यह बात निश्चित थी कि कम से कम वहाँ उनका दुश्मन मौजूद नहीं था।
अगर होता, तो वह उन्हें दिखाई जरूर पड़ता।

□□□

पांचों योद्धाओं के बीच अब काफी फासला था। वह बाकायदा 'मृत्यु का कटोरा' बनाकर चल रहे थे।
रोनी उनमें सबसे आगे था।
रोनी !
वह बर्मा का ही नागरिक था और कभी वो समुद्री लुटेरा हुआ करता था। वह हिंद महासागर और अरब महासागर में आते-जाते मालवाहक जहाजों को लूटता। तब बाकायदा उसका पूरा गिरोह था।
रोनी हमेशा अपने पास 9 एम0एम0 की पिस्टल रखता था, जो उसकी पसंदीदा पिस्टल थी।
9 एम0एम0 की पिस्टल की कुछ विशेषतायें भी होती हैं, जैसे उसके अंदर मैगजीन फिट करो और बस चलाने लगो। उसे हर गोली चलाने के बाद पीछे स्पूक करने की जरूरत नहीं होती। इसके अलावा वो पिस्टल मेंटेनेंस फ्री होती है। पानी के अंदर चल सकती हैं, ऑयलिंग की भी जरूरत नहीं।
उस रिवॉल्वर की सबसे बड़ी खासियत ये है कि रोनी उसके अंदर 'साइनाइट' (सबसे घातक जहर) की बुलेट चलाता था। वह बुलेट अगर किसी आदमी के शरीर को खरोंच भी देती हुई गुजर जाये, वह तब भी मर जायेगा।
उस वक़्त भी 9 एम0एम की वही पिस्टल रोनी के हाथ में थी।
रोनी अकेला आगे बढ़ा जा रहा था।
उसके पीछे दूर-दूर तक कोई योद्धा नहीं था।
तभी एकाएक रोनी की चीख निकल गयी और वो लड़खड़ाकर धड़ाम से नीचे गिरा।
उसने अपने पैरों की तरफ देखा।
"माई गॉड।"
रोनी के शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया।
उसके पैरों में कोई तीन फुट लंबा काला चितकबरा सांप लिपटा हुआ था। वह न जाने किस वक्त उसके पैरों से आकर लिपट गया था और अब उसने वहाँ कई 'बंद' भी लगा दिये थे।
"तुझे तो अभी यमलोक पहुँचाता हूँ ।"
रोनी ने फौरन अपनी 9 एम0एम0 की पिस्टल का ट्रेगर दबाया।
तुरंत गोली सांप के उस 'बल' पर जाकर लगी, जहाँ उसने कई सारे अलबेट डाले हुए थे। सांप के चीथड़े बिखर गये।
"क्या हुआ, क्या हुआ ?"
फौरन सब यौद्धा भागे-भागे वहाँ आये।
"कुछ नही हुआ है।" रोनी सांप के टुकड़ों को अपने जूतों से एक तरफ धकेलते हुए बोला- "एकाएक सांप मेरे पैरो में आकर लिपट गया था, उसी को मारने के लिए गोली चलानी पड़ी।"
"तौबा !" अब निदाल हाँफते हुए बोला- "मैं तो यह समझ बैठा था कि कमाण्डर करण सक्सेना ने तुम्हारे ऊपर हमला कर दिया है।"
"तुम्हें तो ख्वाब में भी बिल्ली की तरह छिछड़े ही नजर आते हैं अबू निदाल भाई।" रोनी हंसकर बोला।
"तुम शायद यह नहीं जानते।" अबू निदाल बोला- "कि कभी-कभी छिछड़े सच भी हो जाते हैं।"
"यह तो है।"
"चलो, सब वापस अपनी-अपनी जगह पहुंचो।" मास्टर हंसिये को हाथ में पकड़े हुए बोला- "बार-बार इस तरह के हंगामे होने ठीक नहीं है।"

सब वापस अपनी-अपनी जगह जाने के लिए मुड़े।

"रुको-रुको।" एकाएक रोनी फुसफुसा उठा।

उसकी आवाज एकाएक बहुत रहस्यमयी हो उठी और वो दूर पहाड़ों के एक बहुत बड़े समूह की तरफ ध्यान से देखने लगा।

पहाड़ों का वह समूह 'मंकी हिल' के नाम से विख्यात था।

वहाँ अफ्रीकन गुरिल्लों के झुण्ड के झुण्ड रहते थे।

"क्या हुआ ?"

"शी इ इ !"

रोनी ने अपने होंठों पर उंगली रखकर सबको खामोश रहने का इशारा किया।

सब यौद्धाओं के चेहरे पर अब सस्पैंस के भाव मंडराने लगे।

कोई कुछ नहीं समझ पा रहा था कि क्या चक्कर है।

"आखिर बात क्या है?" माइक कुछ झुंझलाकर बोला।

"क्या तुम लोग महसूस कर रहे हो।" रोनी की आवाज बेहद धीमी थी- "कि सामने 'मंकी हिल' पर एकाएक बड़ा खौफनाक सा सन्नाटा छा गया है। जबकि उस हिल पर से हमेशा अफ्रीकन गुरिल्लों के जोर-जोर से छाती पीटने और चक-चक की आवाजें आती रहती हैं।"

सब यौद्धाओं की निगाहें अब 'मंकी हिल' की तरफ उठ गयीं।

वह भी बहुत ध्यानपूर्वक आवाजें सुनने का प्रयास करने लगे।

"बात तो ठीक है।" हवाम भी स्तब्ध मुद्रा में बोला- "वाकई इतना गहरा सन्नाटा तो कभी भी 'मंकी हिल' पर नहीं होता।"

"लेकिन इस बात से तुम साबित क्या करना चाहते हो ?" मास्टर बोला।

"तुम शायद जंगल की एक खासियत नहीं जानते ब्रदर !" रोनी की आवाज अभी भी सस्पेंस में डूबी हुई थी- "जब जंगल के पशु-पक्षियों को इस बात का अहसास होता है कि उनका कोई दुश्मन आसपास मौजूद है, तो वह आवाज निकालना बंद कर देते हैं। वहाँ बिल्कुल खामोशी छा जाती है और इस समय ऐसी ही रहस्यमयी खामोशी 'मंकी हिल' पर व्याप्त है।"

"इ... इसका मतलब !" अबू निदाल हकबकाया- "कमाण्डर करण सक्सेना इस वक्त 'मंकी हिल' पर मौजूद है।"

"ऐसा ही मालूम होता है और वो अभी-अभी वहाँ पहुँचा है। क्योंकि 'मंकी हिल' पर यह सन्नाटा बस एकदम से छाया है, थोड़ी देर पहले वहाँ से आती हुई चक-चक की आवाजें तो मैंने खुद अपने कानों से सुनी थीं।"

योद्धाओं की संदेह में डूबी हुई आँखें एक-दूसरे से मिलीं।

"चलो।" हवाम एकाएक बोला- "सब मंकी हिल की तरफ चलो। अगर कमाण्डर वहाँ मौजूद है, तो समय गंवाने से कोई फायदा नहीं।"

सारे योद्धा पहले जैसी ही अलग-अलग पोजिशन में मंकी हिल की तरफ बढ़े।

अब वो हद से ज्यादा चौंकन्ने थे।

□□□

कमाण्डर इस समय वाकई 'मंकी हिल' पर था।

उन योद्धाओं से छिपता-छिपाता वह बस थोड़ी देर पहले ही वहाँ पहुँचा था। लेकिन 'मंकी हिल' पर पहुँचने के बाद जैसे ही वहाँ गहरी खामोशी तारी हुई, कमाण्डर करण सक्सेना को फौरन इस बात का अहसास हो गया कि वहाँ आकर उससे भयंकर गलती हुई है।

'मंकी हिल' पर काफी ऊंचे-ऊंचे झंझाड़ उगे हुए थे।

पेड़ थे।

इसके अलावा पथरीली चट्टानों के अदंर बड़े-बड़े बरूएं बने हुए थे, जिनमें अफ्रीकन गुरिल्ले छिपते हैं। कमाण्डर करण सक्सेना को चूंकि 'मंकी हिल' तक पहुँचने के लिए कई छोटी-छोटी चट्टानों पर चढ़ना पड़ा

था, इसलिए एक बार फिर उसकी हिम्मत जवाब दे गयी थी और पहले की तरह ही उसके ऊपर धीरे-धीरे बेहोशी छाने लगी।

कमाण्डर ने जोर से अपने सिर को झटका।

वो जानता था, उस क्षण बेहोश होना खुद अपनी मौत को दावत देना है।

लेकिन उसकी हालत बुरी थी।

बहुत बुरी !

अपने आपको बेहोश होने से बचाने के लिए उसने फौरन कोई सख्त कदम उठाना था।

और !

कमाण्डर करण सक्सेना ने कदम उठाया।

उसने स्प्रिंग ब्लेड निकालकर उसका लम्बा फल सख्ती के साथ अपने कंधे की मांस पेशियों में घुसा दिया। फल उसकी मांस-पेशियों को अंदर तक काटता चला गया और उसके चेहरे पर बेइंतहा पीड़ादायक भाव उभरे। कमाण्डर ने जख्म में से स्प्रिंग ब्लेड बाहर खींचा, तो उसमें से खून बहने लगा और तेज टीसें उठने लगीं। अब जख्म मे से उठती तेज टीसों ने उसके ऊपर बेहोशी तारी होने से रोके रखनी थी।

वहीं मंकी हिल की झाड़ियों में उसे कुछ छोटी-मोटी पीली फलियां लगी नजर आयीं।

वह न जाने किस तरह की फलियां थीं।

कमाण्डर करण सक्सेना ने एक फली तोड़ी और उसे खाकर देखा। वो काफी कड़वी थी। परंतु कमाण्डर ने परवाह न की। वो एक के बाद एक काफी सारी फली तोड़कर खा गया। इससे उसके पेट को काफी सकून पहुँचा। फिलहाल एक ही बात उसके दिमाग में थी, किसी भी तरह उसने अपने आपको जिंदा रखना है और चाक-चौबंद रहना है।

चाहे इसके लिए उसे कुछ भी क्यों न करना पड़े।

तभी उसे दो योद्धा 'मंकी हिल' पर आते दिखाई पड़े।

हवाम !

अबू निदाल !

वहीं एक छोटा सा गड्ढा बना हुआ था। कमाण्डर ने तुरंत अपनी दोनों टांगे उस गड्ढे के अंदर घुसा दीं और कैमोफ्लाज किट खोलकर अपने ऊपर डाल ली।

फिर वह उन पांचों योद्धाओं की टाइमिंग केलकुलेट करने लगा। दो योद्धा 'मंकी हिल' पर पहुँच चुके थे। एक उनसे अभी बहुत पीछे था तथा दो और भी ज्यादा पीछे। पांच योद्धाओं के बीच फिलहाल काफी फासला था। कोई आधा घंटे बाद पीछे चल रहे दो योद्धाओं ने सबसे आगे आ जाना था। फिर दो यौद्धा उनसे पीछे हो जाते और एक सबसे पीछे। फिर एक आगे जाता।

वह 'शैडो वारफेयर' की खास पोजिशन थी, जिसमें दुश्मन को यही मालूम नहीं चल पाता था कि कुल कितने यौद्धा मृत्यु का कटोरा बनाकर उसकी तरफ बढ़ रहे हैं। कमाण्डर करण सक्सेना ने चूंकि उन्हें हैलीकॉप्टर से उतरते देख लिया था, इसीलिये जानता था कि उनकी कुल संख्या पांच है।

उसी क्षण हवास और अबू निदान उसकी कैमोफ्लाज किट के करीब से गुजरे।

कमाण्डर ने अपनी सांस तक रोक ली।

दोनों योद्धा निर्विधन उसके करीब से गुजर गये।

□□□

कोई बीस मिनट बाद एक योद्धा और कमाण्डर करण सक्सेना को 'मंकी हिल' पर दिखाई पड़ा।

वह मास्टर था।

मास्टर ने हंसिया अपने हाथ में पकड़ा हुआ था और वह बड़ी चौकन्नी अवस्था में उसी तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

मास्टर भी उसकी कैमोफ्लाज किट के करीब से गुजरा। मगर गुजरते-गुजरते वो एक क्षण के लिए ठिठका। कुछ देर वो वहीं किट के आसपास मंडराता रहा और उसके बाद आगे चला गया।

"लगता है, मास्टर को मेरी यहाँ मौजूदगी का अहसास हो गया है।" कमाण्डर करण सक्सेना के

दिमाग में खतरे की घण्टी बजी।

और !

बिल्कुल सही सोचा था कमाण्डर ने।

मुश्किल से एक फर्लांग दूर जाते ही मास्टर ने अपनी उस रिस्टवॉच को ऑन किया। जो वास्तव में ट्रांसमीटर सैट था। फिर वो जल्दी-जल्दी अपने उस ट्रांसमीटर पर आगे गये दोनों योद्धाओं से सम्पर्क स्थापित करने लगा।

"हैलो-हैलो ! मास्टर स्पीकिंग।"

"मास्टर स्पीकिंग !"

"यस !" फौरन दूसरी तरफ से एक भारी-भरकम आवाज ट्रांसमीटर पर सुनायी दी- "मैं हवाम बोल रहा हूँ। क्या बात है मास्टर ?"

"मैंने 'मंकी हिल' पर कमाण्डर करण सक्सेना को खोज निकाला है हवाम !"

"क... क्या कह रह हो तुम ?"

"मै बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।" मास्टर बेहद गरमजोशी के साथ बोला- "वह एक कैमोफ्लाज किट के नीचे छिपा हुआ है और इस वक्त मुझसे बस थोड़ा सा फासले पर है।"

"तुम कहाँ हो ?"

"यहाँ 'मंकी हिल' पर जो काली पहाड़ी है, मैं उसी पहाड़ी के पास खड़ा हूँ। तुम दोनों जितना जल्द से जल्द हो सके, यहाँ पहुंचो।"

"ठीक है, हम अभी वहाँ पहुँचते हैं।" हवाम व्यग्रतापूर्वक बोला- "तब तक तुम कमाण्डर करण सक्सेना पर पैनी निगाह रखो।"

"ओके।"

"और अकेले ही उसके ऊपर हमला करने की बेवकूफी मत कर बैठना।"

"मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला हूँ।"

"बेहतर !"

मास्टर ने ट्रांसमीटर बंद कर दिया।

हंसिया अभी भी उसके हाथ में था।

हालांकि एक अड़तीस कैलीवर की रिवॉल्वर भी उसकी जेब में पड़ी हुई थी। मगर उस रिवॉल्वर से कहीं ज्यादा भरोसा मास्टर को अपने हंसिये पर था।

वो पहले की तरह ही चौकन्नी निगाहों से इधर-उधर देखने लगा।

तभी उसे ऐसा अहसास हुआ, जैसे उसके पीछे कोई है।

मास्टर झटके से पलटा।

पलटते ही चौंका।

कमाण्डर उसके सामने खड़ा हुआ था। कमाण्डर के हाथ में रिवॉल्वर थी, जो उस वक्त उसी के हाथ को घूर रही थी।

"त... तुम !"

मास्टर को चार सौ चालीस वोल्ट का शॉक लगा।

"क्यों, मुझे अपने सामने देखकर हैरानी हो रही है मास्टर।" कमाण्डर मुस्कुराया-"शायद तुम जानते हो, तुम्हारे दोनों साथी तुम्हारी मदद के लिए इतनी जल्दी यहाँ नहीं पहुँचने वाले हैं।"

"कौन से साथी ?"

"वही, जिनसे तुमने अभी-अभी ट्रासमीटर पर बात की है।"

"मैंने किसी से बात नहीं की।"

"लेकिन...।"

धोखा खा गया कमाण्डर करण सक्सेना !

वह भूल गया, उसका मुकाबला 'असाल्ट ग्रुप' के पहले यौद्धा से ही हो रहा है।

वो बातों में उलझ गया।

और !

यही मास्टर का उद्देश्य था।

फौरन ही मास्टर का हंसिया बड़ी अद्वितीय फुर्ती के साथ चला और सीधे कमाण्डर की रिवॉल्वर से जाकर टकराया।

टन्न !

तेज आवाज हुई और रिवॉल्वर कमाण्डर के हाथ से निकलकर दूर जा गिरी।

एक ही झटके में वो निहत्था हो गया।

वह संभलता, उससे पहले ही हंसिया तूफानी गति से फिर चला।

कमाण्डर की भयप्रद चीख निकल गयी।

हंसिया इस बार उसकी पतलून फाड़ता हुआ टांग के ढेर सारे गोश्त को काटता चला गया।

कमाण्डर ने झपटकर अपने दोनों स्प्रिंग ब्लेड बाहर निकाल लिये।

इस बार वह बिल्कुल नहीं चूका।

स्प्रिंग ब्लेड निकालते ही उसने झटके के साथ दोनो स्प्रिंग ब्लेडों को मास्टर की तरफ खींचकर मारा।

किसी हलकाये कुत्ते की तरह दहाड़ा मास्टर।

दोनों स्प्रिंग ब्लेड सनसनाते हुए उसके कंधों में जा धंसे। उसके दोनों हाथ बेकार होकर रह गये।

फौरन ही कमाण्डर ने मास्टर के हाथ से उसका हंसिया छीन लिया।

मास्टर अब बहुत डरा-डरा नजर आने लगा।

"मैंने सुना है मास्टर !" कमाण्डर हंसिया उसकी आँखों के गिर्द घुमाता हुआ बोला- "कि तुमने अपने इस हंसिये से आज तक बेशुमार औरतों के गुप्तांग फाड़ डालें हैं। मैं समझता हूँ, आज तुम्हें भी इस हंसिये की धार को देख लेना चाहिये कि यह कितनी पैनी है।"

"न... नहीं।" मास्टर की रूह कांप गयी- "नहीं।"

वो भांप गया, कमाण्डर क्या करने वाला है। वो तेजी से पीछे हटा।

तुरंत कमाण्डर करण सक्सेना ने मास्टर के गुप्तांगों की तरफ हंसिये का प्रचण्ड प्रहार किया।

मास्टर एकाएक इतने हृदयविदारक ढंग से डकराया कि पूरे जंगल में उसके चीखने की आवाज दूर-दूर तक प्रतिध्वनित हुई।

उसके गुप्तांग वाले हिस्से से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

मास्टर ने जल्दी से दोनों हाथ अपने गुप्तांगों के ऊपर रख लिये।

"नहीं, कमाण्डर नहीं।"

सड़ाक !

हंसिया अपने फुल वेग के साथ फिर चला।

मास्टर और भी ज्यादा भूकम्पकारी अंदाज में चिल्लाया।

इस बार हंसिया मास्टर के एक हाथ की सभी अंगुलियों के साथ-साथ उसके अण्डकोष को भी काटता चला गया।

मास्टर छटपटाने लगा।

छटपटाते हुए ही उसने अपने दूसरे हाथ से अड़तीस कैलीबर की रिवॉल्वर निकालनी चाही।

मगर इसकी मोहलत भी उसे नहीं मिली।

हंसिया फिर द्रुतगति के साथ चला और मास्टर की आधी से ज्यादा गर्दन काटता चला गया।

मास्टर की गर्दन और गुप्तांग से खून की धारायें छूट पड़ी।

वह चीखता हुआ पीछे झाड़ियों मे जाकर गिरा।

गिरते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

□□□

कमाण्डर अब एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर मौजूद था।

कैमोफ्लाज किट उसने अपने ऊपर डाली हुई थी और वह आगे गये दोनों यौद्धाओं के वापस लौटने का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

कमाण्डर जानता था, सबसे पीछे जो दो योद्धा आ रहे थे और जो शायद अभी 'मंकी हिल' पर भी नहीं पहुंचे थे, उन्हें अभी उस तक पहुँचने में काफी वक्त था।

फिलहाल तो उसने हवाम और अबू निदाल को ही अपना शिकार बनाना था।

मास्टर के हंसिये से कमाण्डर करण सक्सेना की जांघ काफी कट गयी थी। कमाण्डर ने अपनी जांघ पर एक 'एण्टीसेप्टिक लोशन' स्प्रे कर लिया, जिससे उसकी जांघ से खून बहना फौरन बंद हो गया।

फिलहाल इतना ही काफी था।

□□□
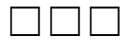
उधर दोनों योद्धा चले जा रहे थे।

हवाम के हाथ में उस समय अपनी 'लिजर्ड रिवॉल्वर' थी।

जबकि अबू निदाल के हाथ में थी- स्नाइपर राइफल।

"यहाँ तो कोई नहीं है।" अबू निदाल क्रेन की भांति अपनी गर्दन इधर-से-उधर घुमाता हुआ बोला।

"लेकिन उसने हमें काली पहाड़ी के नजदीक ही पहुँचने के लिए बोला था।"

"हाँ।"

"फिर वो कहाँ गया ?"

"मालूम नहीं।"

"मास्टर !" हवाम ने जोर से आवाज लगायी- "मास्टर !"

शान्ति !

कहीं से कोई प्रतिक्रिया नहीं।

"मास्टर !" हवाम और ज्यादा जोर से गला फाड़कर चिल्लाया- "मास्टर कहाँ हो तुम ?"

पहले जैसी ही शांति।

"कमाल है, बोल ही नहीं रहा।"

"मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है हवाम भाई !" अबू निदाल बोला।

"कैसी गड़बड़ ?"

"अब एकदम से क्या कहा जा सकता है।"

दोनों के चेहरे सुत गये।

इस बीच निदाल, मास्टर को तलाश करता हुआ काली पहाड़ी से थोड़ा आगे चला गया और वहाँ जाते ही वो चौंका।

"हवाम, जल्दी यहाँ आओ।"

हवाम दौड़कर अबू निदाल के नजदीक पहुँचा।

"क्या हुआ ?"

"ये देखो, यहाँ खून की कुछ बूंदे पड़ी हुई हैं।" अबू निदाल ने अंगुली से झाड़ियों में एक तरफ इशारा किया।

हवाम ने देखा, वहाँ सचमुच खून की काफी बूंदे पड़ी हुई थीं।

"य... यह किसके खून की बूंदें हैं ?" हवाम की आवाज कंपकंपायी- "कहीं कमाण्डर ने मास्टर को भी तो नहीं मार डाला ?"

"क्या कहा जा सकता है।"

खून की वो बूंदे काफी दूर तक गिरती चली गयी थीं।

वह दोनों खून की बूंदों का पीछा करते हुए झाड़ियों में घुसते चले गये। झाड़ियों में थोड़ा अंदर जाते ही उन्हें मास्टर की खून में बुरी तरह लथपथ लाश नजर आ गयी।

"तौबा !" अबू निदाल के जिस्म में तेज सिहरन दौड़ी- "आखिर वही हुआ, जिसका शक था। कमाण्डर करण सक्सेना ने हमारे एक और योद्धा को ठिकाने लगा दिया है।"

"वो जरूर यहीं कहीं आसपास है।" हवाम गुर्राया-" मास्टर ने बताया था कि वो एक 'कैमोफ्लाज किट' के नीचे छिपा हुआ है। हमें ऐसी झाड़ियों को तलाश करना चाहिये, जो बनावटी नजर आयें।"

दोनों बिल्कुल अलग-अलग दिशा में झाड़ियों को देखते हुए आगे बढ़े।

दोनों बहुत चौकन्ने थे।

जरा सी आहट होते ही गोली चलाने के लिए तैयार।

अबू निदाल झाड़ियों के अंदर कमाण्डर की तलाश करता हुआ अब उस छोटी सी पहाड़ी के करीब पहुंचा, जिस पर वास्तव में ही कमाण्डर छिपा था।

कमाण्डर बहुत गौर से उसकी एक-एक एक्टिविटी देख रहा था।

जैसे ही अबू निदाल पहाड़ी के थोड़ा और करीब आया। फौरन कमाण्डर पहाड़ी के ऊपर से ही एकदम चीते की तरह उसके ऊपर झपट पड़ा और अबू निदाल को अपने शिकंजे में इस तरह जकड़ लिया, जैसे गिद्ध अपने शिकार को जकड़ता है। फिर वो अबू निदाल को जकड़े-जकड़े उसे लेकर दौड़ता हुआ पहाड़ी के पीछे पहुँचा।

अबू निदाल लड़खड़ाकर गिरा।

उसके पैर की ठोकर एक पत्थर से लगी थी।

गिरते ही वो कमाण्डर के शिकंजे से आजाद हो गया।

वह संभलकर खड़ा हुआ और उसने फौरन अपनी 'स्नाईपर' राइफल से कमाण्डर की गर्दन के खास प्वाइंट पर गोली चलायी।

"हवाम !" साथ ही वो गला फाड़कर चिल्लाया- "हवाम, जल्दी यहाँ आओ। यह रहा कमाण्डर करण सक्सेना।"

कमाण्डर ने अद्वितीय फुर्ती के साथ नीचे झुककर खुद को गोली लगने से बचाया।

कोल्ट रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगुली के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और गोली चली।

अबू निदाल चीख उठा।

गोली अबू निदाल की टांग में लगी थी।

उसने पुनः 'स्नाइपर' राइफल से निशाना लगाना चाहा।

धांय !

तभी कोल्ट रिवॉल्वर से एक शोला और निकला।

इस मर्तबा गोली अबू निदाल की गर्दन में ठीक उसी खास प्वाइंट पर जाकर लगी, जहाँ अक्सर वो निशाने लगाया करता था। गोली उसकी गर्दन में अंदर ही अंदर घूमती चली गयी।

दहाड़ा अबू निदाल !

गर्दन धड़ से कटकर एकदम हवा में उछलती चली गयी।

'मंकी हिल' पर शान्ति छा गयी, गहरी शान्ति।

फिर हवाम के दौड़ते कदमों की आवाज उभरी। अबू निदाल की चीख और गोली चलने की आवाज सुनकर वह उसी तरफ भागा चला आ रहा था। 'लिजर्ड' रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े वह दौड़ता हुआ उसी पहाड़ी के पिछले हिस्से में आ गया।

सामने ही अबू निदाल की गर्दन कटी लाश पड़ी थी।

'स्नाइपर' राइफल भी उसे काफी दूर झाड़ियों में पड़ी नजर आयी।

"माई गॉड।" हवाम के शरीर में तेज सिहरन दौड़ी- "अबू निदाल भी मारा गया। यह सब क्या हो रहा है।"

वह रिवॉल्वर पकड़े-पकड़े चारों तरफ घूम गया।

"कमाण्डर करण सक्सेना।" हवाम जोर से चीखा- "कहाँ हो तुम, सामने आओ।"

खामोशी !

सन्नाटा !

"सामने क्यों नहीं आते तुम ?"

फिर खामोशी।

कमाण्डर उस समय 'मलायका टाइगर क्रेक' छापामारों की तरह पेड़ पर चढ़ा हुआ था और अपने तीसरे शिकार पर हमला करने का कोई मुनासिब मौका ढूंढ रहा था।

हवाम काफी देर तक उसे जोर-जोर से पुकारता रहा।

पहले मास्टर और अब अबू निदाल की लाश देखने के बाद वो मानों पागल हो चुका था।
वह नहीं जानता था, उसका इस तरह कमाण्डर को पुकारना कितना खतरनाक है।
कमाण्डर ने वहीं पेड़ पर छिपे-छिपे हवाम की खोपड़ी का निशाना लगाना शुरू किया।
हवाम, जो अभी तक अबू निदाल की लाश के आसपास ही मंडरा रहा था, एकाएक उसे न जाने क्या सूझा कि वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ पहाड़ी के दूसरी तरफ चला गया।
कमाण्डर समझ न सका, उसे एकाएक क्या हुआ है।
बहरहाल अब हवाम दिखाई देना बंद हो गया था।
कमाण्डर फिर भी 'मलायका टाइगर क्रेक' छापामारों की तरह पेड़ पर छिपा बैठा रहा और हवाम की किसी अगली हरकत की प्रतीक्षा करने लगा।
पेड़ पर बैठे-बैठे पुनः उसके ऊपर बेहोशी छाने लगी और कमाण्डर को ऐसा अहसास हुआ, जैसे वो अभी लुढ़ककर नीचे जा गिरेगा।
उसकी हालत सचमुच काफी खराब थी।
भूख से अंतड़िया कुलबुला रही थीं और आधे से ज्यादा शरीर खून में नहाया हुआ था। अपने आपको बेहोश होने से बचाये रखने के लिए कमाण्डर ने कंधे के जख्म को थोड़ा और स्प्रिंग ब्लेड से कुरेदा।
इसके जवाब में पेड़ से काफी सारे पत्ते भी तोड़-तोड़कर खाये और हैवरसेक बैग में से कैन निकालकर पानी भी पिया।
कमाण्डर की तबियत कुछ संभली।
परन्तु वो जानता था कि इस प्रकार ज्यादा देर तक काम चलने वाला नहीं है।

□□□
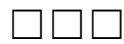
वह न जाने कितनी देर उसी तरह पेड़ पर बैठा रहा।
एकाएक कमाण्डर बुरी तरह चौंका।
वो एक 'लाल घेरा' था, जो पेड़ की पत्तियों पर इधर-उधर मंडरा रहा था।
खतरा!
फौरन यही बात कमाण्डर के दिमाग में कौंधी।
वह जरूर 'लिजर्ड' रिवॉल्वर से निकलने वाला लेज़र बीम का लाल घेरा था, जो अब उसे अपने निशाने पर लेना चाहता था। तभी वो लाल घेरा उसकी खोपड़ी पर आकर टिक गया।
कमाण्डर ने एक सेकण्ड की भी देर न की, फौरन उसने पेड़ से नीचे छलांग लगा दी।
धांय!
गोली पेड़ के पत्तों के बीच में-से सनसनाती हुई गुजरी।
कमाण्डर ने पहाड़ी की तरफ देखा, गोली वहीं से चलायी गयी थी।
उसे पहाड़ी के ऊपर हवाम खड़ा नजर आया।
जरूर उसने पहले ही कमाण्डर को वहाँ पेड़ पर छिपे देख लिया था और उसे धोखे में रखने के लिए वो जानबूझकर पहाड़ी के पीछे चला गया था। इस वक्त हवाम के हाथ में दो 'लिजर्ड' रिवॉल्वर थीं और उन दोनों रिवॉल्वरों में-से लेजर बीम के लाल घेरे निकल रहे थे।
कमाण्डर अपनी पूरी ताकत के साथ भागा।
हवाम भी पहाड़ी से दौड़ता हुआ नीचे उतरा और उसके पीछे-पीछे झपटा।
लेजर बीम के लाल घेरे कमाण्डर को अपने टार्गेट प्वाइंट पर लेने की कोशिश करने लगे।
कमाण्डर भागता रहा।
वो सर्प की तरह लहराता हुआ भाग रहा था, ताकि हवाम उसे अपने निशाने पर न ले सके।
लेजर बीम के लाल घेरे उसका पीछा करते रहे।
उस समय पूरे 'मंकी हिल' पर शान्ति थी। अफ्रीकन गुरिल्लों की कहीं से कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ी रही थी, मानों सब अपने-अपने बरूओं में जा छिपे थे।
तभी कमाण्डर एक लेजर बीम के घेरे में आ गया। हवाम ने फौरन गोली चला दी।

कमाण्डर चीखता हुआ उछला।

गोली ठीक उसकी पीठ में जाकर लगी थी और वहीं से खून का फव्वारा छूट पड़ा।

कमाण्डर फिर भी अपनी पूरी ताकत से भागता रहा।

हवाम निरंतर उसके पीछे था।

लेजर बीम बार-बार उसे अपने टार्गेट पर लेने की कोशिश कर रही थी।

तभी पिट-पिट की कई सारी आवाजें कमाण्डर के कानों में पड़ी और एक के बाद एक कई गोलियां उसकी पीठ पर आकर चिपक गयीं।

कमाण्डर भागता-भागता स्तब्ध होकर रूक गया।

सन्न !

'लिजर्ड' रिवॉल्वर की विशेषताओं से वो परिचित था। कमाण्डर समझ गया, उसकी पीठ से फिलहाल कुछ बम आकर चिपक चुके हैं। अब हवाम के सिर्फ रिवॉल्वर के स्पेशल पैनल में लगा बटन दबाने की देर थी, फौरन उसके शरीर के चीथड़े बिखर जाते।

कमाण्डर एकदम हवाम की तरफ पलटा।

उसने देखा, हवाम स्पेशल पैनल में लगा वो बटन बस दबाने ही जा रहा है।

फौरन बेपनाह फुर्ती के साथ कोल्ट रिवॉल्वर कमाण्डर की उंगली के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और गोली चली।

इससे पहले कि हवाम उस बटन को दबा पाता, उसकी खोपड़ी के चीथड़े बिखर गये।

□□□

'मंकी हिल' पर थोड़ी हलचल मची।

कुछ अफ्रीकन गुरिल्ले अपने-अपने बरुओं से निकलकर चक-चक की आवाज करते हुए इधर-उधर भागे। परन्तु जैसे ही गोली की तेज आवाज हुई, वह फिर झाड़ियों में जा छिपे।

गुरिल्लों के लिए वह बिल्कुल नया अनुभव था, वह नहीं समझ पा रहे थे कि उनके 'मंकी हिल' पर वो सब क्या हो रहा है।

तब तक माइक और रोनी भी 'मंकी हिल' पर पहुँच गये। माइक के हाथ में उस समय बजूका (एंटी टैंक गन) थी, जबकि रोनी के हाथ में 9 एम0एम0 की वह स्पेशल पिस्टल थी, जिसमें साइनाइट बुलेट चलती है।

गोलियां चलने की आवाज सुनकर उन दोनों के कान भी खड़े हुए।

"लगता है।" रोनी बोला- "हमारे साथियों ने कमाण्डर करण सक्सेना को ढूंढ निकाला है और अब उसी से मुठभेड़ हो रही है।"

"ऐसा ही मालूम होता है।"

फिर वहाँ पहले जैसी ही खामोशी छा गयी। इतनी जल्दी व्याप्त हुई उस खामोशी ने न जाने क्यों उन दोनों योद्धाओ के दिल में डर पैदा किया।

"हमें ट्रांसमीटर पर अपने साथियों से मालूम करना चाहिये, आखिर क्या चक्कर है।"

"ठीक है।"

रोनी ने फौरन अपनी ट्रांसमीटर रिस्टवॉच की एरिअल नॉब पकड़कर बाहर खींची और फिर एक-एक करके हवाम, अबू निदाल और मास्टर से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश में जुट गया।

मगर काफी देर की कोशिशों के बाद भी वो उन तीनों से सम्पर्क करने में कामयाब न हो सका।

इससे उसके चेहरे पर निराशा घिर आयी।

"क्या हुआ ?"

"मालूम नहीं, बात कैसे नहीं हो पा रही।" रोनी की आवाज में कोतूहलता के भाव थे- "ट्रांसमीटर का सिग्नल लगातार दूसरी तरफ रिले हो रहा है, लेकिन तीनों में से कोई भी उसे सुन नहीं रहा।"

"मुझे तो कुछ गड़बड़ी लगती है रोनी भाई।" माइक शुष्क स्वर में बोला।

"कैसी गड़बड़ ?"

"यह तो उनके पास जाने के बाद ही मालूम होगा। वरना पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि उन्होंने ट्रांसमीटर के सिग्नल की तरफ ध्यान न दिया हो।"

दोनों योद्धा बहुत ज्यादा सस्पैंस में डूबे हुए 'मंकी हिल' पर आगे की तरफ बढ़े।

"वह देखो।" एकाएक माइक चौंका- "सामने झाड़ियों में मास्टर का हंसिया पड़ा है।"

"हंसिया।"

तब तक माइक दौड़ता हुआ झाड़ियों में भी जा पहुँचा और वहाँ पड़ा हंसिया उसने उठा लिया। हंसिया खून से सना हुआ था।

"मास्टर का हंसिया यहाँ कैसे पड़ा है ?"

"मालूम नहीं।" माइक 'हंसिया' हाथ में लिए-लिए संजीदा स्वर में बोला-"रहस्य हर पल गहराता जा रहा है। पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ कि मास्टर ने हंसिया अपने से अलग किया हो।"

रोनी ने दोबारा मास्टर से सम्पर्क स्थापित करने की कौशिश की।

लेकिन फिर कोई नतीजा न निकला। सिग्नल लगातार दूसरी तरफ रिले हो रहा था, मगर उस सिग्नल को सुनने वाला कोई न था।

"मुझे तो एक ही बात लगती है।" रोनी सकुचाये स्वर में बोला।

"क्या ?"

"जरूर कमाण्डर ने हमारे तीनों साथियों को जान से मार डाला है।"

"न... नहीं।" माइक की आवाज कंपकंपायी- "ऐसी अशुभ बात भी अपनी जुब्रान से मत निकालो।"

"बात अशुभ ज़रूर है, लेकिन सच्चाई से भरी है।" रोनी बोला- "ख़ासतौर पर अब हंसिया मिलने के बाद शक की कोई गुंजाइश ही नहीं बची है।"

□□□
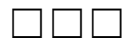
फिर रोनी ने ट्रांसमीटर पर ही जैक क्रेमर से सम्पर्क स्थापित किया।

"हैलो-हैलो !" वह ट्रांसमीटर पर चिल्लाने लगा- "रोनी स्पीकिंग ! रोनी स्पीकिंग ! !"

"यस !" फौरन ही ट्रांसमीटर पर जैक क्रेमर की आवाज सुनायी दी- "क्या बात है रोनी ? क्या रिपोर्ट है ?"

"रिपोर्ट काफी खतरनाक है सर !" रोनी बेहद आंदोलित लहजे में बोला- "माइक और मैं इस समय 'मंकी हिल' पर मौजूद हैं तथा हमारे बाकी तीन साथी यौद्धाओं का कहीं कुछ पता नहीं है।"

"क्या कह रहे हो तुम ?" जैक क्रेमर बुरी तरह चौंका- "वह तीनों कहाँ गायब हो गये ?"

"उनके बारे में कुछ भी पता नहीं चल पा रहा है। मैं उनसे कई मर्तबा ट्रांसमीटर पर बात करने की कोशिश कर चुका हूँ । मगर कोई रेस्पांस नहीं मिल रहा। यहीं झाड़ियों में हमें मास्टर का खून से सना हुआ हंसिया भी पड़ा मिला। मुझे ऐसा लगता है सर, हमारे तीनों साथी योद्धा कमाण्डर करण सक्सेना की भेंट चढ़ गये हैं।"

दूसरी तरफ एकाएक बड़ा खौफनाक सन्नाटा छा गया।

रोनी के आखिरी शब्दों ने दूसरी तरफ भूकम्प ला दिया था।

"मेरे और माइक के लिए अब आपका क्या आदेश है सर?" रोनी पुनः आंदोलित लहजे में बोला।

जैक क्रेमर सोचने लगा।

"तुम दोनों एक काम करो।"

"कहिये सर !"

"फौरन 'मंकी हिल' से वापस बस्ती में लौट आओ।"

"ल... लेकिन... !"

"बहस नहीं !" जैक क्रेमर गुर्रा उठा- "जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, वह करो। दिस इज माई ऑर्डर ! क्विक ! अगर तुम दोनों थोड़ी देर और 'मंकी हिल' पर रूके, तो तुम्हारी जान को भी खतरा हो सकता है।"

"ओके सर, हम अभी वापस लौटते हैं।"

"गुड !"

रोनी ने ट्रांसमीटर बंद कर दिया।
"क्या हो गया ?" माइक बोला।
"जैक क्रेमर साहब ने हमें फौरन वापस बस्ती में लौटने का हुकुम दिया है।"
"लेकिन क्या ऐसे हालात में हमारा वापस लौटकर जाना मुनासिब होगा।" माइक बोला- "जबकि हम जानते हैं कि कमाण्डर यहीं कहीं हमारे आसपास मौजूद है।"
"उन्होंने इसीलिए हमें वापस लौटने के लिए कहा है, क्योंकि वो नहीं चाहते कि हम भी कमाण्डर करण सक्सेना के कहर का निशाना बन जाये।"
"ओह !" माइक के चेहरे पर वितृष्णा के भाव पैदा हुए- "सचमुच यह हमारे लिए डूब मरने की बात है कि बर्मा के जंगल में घुसे एक अकेले आदमी से हम इस कदर खौफ खाने लगे हैं।"
तभी वह दोनों चौंके।
दूर 'मंकी हिल' पर किसी के दौड़ने की आवाज आ रही थी।
ऐसा लग रहा था, जैसे कोई दौड़ता हुआ उसी दिशा में आ रहा हो।
"य... यह किसके दौड़ने की आवाज है ?" माइक का स्तब्ध स्वर।
"ऐसा लगता है।" रोनी बोला- "जैसे कोई चीता दौड़ रहा हो।"
"चीता।"
दोनों कुछ देर दौड़ने की आवाज ध्यान से सुनते रहे और फिर झाड़ियों में जा छिपे।
अगले ही पल वह बुरी तरह चौंके।
उन्होंने देखा, सामने से कमाण्डर दौड़ता हुआ चला आ रहा है।
उसका आधे से ज्यादा शरीर खून से लथपथ था। कदम उल्टे-सीधे पड़ रहे थे। इसके अलावा दौड़ता हुआ कमाण्डर ऐसा लग रहा था, जैसे कोई मुर्दा दौड़ रहा हो, जो अभी हवा के एक झोंक से लरजकर नीचे जा गिरेगा।
स्नाइपर राइफल उस वक्त भी उसके हाथ में थी।
"यह तो आधे से ज्यादा मरा हुआ है।" माइक चकित निगाहों से उसकी तरफ देखता हुआ बोला- "इस मरे हुए शेर का शिकार करना कौन सा मुश्किल काम है।"
"ठीक कह रहे हो।" रोनी भी कमाण्डर की हालत देखकर उत्साहित हुआ- "इसे तो मैं अभी जहन्नुम पहुँचाता हूँ।"
रोनी ने वहीं झाड़ियों में छिपे-छिपे फौरन अपनी 9 एम0एम0 की पिस्टल उसकी तरफ तानी और फिर उसकी खोपड़ी का निशाना लगाकर ट्रेगर दबा दिया।
लेकिन किस्मत भी कमाण्डर के पूरी तरह साथ थी।
जैसे ही साइनाइट बुलेट उसकी तरफ झपटी, तभी वो लड़खड़ाकर नीचे गिरा। गोली सनसनाती हुई उसके ठीक ऊपर से गुजर गयी।
गोली चलते ही कमाण्डर खतरा भांप गया।
वह एकदम झपटकर झाड़ियों में जा छिपा।

□□□
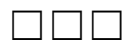
दुश्मन एक बार फिर आमने-सामने थे।
झाड़ियो में छिपे हुए।
"तुमने सही निशाना न लगाकर गड़बड़ कर दी है।" माइक डरे-डरे लहजे में बोला- "उसकी हालत जख्मी शेर जैसी है, जिसका मुकाबला करना आसान न होगा।"
"मैंने तो अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी, लेकिन किस्मत भी उस हरामजादे का खूब साथ दे रही है।"
काश वह दोनों समझ पाते कि खतरा अब उनके बिल्कुल सिर पर मंडरा रहा है।
कमाण्डर सिर्फ झाड़ियों में छिपा ही नहीं था बल्कि वह फौरन झाड़ियों के अंदर ही अंदर सरसराता हुआ अब बड़ी तेजी से उन दोनों की तरफ ही बढ़ रहा था।

स्नाइपर राइफल अभी भी उसके हाथ में थी।

जल्द ही वो बिल्कुल निःशब्द ढंग से उन दोनों के पीछे जा पहुँचा।

रोनी !

माइक !

दोनों की पीठ अब उसकी तरफ थी।

कमाण्डर को धोखे से उन पर वार करना मुनासिब न लगा।

उसने एक दूसरा काम किया।

उसने पीछे से ही स्नाइपर राइफल के द्वारा बजूका का निशाना लगाया और ट्रेगर दबा दिया।

माइक, जिसने अपने हाथ में कसकर बजूका पकड़ी हुई थी, एकाएक उसके हाथ को इतना तेज झटका लगा, जैसे चार सौ चालीस वोल्ट का करेंट लगा हो। फौरन बजूका उसके हाथ से उछलती हुई नजर आयी।

दोनो बिजली जैसी रफ़्तार से पलटे।

रोनी ने पलटते ही अपनी 9 एम0एम0 की पिस्टल से फायर कर दिया।

कमाण्डर ने जम्प ली।

गोली उसके बिल्कुल करीब से सनसनाती हुई गुजरी।

अगर वो साइनाइट बुलेट उसे छूते हुए भी गुजर जाती, तो तब भी उसका काम-तमाम हो जाता।

फौरन ही रोनी ने दो फायर और किये।

दो साइनाइट बुलेट कमाण्डर की तरफ और झपटीं, जिनसे बस वो बाल-बाल बचा।

रोनी फिर अपनी 9 एम0एम की पिस्टल का ट्रेगर दबा पाता, उससे पहले ही कमाण्डर ने स्नाइपर राइफल का बस्ट फायर खोल दिया।

धांय-धांय-धांय !

एक साथ कई गोलियां रोनी के शरीर में जाकर लगीं। उसकी हृदय विदारक चीख वातावरण में गूंजती चली गयी। उसका शरीर धुआंधार गोलियां लगने की वजह से अंधड़ में मौजूद सूखे पत्ते की तरह जोर से कंपकंपाया। कई जगह से खून के फव्वारे छूटे और फिर वो चीखता हुआ ही पीछे झाड़ियों में जा गिरा।

□□□

इस बीच माइक ने चालाकी से काम लिया।

कमाण्डर की दहशत उसके दिलो-दिमाग पर इतनी बुरी तरह हावी हो चुकी थी कि फिलहाल उससे टकराने का ख्याल तक उसे न सूझा। उसने फौरन अपनी बजूका उठाई और मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

रोनी को मारने के बाद कमाण्डर ने माइक को तलाशा।

मगर माइक उसे कहीं न चमका।

इतना तय था, वो अभी वहीं कहीं आसपास था। क्योंकि इतनी जल्दी उसके 'मंकी हिल' से भाग निकलने का कोई सवाल ही नहीं था।

कमाण्डर ने स्नाइपर राइफल अपने से आगे तान ली।

उसके बाद उसने बड़ी अलर्ट पोजीशन में उस पहाड़ी क्षेत्र में माइक को तलाशना शुरू किया।

झाड़ियों में !

पेड़ों पर।

छोटी-छोटी चट्टानों के पीछे।

सब जगह वो माइक को देखता हुआ आगे बढ़ा।

लेकिन माइक गधे के सिर से सींग की तरह गायब हो चुका था।

उसका कहीं कुछ पता न था।

वो न जाने कहाँ जा छिपा था।

कमाण्डर काफी देर तक उसकी तलाश में इधर-उधर भटकता रहा। जब वो निराश होने ही वाला था,

तभी अंधकार में रोशनी की तेज किरण की तरह उसे माइक दिखाई पड़ा।

दरअसल वहीं 'मंकी हिल' पर एक झरना था, जो एक ऊंची पहाड़ी से नीचे की तरफ गिर रहा था। निंरतर ऊपर से पानी गिरता रहने के कारण चट्टान में पीछे की तरफ थोड़ा सा गडढा भी हो गया था। इस वक्त माइक झरने और चट्टान के बीच में पैदा हुए उसी गड्ढे में छिपा था।

झरने का पानी इतना साफ था कि उसके पीछे छिपे हुए माइक की झलक कमाण्डर को साफ़ दिखाई पड़ी।

वाकई !

माइक ने छिपने के लिए एक बहुत बेहतरीन जगह चुनी थी।

लेकिन छिपते समय वो भूल गया था, उसका मुकाबला कमाण्डर से है। जिसकी निगाह से बचना आसान नहीं होता।

माइक को वहाँ देखने के बाद भी कमाण्डर ने ऐसा जाहिर किया, जैसे उसकी निगाहें उसके ऊपर न पड़ी हों।

अलबत्ता अब वो हद से ज्यादा सावधान हो गया था और फिर टहलता हुआ पहले थोड़ा आगे चला गया। उसके बाद उसने साइड में उस पहाड़ी के ऊपर की तरफ चढ़ना शुरू किया, जहाँ से झरना नीचे बह रहा था।

जल्द ही कमाण्डर पहाड़ी के ऊपर जा पहुँचा।

वहाँ काफी बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए थे। वह पत्थर कुछ इस तरह एक के ऊपर एक टिके हुए थे कि अगर नीचे से किसी एक पत्थर को भी अपनी जगह से हिला दिया जाता, तो तमाम पत्थर गड़गड़ाते हुए धड़ाधड़ नीचे गिरते।

हालांकि कमाण्डर करण सक्सेना जख्मी था, लेकिन फिर भी उसने हिम्मत दिखाई।

उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति टटोलकर नीचे रखे एक पत्थर को धकेलना शुरू किया।

पत्थर अभी थोड़ा ही हिला था कि ऊपर रखे सारे पत्थर गड़गड़ाते हुए धड़ाधड़ नीचे गिरने शुरू हो गये। फौरन ही कमाण्डर को झरने के पीछे छिपे माइक की हृदयविदारक चीखें भी सुनाई दीं।

वह बुरी तरह चिल्ला रहा था।

करूणादायी अंदाज़ में।

कमाण्डर तेजी के साथ दौड़ता हुआ नीचे पहुँचा।

झरने के पीछे जो गड्ढा बना हुआ था, माइक अब वहाँ फंस चुका था और उसके सामने काफी पत्थर आकर जमा हो गये थे।

अंदर से अभी भी माइक की भयंकर चीख सुनायी दे रही थीं।

"नहीं-नहीं, अब और युद्ध नहीं।" माइक चिल्ला रहा था- "मैं मरना नहीं चाहता कमाण्डर, मुझे बाहर निकालो।"

कमाण्डर कुछ देर वही खड़ा हाँफता रहा।

उसकी हालत खराब थी।

"प्लीज, मुझे बाहर निकालो।" वह गिडगिड़ाने लगा- "प्लीज कमाण्डर, मैं मरना नहीं चाहता। मैं अब और युद्ध नहीं चाहता।"

उसकी आवाज में बेहद करूणा का भाव था।

कमाण्डर को न जाने क्यों उस पर दया आ गयी।

उसने फिर अपनी सम्पूर्ण शक्ति बटोरी और एक पत्थर को धकेलना शुरू किया।

जल्द ही उसने एक पत्थर को पीछे धकेल दिया।

अंदर माइक खून से लथपथ पड़ा हुआ था-लेकिन बजूका अभी भी उसके हाथ मे थी। सांस उल्टे सीधे चल रहे थे।

"लाओ।" कमाण्डर करण सक्सेना ने पत्थरों के बीच में से अपना हाथ माइक की तरफ बढ़ाया- "अपना हाथ मुझे दो।"

अंदर फंसे माइक ने फौरन अपना हाथ कमाण्डर करण सक्सेना के हाथ में दे दिया।

कमाण्डर ने फिर अपनी शक्ति बटोरी और पूरी ताकत लगाकर उसे पत्थरों के ढेर में-से बाहर पकड़कर

खींचा।

वह रगड़ खाता हुआ बाहर निकल आया।

"प...पानी !" बाहर आते ही माइक हाथ पैर फैलाकर नीचे पड़ गया- "पानी !"

कमाण्डर ने अपने हैवरसेक बैग में से पानी की कैन निकाली। फिर उसने थोड़ा सा पानी माइक के मुंह में डाला और थोड़ा-सा खुद पीया।

पानी पीते ही बुरी तरह हांफते माइक के शरीर में थोड़ी जान पड़ी। उसकी हालत कुछ सुधरी।

"त... तुम सचमुच एक महान यौद्धा होने के साथ-साथ एक महान इंसान भी हो कमाण्डर।" वो हांफता हुआ ही बोला- "ए... एक महान इंसान भी हो।"

उसके उल्टे सीधे चलते सांस अब कुछ नियंत्रित होने लगे थे।

"लेकिन एक बात कहूँ कमाण्डर।"

"क्या ?"

"किसी आदमी को इतना ज्यादा अच्छा भी नही होना चाहिये, जो वह अपने दोस्त और दुश्मन के बीच के फर्क को न समझ सके।"

"क... क्या मतलब ?"

"मतलब भी अभी समझ आता है।"

माइक एकाएक बिजली जैसी अद्वितीय फुर्ती के साथ झपटकर खड़ा हुआ और उसने अपनी बजूका कमाण्डर की तरफ तान दी।

"तुम्हारी इस शराफत ने तुम्हारी सारी मेहनत बेकार कर दी हैं कमाण्डर !" वह एकाएक जहरीले नाग की तरह फुंफकार उठा- "एक ही झटके में तुम्हारे तमाम पत्ते पिट चुके हैं। अब तुम मरने के लिए तैयार हो जाओ।"

माइक ने जैसे ही बजूका का लीवर दबाना चाहा, तुरंत कमाण्डर की राउण्ड किक बड़ी तेजी के साथ घूमी और वो भड़ाक से माइक के सीने पर पड़ी।

माइक की चीख निकल गयी।

तभी राउण्ड किक की दूसरी लात घूमकर प्रचण्ड वेग से माइक के चेहरे पर पड़ी और अगले ही पल बजूका कमाण्डर के हाथ में दिखाई दे रही थी।

माइक के नेत्र आतंक से फटे के फटे रह गये।

सब कुछ सेकंड के सौंवे हिस्से में हो गया।

"तुम शायद अपने छल-प्रपंच से भरे हुए इस खेल में एक बात भूल गये माइक।" कमाण्डर उसे बेहद नफरतभरी निगाहों से देखता हुआ बोला- "जो आदमी जान बचाना चाहता है, वो जान लेना भी जानता है। गुड बाय।"

कमाण्डर ने उस एंटी टैंक गन 'बजूका' का लीवर पकड़कर खींचा।

माइक के मुंह से ऐसी वीभत्स चीख निकली, जैसे किसी ने उसका गला काट डाला हो।

बजूका के अंदर से निकला तीन इंच व्यास का बड़ा गोला घूमता हुआ सीधा माइक के सीने में जा घुसा और वहाँ काफी बड़ा झरोखा-सा बनता चला गया।

माइक वापस पत्थरों पर जा गिरा।

उसके सीने में इतना चौड़ा छेद हो गया था, जैसे किसी ने तोप की पूरी नाल उसमें घुसा दी हो।

पलक झपकते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

उसके बाद खुर कमाण्डर भी अपनी टांगों पर खड़ा न रह सका।

पहले उसके हाथ से बजूका छूटकर नीचे गिरी।

फिर वो खुद भी जमीन पर ढेर हो गया।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना के सांस अब बहुत ज्यादा उल्टे-सीधे चलने लगे थे।

'असाल्ट ग्रुप' के उन योद्धाओं को मारने में उसे जरूरत से ज्यादा मेहनत करनी पड़ गयी थी। शरीर

से खून काफी मात्रा में निकल गया था और अब उसके ऊपर बड़ी तेजी से बेहोशी छाने लगी। सिर घूमने लगा। पीठ में लगी गोली भी भयंकर दर्द कर रही थी। कमाण्डर को लगा, अब बेहोश होने से दुनिया की कोई ताकत उसे नहीं बचा सकेगी और फिर पता नहीं वो कभी होश में भी आ पायेगा या नहीं?

कमाण्डर ने कंपकंपाते हुए हाथों से अपने ओवरकोट की गुप्त जेब से ट्रांसमीटर सैट निकाला, फिर वो मुम्बई के रॉ हैडक्वार्टर से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करने लगा।

जल्द ही सम्पर्क स्थापित हो गया।

"हैलो-हैलो, कमाण्डर करण सक्सेना स्पीकिंग।"

"कमाण्डर करण सक्सेना स्पीकिंग।"

वह उस समय उसी कोड भाषा में बोल रहा था, जो कोड भाषा मिशन पर रवाना होने से पहले गंगाधर महन्त और उसके बीच इजाद की गयी थी।

"हैलो करण, मैं गंगाधर महन्त बोल रहा हूँ।" फौरन दूसरी तरफ से बड़ी गर्मजोशी से भरी आवाज सुनायी दी- "क्या बात है, तुम ठीक तो हो न करण?"

"प... प्लीज हैल्प मी!" कमाण्डर की आवाज बुरी तरह कंपकंपायी- "प... प्लीज हैल्प मी!!"

गंगाधर महन्त सन्नाटे में डूब गये।

"तुम जंगल में इस वक्त कहाँ हो?" गंगाधर चिल्लाये।

"म... मंकी हिल पर!"

"यौद्धाओं का क्या हुआ?"

"म... मैंने लगभग सभी योद्धाओं को मार डाला है।" कमाण्डर की आवाज हर पल मद्धिम पड़ती जा रही थी- "उ... उनका हैडक्वार्टर भी तबाह कर दिया है।"

"लेकिन तुम्हें हुआ क्या है? तुम्हारी हालत कैसी है?"

उसी पल ट्रांसमीटर सैट कमाण्डर के हाथ से छूट गया।

उसकी गर्दन दायीं तरफ जा गिरी।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे करण?" गंगाधर महन्त पागलों की तरह चिल्ला उठें- "तुम खामोश क्यों हो?"

कमाण्डर करण सक्सेना बेहोश हो चुका था।

□□□

मुम्बई के रॉ हैडक्वार्टर में हड़कम्प मच गया।

न सिर्फ गंगाधर महन्त बल्कि तमाम रॉ एजेंटों के लिए यह बात हैरान कर देने वाली थी कि कमाण्डर करण सक्सेना जैसे आदमी ने मदद मांगी है।

"जरूर करण की हालत बहुत गंभीर है।" गंगाधर महन्त परेशान हो उठे- "वरना ऐसा पहले कभी नहीं हुआ कि करण ने किसी मिशन के दौरान मदद मांगी हो। ऐसा लगता है, करण उन योद्धाओं से लड़ता हुआ बहुत जख्मी हो गया है।"

"फिर तो हमें कमाण्डर की फौरन मदद करनी चाहिये चीफ!" रॉ एजेंट रचना मुखर्जी बोली!

"बिल्कुल!"

"लेकिन हम इतनी जल्दी कमाण्डर की मदद के लिए बर्मा के खौफनाक जंगलों में कैसे पहुँच सकते हैं?" वह एक दूसरे एजेंट की आवाज थी।

"इसका बस एक ही तरीका है।"

"क्या?"

"मुझे बर्मा के रक्षा मंत्री से बात करनी होगी। बर्मा की फौज ही करण की मदद के लिए सबसे पहले वहाँ पहुँच सकती है।"

फिर गंगाधर महन्त टेलीफोन की तरफ झपट पड़े।

□□□

जैसे ही बर्मा के रक्षा मंत्रालय में यह खबर पहुंची कि कमाण्डर करण सक्सेना ने लगभग सभी योद्धाओं को मार डाला है और अब वो खुद मंकी हिल पर बहुत गंभीर हालत में पड़ा है, तो वहाँ भी सनसनी दौड़ गयी।

"फौरन जंगल में घुसने की तैयारी करो।" तुरंत रक्षा मंत्री चिल्लाये- "हमने किसी भी हालत में कमाण्डर करण सक्सेना को बचाना है। वह जांबाज आदमी मरना नहीं चाहिये, जिसने हमारे देश की हिफाजत के लिए अपनी जान खतरे में डाल दी।"

"लेकिन अब कमाण्डर करण सक्सेना को बचाने के लिए हम क्या करें?" रक्षा मंत्री का सेक्रेटरी बोला।

"जंगल में योद्धाओं का अब पहले जैसा डर नहीं है, फौज को हुकुम दो कि वह तुरंत जंगल में घुसे।"

"ओके सर!"

□□□

थोड़ा ही समय गुजरा होगा कि फौरन बर्मा के फौजी हैलीकॉप्टर बड़ी तादाद में जंगल के ऊपर मंडराने लगे।

फौजी गाड़ियाँ दनदनाती हुई जंगल के अंदर घुसीं।

देखते ही देखते बर्मा की फौज ने उस जंगल को चारों तरफ से घेर लिया।

"सब 'मंकी हिल' की तरफ बढ़ें।" फौज के कम्पनी कमाण्डर ने लाउस्पीकर पर आदेश दनदनाया- "और रास्ते में यौद्धाओं के जितने भी सैनिक नजर आयें, सबको मार डालो। कोई नहीं बचना चाहिये।"

एकाएक जंगल में चारों तरफ फौज-ही-फौज नजर आने लगी।

सिग्नल बजने लगे।

जंगल का माहौल खौफनाक हो गया।

फौज अब यौद्धाओं के बचे-कुचे सैनिकों को गोलियों से भूनती हुई आगे बढ़ रही थी।

जंगल में आदिवासियों के ऊपर फौज को गोलियां चलाने की जरूरत नहीं पड़ी, उससे पहले ही आदिवासियों ने फौज के सामने हथियार डाले दिये।

थोड़ी ही देर में पूरे जंगल पर बर्मा की फौज का कब्जा हो चुका था।

यही वो पल था, जब फौज के चार हैलीकॉप्टर भयानक गर्जना करते हुए 'मंकी हिल' पर उतरे।

"कमाण्डर करण सक्सेना यहीं कहीं होना चाहिये।" वायुसेना का एक बड़ा ऑफिसर हैलीकॉप्टर से नीचे कूदता हुआ चिल्लाया- "उसे चारों तरफ ढूंढों, मंकी हिल का चप्पा-चप्पा छान मारों।"

देखते ही देखते बर्मा के फौजी मधुमक्खी के छत्ते की भांति पूरी 'मंकी हिल' पर फैलते चले गये।

"इस बात की क्या गारण्टी है।" एक फौजी बोला- "कि कमाण्डर करण सक्सना यहीं होगा।"

"क्योंकि उसने यहीं से अपना आखिरी मैसेज सर्कुलेट किया था।"

"ओह!"

फौजी दौड़ते हुए आगे बढ़े।

"लगता है, वहाँ कोई है।" तभी एक फौजी ने दूर झाड़ियों की तरफ उंगली उठाई।

"कमाण्डर करण सक्सेना मालूम होता है।"

"जरूर वही है।"

फौजी दौड़ते हुए उस व्यक्ति की तरफ बढ़ते चले गये, जो खून से लथपथ हालत में झाड़ियों में पड़ा था।

वह सचमुच कमाण्डर करण सक्सेना था।

"इसे जल्दी से उठाकर हैलीकॉप्टर में लाओ। हमने कमाण्डर करण सक्सेना को लेकर फौरन हॉस्पिटल पहुँचना है।"

ऑफिसर के आदेश की देर थी, तुरन्त दो फौजियों ने कमाण्डर करण सक्सेना को उठा लिया और वह उसे लेकर वहीं खड़े एक हैलीकॉप्टर की तरफ दौड़े।

□□□

दर्द की वजह से कमाण्डर का सिर फटा जा रहा था। उसे ऐसा लग रहा था, मानो वह किसी बहुत गहरी नींद से जागा हो। आँखें खोलते ही उसने बड़ी अचम्भित निगाहों से इधर-उधर देखा। वह बिल्कुल नई जगह थी और इस समय वह एक बहुत साफ-सुथरे कमरे में था।

तभी कमाण्डर की निगाह अपने बैड के नजदीक ही रखी एक तख्ती पर पड़ी, वह बर्मा की राजधानी रंगून का कोई हॉस्पिटल था।

कमाण्डर ने देखा, उसके शरीर पर जगह-जगह पट्टियां बंधी हुई थीं।

कपड़े बदले जा चुके थे।

इसके अलावा हैवरसेक बैग का सामान भी वहीं कमरे में फैला हुआ था। उसी क्षण कमाण्डर की निगाह अपनी क्लोरोफार्म की बोतल पर पड़ी। न जाने किस बेवकूफ ने क्लोरोफार्म की शीशी का ढक्कन खोल दिया था और अब उसमें से आधी से ज्यादा क्लोरोफार्म उड़ चुकी थी।

खिड़की में से छनकर आती धूप इस समय सीधे उस क्लोरोफार्म की शीशी पर पड़ रही थी।

कमाण्डर ने थोड़ी हिम्मत जुटाई। उसने बिस्तर पर लेटे-लेटे आगे को झुककर क्लोरोफार्म की शीशी उठाई और उसका ढक्कन वापस बंद कर दिया।

फिर उसे लेटे-लेटे कब नींद आ गयी, पता न चला।

काफी देर बाद कमाण्डर की आँखें खुली थीं।

उसने देखा, बिल्कुल उसी क्षण एक बिल्कुल सफेद झक्के बालों वाला डॉक्टर कमरे में दाखिल हुआ। उसने सफेद ओवरऑल पहना हुआ था और आँखों में खूंखार भाव थे।

"हैलो कमाण्डर !" वह कमाण्डर के नजदीक आकर खड़ा हो गया और मुस्कराया।

कमाण्डर चौंका।

उस आदमी की सूरत न जाने क्यों उसे जानी पहचानी सी लगी।

वह उसे पहले कहीं देख चुका था।

कहाँ ?

यह कमाण्डर को एकदम से याद न आया।

"शायद तुम मुझे पहचानने की कोशिश कर रहे हो कमाण्डर।" वह रहस्यमयी डॉक्टर इंजेक्शन की सीरींज भरता हुआ बोला- "मेरा नाम जैक क्रेमर है, 'असाल्ट ग्रुप' का आखिरी योद्धा।"

कमाण्डर के दिमाग में धमाका हो गया।

फौरन वह उसे पहचान गया।

वह वास्तव में ही जैक क्रेमर था।

"तुमने मेरे सभी ग्यारह योद्धाओं को मार डाला है कमाण्डर !" जैक क्रेमर गुस्से में फुंफकारा- "तुमने बर्मा पर कब्जा करने के मेरे सपने को चकनाचूर कर डाला। लेकिन अब तुम्हारी मौत का समय आ चुका है। तुम शायद जानते हो, नारकाटिक्स का कारोबार करने के साथ-साथ मैं विष का भी विशेषज्ञ हूँ। यह जो इंजेक्शन मेरे हाथ में देख रहे हो, इसके अंदर पौटेशियम साइनाइट से भी ज्यादा खतरनाक 'कुर्री' नाम का जहर भरा है। जैसे ही यह जहर तुम्हारे शरीर में पहुंचेगा, फौरन सेकण्ड के सौंवे हिस्से में तुम्हारी मौत हो जायेगी।"

फिर जैक क्रेमर, कमाण्डर के वह इंजेक्शन लगाने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा, तुरंत कमाण्डर बैड से एकदम जम्प लेकर खड़ा हो गया और उसकी ताइक्वांडों किक बड़ी स्पीड के साथ घूमकर जैक क्रेमर के चेहरे पर पड़ी।

जैक क्रेमर चीख उठा।

इंजेक्शन उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ा और गिरते ही टूट गया।

कमाण्डर की निगाह पुनः क्लोरोफार्म की बोतल पर जाकर ठहर गयी।

वो जानता था, क्योंकि क्लोरोफार्म की वह बोतल किसी ने धूप में खुली छोड़ दी थी और थोड़ी देर पहले कमाण्डर उसे बंद कर चुका था, तो अब उसके अंदर खाली जगह में जरूर 'फोसजिन गैस' बन गयी होगी।

फोसजिन-जो बहुत जहरीली गैस होती है और इंसान के ऊपर सीधे नर्व गैस का काम करती है।

कमाण्डर ने झपटकर बोतल उठा ली और उसे लेकर बिजली जैसी फुर्ती के साथ दरवाजे की तरफ

दौड़ा।

"तुम आज बचकर नहीं जा सकोगे कमाण्डर !" जैक क्रेमर ने भी उसके पीछे जम्प लगायी।

उसके हाथ में 'कुर्री' जहर से भरा दूसरा इंजेक्शन आ चुका था।

रूका कमाण्डर !

घूमा !

फिर भड़ाक से उसकी एक और ताइक्वांडों किक घूमकर जैक क्रेमर के चेहरे पर पड़ी।

उसी क्षण कमाण्डर ने 'फोसजिन गैस' से भरी वो बोतल सामने दीवार पर दे मारी।

धड़ाम !

बोतल फटने की ऐसी आवाज हुई, जैसे बम फटा हो।

कमाण्डर दौड़कर कमरे से बाहर निकल गया और बाहर निकलते ही उसने दरवाजा बंद कर दिया।

अंदर से अब जैक क्रेमर की वीभत्स चीखें गूंजने लगीं और फिर वो चीखें भी शांत हो गयीं।

□□□

कमाण्डर करण सक्सेना इस समय हॉस्पिटल के ही गलियारे वाली टेबिल पर पड़ा जोर-जोर से हांफ रहा था।

उसके कई टांके टूट चुके थे।

जख्मों में-से फिर खून रिसने लगा था।

लेकिन कमाण्डर करण सक्सेना या फिर किसी को भी उस बात की परवाह न थी। पूरे हास्पिटल में अफरा-तफरी मची थी।

यह बात अब वहाँ फैल चुकी थी कि कमाण्डर करण सक्सेना ने आखिरी योद्धा जैक क्रेमर को भी 'फोसजिन गैस' से मार डाला है। उस कमरे में से 'फोसजिन गैस' बाहर न निकलने पाये, इसके लिए दरवाजे की झिरी में जगह जगह गीला कपड़ा लगा दिया गया था। फिर तुरंत ही वहाँ 'विषैली गैस निरोधक दस्ता' बुलाया गया।

उस दस्ते ने वहाँ आते ही सबसे पहले ऐसे यंत्र लगाये, जो उस बंद कमरे के अंदर से ही सारी गैस सोख ली गयी। उसके बाद कमरे का दरवाजा खोला गया।

सामने ही जैक क्रेमर की लाश पड़ी थी।

जैक क्रेमर।

वह मास्टर माइण्ड आदमी, जो खुद को विष का विशेषज्ञ कहता था, लेकिन अपने आखिरी समय में उसी विष के कारण वो मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अगले दिन कमाण्डर करण सक्सेना अपने जीवन के उस सबसे खतरनाक मिशन को पूरा करके वापस भारत लौट आया। भारत लौटते ही उसके पास बधाइयों का तांता लग गया।

भारत के तमाम अखबारों में उसे 'भारत रत्न' मिलने की खबर सुर्खियों के साथ छपी।

सचमुच वो भारत का रत्न था।

भारत रत्न, कमाण्डर करण सक्सेना !

जिस पर कोई भी सच्चा भारतीय गर्व कर सकता है।

समाप्त